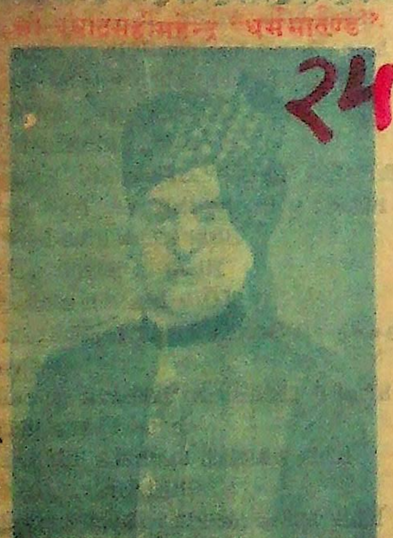
Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री बघाटमहीमहेन्द्र धर्ममार्तण्ड



पवारकुलभूषण श्रीमन्महाराजाधिराज
श्री १०५ दुर्गासिंहजी बहादुर C.I.E.
सोलन।

॥ ॐ ॥

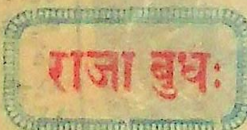


हृदन्तर्ध्वान्ततमोवितान-निवारणं पण्डितमण्डलीमुदम्।
त्रिकालदर्शि प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्डपञ्चाङ्ग' मिदं चकास्तु॥

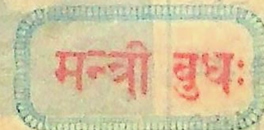
॥ सार्वदेशिक सर्वोत्तम सर्वाङ्गशुद्धपञ्चांग ॥

श्रीगणेशाय नमः　　　　श्रीलक्ष्म्यै नमः

मार्तण्ड के उदय से जगमग हुआ आकाश। क्या तारा क्या चन्द्रमा सबका छुपे प्रकाश॥







बघाटमहीमहेन्द्र धर्ममार्तण्ड श्री १०५ मद्दुर्गासिंहवर्म्मभिः संरक्षितम्

रूपगढ़ीया (रूपड़) क्षत्रत्रीयं दृग्गणितैक्यविषयैः

अलंकृतम्, धर्मशास्त्रसम्मतञ्च

BAGHAT PANCHANG

श्रीमार्तण्ड पञ्चाङ्गम्

श्रीविक्रमार्कीय सं० २००६ शके १८७१ सन् १९४९-५० ई०—जयहिन्द सं० २ (१५ अग० से ३)

गुरुवर्य्य श्री ६ पूज्यपाद कै० वा० गोविन्द सदाशिव आपटे एम.ए.बी.एस.सी., गणकचक्रचूड़ामणीत्याद्युपाधिधारिणां तथा श्रीजयपुरमहाराजाश्रित सिद्धान्तपञ्चानन पूज्य श्री ६ पं० केदारनाथ साहित्यभूषण ज्योतिषशास्त्रालय प्रधाना शिष्येण श्रीमद्दैवज्ञवर्य पं० रामचन्द्रात्मजेन पञ्चाम्बुदेशान्तर्गत कुराली निवासिना बघाटनरेशाश्रितेन ज्योतिषाचार्य्येण श्री मुकुन्दवल्लभ शर्मणा विरचितम्। गणितकर्त्तारौ—सत्यव्रत प्रियव्रत शर्म्माणौ

प्रकाशक—मोतीलाल बनारसीदास पुस्तकों वाले, गायघाट, बनारस।

भारत के विख्यात पञ्चाङ्गकर्त्ता
एवं ग्रन्थकार



दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
श्री पं० मुकुन्दवल्लभमिश्र ज्योतिषाचार्य
कुराली (पंजाब)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विषय-सूची

॥ आशीराशंसन ॥

जयन्ति श्रीमहाविद्या पदपङ्कजरेणवः ।
यत्कृपालेशमात्रेण रङ्को राजति सत्वरम् ॥ १ ॥
श्रीदुर्गासिंह वर्माख्यो राजा राजगुणैर्युतः ।
सनातनीं धर्मधुरं, वहन् भागवतोत्तमः ॥ २ ॥
बघाटेशः सोलनाख्य * राजधान्यामुदारधीः ।
राजते धर्ममार्तण्डो गोविप्रगणपूजकः ॥ ३ ॥
निदेशात्तस्य राजर्षेरिदम्पञ्चाङ्गमुत्तमम् ।
प्रसृत्य मार्तण्डसममज्ञानान्ध्यं व्यपोहतु ॥ ४ ॥

*पुरो नवपलान्यस्ति रेखातः सोलनं पुरम् ।
यत्र रुद्रव्यङ्गुलाद्रि (७।११) मितांगुलपलप्रभा ॥

पञ्चांग कर्ता के सुपुत्र—उपसम्पादक



लघुसिद्धान्तकौमुदी

पं० विश्वनाथजी प्रधान, सरस्वती संस्कृत-विद्यालय काशी कृत छात्रोपयोगी अत्यन्त सरल उपेन्द्रविवृत्ति सहित तथा अनेकों परिशिष्ट तथा सूत्रों के हिन्दी अनुवाद सहित । चतुर्थ संस्करण ३६८ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य केवल १।) छात्रों से १) ।

मोतीलाल बनारसी दास, गायघाट; बनारस ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ सद्य आरोग्यकरं सूर्य्यार्घ्यदानविधानम्॥ सुदिने कृतनित्यक्रिय आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य मम अमुकस्य वा अमुक ज्वरादिव्याधिसमूलनिराशद्वारा सद्य आरोग्यार्थं श्रीसवितृसूर्यनारायणप्रीत्यर्थं हंसादिसप्ततिनामभि: श्रीसूर्याय सप्तत्यर्घ्यदानमहं करिष्ये ।

इतिसंकल्प्य भूतशुद्ध्यादि कृत्वा सामान्यार्घ्यं कल्पयेत् । विगृह्य पाणियुग्मेन ताम्रपात्रं सुनिर्मलम् । जानुभ्यामवनीं गत्वा परिपूर्य्य जलेन च ॥१॥ करवीरादिकुसुमैरक्तचन्दनमिश्रित: । दुर्वाकुरैरक्षतैश्च निक्षिप्तै: पात्रमध्यत:॥२॥ दद्यादर्घ्यमनर्घाय सवित्रे ध्यानपूर्वकम् ॥ उपमौलीसमानीय तत्पात्रे नान्यदिङ्मना: ॥३॥ प्रतिमन्त्रं नमस्कुर्यादुदयास्तमिते रवौ । अनया नाममन्त्रस्या महामन्त्ररहस्यया ॥४॥ एवमर्घ्यं प्रकल्प्य पाद्यादिभि: सम्पूज्य प्रणम्य यथोक्तविधिना प्रत्येकनाम्ना बृहत्पात्रे घटे जले वा अर्घ्यं दद्यात्---तद्यथा---ॐ हंसाय नम: ॥१॥ ॐ भानवे नम: ॥२॥ ॐसहस्रांशवे नम: ॥३॥ ॐ तपनाय नम: ॥४॥ ॐ तापनाय नम: ॥५॥ ॐ रवये नम: ॥६॥ ॐ विकर्तनाय नम: ॥७॥ ॐ विवस्वते नम: ॥८॥ ॐ विश्वकर्मणे नम: ॥९॥ ॐ विभावसवे नम: ॥१०॥ ओंविश्वरूपाय नम:॥११॥ ॐ विश्वकर्त्रे नम १२॥ ॐ मार्तण्डाय नम १३॥ ॐ मिहिराय नम:॥१४॥ ॐ अंशुमते नम:॥१५॥ ॐ आदित्याय नम:॥१६॥ ॐ उष्णगवे नम:१७॥ ॐ सूर्य्याय नम:॥१८॥ ॐ अर्यमणे नम ॥१९॥ ॐ ब्रध्नाय नम ॥२०॥ ॐदिवाकराय नम ॥२१॥ ॐ द्वादशात्मने नम:॥२२॥ॐ सप्तहयाय नम ॥२३॥ ॐ भास्कराय नम ॥२४॥ ॐअहस्कराय नम: ॥२५॥ ॐ खगाय नम: ॥२६॥ ॐ सुराय नम: ॥२७॥ ॐ प्रभाकराय नम: ॥२८॥ ॐ श्रीमते नम:॥२९॥ ॐ लोकचक्षुषे नम:३०॥ ॐ ग्रहेश्वराय नम: ॥३१॥ॐ लोकेशाय नम ॥३२॥ ॐ लोकसाक्षिणे नम: ॥३३॥ ॐ तमोरये नम: ॥३४॥ ॐ शाश्वताय नम ॥३५॥ॐ शुचये नम: ॥३६॥ ॐ गभस्तिहस्ताय नम: ॥३७॥ ॐ तीव्रांशवे नम: ॥३८॥ ॐ तरणये नम: ॥३९॥ ॐ सुमहोरणये नम:॥४०॥ ॐ द्युमणये नम:॥४१॥ ॐ हरिदश्वाय नम:॥४२॥ॐ अर्काय नम: ॥४३॥ ॐ भानुमते नम:॥४४॥ ॐ भयनाशनाय नम ॥४५॥ ॐ छन्दोश्वाय नम: ॥४६॥ ॐ वेदवेद्याय नम: ॥४७॥ ॐ भास्वते नम: ॥४८॥ ॐ पूष्णे नम: ॥४९॥ ॐ वृषाकपये नम: ॥५०॥ ॐ एकचक्ररथाय नम ॥५१॥ ॐ मित्राय नम ॥५२॥ ॐ मन्देहारये नम:॥५३॥ॐ तमिस्रहन्त्रे नम: ॥५४॥ ॐ दैत्यहन्त्रे नम: ॥५५॥ ॐ पापहर्त्रे नम: ॥५६॥ॐ धर्माय नम ॥५७॥ ॐ प्रकाशकाय नम ॥५८॥ ॐ--- हेलिकाय नम: ॥५९॥ ॐ चित्रभानवे नम: ॥६०॥ ॐ कलिघ्नाय नम: ॥६१॥ ॐ तार्क्ष्यवाहनाय नम: ॥६२॥ ॐ दिक्पतये नम: ॥६३॥ ॐ पद्मिनीनाथाय नम ॥६४॥ ॐ कुशेशयकराय नम ॥६५॥ ॐ हरये नम: ॥६६॥ ॐ घर्मरश्मये नम: ॥६७॥ ॐ दुर्निरीक्ष्याय नम: ॥६८॥ ॐ चण्डांशवे नम: ॥६९॥ ॐ कश्यपात्मजाय नम: ॥७०॥ एभि:सप्ततिसंख्याकै: पुण्यै: सूर्यस्यनामभि: । प्रणवादिचतुर्थ्यन्तैर्नमस्कारसमायुतै: ॥१॥ प्रत्येकमनुच्चरन्नाम दृष्ट्वा दृष्ट्वा दिवाकरं । एवंकुर्वन्नरो याति न दारिद्रयं न शोकभाक् ॥२॥ व्याधिभिर्मुच्यतेघोरैरपि-मासान्तरार्जितै: । विनौषधै: विनावैद्यैर्विनापथ्यपरिग्रहै: ॥३॥ कालेन निधनं प्राप्य सूर्यलोके महीयते ॥ श्रीसूर्य्यार्घ्यविधानस्य विधि: समाप्त: ॥

"अथ ३२ वां श्रीसूर्य यन्त्र विधान ॥ इस कलमसे हरिद्राके साथ यन्त्रको अनारकीभूर्जपत्रपर अथवा कागजपर लिखे, नीचे अपना मनोरथ (अपना कार्य)लिखे फिर उस यन्त्रको रुई की खड़ी फूलबत्ती में बनाकर रविवारको ज्योति जगावे ! फिर हरिद्रा की माला बनाकर भार बीजमन्त्रको ११००ग्यारह सौ जप करे "जपमन्त्र:" ॐ ह्रीं हंस:" इस मन्त्र को सात या २१ रविवार विधिपूर्वक करनेसे श्रीसूर्यनारायणकी कृपासे सम्पूर्ण दु:खोंकी निवृत्ति होगी अत्यन्त सुख प्राप्त होगा ।

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

ग्रहणनिर्णय:

ज्योतिषे ग्रहणं सारं गारुडे विषभक्षणम् । शैवे घटवती दीक्षा कौलके ग्रहनिग्रहो ॥

सं० २००६ विक्रमीमें ४ ग्रहण होंगे जिनमें २ सूर्य के और २ चन्द्रमा के (१) खग्रास चन्द्र ग्रहण---चैत्र शु०१५ बुधवार ता० १३ अप्रैल १९४९ को होगा जो न्यू जिलैण्ड बलगेरिया जर्मनी फ्रान्स में ही दीखेगा यहां भारत में दृश्य न होगा। (२) स्वल्पग्रास सूर्यग्रहण---वैशाख कृ० ३० गुरुवार ता० २८ अप्रैल १९४९ को होगा जो रूस के कुछ पूर्वीयभाग तथा यूरोप में ही दीखेगा हमारे भारत से नहीं दीखेगा। (३) ग्रस्तास्तखग्रास चन्द्रग्रहण---आश्विन शु० १५ भृगुवार ता० ७ अक्टूबर सन् १९४९ को होगा। जो भारत में केवल जोधपुर, जनागढ माण्डवी भुजकच्छ राजकोट, द्वारका तथा रावलपिण्डी कराची, अटक, पेशावर, हैदराबाद, सिन्ध, मुलतानादि नगरों में ही ग्रहण का स्पर्शमात्र दिखाई देगा ! हमारे यहां पूर्वीय पञ्जाब बंगाल, यू० पी, जयपुर देहली आदि में कहीं भी दिखाई नहीं देगा अर्थात् जहां रेलवे ६ बज कर ३३मिण्ट के पहिले चन्द्रास्त होगा वहां यह ग्रहण भी दिखाई न देगा। जहां ग्रहण दृश्य हो वहीं फल माना जाता है। अन्यत्र नहीं जहां ग्रहण दीखेगा वहां के निवासी जिस मनुष्यकी मेष, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, धन और मीन राशि होगी उन्हें दु:ख शोकादि अशुभ फल होगा। शेषराशिवालों को शुभ है। रेवती नक्षत्रवालों को विशेष अशुभ होगा। शान्त्यर्थ जपदान करें और ग्रहण न देखें।

स्पर्शादिकाला:	स्पर्श	मध्य	मोक्ष	सर्व
रेलवे घण्टा	प्रात: ६	७	दिन १०	३
" मिण्ट	३३	२५	१८	४५

अर्थात् यह ग्रहण गुरुवार और भृगुवार के मध्य की रात को प्रात: स्पर्श हो कर गुरुवार को दिन में मोक्ष होगा।

ग्रहण मध्यकालेग्रास स्वरूपम् ।



ग्रहणका प्रभाव---शहद-तैल-घृत-मक्की आदि पीला धान्य तथा सोना पित्तल सूत, रूई यह तेजहों. व्यापारियों को पीड़ा हो। (४) खण्डग्रास सूर्यग्रहण---चैत्र कृ० ३० शनिवार ता० १० मार्च सन् १९४९ को होगा जो दक्षिण पश्चिमीय अफ्रीका में स्पर्श होता हुआ और अर्जुनटायना अमेरिकादि प्रदेशों में मोक्ष होता हुआ दीखेगा। भारत में कहीं भी दिखाई नहीं देगा।

स्तव सार्वभौम—इस अभूत पूर्व स्तोत्र के पाठ करने से भक्तों की सम्पूर्ण विपत्तियें दूर होकर सर्व शुभ कामनाएँ पूर्ण होती हैं। निष्काम पाठ करने से अत्युत्तम फल की सद्य: प्राप्ति होती है। प्रभु कृपा से यह स्तोत्र १६ वर्ष की अल्पायु में ही एक बालक द्वारा श्लोक बद्ध निर्माण हुआ था जो अभी छपा है मूल्य ।) ।

प्रकाशक-**मोतीलाल बनारसीदास,** गायघाट बनारस।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(१) वैशाख मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्ट	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१	७।३४	९।२९	११।४३	१४।५	१६।२५	१८।४५	२१।७	२३।२७	१।३१	३।१३	४।३९	६।१
२	७।३०	९।२५	११।३९	१४।१	१६।२१	१८।४१	२१।३	२३।२३	१।२७	३।९	४।३५	५।५७
३	७।२६	९।२१	११।३५	१३।५७	१६।१७	१८।३७	२०।५९	२३।१९	१।२३	३।५	४।३१	५।५३
४	७।२२	९।१७	११।३१	१३।५३	१६।१३	१८।३३	२०।५५	२३।१५	१।१९	३।१	४।२७	५।४९
५	७।१८	९।१३	११।२७	१३।४९	१६।९	१८।२९	२०।५१	२३।११	१।१५	२।५७	४।२३	५।४५
६	७।१४	९।९	११।२३	१३।४५	१६।५	१८।२५	२०।४७	२३।७	१।११	२।५३	४।१९	५।४१
७	७।१०	९।५	११।१९	१३।४१	१६।१	१८।२१	२०।४३	२३।३	१।७	२।४९	४।१५	५।३७
८	७।६	९।१	११।१५	१३।३७	१५।५७	१८।१७	२०।३९	२२।५९	१।३	२।४५	४।११	५।३३
९	७।२	८।५७	११।११	१३।३३	१५।५३	१८।१३	२०।३५	२२।५५	०।५९	२।४१	४।७	५।२९
१०	६।५८	८।५३	११।७	१३।२९	१५।४९	१८।९	२०।३१	२२।५१	०।५५	२।३७	४।३	५।२५
११	६।५४	८।४९	११।३	१३।२५	१५।४५	१८।५	२०।२७	२२।४७	०।५१	२।३३	३।५९	५।२१
१२	६।५०	८।४५	१०।५९	१३।२१	१५।४१	१८।१	२०।२३	२२।४३	०।४७	२।२९	३।५५	५।१७
१३	६।४६	८।४१	१०।५५	१३।१७	१५।३७	१७।५७	२०।१९	२२।३९	०।४३	२।२५	३।५१	५।१३
१४	६।४२	८।३७	१०।५१	१३।१३	१५।३३	१७।५३	२०।१५	२२।३५	०।३९	२।२१	३।४७	५।९
१५	६।३८	८।३३	१०।४७	१३।९	१५।२९	१७।४९	२०।११	२२।३१	०।३५	२।१७	३।४३	५।५
१६	६।३४	८।२९	१०।४३	१३।५	१५।२५	१७।४५	२०।७	२२।२७	०।३१	२।१३	३।३९	५।१
१७	६।३०	८।२५	१०।३९	१३।१	१५।२१	१७।४१	२०।३	२२।२३	०।२७	२।९	३।३५	४।५७
१८	६।२६	८।२१	१०।३५	१२।५७	१५।१७	१७।३७	१९।५९	२२।१९	०।२३	२।५	३।३१	४।५३
१९	६।२२	८।१७	१०।३१	१२।५३	१५।१३	१७।३३	१९।५५	२२।१५	०।१९	२।१	३।२७	४।४९
२०	६।१८	८।१३	१०।२७	१२।४९	१५।९	१७।२९	१९।५१	२२।११	०।१५	१।५७	३।२३	४।४५
२१	६।१४	८।९	१०।२३	१२।४५	१५।५	१७।२५	१९।४७	२२।७	०।११	१।५३	३।१९	४।४१
२२	६।१०	८।५	१०।१९	१२।४१	१५।१	१७।२१	१९।४३	२२।३	०।७	१।४९	३।१५	४।३७
२३	६।६	८।१	१०।१५	१२।३७	१४।५७	१७।१७	१९।३९	२१।५९	०।३	१।४५	३।११	४।३३
२४	६।२	७।५७	१०।११	१२।३३	१४।५३	१७।१३	१९।३५	२१।५५	२३।५९	१।४१	३।७	४।२९
२५	५।५८	७।५३	१०।७	१२।२९	१४।४९	१७।९	१९।३१	२१।५१	२३।५५	१।३७	३।३	४।२५
२६	५।५४	७।४९	१०।३	१२।२५	१४।४५	१७।५	१९।२७	२१।४७	२३।५१	१।३३	२।५९	४।२१
२७	५।५०	७।४५	९।५९	१२।२१	१४।४१	१७।१	१९।२३	२१।४३	२३।४७	१।२९	२।५५	४।१७
२८	५।४६	७।४१	९।५५	१२।१७	१४।३७	१६।५७	१९।१९	२१।३९	२३।४३	१।२५	२।५१	४।१३
२९	५।४२	७।३७	९।५१	१२।१३	१४।३३	१६।५३	१९।१५	२१।३५	२३।३९	१।२१	२।४७	४।९
३०	५।३८	७।३३	९।४७	१२।९	१४।२९	१६।४९	१९।११	२१।३१	२३।३५	१।१७	२।४३	४।५
३१	५।३४	७।२९	९।४३	१२।५	१४।२५	१६।४५	१९।७	२१।२७	२३।३१	१।१३	२।३९	४।१

(२) ज्येष्ठ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्ट	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
१	७।२८	९।४३	१२।४	१४।२५	१६।४५	१९।७	२१।२६	२३।३०	१।१२	२।३८	४।१	५।३४
२	७।२४	९।३९	१२।०	१४।२१	१६।४१	१९।३	२१।२२	२३।२६	१।८	२।३४	३।५७	५।३०
३	७।२०	९।३५	११।५६	१४।१७	१६।३७	१८।५९	२१।१८	२३।२२	१।४	२।३०	३।५३	५।२६
४	७।१६	९।३१	११।५२	१४।१३	१६।३३	१८।५५	२१।१४	२३।१८	१।०	२।२६	३।४९	५।२२
५	७।१२	९।२७	११।४८	१४।९	१६।२९	१८।५१	२१।१०	२३।१४	०।५६	२।२२	३।४५	५।१८
६	७।८	९।२३	११।४४	१४।५	१६।२५	१८।४७	२१।६	२३।१०	०।५२	२।१८	३।४१	५।१४
७	७।४	९।१९	११।४०	१४।१	१६।२१	१८।४३	२१।२	२३।६	०।४८	२।१४	३।३७	५।१०
८	७।०	९।१५	११।३६	१३।५७	१६।१७	१८।३९	२०।५८	२३।२	०।४४	२।१०	३।३३	५।६
९	६।५६	९।११	११।३२	१३।५३	१६।१३	१८।३५	२०।५४	२२।५८	०।४०	२।६	३।२९	५।२
१०	६।५२	९।७	११।२८	१३।४९	१६।९	१८।३१	२०।५०	२२।५४	०।३६	२।२	३।२५	४।५८
११	६।४७	९।३	११।२३	१३।४४	१६।४	१८।२६	२०।४५	२२।४९	०।३१	१।५७	३।२०	४।५३
१२	६।४३	८।५८	११।१९	१३।४०	१६।०	१८।२२	२०।४१	२२।४५	०।२७	१।५३	३।१६	४।४९
१३	६।३९	८।५४	११।१५	१३।३६	१५।५६	१८।१८	२०।३७	२२।४१	०।२३	१।४९	३।१२	४।४५
१४	६।३५	८।५०	११।११	१३।३२	१५।५२	१८।१४	२०।३३	२२।३७	०।१९	१।४५	३।८	४।४१
१५	६।३१	८।४६	११।७	१३।२८	१५।४८	१८।१०	२०।२९	२२।३३	०।१५	१।४१	३।४	४।३७
१६	६।२७	८।४२	११।३	१३।२४	१५।४४	१८।६	२०।२५	२२।२९	०।११	१।३७	३।०	४।३३
१७	६।२३	८।३८	१०।५९	१३।२०	१५।४०	१८।२	२०।२१	२२।२५	०।७	१।३३	२।५६	४।२९
१८	६।१९	८।३४	१०।५५	१३।१६	१५।३६	१७।५८	२०।१७	२२।२१	०।३	१।२९	२।५२	४।२५
१९	६।१५	८।३०	१०।५१	१३।१२	१५।३२	१७।५४	२०।१३	२२।१७	२३।५९	१।२५	२।४८	४।२१
२०	६।११	८।२६	१०।४७	१३।८	१५।२८	१७।५०	२०।९	२२।१३	२३।५५	१।२१	२।४४	४।१७
२१	६।६	८।२१	१०।४२	१३।३	१५।२३	१७।४५	२०।४	२२।८	२३।५०	१।१६	२।३९	४।१२
२२	६।२	८।१७	१०।३८	१२।५९	१५।१९	१७।४१	२०।०	२२।४	२३।४६	१।१२	२।३५	४।८
२३	५।५८	८।१३	१०।३४	१२।५५	१५।१५	१७।३७	१९।५६	२२।०	२३।४२	१।८	२।३१	४।४
२४	५।५४	८।९	१०।३०	१२।५१	१५।११	१७।३३	१९।५२	२१।५६	२३।३८	१।४	२।२७	४।०
२५	५।५०	८।५	१०।२६	१२।४७	१५।७	१७।२९	१९।४८	२१।५२	२३।३४	१।०	२।२३	३।५६
२६	५।४६	८।१	१०।२२	१२।४३	१५।३	१७।२५	१९।४४	२१।४८	२३।३०	०।५६	२।१९	३।५२
२७	५।४२	७।५७	१०।१८	१२।३९	१४।५९	१७।२१	१९।४०	२१।४४	२३।२६	०।५२	२।१५	३।४८
२८	५।३८	७।५३	१०।१४	१२।३५	१४।५५	१७।१७	१९।३६	२१।४०	२३।२२	०।४८	२।११	३।४४
२९	५।३४	७।४९	१०।१०	१२।३१	१४।५१	१७।१३	१९।३२	२१।३६	२३।१८	०।४४	२।७	३।४०
३०	५।३०	७।४५	१०।६	१२।२७	१४।४७	१७।९	१९।२८	२१।३२	२३।१४	०।४०	२।३	३।३६
३१	५।२६	७।४१	१०।२	१२।२३	१४।४३	१७।५	१९।२४	२१।२८	२३।१०	०।३६	१।५९	३।३२

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(३) आषाढ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
१	७।४०	१०।२	१२।२२	१४।४२	१७।४	१९।२४	२१।२८	२३।१०	०।३६	१।५८	३।३२	५।२६
२	७।३६	९।५८	१२।१८	१४।३८	१७।०	१९।२०	२१।२४	२३।६	०।३२	१।५४	३।२८	५।२२
३	७।३२	९।५४	१२।१४	१४।३४	१६।५६	१९।१६	२१।२०	२३।२	०।२८	१।५०	३।२४	५।१८
४	७।२८	९।५०	१२।१०	१४।३०	१६।५२	१९।१२	२१।१६	२२।५८	०।२४	१।४६	३।२०	५।१४
५	७।२४	९।४६	१२।६	१४।२६	१६।४८	१९।८	२१।१२	२२।५४	०।२०	१।४२	३।१६	५।१०
६	७।२०	९।४२	१२।२	१४।२२	१६।४४	१९।४	२१।८	२२।५०	०।१६	१।३८	३।१२	५।६
७	७।१६	९।३८	११।५८	१४।१८	१६।४०	१९।०	२१।४	२२।४६	०।१२	१।३४	३।८	५।२
८	७।१२	९।३४	११।५४	१४।१४	१६।३६	१८।५६	२१।०	२२।४२	०।८	१।३०	३।४	४।५८
९	७।८	९।३०	११।५०	१४।१०	१६।३२	१८।५२	२०।५६	२२।३८	०।४	१।२६	३।०	४।५४
१०	७।४	९।२६	११।४६	१४।६	१६।२८	१८।४८	२०।५२	२२।३४	०।०	१।२२	२।५६	४।५०
११	७।०	९।२२	११।४२	१४।२	१६।२४	१८।४४	२०।४८	२२।३०	२३।५६	१।१८	२।५२	४।४६
१२	६।५७	९।१९	११।३९	१३।५९	१६।२१	१८।४१	२०।४५	२२।२७	२३।५३	१।१५	२।४९	४।४३
१३	६।५३	९।१५	११।३५	१३।५५	१६।१७	१८।३७	२०।४१	२२।२३	२३।४९	१।११	२।४५	४।३९
१४	६।४९	९।११	११।३१	१३।५१	१६।१३	१८।३३	२०।३७	२२।१९	२३।४५	१।७	२।४१	४।३५
१५	६।४५	९।७	११।२७	१३।४७	१६।९	१८।२९	२०।३३	२२।१५	२३।४१	१।३	२।३७	४।३१
१६	६।४१	९।३	११।२३	१३।४३	१६।५	१८।२५	२०।२९	२२।११	२३।३७	०।५९	२।३३	४।२७
१७	६।३७	८।५९	११।१९	१३।३९	१६।१	१८।२१	२०।२५	२२।७	२३।३३	०।५५	२।२९	४।२३
१८	६।३३	८।५५	११।१५	१३।३५	१५।५७	१८।१७	२०।२१	२२।३	२३।२९	०।५१	२।२५	४।१९
१९	६।२९	८।५१	११।११	१३।३१	१५।५३	१८।१३	२०।१७	२१।५९	२३।२५	०।४७	२।२१	४।१५
२०	६।२५	८।४७	११।७	१३।२७	१५।४९	१८।९	२०।१३	२१।५५	२३।२१	०।४३	२।१७	४।११
२१	६।२१	८।४३	११।३	१३।२३	१५।४५	१८।५	२०।९	२१।५१	२३।१७	०।३९	२।१३	४।७
२२	६।१८	८।४०	११।०	१३।२०	१५।४२	१८।२	२०।६	२१।४८	२३।१४	०।३६	२।१०	४।४
२३	६।१४	८।३६	१०।५६	१३।१६	१५।३८	१७।५८	२०।२	२१।४४	२३।१०	०।३२	२।६	४।०
२४	६।१०	८।३२	१०।५२	१३।१२	१५।३४	१७।५४	१९।५८	२१।४०	२३।६	०।२८	२।२	३।५६
२५	६।६	८।२८	१०।४८	१३।८	१५।३०	१७।५०	१९।५४	२१।३६	२३।२	०।२४	१।५८	३।५२
२६	६।२	८।२४	१०।४४	१३।४	१५।२६	१७।४६	१९।५०	२१।३२	२२।५८	०।२०	१।५४	३।४८
२७	५।५८	८।२०	१०।४०	१३।०	१५।२२	१७।४२	१९।४६	२१।२८	२२।५४	०।१६	१।५०	३।४४
२८	५।५४	८।१६	१०।३६	१२।५६	१५।१८	१७।३८	१९।४२	२१।२४	२२।५०	०।१२	१।४६	३।४०
२९	५।५०	८।१२	१०।३२	१२।५२	१५।१४	१७।३४	१९।३८	२१।२०	२२।४६	०।८	१।४२	३।३६
३०	५।४६	८।८	१०।२८	१२।४८	१५।१०	१७।३०	१९।३४	२१।१६	२२।४२	०।४	१।३८	३।३२
३१	५।४२	८।४	१०।२४	१२।४४	१५।६	१७।२६	१९।३०	२१।१२	२२।३८	०।०	१।३४	३।२८
३२	५।३८	८।०	१०।२०	१२।४०	१५।२	१७।२२	१९।२६	२१।८	२२।३४	२३।५६	१।३०	३।२४,

(४) श्रावण मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि० ३

प्रविष्टे	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
१	८।०	१०।२०	१२।४०	१५।२	१७।२२	१९।२६	२१।८	२२।३४	२३।५६	१।२९	३।२४	५।३८
२	७।५५	१०।१५	१२।३५	१४।५७	१७।१७	१९।२१	२१।३	२२।२९	२३।५१	१।२४	३।१९	५।३३
३	७।५१	१०।११	१२।३१	१४।५३	१७।१३	१९।१७	२०।५९	२२।२५	२३।४७	१।२०	३।१५	५।२९
४	७।४७	१०।७	१२।२७	१४।४९	१७।९	१९।१३	२०।५५	२२।२१	२३।४३	१।१६	३।११	५।२५
५	७।४३	१०।३	१२।२३	१४।४५	१७।५	१९।९	२०।५१	२२।१७	२३।३९	१।१२	३।७	५।२१
६	७।३९	९।५९	१२।१९	१४।४१	१७।१	१९।५	२०।४७	२२।१३	२३।३५	१।८	३।३	५।१७
७	७।३५	९।५५	१२।१५	१४।३७	१६।५७	१९।१	२०।४३	२२।९	२३।३१	१।४	२।५९	५।१३
८	७।३०	९।५०	१२।१०	१४।३२	१६।५२	१८।५६	२०।३८	२२।४	२३।२६	०।५९	२।५४	५।८
९	७।२६	९।४६	१२।६	१४।२८	१६।४८	१८।५२	२०।३४	२२।०	२३।२२	०।५५	२।५०	५।४
१०	७।२२	९।४२	१२।२	१४।२४	१६।४४	१८।४८	२०।३०	२१।५६	२३।१८	०।५१	२।४६	५।०
११	७।१८	९।३८	११।५८	१४।२०	१६।४०	१८।४४	२०।२६	२१।५२	२३।१४	०।४७	२।४२	४।५६
१२	७।१४	९।३४	११।५४	१४।१६	१६।३६	१८।४०	२०।२२	२१।४८	२३।१०	०।४३	२।३८	४।५२
१३	७।१०	९।३०	११।५०	१४।१२	१६।३२	१८।३६	२०।१८	२१।४४	२३।६	०।३९	२।३४	४।४८
१४	७।६	९।२६	११।४६	१४।८	१६।२८	१८।३२	२०।१४	२१।४०	२३।२	०।३५	२।३०	४।४४
१५	७।२	९।२२	११।४२	१४।४	१६।२४	१८।२८	२०।१०	२१।३६	२२।५८	०।३१	२।२६	४।४०
१६	६।५७	९।१७	११।३७	१३।५९	१६।१९	१८।२३	२०।५	२१।३१	२२।५३	०।२६	२।२१	४।३५
१७	६।५३	९।१३	११।३३	१३।५५	१६।१५	१८।१९	२०।१	२१।२७	२२।४९	०।२२	२।१७	४।३१
१८	६।४९	९।९	११।२९	१३।५१	१६।११	१८।१५	१९।५७	२१।२३	२२।४५	०।१८	२।१३	४।२७
१९	६।४५	९।५	११।२५	१३।४७	१६।७	१८।११	१९।५३	२१।१९	२२।४१	०।१४	२।९	४।२३
२०	६।४१	९।१	११।२१	१३।४३	१६।३	१८।७	१९।४९	२१।१५	२२।३७	०।१०	२।५	४।१९
२१	६।३७	८।५७	११।१७	१३।३९	१५।५९	१८।३	१९।४५	२१।११	२२।३३	०।६	२।१	४।१५
२२	६।३३	८।५३	११।१३	१३।३५	१५।५५	१७।५९	१९।४१	२१।७	२२।२९	०।२	१।५७	४।११
२३	६।२९	८।४९	११।९	१३।३१	१५।५१	१७।५५	१९।३७	२१।३	२२।२५	२३।५८	१।५३	४।७
२४	६।२४	८।४४	११।४	१३।२६	१५।४६	१७।५०	१९।३२	२०।५८	२२।२०	२३।५३	१।४८	४।२
२५	६।२०	८।४०	११।०	१३।२२	१५।४२	१७।४६	१९।२८	२०।५४	२२।१६	२३।४९	१।४४	३।५८
२६	६।१६	८।३६	१०।५६	१३।१८	१५।३८	१७।४२	१९।२४	२०।५०	२२।१२	२३।४५	१।४०	३।५४
२७	६।१२	८।३२	१०।५२	१३।१४	१५।३४	१७।३८	१९।२०	२०।४६	२२।८	२३।४१	१।३६	३।५०
२८	६।८	८।२८	१०।४८	१३।१०	१५।३०	१७।३४	१९।१६	२०।४२	२२।४	२३।३७	१।३२	३।४६
२९	६।४	८।२४	१०।४४	१३।६	१५।२६	१७।३०	१९।१२	२०।३८	२२।०	२३।३३	१।२८	३।४२
३०	६।०	८।२०	१०।४०	१३।२	१५।२२	१७।२६	१९।८	२०।३४	२१।५६	२३।२९	१।२४	३।३८
३१	५।५६	८।१६	१०।३६	१२।५८	१५।१८	१७।२२	१९।४	२०।३०	२१।५२	२३।२५	१।२०	३।३४

सूचना मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(५) भाद्रपद मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रवि.	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
१	८।१७	१०।३७	१२।५८	१५।१८	१७।२२	१९।४	२०।३०	२१।५२	२३।२६	१।२०	३।३४	५।५६
२	८।१३	१०।३३	१२।५४	१५।१४	१७।१८	१९।०	२०।२६	२१।४८	२३।२२	१।१६	३।३०	५।५२
३	८।९	१०।२९	१२।५०	१५।१०	१७।१४	१८।५६	२०।२२	२१।४४	२३।१८	१।१२	३।२६	५।४८
४	८।५	१०।२५	१२।४६	१५।६	१७।१०	१८।५२	२०।१८	२१।४०	२३।१४	१।८	३।२२	५।४४
५	८।१	१०।२१	१२।४२	१५।२	१७।६	१८।४८	२०।१४	२१।३६	२३।१०	१।४	३।१८	५।४०
६	७।५७	१०।१७	१२।३८	१४।५८	१७।२	१८।४४	२०।१०	२१।३२	२३।६	१।०	३।१४	५।३६
७	७।५३	१०।१३	१२।३४	१४।५४	१६।५८	१८।४०	२०।६	२१।२८	२३।२	०।५६	३।१०	५।३२
८	७।४८	१०।८	१२।२९	१४।४९	१६।५३	१८।३५	२०।१	२१।२३	२२।५७	०।५१	३।५	५।२७
९	७।४४	१०।४	१२।२५	१४।४५	१६।४९	१८।३१	१९।५७	२१।१९	२२।५३	०।४७	३।१	५।२३
१०	७।४०	१०।०	१२।२१	१४।४१	१६।४५	१८।२७	१९।५३	२१।१५	२२।४९	०।४३	२।५७	५।१९
११	७।३६	९।५६	१२।१७	१४।३७	१६।४१	१८।२३	१९।४९	२१।११	२२।४५	०।३९	२।५३	५।१५
१२	७।३२	९।५२	१२।१३	१४।३३	१६।३७	१८।१९	१९।४५	२१।७	२२।४१	०।३५	२।४९	५।११
१३	७।२८	९।४८	१२।९	१४।२९	१६।३३	१८।१५	१९।४१	२१।३	२२।३७	०।३१	२।४५	५।७
१४	७।२४	९।४४	१२।५	१४।२५	१६।२९	१८।११	१९।३७	२०।५९	२२।३३	०।२७	२।४१	५।३
१५	७।१९	९।३९	१२।०	१४।२०	१६।२५	१८।६	१९।३२	२०।५४	२२।२८	०।२२	२।३६	४।५८
१६	७।१५	९।३५	११।५६	१४।१६	१६।२०	१८।२	१९।२८	२०।५०	२२।२४	०।१८	२।३२	४।५४
१७	७।११	९।३१	११।५२	१४।१२	१६।१६	१७।५८	१९।२४	२०।४६	२२।२०	०।१४	२।२८	४।५०
१८	७।७	९।२७	११।४८	१४।८	१६।१२	१७।५४	१९।२०	२०।४२	२२।१६	०।१०	२।२४	४।४६
१९	७।३	९।२३	११।४४	१४।४	१६।८	१७।५०	१९।१६	२०।३८	२२।१२	०।६	२।२०	४।४२
२०	६।५९	९।१९	११।४०	१४।०	१६।४	१७।४६	१९।१२	२०।३४	२२।८	०।२	२।१६	४।३८
२१	६।५५	९।१५	११।३६	१३।५६	१६।०	१७।४२	१९।८	२०।३०	२२।४	२३।५८	२।१२	४।३४
२२	६।५०	९।१०	११।३१	१३।५१	१५।५५	१७।३७	१९।३	२०।२५	२१।५९	२३।५३	२।७	४।२९
२३	६।४६	९।६	११।२७	१३।४७	१५।५१	१७।३३	१८।५९	२०।२१	२१।५५	२३।४९	२।३	४।२५
२४	६।४२	९।२	११।२३	१३।४३	१५।४७	१७।२९	१८।५५	२०।१७	२१।५१	२३।४५	१।५९	४।२१
२५	६।३८	८।५८	११।१९	१३।३९	१५।४३	१७।२५	१८।५१	२०।१३	२१।४७	२३।४१	१।५५	४।१७
२६	६।३४	८।५४	११।१५	१३।३५	१५।३९	१७।२१	१८।४७	२०।९	२१।४३	२३।३७	१।५१	४।१३
२७	६।३०	८।५०	११।११	१३।३१	१५।३५	१७।१७	१८।४३	२०।५	२१।३९	२३।३३	१।४७	४।९
२८	६।२६	८।४६	११।७	१३।२७	१५।३१	१७।१३	१८।३९	२०।१	२१।३५	२३।२९	१।४३	४।५
	६।२२	८।४२	११।३	१३।२३	१५।२७	१७।९	१८।३५	१९।५७	२१।३१	२३।२५	१।३९	४।१
	६।१८	८।३८	१०।५९	१३।१९	१५।२३	१७।५	१८।३१	१९।५३	२१।२७	२३।२१	१।३५	३।५७
	६।१४	८।३४	१०।५५	१३।१५	१५।१९	१७।१	१८।२७	१९।४९	२१।२३	२३।१७	१।३१	३।५३

(६) आश्विन मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
१	८।३४	१०।५६	१३।१५	१५।२०	१७।२	१८।२७	१९।५०	२१।२३	२३।१८	१।३२	३।५३	६।१४
२	८।३०	१०।५२	१३।११	१५।१६	१६।५८	१८।२३	१९।४६	२१।१९	२३।१४	१।२८	३।४९	६।१०
३	८।२६	१०।४८	१३।७	१५।१२	१६।५४	१८।१९	१९।४२	२१।१५	२३।१०	१।२४	३।४५	६।६
४	८।२२	१०।४४	१३।३	१५।८	१६।५०	१८।१५	१९।३८	२१।११	२३।६	१।२०	३।४१	६।२
५	८।१८	१०।४०	१२।५९	१५।४	१६।४६	१८।११	१९।३४	२१।७	२३।२	१।१६	३।३७	५।५८
६	८।१४	१०।३६	१२।५५	१५।०	१६।४२	१८।७	१९।३०	२१।३	२२।५८	१।१२	३।३३	५।५४
७	८।१०	१०।३२	१२।५१	१४।५६	१६।३८	१८।३	१९।२६	२०।५९	२२।५४	१।८	३।२९	५।५०
८	८।६	१०।२८	१२।४७	१४।५२	१६।३४	१७।५९	१९।२२	२०।५५	२२।५०	१।४	३।२५	५।४६
९	८।२	१०।२४	१२।४३	१४।४८	१६।३०	१७।५५	१९।१८	२०।५१	२२।४६	१।०	३।२१	५।४२
१०	७।५८	१०।२०	१२।३९	१४।४४	१६।२६	१७।५१	१९।१४	२०।४७	२२।४२	०।५६	३।१७	५।३८
११	७।५४	१०।१६	१२।३५	१४।४०	१६।२२	१७।४७	१९।१०	२०।४३	२२।३८	०।५२	३।१३	५।३४
१२	७।५०	१०।१२	१२।३१	१४।३६	१६।१८	१७।४३	१९।६	२०।३९	२२।३४	०।४८	३।९	५।३०
१३	७।४६	१०।८	१२।२७	१४।३२	१६।१४	१७।३९	१९।२	२०।३५	२२।३०	०।४४	३।५	५।२६
१४	७।४२	१०।४	१२।२३	१४।२८	१६।१०	१७।३५	१८।५८	२०।३१	२२।२६	०।४०	३।१	५।२२
१५	७।३८	१०।०	१२।१९	१४।२४	१६।६	१७।३१	१८।५४	२०।२७	२२।२२	०।३६	२।५७	५।१८
१६	७।३३	९।५५	१२।१४	१४।१९	१६।१	१७।२६	१८।४९	२०।२२	२२।१७	०।३१	२।५२	५।१३
१७	७।२९	९।५१	१२।१०	१४।१५	१५।५७	१७।२२	१८।४५	२०।१८	२२।१३	०।२७	२।४८	५।९
१८	७।२५	९।४७	१२।६	१४।११	१५।५३	१७।१८	१८।४१	२०।१४	२२।९	०।२३	२।४४	५।५
१९	७।२१	९।४३	१२।२	१४।७	१५।४९	१७।१४	१८।३७	२०।१०	२२।५	०।१९	२।४०	५।१
२०	७।१७	९।३९	११।५८	१४।३	१५।४५	१७।१०	१८।३३	२०।६	२२।१	०।१५	२।३६	४।५७
२१	७।१३	९।३५	११।५४	१३।५९	१५।४१	१७।६	१८।२९	२०।२	२१।५७	०।११	२।३२	४।५३
२२	७।९	९।३१	११।५०	१३।५५	१५।३७	१७।२	१८।२५	१९।५८	२१।५३	०।७	२।२८	४।४९
२३	७।५	९।२७	११।४६	१३।५१	१५।३३	१६।५८	१८।२१	१९।५४	२१।४९	०।३	२।२४	४।४५
२४	७।१	९।२३	११।४२	१३।४७	१५।२९	१६।५४	१८।१७	१९।५०	२१।४५	२३।५९	२।२०	४।४१
२५	६।५७	९।१९	११।३८	१३।४३	१५।२५	१६।५०	१८।१३	१९।४६	२१।४१	२३।५५	२।१६	४।३७
२६	६।५३	९।१५	११।३४	१३।३९	१५।२१	१६।४६	१८।९	१९।४२	२१।३७	२३।५१	२।१२	४।३३
२७	६।४९	९।११	११।३०	१३।३५	१५।१७	१६।४२	१८।५	१९।३८	२१।३३	२३।४७	२।८	४।२९
२८	६।४५	९।७	११।२६	१३।३१	१५।१३	१६।३८	१८।१	१९।३४	२१।२९	२३।४३	२।४	४।२५
२९	६।४१	९।३	११।२२	१३।२७	१५।९	१६।३४	१७।५७	१९।३०	२१।२५	२३।३९	२।०	४।२१
३०	६।३७	८।५९	११।१८	१३।२३	१५।५	१६।३०	१७।५३	१९।२६	२१।२१	२३।३५	१।५६	४।१७
३१	६।३३	८।५५	११।१४	१३।१९	१५।१	१६।२६	१७।४९	१९।२२	२१।१७	२३।३१	१।५२	४।१३

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(७) कार्तिक मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	८।५६	११।२५	१३।२०	१५।२	१६।२७	१७।५०	१९।२३	२१।१८	२३।३२	१।५३	४।१४	६।३४
२	८।५२	११।११	१३।१६	१४।५८	१६।२३	१७।४६	१९।१९	२१।१४	२३।२८	१।४९	४।१०	६।३०
३	८।४८	११।७	१३।१२	१४।५४	१६।१९	१७।४२	१९।१५	२१।१०	२३।२४	१।४५	४।६	६।२६
४	८।४४	११।३	१३।८	१४।५०	१६।१५	१७।३८	१९।११	२१।६	२३।२०	१।४१	४।२	६।२२
५	८।४०	१०।५९	१३।४	१४।४६	१६।११	१७।३४	१९।७	२१।२	२३।१६	१।३७	३।५८	६।१८
६	८।३५	१०।५४	१२।५९	१४।४१	१६।६	१७।२९	१९।२	२०।५७	२३।११	१।३२	३।५३	६।१३
७	८।३१	१०।५०	१२।५५	१४।३७	१६।२	१७।२५	१८।५८	२०।५३	२३।७	१।२८	३।४९	६।९
८	८।२७	१०।४६	१२।५१	१४।३३	१५।५८	१७।२१	१८।५४	२०।४९	२३।३	१।२४	३।४५	६।५
९	८।२३	१०।४२	१२।४७	१४।२९	१५।५४	१७।१७	१८।५०	२०।४५	२२।५९	१।२०	३।४१	६।१
१०	८।१९	१०।३८	१२।४३	१४।२५	१५।५०	१७।१३	१८।४६	२०।४१	२२।५५	१।१६	३।३७	५।५७
११	८।१५	१०।३४	१२।३९	१४।२१	१५।४६	१७।९	१८।४२	२०।३७	२२।५१	१।१२	३।३३	५।५३
१२	८।१०	१०।२९	१२।३४	१४।१६	१५।४१	१७।४	१८।३७	२०।३२	२२।४६	१।७	३।२८	५।४८
१३	८।६	१०।२५	१२।३०	१४।१२	१५।३७	१७।०	१८।३३	२०।२८	२२।४२	१।३	३।२४	५।४४
१४	८।२	१०।२१	१२।२६	१४।८	१५।३३	१६।५६	१८।२९	२०।२४	२२।३८	०।५९	३।२०	५।४०
१५	७।५८	१०।१७	१२।२२	१४।४	१५।२९	१६।५२	१८।२५	२०।२०	२२।३४	०।५५	३।१६	५।३६
१६	७।५४	१०।१३	१२।१८	१४।०	१५।२५	१६।४८	१८।२१	२०।१६	२२।३०	०।५१	३।१२	५।३२
१७	७।५०	१०।९	१२।१४	१३।५६	१५।२१	१६।४४	१८।१७	२०।१२	२२।२६	०।४७	३।८	५।२८
१८	७।४५	१०।४	१२।९	१३।५१	१५।१६	१६।३९	१८।१२	२०।७	२२।२१	०।४२	३।३	५।२३
१९	७।४१	१०।०	१२।५	१३।४७	१५।१२	१६।३५	१८।८	२०।३	२२।१७	०।३८	२।५९	५।१९
२०	७।३७	९।५६	१२।१	१३।४३	१५।८	१६।३१	१८।४	१९।५९	२२।१३	०।३४	२।५५	५।१५
२१	७।३३	९।५२	११।५७	१३।३९	१५।४	१६।२७	१८।०	१९।५५	२२।९	०।३०	२।५१	५।११
२२	७।२९	९।४८	११।५३	१३।३५	१५।०	१६।२३	१७।५६	१९।५१	२२।५	०।२६	२।४७	५।७
२३	७।२५	९।४४	११।४९	१३।३१	१४।५६	१६।१९	१७।५२	१९।४७	२२।१	०।२२	२।४३	५।३
२४	७।२०	९।३९	११।४४	१३।२६	१४।५१	१६।१४	१७।४७	१९।४२	२१।५६	०।१७	२।३८	४।५८
२५	७।१६	९।३५	११।४०	१३।२२	१४।४७	१६।१०	१७।४३	१९।३८	२१।५२	०।१३	२।३४	४।५४
२६	७।१२	९।३१	११।३६	१३।१८	१४।४३	१६।६	१७।३९	१९।३४	२१।४८	०।९	२।३०	४।५०
२७	७।८	९।२७	११।३२	१३।१४	१४।३९	१६।२	१७।३५	१९।३०	२१।४४	०।५	२।२६	४।४६
२८	७।४	९।२३	११।२८	१३।१०	१४।३५	१५।५८	१७।३१	१९।२६	२१।४०	०।१	२।२२	४।४२
२९	७।०	९।१९	११।२४	१३।६	१४।३१	१५।५४	१७।२७	१९।२२	२१।३६	२३।५७	२।१८	४।३८
३०	६।५६	९।१५	११।२०	१३।२	१४।२७	१५।५०	१७।२३	१९।१८	२१।३२	२३।५३	२।१४	४।३४

(८) मार्गशीर्ष मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	९।१८	११।२२	१३।४	१४।३०	१५।५२	१७।२५	१९।२०	२१।३४	२३।५६	२।१६	४।३६	६।५८
२	९।१४	११।१८	१३।०	१४।२६	१५।४८	१७।२१	१९।१६	२१।३०	२३।५२	२।१२	४।३२	६।५४
३	९।१०	११।१४	१२।५६	१४।२२	१५।४४	१७।१७	१९।१२	२१।२६	२३।४८	२।८	४।२८	६।५०
४	९।६	११।१०	१२।५२	१४।१८	१५।४०	१७।१३	१९।८	२१।२२	२३।४४	२।४	४।२४	६।४६
५	९।१	११।५	१२।४७	१४।१३	१५।३५	१७।८	१९।३	२१।१७	२३।३९	१।५९	४।१९	६।४१
६	८।५७	११।१	१२।४३	१४।९	१५।३१	१७।४	१८।५९	२१।१३	२३।३५	१।५५	४।१५	६।३७
७	८।५३	१०।५७	१२।३९	१४।५	१५।२७	१७।०	१८।५५	२१।९	२३।३१	१।५१	४।११	६।३३
८	८।४८	१०।५२	१२।३४	१४।०	१५।२२	१६।५५	१८।५०	२१।४	२३।२६	१।४६	४।६	६।२८
९	८।४४	१०।४८	१२।३०	१३।५६	१५।१८	१६।५१	१८।४६	२१।०	२३।२२	१।४२	४।२	६।२४
१०	८।४०	१०।४४	१२।२६	१३।५२	१५।१४	१६।४७	१८।४२	२०।५६	२३।१८	१।३८	३।५८	६।२०
११	८।३५	१०।३९	१२।२१	१३।४७	१५।९	१६।४२	१८।३७	२०।५१	२३।१३	१।३३	३।५३	६।१५
१२	८।३१	१०।३५	१२।१७	१३।४३	१५।५	१६।३८	१८।३३	२०।४७	२३।९	१।२९	३।४९	६।११
१३	८।२७	१०।३१	१२।१३	१३।३९	१५।१	१६।३४	१८।२९	२०।४३	२३।५	१।२५	३।४५	६।७
१४	८।२२	१०।२६	१२।८	१३।३४	१४।५६	१६।२९	१८।२४	२०।३८	२३।०	१।२०	३।४०	६।२
१५	८।१८	१०।२२	१२।४	१३।३०	१४।५२	१६।२५	१८।२०	२०।३४	२२।५६	१।१६	३।३६	५।५८
१६	८।१४	१०।१८	१२।०	१३।२६	१४।४८	१६।२१	१८।१६	२०।३०	२२।५२	१।१२	३।३२	५।५४
१७	८।९	१०।१३	११।५५	१३।२१	१४।४३	१६।१६	१८।११	२०।२५	२२।४७	१।७	३।२७	५।४९
१८	८।५	१०।९	११।५१	१३।१७	१४।३९	१६।१२	१८।७	२०।२१	२२।४३	१।३	३।२३	५।४५
१९	८।१	१०।५	११।४७	१३।१३	१४।३५	१६।८	१८।३	२०।१७	२२।३९	०।५९	३।१९	५।४१
२०	७।५७	१०।१	११।४३	१३।९	१४।३१	१६।४	१७।५९	२०।१३	२२।३५	०।५५	३।१५	५।३७
२१	७।५२	९।५६	११।३८	१३।४	१४।२६	१५।५९	१७।५४	२०।८	२२।३०	०।५०	३।१०	५।३२
२२	७।४८	९।५२	११।३४	१३।०	१४।२२	१५।५५	१७।५०	२०।४	२२।२६	०।४६	३।६	५।२८
२३	७।४४	९।४८	११।३०	१२।५६	१४।१८	१५।५१	१७।४६	२०।०	२२।२२	०।४२	३।२	५।२४
२४	७।३९	९।४३	११।२५	१२।५१	१४।१३	१५।४६	१७।४१	१९।५५	२२।१७	०।३७	२।५७	५।१९
२५	७।३५	९।३९	११।२१	१२।४७	१४।९	१५।४२	१७।३७	१९।५१	२२।१३	०।३३	२।५३	५।१५
२६	७।३१	९।३५	११।१७	१२।४३	१४।५	१५.३८	१७।३३	१९।४७	२२।९	०।२९	२।४९	५।११
२७	७।२६	९।३०	११।१२	१२।३८	१४।०	१५।३३	१७।२८	१९।४२	२२।४	०।२४	२।४४	५।६
२८	७।२२	९।२६	११।८	१२।३४	१३।५६	१५।२९	१७।२४	१९।३८	२२।०	०।२०	२।४०	५।२
२९	७।१८	९।२२	११।४	१२।३०	१३।५२	१५।२५	१७।२०	१९।३४	२१।५६	०।१६	२।३६	४।५८

सूचना:—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्नका प्रारम्भ जानना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(९) पौष मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
१	९।२३	११।५	१२।३१	१३।५३	१५।२७	१७।२१	१९।३५	२१।५७	०।१८	२।३८	४।५९	७।१९
२	९।१८	११।०	१२।२५	१३।४८	१५।२२	१७।१६	१९।३०	२१।५२	०।१३	२।३३	४।५४	७।१४
३	९।१४	१०।५६	१२।२२	१३।४४	१५।१८	१७।१२	१९।२६	२१।४८	०।९	२।२९	४।५०	७।१०
४	९।१०	१०।५२	१२।१८	१३।४०	१५।१४	१७।८	१९।२२	२१।४४	०।५	२।२५	४।४६	७।६
५	९।६	१०।४८	१२।१४	१३।३६	१५।१०	१७।४	१९।१८	२१।४०	०।१	२।२१	४।४२	७।२
६	९।२	१०।४४	१२।१०	१३।३२	१५।६	१७।०	१९।१४	२१।३६	२३।५७	२।१७	४।३८	६।५८
७	८।५८	१०।४०	१२।६	१३।२८	१५।२	१६।५६	१९।१०	२१।३२	२३।५३	२।१३	४।३४	६।५४
८	८।५४	१०।३६	१२।२	१३।२४	१४।५८	१६।५२	१९।६	२१।२८	२३।४९	२।९	४।३०	६।५०
९	८।५०	१०।३२	११।५८	१३।२०	१४।५४	१६।४८	१९।२	२१।२४	२३।४५	२।५	४।२६	६।४६
१०	८।४५	१०।२७	११।५३	१३।१५	१४।४९	१६।४३	१८।५७	२१।१९	२३।४०	२।०	४।२१	६।४१
११	८।४१	१०।२३	११।४९	१३।११	१४।४५	१६।३९	१८।५३	२१।१५	२३।३६	१।५६	४।१७	६।३७
१२	८।३७	१०।१९	११।४५	१३।७	१४।४१	१६।३५	१८।४९	२१।११	२३।३२	१।५२	४।१३	६।३३
१३	८।३३	१०।१५	११।४१	१३।३	१४।३७	१६।३१	१८।४५	२१।७	२३।२८	१।४८	४।९	६।२९
१४	८।२९	१०।११	११।३७	१२।५९	१४।३३	१६।२७	१८।४१	२१।३	२३।२४	१।४४	४।५	६।२५
१५	८।२५	१०।७	११।३३	१२।५५	१४।२९	१६।२३	१८।३७	२०।५९	२३।२०	१।४०	४।१	६।२१
१६	८।२१	१०।३	११।२९	१२।५१	१४।२५	१६।१९	१८।३३	२०।५५	२३।१६	१।३६	३।५७	६।१७
१७	८।१७	९।५९	११।२५	१२।४७	१४।२१	१६।१५	१८।२९	२०।५१	२३।१२	१।३२	३।५३	६।१३
१८	८।१३	९।५५	११।२१	१२।४३	१४।१७	१६।११	१८।२५	२०।४७	२३।८	१।२८	३।४९	६।९
१९	८।९	९।५१	११।१७	१२।३९	१४।१३	१६।७	१८।२१	२०।४३	२३।४	१।२४	३।४५	६।५
२०	८।४	९।४६	११।१२	१२।३४	१४।८	१६।२	१८।१६	२०।३८	२२।५९	१।१९	३।४०	६।०
२१	८।०	९।४२	११।८	१२।३०	१४।४	१५।५८	१८।१२	२०।३४	२२।५५	१।१५	३।३६	५।५६
२२	७।५६	९।३८	११।४	१२।२६	१४।०	१५।५४	१८।८	२०।३०	२२।५१	१।११	३।३२	५।५२
२३	७।५२	९।३४	११।०	१२।२२	१३।५६	१५।५०	१८।४	२०।२६	२२।४७	१।७	३।२८	५।४८
२४	७।४८	९।३०	१०।५६	१२।१८	१३।५२	१५।४६	१८।०	२०।२२	२२।४३	१।३	३।२४	५।४४
२५	७।४४	९।२६	१०।५२	१२।१४	१३।४८	१५।४२	१७।५६	२०।१८	२२।३९	०।५९	३।२०	५।४०
२६	७।४०	९।२२	१०।४८	१२।१०	१३।४४	१५।३८	१७।५२	२०।१४	२२।३५	०।५५	३।१६	५।३६
२७	७।३६	९।१८	१०।४४	१२।६	१३।४०	१५।३४	१७।४८	२०।१०	२२।३१	०।५१	३।१२	५।३२
२८	७।३२	९।१४	१०।४०	१२।२	१३।३६	१५।३०	१७।४४	२०।६	२२।२७	०।४७	३।८	५।२८
२९	७।२८	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१५।२६	१७।४०	२०।२	२२।२३	०।४३	३।४	५।२४

(१०) माघ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
१	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१५।२६	१७।४०	२०।२	२२।२२	०।४२	३।४	५।२४	७।२८
२	९।६	१०।३२	११।५४	१३।२८	१५।२२	१७।३६	१९।५८	२२।१८	०।३८	३।०	५।२०	७।२४
३	९।२	१०।२८	११।५०	१३।२४	१५।१८	१७।३२	१९।५४	२२।१४	०।३४	२।५६	५।१६	७।२०
४	८।५८	१०।२४	११।४६	१३।२०	१५।१४	१७।२८	१९।५०	२२।१०	०।३०	२।५२	५।१२	७।१६
५	८।५४	१०। ०	११।४२	१३।१६	१५।१०	१७।२४	१९।४६	२२।६	०।२६	२।४८	५।८	७।१२
६	८।५०	१०।१६	११।३८	१३।१२	१५।६	१७।२०	१९।४२	२२।२	०।२२	२।४४	५।४	७।८
७	८।४६	१०।१२	११।३४	१३।८	१५।२	१७।१६	१९।३८	२१।५८	०।१८	२।४०	५।०	७।४
८	८।४२	१०।८	११।३०	१३।४	१४।५८	१७।१२	१९।३४	२१।५४	०।१४	२।३६	४।५६	७।०
९	८।३८	१०।४	११।२६	१३।०	१४।५४	१७।८	१९।३०	२१।५०	०।१०	२।३२	४।५२	६।५६
१०	८।३४	१०।०	११।२२	१२।५६	१४।५०	१७।४	१९।२६	२१।४६	०।६	२।२८	४।४८	६।५२
११	८।३०	९।५६	११।१८	१२।५२	१४।४६	१७।०	१९।२२	२१।४२	०।२	२।२४	४।४४	६।४८
१२	८।२६	९।५२	११।१४	१२।४८	१४।४२	१६।५६	१९।१८	२१।३८	२३।५८	२।२०	४।४०	६।४४
१३	८।२२	९।४८	११।१०	१२।४४	१४।३८	१६।५२	१९।१४	२१।३४	२३।५४	२।१६	४।३६	६।४०
१४	८।१८	९।४४	११।६	१२।४०	१४।३४	१६।४८	१९।१०	२१।३०	२३।५०	२।१२	४।३२	६।३६
१५	८।१३	९।३९	११।१	१२।३५	१४।२९	१६।४३	१९।५	२१।२५	२३।४६	२।७	४।२७	६।३१
१६	८।९	९।३५	१०।५७	१२।३१	१४।२५	१६।३९	१९।१	२१।२१	२३।४२	२।३	४।२३	६।२७
१७	८।५	९।३१	१०।५३	१२।२७	१४।२१	१६।३५	१८।५७	२१।१७	२३।३७	१।५९	४।१९	६।२३
१८	८।१	९।२७	१०।४९	१२।२३	१४।१७	१६।३१	१८।५३	२१।१३	२३।३३	१।५५	४।१५	६।१९
१९	७।५७	९।२३	१०।४५	१२।१९	१४।१३	१६।२७	१८।४९	२१।९	२३।२९	१।५१	४।११	६।१५
२०	७।५३	९।१९	१०।४१	१२।१५	१४।९	१६।२३	१८।४५	२१।५	२३।२५	१।४७	४।७	६।११
२१	७।४९	९।१५	१०।३७	१२।११	१४।५	१६।१९	१८।४१	२१।१	२३।२१	१।४३	४।३	६।७
२२	७।४५	९।११	१०।३३	१२।७	१४।१	१६।१५	१८।३७	२०।५७	२३।१७	१।३९	३।५९	६।३
२३	७।४१	९।७	१०।२९	१२।३	१३।५७	१६।११	१८।३३	२०।५३	२३।१३	१।३५	३।५५	५।५९
२४	७।३७	९।३	१०।२५	११।५९	१३।५३	१६।७	१८।२९	२०।४९	२३।९	१।३१	३।५१	५।५५
२५	७।३३	८।५९	१०।२१	११।५५	१३।४९	१६।३	१८।२५	२०।४५	२३।५	१।२७	३।४७	५।५१
२६	७।२९	८।५५	१०।१७	११।५१	१३।४५	१५।५९	१८।२१	२०।४१	२३।१	१।२३	३।४३	५।४७
२७	७।२५	८।५१	१०।१३	११।४७	१३।४१	१५।५५	१८।१७	२०।३७	२२।५७	१।१९	३।३९	५।४३
२८	७।२१	८।४७	१०।९	११।४३	१३।३७	१५।५१	१८।१३	२०।३३	२२।५३	१।१५	३।३५	५।३९
२९	७।१७	८।४३	१०।५	११।३९	१३।३३	१५।४७	१८।९	२०।२९	२२।४९	१।११	३।३१	५।३५
३०	७।१३	८।३९	१०।१	११।३५	१३।२९	१५।४३	१८।५	२०।२५	२२।४५	१।७	३।२७	५।३१

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह [illegible] पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उस से पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(११) फाल्गुन मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
१	८।३८	१०।०	११।३४	१३।२८	१५।४२	१८।४	२०।२४	२२।४४	१।६	३।२६	५।३०	७।१२
२	८।३४	९।५६	११।३०	१३।२४	१५।३८	१८।०	२०।२०	२२।४०	१।२	३।२२	५।२६	७।८
३	८।३०	९।५२	११।२६	१३।२०	१५।३४	१७।५६	२०।१६	२२।३६	०।५८	३।१८	५।२२	७।४
४	८।२६	९।४८	११।२२	१३।१६	१५।३०	१७।५२	२०।१२	२२।३२	०।५४	३।१४	५।१८	७।०
५	८।२२	९।४४	११।१८	१३।१२	१५।२६	१७।४८	२०।८	२२।२८	०।५०	३।१०	५।१४	६।५६
६	८।१८	९।४०	११।१४	१३।८	१५।२२	१७।४४	२०।४	२२।२४	०।४६	३।६	५।१०	६।५२
७	८।१४	९।३६	११।१०	१३।४	१५।१८	१७।४०	२०।०	२२।२०	०।४२	३।२	५।६	६।४८
८	८।१०	९।३२	११।६	१३।०	१५।१४	१७।३६	१९।५६	२२।१६	०।३८	२।५८	५।२	६।४४
९	८।६	९।२८	११।२	१२।५६	१५।१०	१७।३२	१९।५२	२२।१२	०।३४	२।५४	४।५८	६।४०
१०	८।२	९।२४	१०।५८	१२।५२	१५।६	१७।२८	१९।४८	२२।८	०।३०	२।५०	४।५४	६।३६
११	७।५८	९।२०	१०।५४	१२।४८	१५।२	१७।२४	१९।४४	२२।४	०।२६	२।४६	४।५०	६।३२
१२	७।५४	९।१६	१०।५०	१२।४४	१४।५८	१७।२०	१९।४०	२२।०	०।२२	२।४२	४।४६	६।२८
१३	७।५०	९।१२	१०।४६	१२।४०	१४।५४	१७।१६	१९।३६	२१।५६	०।१८	२।३८	४।४२	६।२४
१४	७।४६	९।८	१०।४२	१२।३६	१४।५०	१७।१२	१९।३२	२१।५२	०।१४	२।३४	४।३८	६।२०
१५	७।४१	९।३	१०।३७	१२।३१	१४।४५	१७।७	१९।२७	२१।४७	०।९	२।२९	४।३३	६।१५
१६	७।३७	८।५९	१०।३३	१२।२७	१४।४१	१७।३	१९।२३	२१।४३	०।५	२।२५	४।२९	६।११
१७	७।३३	८।५५	१०।२९	१२।२३	१४।३७	१६।५९	१९।१९	२१।३९	०।१	२।२१	४।२५	६।७
१८	७।२९	८।५१	१०।२५	१२।१९	१४।३३	१६।५५	१९।१५	२१।३५	२३।५७	२।१७	४।२१	६।३
१९	७।२५	८।४७	१०।२१	१२।१५	१४।२९	१६।५१	१९।११	२१।३१	२३।५३	२।१३	४।१७	५।५९
२०	७।२१	८।४३	१०।१७	१२।११	१४।२५	१६।४७	१९।७	२१।२७	२३।४९	२।९	४।१३	५।५५
२१	७।१७	८।३९	१०।१३	१२।७	१४।२१	१६।४३	१९।३	२१।२३	२३।४५	२।५	४।९	५।५१
२२	७।१३	८।३५	१०।९	१२।३	१४।१७	१६।३९	१८।५९	२१।१९	२३।४१	२।१	४।५	५।४७
२३	७।९	८।३१	१०।५	११।५९	१४।१३	१६।३५	१८।५५	२१।१५	२३।३७	१।५७	४।१	५।४३
२४	७।५	८।२७	१०।१	११।५५	१४।९	१६।३१	१८।५१	२१।११	२३।३३	१।५३	३।५७	५।३९
२५	७।१	८।२३	९।५७	११।५१	१४।५	१६।२७	१८।४७	२१।७	२३।२९	१।४९	३।५३	५।३५
२६	६।५७	८।१९	९।५३	११।४७	१४।१	१६।२३	१८।४३	२१।३	२३।२५	१।४५	३।४९	५।३१
२७	६।५३	८।१५	९।४९	११।४३	१३।५७	१६।१९	१८।३९	२०।५९	२३।२१	१।४१	३।४५	५।२७
२८	६।४९	८।११	९।४५	११।३९	१३।५३	१६।१५	१८।३५	२०।५५	२३।१७	१।३७	३।४१	५।२३
२९	६।४५	८।७	९।४१	११।३५	१३।४९	१६।११	१८।३१	२०।५१	२३।१३	१।३३	३।३७	५।१९
३०	६।४१	८।३	९।३७	११।३१	१३।४५	१६।७	१८।२७	२०।४७	२३।९	१।२९	३।३३	५।१५

(१२) चैत्र मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
१	८।२	९।३६	११।३०	१३।४४	१६।६	१८।२७	२०।४७	२३।८	१।२८	३।३२	५।१४	६।४०
२	७।५८	९।३२	११।२६	१३।४०	१६।२	१८।२३	२०।४३	२३।४	१।२४	३।२८	५।१०	६।३६
३	७।५४	९।२८	११।२२	१३।३६	१५।५८	१८।१९	२०।३९	२३।०	१।२०	३।२४	५।६	६।३२
४	७।५०	९।२४	११।१८	१३।३२	१५।५४	१८।१५	२०।३५	२२।५६	१।१६	३।२०	५।२	६।२८
५	७।४६	९।२०	११।१४	१३।२८	१५।५०	१८।११	२०।३१	२२।५२	१।१२	३।१६	४।५८	६।२४
६	७।४२	९।१६	११।१०	१३।२४	१५।४६	१८।७	२०।२७	२२।४८	१।८	३।१२	४।५४	६।२०
७	७।३८	९।१२	११।६	१३।२०	१५।४२	१८।३	२०।२३	२२।४४	१।४	३।८	४।५०	६।१६
८	७।३४	९।८	११।२	१३।१६	१५।३८	१७।५९	२०।१९	२२।४०	१।०	३।४	४।४६	६।१२
९	७।३०	९।४	१०।५८	१३।१२	१५।३४	१७।५५	२०।१५	२२।३६	०।५६	३।०	४।४२	६।८
१०	७।२५	८।५९	१०।५३	१३।७	१५।२९	१७।५०	२०।१०	२२।३१	०।५१	२।५५	४।३७	६।३
११	७।२१	८।५५	१०।४९	१३।३	१५।२५	१७।४६	२०।६	२२।२७	०।४७	२।५१	४।३३	५।५९
१२	७।१७	८।५१	१०।४५	१२।५९	१५।२१	१७।४२	२०।२	२२।२३	०।४३	२।४७	४।२९	५।५५
१३	७।१३	८।४७	१०।४१	१२।५५	१५।१७	१७।३८	१९।५८	२२।१९	०।३९	२।४३	४।२५	५।५६
१४	७।९	८।४३	१०।३७	१२।५१	१५।१३	१७।३४	१९।५४	२२।१५	०।३५	२।३९	४।२१	५।४७
१५	७।५	८।३९	१०।३३	१२।४७	१५।९	१७।३०	१९।५०	२२।११	०।३१	२।३५	४।१७	५।४३
१६	७।१	८।३५	१०।२९	१२।४३	१५।५	१७।२६	१९।४६	२२।७	०।२७	२।३१	४।१३	५।३९
१७	६।५७	८।३१	१०।२५	१२।३९	१५।१	१७।२२	१९।४२	२२।३	०।२३	२।२७	४।९	५।३५
१८	६।५३	८।२७	१०।२१	१२।३५	१४।५७	१७।१८	१९।३८	२१।५९	०।१९	२।२३	४।५	५।३१
१९	६।४९	८।२३	१०।१७	१२।३१	१४।५३	१७।१४	१९।३४	२१।५५	०।१५	२।१९	४।१	५।२७
२०	६।४४	८।१८	१०।१२	१२।२६	१४।४८	१७।९	१९।२९	२१।५०	०।१०	२।१४	३।५६	५।२२
२१	६।४०	८।१४	१०।८	१२।२२	१४।४४	१७।५	१९।२५	२१।४६	०।६	२।१०	३।५२	५।१८
२२	६।३६	८।१०	१०।४	१२।१८	१४।४०	१७।१	१९।२१	२१।४२	०।२	२।६	३।४८	५।१४
२३	६।३२	८।६	१०।०	१२।१४	१४।३६	१६।५७	१९।१७	२१।३८	२३।५८	२।२	३।४४	५।१०
२४	६।२८	८।२	९।५६	१२।१०	१४।३२	१६।५३	१९।१३	२१।३४	२३।५४	१।५८	३।४०	५।६
२५	६।२४	७।५८	९।५२	१२।६	१४।२८	१६।४९	१९।९	२१।३०	२३।५०	१।५४	३।३६	५।२
२६	६।२०	७।५४	९।४८	१२।२	१४।२४	१६।४५	१९।५	२१।२६	२३।४६	१।५०	३।३२	४।५८
२७	६।१६	७।५०	९।४४	११।५८	१४।२०	१६।४१	१९।१	२१।२२	२३।४२	१।४६	३।२८	४।५४
२८	६।१२	७।४६	९।४०	११।५४	१४।१६	१६।३७	१८।५७	२१।१८	२३।३८	१।४२	३।२४	४।५०
२९	६।८	७।४२	९।३६	११।५०	१४।१२	१६।३३	१८।५३	२१।१४	२३।३४	१।३८	३।२०	४।४६
३०	६।४	७।३८	९।३२	११।४६	१४।८	१६।२९	१८।४९	२१।१०	२३।३०	१।३४	३।१६	४।४२

सूचना:—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्नसारणी देखने की रीति–

दैनिक लग्नसारणी में जो घण्टे मिनट लिखे हैं। वे रेल्वे व्यावहारिक ढंग से लिखे गये हैं जैसे रात के १ को १ लिखा गया है और दिन के १ को १३, तथा २ को १४, एवं ३ को१५, रात के १२ को २४ (०) लिखा है। जैसे––वैशाख प्रविष्टे १० को ५ बजे शाम का लग्न देखना है तो वैशाख मास की सारणी में उस दिन १५।४९ सिंह है यानें मध्याह्नोत्तर ३।४९ बजे तक सिंह लग्न खतम होकर कन्या लग्न शुरू हो गया जिसका समाप्तिकाल १८।९ अर्थात् शाम के ६ बजकर ९ मिनट पर है अतः मध्याह्नोत्तर ५ बजे कन्या लग्न की संधि में एक आध मिनट का कहीं २ अन्तर रहेगा।

अथ चन्द्रोदयास्त ज्ञानम्–तिथिप्रमाणेन हतं निशायाः प्रमाणमूनं च युतं भुजाभ्याम्। कृष्णे सिते यास्तिथिभक्तनाडयश्चन्द्रोदये चास्तमये च ताः स्युः ॥१॥ भावार्थ––जिस तिथि का चन्द्रोदयास्त मालूम करना हो उस तिथि की संख्या से उस दिन के रात्रिमान की घट्यादि को गुणें, शुक्लपक्ष की तिथि हो तो उसमें २ घटी जोड़ना, यदि कृष्णपक्ष की हो तो गुणन की हुई अंक संख्या में से दो घटी निकाल देना तदनन्तर उसमें १५ का भाग देकर दो फल घटी पलात्मक लाना, यदि शुक्लपक्ष की तिथि हो तो लब्ध घट्यादि के समय सूर्यास्त के अनन्तर चन्द्रास्त होगा, यदि कृष्णपक्ष हो तो लब्ध पलात्मक फल को दिनमान में युक्त करने से जो घट्यादि होवे उतनी घटी सूर्योदय के पीछे चन्द्रोदय होगा। इस रीति से चन्द्रोदय स्थलमान से आता है, सूक्ष्म चन्द्रोदयास्त "सर्वानन्द लाघव" से जानो।

घण्टात्मक स्पष्ट स्वदेशीय (लोकल) टाइम से घट्यादिक इष्ट निकालने की रीति––

यदि प्रश्न वा जन्म समय का लोकल टाइम दिन के १२ बजे से पहिले हो तो जन्म वा प्रश्नकाल के लोकल घण्टे मिन्टों में से सूर्योदय के लोकल घण्टे मिन्टों को घटा कर जो घंटे मिनट शेष बचें, उनकी घड़ी पल बना लो, बस वही सूर्योदयात् शुद्धेष्ट होगा। यदि दिन के १२ बजे के बाद रात के १२ बजे तक जन्म व प्रश्न काल हो तो घण्टे मिनटों के घड़ी पल बना कर दिनार्द्ध में जोड़ने से सूर्योदयात् इष्टकाल आता है। यदि रात के १२ बजे से पीछे अर्द्धोदय पर्यन्त का इष्ट काल अपेक्षित हो तो १२ बजे के अनन्तर जितने घण्टे मिनट हो गये हों उनकी घड़ी पल बना कर उस दिन के मिश्रमान (दिनार्द्ध में से ३० घड़ी जोड़े हुए अंक) में जोड़ देने से सूर्योदयात् शुद्धेष्ट काल होगा।

अथवा जेब घड़ी द्वारा अभीष्ट दिन का स्वदेशीय सूर्योदय पहिले मिला कर नोट कर रक्खें, या दूसरे दिन मिला लें, फिर जितने घण्टे मिनट सूर्योदय से जन्म अथवा प्रश्न पर्यन्त व्यतीत हो चुके हों उनकी घड़ी पल बना लेने से भी सूर्योदयात् शुद्धेष्ट आता है। इसमें स्टैंडर्ड लोकल टाइम का अन्तर जोड़ने घटाने की कोई आवश्यकता नहीं।

नोट––१ घड़ी में २४ मिनट, एक मिनट में २॥ पल और एक सैकिण्ड में २॥ विपल होते हैं।

द्वादशांगुल शंकु पर से इष्ट साधन–

यदि किसी स्थान पर अंगरेजी घड़ी न मिले तो ज्योतिर्विदाम् ... ज्ञानार्थं आर्यभट्टोक्तद्वादशांगुलशंकु (गाजर सदृश ऊपर से पतला नीचे से मोटा गोलाकार) से इष्टकाल साधन करे––परद्युमानं दिनमानवर्जितं नगघ्नमक्षाप्तमहस्तु मध्यभा। भावार्थ––परमदिनमान (स्वदेशीय सब दिनमानों से बड़ा दिनमान) जो सूर्य की सायन कर्क संक्रांति के दिन होता है, उसमें से इष्ट दिनमान को हीन करें, शेष को सात गुणा करे फिर ५ से भाग दें जो लब्ध मिले सो इष्ट दिन में उसी देश की मध्यभा (मध्यान्हा छाया) होती है, अर्थात् बारह अंगुल के शंकु की छाया होती है। द्युमध्यभोना दशयुङ्निजेष्टभा शराहताहर्मितिमुद्धरेत्तया। क्रमान्मतापूर्वपराद्यखण्डयोर्द्वयोरवाप्ता गतगम्यनाड़िका॥ जिस समय का इष्टकाल जानना हो उस समय शंकु की अंगुल व्यंगुलात्मक छाया (इष्टभा) को दश १० में युक्त करे फिर इस योग में पूर्व सिद्ध मध्यभा को घटा दे,जो शेष बचे वह भाजक (जिस का भाग देना है) होता है, अपने घटी पलात्मक दिनमान को पांच गुणा कर देने पर भाज्य (जिस अंक में भाग देना है) होता है, भाज्य में भाजक का भाग देकर दो फल लाना जो फल आवें वह घटी पलात्मक इष्ट काल आता है। परन्तु इसमें यह स्मरण रक्खें कि यदि मध्याह्न से पहले नापा हो तो इतने घटी पल गत और मध्याह्न से पीछे नापा हो तो, इतने घटी पल शेष दिन है ऐसा जानना।

अथ प्रसूति लग्न विचार

मेष––जन्म समय मेष लग्न हो तो माता का पूर्व या पश्चिम में शिर, उपसूतिका २ या तीन, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरांत दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवं मीठा भोजन किया था। वस्त्र लालमलीन। ४।११।१६।४४।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान गोदान मृत्युञ्जय जप करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों में बचे तो १०० वर्ष जीवे।

वृष––माता का दक्षिण में सिर, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो और आईं, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर के पूर्व हिस्से में सूतिका स्थान श्वेत स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहिले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया, १।२८। ३३।४४।६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय जप और ब्राह्मण भोजन करवाना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन––माता का शिर पश्चिम में, उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, शिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्रान्न भोजन किया, दूध कम उतरे, ४।१०। १४।३८।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवावे। यदि इन वर्षों से बचे तो ८६ वर्ष जीवे।

कर्क––माता का उत्तर में शिर, उपसूतिका ५ या ४ बालक जन्मते ही छींका, नाल छूटा, भूमि पर जन्मा, घर के दक्षिणभाग में प्रसवस्थान, माता के वस्त्र श्वेत व लाल, माता ने प्रसव के पहले मधुर एवं शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया, बालक के वामांग में लहसन आदि का चिन्ह, देर से रोया, ५।२५।४०।४८।६२ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे, इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेशसमय तुलादान, छायादान मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जाप करवाना कल्याणप्रद है।

सिंह––... पश्चिम या पूर्व में शिर, मलीन सा लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

द्वादशांगुल शंकु पर से इष्ट साधन—

यदि किसी स्थान पर अंगरेजी घड़ी न मिले तो ज्योतिषी को चाहिये कि सूक्ष्मेष्ट

बली मन्त्र का जाप करवाना कल्याणप्रद है ।

सिंह—माता का पश्चिम या पूर्व में शिर, मलीन सा लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या

खट्टा भोजन किया था, जन्म समय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, ५।१३।२८।३६।४८। इन वर्षों में बालक कष्ट पावे । इनसे बचे तो ६७ वर्ष जीवे । कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्यनारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा ।

कन्या—माता का दक्षिण में शिर, रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्टान्न बासी चीज या बड़े आदि का भोजन, जन्म समय स्त्री ३ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते ही अर्ध शब्द किया । घर के नैऋत कोण में सूतिका स्थान, ४।१६।२३।३६।५५ वर्ष कष्टकारक हैं, यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे ।

तुला—माता का शिर पश्चिम या पूर्व को, श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ अन्न, ठण्डा जल या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई गई थी, जन्म समय स्त्री ३ या ६, वहां १ कन्या भी हो दीपक उठाया गया, बालक जन्मसमय कुछ ठहर कर अर्द्ध शब्द करके रोया, घर के पश्चिम भाग में सूतिका स्थान, ८।१५।३१।३५।६२।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रह का दान, हवन जप करवाना श्रेष्ठ है । यदि इनवर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे ।

वृश्चिक—माता का दक्षिण या उत्तर में शिर, रक्त या दग्ध वस्त्र, कष्ट अधिक, अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ३, पीछे से भी दो आई, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया और छींक भी किया, दीर्घ केश घर के पश्चिम भाग में प्रसवस्थान, ११।२८।३८।५२।६२ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है । यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे ।

धनु:—माता का शिर पश्चिम या पूर्व को, पीत वा रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्मसमय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ से उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के वायव्य कोण में सूतिकास्थान, २।१०।१८।३१।३८। ४२।६७ इन वर्षों के प्रारम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मण भोजन श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८१ वर्ष जीवे ।

मकर—माता का शिर दक्षिण में, ऊपर काला या जीर्ण कमजोर वस्त्र, गुड़, दुग्ध कसैला भोजन, ठण्डा जल पान किया था, जन्म समय स्त्रियां २, पीछे से १ आई, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तर भाग में पुराना सूतिकास्थान, ५।१३।२७।३६।५७।६३।८७ इन कष्टकारक वर्षों से बचे तो ९५ वर्ष जीवे ।

कुम्भ—माता का शिर पश्चिम को, जीर्ण धूम्र वर्ण या कुरूप वस्त्र, मधुर शीत शाकादि कुभोजन, कष्ट अधिक, जन्म समय पास स्त्रियां ४ या २, १ स्त्री पीछे से आई उनमें एक स्त्री गर्भिणी भी हो । दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया, वामांग में कोई चिन्ह भी हो, घर के उत्तर भाग में सूतिकागृह, २।२८।३३।४८।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप हितकारक है, इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे ।

मीन—माता का शिर उत्तर में, पीत या मलीन वस्त्र, विच्छिन्न सा अल्प भोजन, जन्म समय स्त्री २या ५, दीपक हाथ से उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान कोण में सूतिका स्थान, १।८।१३।३६।४८ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में ग्रहशान्ति हवन मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ ९ वर्ष जीवे ।

स्मरण रहे कि अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिलें वही बालक का जन्म लग्न जानना, क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते ।

अथादौ पितृपरोक्ष ज्ञानम्—१ जन्म लग्न को चन्द्रमा न देखे, २ बुध शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो, ३ लग्न में शनैश्चर चन्द्रमा से अदृष्ट हो, ४ भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो, इन ४ योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना ।

जहां राहु शय्या तहां भंग जहां कुज होय ।
रविस्थान में दीप कहि शनी लोह कहि सोय ।।

जन्मकुण्डली में दिशा ज्ञान—लग्न पूर्व, द्वितीय तृतीय ईशान । चतुर्थतउत्तर । पञ्चम षष्ठ वायव्य । सप्तम पश्चिम । अष्टम नवम नैऋत । दशम दक्षिण । एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना ।

अथ प्रसूतिस्थानात् पाकशालादि विचार:—

जन्म कुण्डली में सूर्य मंगल जिस दिशा में हों वहां अग्निस्थान (पाकगृह) जानना, इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान, और शनि से अशुभ (मैला) स्थान जानना चाहिये । दो० लग्ननाथ जो केन्द्र में तौन दिशा को द्वार । वा लग्नप दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार । केन्द्र (१।४।७।१०) स्थान में एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें जो बली (स्वराशिमित्रोच्च व मूल त्रिकोण राशि का केन्द्र स्थान में स्वमित्र शुभ के नवांश में स्थित । ग्रह हो उसकी दिशा में या लग्नपति की दिशा में सूतिका गृह का द्वार होता है । ग्रहोंको दिशा—सूर्य की पूर्व चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनैश्चर की पश्चिम, राहु केतु की नैऋत ।

चन्द्रात्तैलज्ञानम्— चन्द्रमा से दीपक के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रिका जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं तो दीपक में तेल ज्यादा कहना यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो तो दीपक में आधा तेल कहना, यदि चन्द्रमा, शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तेल कहना । सो—तनुस्थान शशि जाई, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशु जन्मे तब आई, तब कहि दीपक तैल नहि । सित शनिदशमें धाम पञ्चम तनुपै चन्द्रमा, शिशु जन्मे तब वाम, दीप तैल सों युक्ति कहि ।

लग्नाद्दीपवर्तिज्ञानम्—जन्म लग्न के कम अंश हों तो बड़ी बत्ती कहना, अधिक अंश हो तो छोटी कहें ।

चन्द्रलग्नांतरगतैर्ग्रहैः स्युरुपसूतिकाः—यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्मकाल में लग्न से चन्द्र पर्यन्त जितने ग्रह हों उतनी ही उपसूतिका कहना । परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ बैठा हो तो उसके अंश देखे । यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हों तो उसकी गणना करे अन्यथा उसे नहीं जोड़े । इसी प्रकार जो ग्रह लग्न में हो, और उसके अंश लग्न से अधिक हों, तब ही उसकी संख्याजोड़ना अन्यथा नहीं जोड़े । लग्न चन्द्रान्तर्गत कोई ग्रह वक्र अथवा उच्च का हो तो तीन गुणा करना और स्वराशि

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

स्वनवमांश स्वद्रेष्कोण में हों तो द्विगुण करना, इसी प्रकार जितने ग्रह नीच राशि के अस्त के होवें उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इससें भी विशेष यह ध्यान में रखने योग है कि वह लग्न चन्द्रान्तर्गतग्रह लग्न के भोग्यांश से सप्तम भाव पर्य्यंत होवे तो सूतिका गृह से बाहर समीप में, और सप्तम भाव से लग्न के भुक्तांश पर्य्यंत हो तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना। उन ग्रहों में जो जहां शुभ ग्रह हों वहां धर्मशीला सौभाग्यवती स्त्रियां कहना, अशुभ ग्रहों से विधवा व दुश्चरित्रा कहे।

अथ शय्या शिर वा पाद विचार—

लग्नदिशि शय्या शिरस्त्रिषडंकान्त्येषु पादाः। लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिरहाना कहना, अर्थात् १।२ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण ४।५ में दक्षिण, ६ में नैऋत, ७।८ में पश्चिम, ९ में वायव्य कोण, १०।११में उत्तर और१२ लग्न में ईशानकोण की तरफ जानना। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां स्थान पाये जानना। इन स्थानों में से जिस स्थान में पाप ग्रह-युक्त हो तो वही सूतिका के पलंग का पावा फटा टूटा समझना।

अथ चिन्हज्ञानम्—षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भाषे धरि ध्यान। बामें कुछ लहसन अहै गर्गवचन परिमाण।। भानु तथा सौरी तन धन कुज कण्टक चन्द। बालक के षट अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राहु। वामकर्ण वा मस्तके अवश जिन्ह दरशाह।। सुहृद भाव में कवि तम भौम वा सौरी लग्न। वाम पाद के चिन्ह को भाषत ज्योतिषमग्न।।नौमें पांचमें भृगु बसे तनुवा चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिन्ह भणंद।।

बालारिष्ट—

दो०—द्यूनाष्टमतनु पाप खग, बरहै शशी जो खीन। कण्टक शुभखग ना बसे, वेगि ताहि यम लीन।।
बसे चन्द्रमा द्वादशे अष्ट भवन में पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप।।
लग्नाष्टम शशि राहु युत जन्म समय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप।।
लग्नाष्टम शशि राहु युत जन्म समय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव।।

अथ काण योगाः—तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसे त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुत भवन बसै त्रिक जाय। जन्म अंध यह योग है भाषत बुध समुदाय।। तात मात भ्राता तनय मातुल त्रिय घर नाथ।। चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान।। भानु राहु दहनो नयन, बुधजन कहत बखान।।

मूक योगाः—पञ्चमेश गुरु युक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौन भौमपतियुक्त गुरु त्रिक हि मूक कहि सोय।। शुक्र त्रिके गुरुसिह अज, दश भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश।।

दुःखद योगाः—रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पाप युक्त लग्नेश। जन्म समय जाके परे ताको अंग कलेश।। पाप युक्त तनु भवन में रिपु मृत्युप के ईश। यथा जोग जाके परे तनु मुख बिस्वावीस। पापग्रहयुत लग्न पति, परै लग्न में आय। वीर्य्य हीन नर होय सो अधिक व्याधि रुजताय।।

बन्धन योगाः— क्रूर रहै धन नवम व्यय, और पञ्चम आगार। सो नर सुर कसूर करि, निवसै कारागार।।

सुखद योगाः—अंगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गेह में परे तो जानो सुख संग।। जन्म लग्न में उच्च ग्रह जो काहू के होय। मित्र दृष्टि तापर परे सर्व सुखी नर होय।। १०

क्लीवयोगाः—दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीव योग तब जानु। शुक्र भवन ते रिष्क षट मन्द बसे क्लिब भानु।।

कुष्टयोगाः—लग्नप बुध कुज शशि युते राहु युक्त वा केतु। स्वेत कुष्ट को योग यह वरणत गुणी सचेतु।।भौम भास्कर मन्दयुत रक्तकृष्ण कह कुष्ट। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अति रुष्ट।। जलजगंडयुत चन्द्र जो ग्रन्थिगंड कुज साथ। पित्त रोग तब जानियो, बुध त्रिकयुत तनु नाथ। आमरोग गुरुयुक्त त्रिक क्षयी रोग भृगुसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून।।

केमद्रुमः—आगे पीछे चन्द्र के जो न परै ग्रह कोय। केमद्रुम यह योग है सब धन डारे खोय।। उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय।।

सर्पवेष्टित योगाः—यदि अष्टमेश लग्न में राहु सहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित होता है।

यमल जन्म योगाः—चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्ध और धन का उत्तरार्ध) का सूर्य होवे, शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभाव राशिके लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो बच्चों का इकट्ठा जन्म कहना। अथवा आधान लग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे—शनि मंगल से ५।७।९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु समय विचार—जिन अरिष्ट योगों में मरण काल नहीं कहा गया उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है तब कहना। अथवा जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है तब मरण कहना। अथवा चन्द्रमा लग्न राशि में आता है तब मरण कहना। अथवा वर्ष के भीतर जब जिस योग युक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पाप ग्रहों करके देखा जाता हो तब मरण कहना चाहिये। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इस वास्ते आयु का प्रथम विचार कर फिर मृत्यु कहे।

प्रसवकष्ट दूर—प्रसवकाल से पहले शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकंडा) की जड़ लाकर घृतयुक्त गुग्गुल की धूनीदेकर कटि में बांधे। और साथ ही "ॐ मुक्ताः पाशविपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वभयाद् गर्भमेहि माचिर माचिर स्वाहा।।" इस मन्त्र से सात बार शुद्ध जलअभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से शीघ्र प्रसव होगा। अगर तीसा यन्त्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख धोकर पिला देवे तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। स्मरण रहे कि पहले उपरोक्त मन्त्र तथा यन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात को मन्त्र का जप करके तथा यन्त्र को लिख लिख कर चलता कर लेवे। तब कष्ट को निवारण

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

बन्धन योगाः— क्रूर रहै धन नवम व्यय, औ[illegible] करि, निवसे कारागार ॥

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

[illegible] को लिख लिख कर चलता कर लेवे । तब कष्ट को मिटाता है ।

११ अमावस्या की नन्दादि संज्ञा——दर्शस्य घटिकाषष्ठ्या भानुभानु प्रकीर्तिता । नन्दा-भद्रा-जया-रिक्ता- पूर्णा च तिथयः क्रमात् ॥

भावार्थ——अमावस्या की साठ घड़ियों में क्रमशः बारह बारह घड़ियां नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता, पूर्णा संज्ञक होती हैं । यदि अमावस्या का स्पष्ट घट्यादिमान ६० घड़ी से न्यूनाधिक्य हो तो ५ का भाग देकर १२ घड़ियों से न्यूनाधिक्य जाने ।

तीसा यन्त्र

१६	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

अथ पुरुष-जन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहफलानि

भावः	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	शूर अंगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुखी	रोगी	सकाम
धन २	धननाश	सम्पत्तिमान्	ऋणी	धनी गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज ३	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत् ४	दुःखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुःखी	मातृहा	दुःखी
सुत ५	सुतहानि	धनीपुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान्	पुत्रहीन	कुमति	मर्म
शत्रु ६	शत्रुनाश	अल्पायु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित	सबल	सबल
स्त्री ७	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगिणी	स्त्रीहा
मृत्यु ८	अल्पायु	रोगी	शरीरपीड़ा	गुणी	नीचस्वः	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुत
धर्म ९	दुष्टमती	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म १०	शूर	तेजयुत	तेजवान्	कीर्तिमान्	संपत्तिमान्	संपत्ति०	पराक्रमी	मानी	पितृहानि
लाभ ११	धनी	धनी	धनी	धनी	सलाभ	सुमति	धनवान्	सुख्यात	धनी
व्यय १२	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदारहा	दरिद्री	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्री-जन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहफलानि

भावाः	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	क्रोधिनी	गतायुः	विधवा	सौभाग्या	सती	ससुखा	वन्ध्या	पुत्रहीना	दुःखिनी
धन २	दरिद्रा	बहुधना	वन्ध्या	धनाढ्या	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्त्ता
सहज ३	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत् ४	सपीड़ा	दुर्भगा	दुखार्त्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहा
सुत ५	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकांतियुता	सगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु ६	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति ७	दुःखार्त्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु ८	विधवा	रोगिनी	विधर्मा	कृतघ्नी	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म ९	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	वन्ध्या	वन्ध्या	शोकार्त्ता
कर्म १०	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साध्वी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ ११	सधना	गुणज्ञा	सलाभा	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुसुता	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय १२	क्रोधिनी	हीनांगी	खला	कृशांगी	सुव्यया	सुव्यया	मूढा	दुष्टा	रोगिणी

अथ मातृ सुख नाशयोगाः——(१) पाप ग्रहोंसे युक्त चन्द्रमा सातवें भाव में होवे, (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र होवे, (३) पाप ग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे सातवें पापग्रह हों, (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य होवे और लग्न में मंगल होवे, (५) चौथे भाव में शनि पापग्रह से ही दृष्ट हो; इन पांचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप दान करना चाहिए ।

पितृनाशयोगाः——(१) सूर्य मंगल दशमें वा नवमें गये हो (२) दशमेश रवि मंगल से युक्त हो (३) शत्रु राशि का मंगल १० वें हो (४) पाप ग्रह से युक्त सूर्य सातवें पड़ा हो; इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिताको भय हो ॥

भ्रातृनाशयोगः—— भ्रातृ गृह को ईश जो भौम संग त्रिक होय ।
जाके ऐसे योग हैं भ्रातृ हीन नर होय ॥

संतान सुख.नाशयोगः—

गुरु ते पञ्चम गेह पति, जाय परे त्रिक भाव । ऐसा योग जो लखि परे, ताके पुत्र अभाव ॥ पुत्र धर्म अरु लग्न पति, जाय परे त्रिक थान । जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान ॥

रोगिणी स्त्रीयोगाः—— शुक्र और सूर्य सप्तम पञ्चम और नवम में हों तो उसकी स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है ।

नीचयोगाः——सहज सप्तम धन सदन में क्रूर बसे खग आई। भवन पांचवें गुरु बसै नीच जातमन साई ॥ सिंह लग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकाल । म्लेच्छ होई कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल ॥ जिनके बुध भृगु राहु संग, सप्तम भाव विराज । लहे सर्वदा राज सुख, होवे वेश्याबाज ॥

जारज योगाः——भानु चन्द्रतनु नालखै लग्नप लखै न लग्न । सो शिशु है पर पुरुष को भाषत ज्योतिषमग्न ॥ रवि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार । तीन उत्तरा जन्ममें तब शिशु कहो परार ।

राश्यभिधान-कल्पलता

इस पुस्तक में प्रत्येक नक्षत्र के चरणानुसार बालक व बालकाओं के अनेकों शास्त्रशुद्ध व सुन्दर नाम लिखे गये हैं । बाल बच्चों वाले सद्गृहस्थों व ज्योतिषियों कर्मकाण्डियों के बड़े काम की वस्तु है आज तक ऐसी पुस्तक कहीं भी नहीं छपी, शास्त्रमर्यादानुसार इस पुस्तक की सहायता से बच्चों का नाम रखने से उनकी आयु वृद्धि के साथ बुद्धि का विकास भी होता है तथा संसार में भी रोशन होता है, हजारों बढिया नाम आपको इसमें मिलेंगे । मू० १।)

पता—मोतीलाल बनारसीदास, गायघाट, बनारस ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ स्त्री जातक---क्रूरलग्नयुत क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहिं होय। सो कन्या कुल गरल है, भूलि न व्याहेउ कोय ॥ जाके कुज दशमें बसे ऋणी होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवें पति जीवे नहीं जासु ॥ क्रूरयुक्त लग्नेश जो पाप ग्रहों के बीच। सो कन्याव्यभिचारिणी बुधवर कहे कुज नीच ॥ राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति ओर। पाप दृष्टि शनि सातवें कन्या वास कुठौर ॥ लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज रण्डा कहे, पति को तजे तमारि ॥ छटे आठवें चन्द्र जो क्रूर परे निज अंग। भौम आठवें भवन में सो पति करिहैं भंग ॥ राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुभ सों हीन। ताको पति जीवित रहे वर्ष दोय या तीन ॥ द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसे त्रिकधाम। राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्रास। पापग्रहों के बीच में लग्न होई वा चन्द। सो त्रिय नाशे कुल दुवो भाषत कविकुल वृन्द ॥ सप्तम भृगु जाके बसे सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनु भृगु बसे बुध जन कहत विचारि ॥

वैधव्य (विष) कन्या योगाः---चौ०---रविवार द्वितीया जो होय। श्लेषा ताहि दिन में जोय ॥१॥ कृतिका होय शनिश्चर वार। साते तिथि का करो विचार ॥२॥ होय शतभिषा मंगलवार। कहो द्वादशी तिथि निर्धार ॥३॥ इन योगन में कन्या होय। निश्चय विधवा जानो सोय ॥४॥ जन्म लग्न द्वै शुभ ग्रह होय। एक पापग्रह नभ १० में जोय ॥५॥ शत्रु क्षेत्र में द्वै ग्रह मानो। ता कन्या को विधवा जानो ॥६॥ अश्लेषा द्वितीया को होय। मन्दवार युत लीजो जोय ॥७॥ परे शतभिषा मंगलवार। साते तिथि लीजो निर्धार ॥८॥ रविवार द्वादशी जो होय। नक्षत्र विशाखा जानो होय ॥९॥ ऐसो योग लखि जो परे। तो कन्या को विधवा करे ॥१०॥ दो०---धर्म सदन में भूमिसुत जन्म सदन शनि जान। सूर्य होय सुत सदन में कन्या विधवा मान ॥११॥

वैधव्य (विषकन्या) भंग योगाः---जन्म लग्न या चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्न पति सुभगा कन्या होय ॥

काकवन्ध्यादि योगाः---ज्ञे अष्टमे काकवन्ध्या। मन्दार्कविष्टमे वन्ध्या। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या ॥

स्त्रीणां राजयोगाः---चौपाई---केंद्रधाम नभगा शुभ होई। नरतनु पाय कलत्र समोई ॥ रानी होय बहुत धन ताके। मन प्रसन्न होइ है सुत वाके---चन्द्रज तुंग बसे तनु जाई। लाभ भवन गुरु आवे धाई ॥ सो तिय होय नृपति की नारी। जनविख्यात होय सुकुमारी ॥ जो षड्वर्ग शुद्ध गुरु होई। शशि दृग केन्द्रभवन में होई ॥ ऐसे योग जन्मे सुकुमारी। रानी होय सदन धनभारी ॥ दोहा---कर्क चन्द्रमा सातवें जीव दृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूरि युत ताको पति नृप शूर। लाभ भवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौन। सुरगुरु परिपूर्ण लखे रानी होइ है तीन ॥

स्त्रीणां पुत्रभाव विचारः---पञ्चमे शुभसंदृष्टे पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत् ॥

स्त्री आदि के लिये अशुभ प्रसव मास---कातिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथिनी, श्रावण में गधी व घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैशाख में ऊंटनी, पौष में बकरी, चैत्र में कुतिया के बच्चा जन्मे तो ६ मासमें पिता व घर वाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है ॥ माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन को घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र होवे। स्मरण रहे कि यहां सर्वत्र सौरमास का ग्रहण है। प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण दान कर व्याहृति मंत्रों से घृताक्त श्वेत सरसों का हवन करे, बच्चा जन्मे तो कातिक शांति करे तो शुभ रहे।

त्रिखल जन्म फल---यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण माता पिता को भय धनहानि आदि कष्ट होते हैं, कृपणता छोड़कर त्रिखल शान्ति करे तो शुभ होता है।

बालक की दन्तोत्पत्ति मास फल—

१	२	३	४	५	६	मास
शरीर नष्ट	छोटा भ्राता नष्ट	भगिनी नष्ट	भ्राता नष्ट	ज्येष्ठ भ्राता नष्ट	बहुत भोग	फल
७	८	९	१०	११	१२	मास
पिता से सुख	पुष्टता	धनी	सुख	सुख	धनी	फल

यदि बच्चे के सर्वप्रथम ऊपर की दन्तपंक्ति निकले तो मातुल को भयप्रद हो, सदन्तोर्ध्वपंक्ति वाला बालक जन्में तो माता पिता आदि को भयप्रद होता है, शान्ति करनी चाहिये। अथैकनक्षत्रजनन फलम्-- वृद्ध गर्ग जी कहते हैं कि यदि भ्राताओं वा पिता पुत्र माता का एक नक्षत्र में जन्म हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। स्वर्णदान से कल्याण होता है।

कन्याजन्मनि नक्षत्र फलम्---

जन्म नक्षत्र	मूल	आश्लेषा	ज्येष्ठा	विशाखा (४ च०)
फलम्	(१।२।३ च०) श्वशुरहानि	(२।३।४ च०) सासनाश	ज्यष्ठनाश	देवरनाश

सुतः सुता वा नियतं श्वशुरं हन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नैव तथाश्लेषाद्यपादजः ॥

अथ गण्ड मूल नक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूला	रेवती

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

... तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते ॥

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१३ उपरोक्त ये ६ नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं, इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक मातापिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाय तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र के ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करन चाहियें, तत्पश्चात् शांति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद ह।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरणजन्मफल

मूल पाद फल			आश्लेषा पाद फल		
चरण		फल	चरण		फल
१	में	पितृनाश	१	में	पितृनाश
२	"	मातृनाश	३	"	मातृनाश
३	"	धननाश	२	"	धननाश
४	"	शान्ति से शुभ	१	"	शान्ति से शुभ

मूलजनने वृक्ष विभाग फलम्

मूल	स्तंभ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्प	फल	शिखा
७	८	१०	११	१२	५	४	३
मूल नाश	वंश क्षय	मातृ पीड़ा	मातुल नाश	राज्य लाभ	राज मन्त्री	राज प्राप्ति	अल्प आयु

अथ मूल निवास चक्रम्

जन्ममास	बै० ज्ये० मार्ग० फा०	आषा० आ० मा० भा०	चै० श्रा० का० पौ०
जन्मलग्न	२।५।८।११	१।४।७।१०	३।६।९।१२
मूलनिवास	पाताले	स्वर्ग	भूमौ
फल	शुभ	शुभ	कुलहानि

मूल का निवास मास व लग्नानुसार दोनों प्रकार से भूमि पर आवे तो महाभयप्रद होता है एक प्रकार से स्वल्प भय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी शनिभौमसमन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातं संहरते कुलम्॥ यत्र गण्डे कूरयुते महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरं भवेत्॥ दिनक्षये व्यतिपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ। शूले गंडातिगंडे च परिघे यमघण्टके॥ ब्रह्मदंडे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम्॥

यथा सर्वविषश्चैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते॥ रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तभूद्भिः प्रपूरयेत्। शतछिद्रं घटं तस्मान्निःसृतेन जलेन हि॥ बालकाम्बापितृस्नाने विप्रैः सम्पादिते सति। जपहोमप्रदानेन कृते स्यान्मंगलं ध्रुवम्॥ विरुद्धावयवे मूले विधिरेवं स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मंतव्यं क्षेममीप्सुभिः॥

अथाभुक्तमूलविचारः—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी, किसी क मत से एक घटी एवं मूल नक्षत्र आदि की चार घटी विशेष आधी घटी, अभुक्तमूल कहलाता है। इस समय में जो बच्चा जन्म ले उसका परित्याग कर दे या आठ वर्ष, असमर्थ हो तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे। धनगंडे दरिद्रोऽपि शांति कुर्यात्स्वशक्तितः। अन्यथा नाशमाप्नोति चाभुक्तर्क्षे विशेषतः॥

अश्विनीजातस्य फलम्—अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखैश्वर्य, तृतीय में मन्त्री तुल्य, चतुर्थ में नृपतिसमान होता है।

गण्ड मूलोत्पन्न बालक का जन्म काल फल

दिन में	रात्रिमें	सन्ध्या में	समय
मू०ज्ये० पिता को भय	म० श्ले० माता को भय	रे० अश्वि० शरीर भय	फल

मघा पाद फलम्—मघा के प्रथम चरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धनविद्या लाभ होवे।

ज्येष्ठापाद फलम्—प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश। तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने आपका नाश होता है। ज्येष्ठाद्यपादजो ज्येष्ठं हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलर्क्षे मातरं पितरं तथा॥

रेवती पादफलम्—रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृप समान, दूसरे में मन्त्री वा मुखतार, तीसरे में सुख सम्पत्तियुक्त, चौथे चरण में अनेक कष्ट हों।

कृष्ण चतुर्दशी जन्म फलम्।

१	२	३	४	५	६	भाग
शुभ	पितृहानि	मातृहानि	मातुल हानि	कुल कष्ट	धनहानि	फल

चतुर्दशी की घड़ियों के छः भाग कर देखें कि जन्म किस भाग में है तदनुसार फल जानें अशुभ हो तो शांति करे। अमावस्याजन्मफलम्—जिसके घर सिनीवाली अमावस्या के दिन स्त्री, पशु, गौ, भैंस, घोड़ी आदि प्रसूति होवे तो उसे धनहानि अपयश आदि भय होते हैं। कुहू अमावस्या में प्रसूति हो तो विशेष अशुभ होवे। सिनीवाली—जिस अमावस्या में चन्द्र की कलांश शेष हों; कुहू—जिस में चन्द्र की पूर्णकला नष्ट हों।

ग्रहण व्यतिपातादि जन्मफल—व्यति में जन्म हो तो अंगहानि, वैधृति में पितृकष्ट वा दारिद्र, चन्द्र सूर्य ग्रहण में जन्म हो तो व्याधि, पीड़ा, कलह, धनहानि हों, जपहोमशान्ति कराने से कल्याण हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रत्येक मन्त्र को २१ बार पढ़ें और बलि को ७ बार शिर पर घुमा कर यथोक्त स्थान पर मौन होकर रख आवे ॥					स्नान पूजा मार्जन मंत्र	धूप
किस समय कौन पूतना ग्रहणकरतीहै?	ग्रसित लक्षण	मूर्तिनिर्माणार्थ द्रव्य	पूजन द्रव्य	बलि विधान व समय		
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	ज्वर, स्वेद, मन्दस्वर,कम्पन ज्वर,अरुचि, अंगशोष।	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेतचन्दन,तिलक,श्वेत पुष्प, ५ रंग की झंडी५, ५ दीपक ५ आटे के सतिये, कपूरलोहवान	श्वेत भात, ५ पूर्ण पोली, (सुहाली १ पहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरस्ते पर रखना।	ॐ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दोवै श्रवणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं वालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ॥	राईखस आक के फूलबिल्ली औरमनुष्य केबाल, निम्बपत्र गोघृत।
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	ज्वर, हाथ पैर अकड़ना,संकोच दांत चबाना, नेत्र खुले, नेत्ररोग रोग, भय कृशता।	एक सेर चावलों का आटा	१० दीपक,१० झंडी,पुष्प, चावलोंकेआटेकेसातिये १०	भात एक सेर आटे के पूड़े,मत्स्य व बकरे का मांस संध्या समय पश्चिम दिशा में चौरस्तेपररखना	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चे ह्रां ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं दुष्टाग्रहा गच्छन्वतः स्थानाद्रुद्राज्ञया स्वाहा	
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	हडफूटन, खांसी ,शिरझुकाना, श्वास, नेत्रमीलन,श्यामता, अरुचि, रुदन, नेत्रपीड़ा।	एक सेर चावलों का आटा	रक्तचंदन, रक्तपुष्प, श्वेत ध्वजा दीपक १०, गेहूं के आटे के सतिये १०।	एक सेर लाल भात, आध सेरपूर्ण पोली (सुहाली) पश्चिम दिशामें किसी वृक्ष के नीचे रखना।	सुनन्दनाविधानोक्त	लसन गो शृंग, सांप कीकांचली नीम के पत्ते, पुरुष औरबिल्ली केबाल, गौ घृत।
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुखमंडिका	गात्रभंग, शिर झुकाना, खांसी, श्वास, नेत्रमिलन, अरुचि, अनिद्रा, श्यामता।	तिल चूर्ण एक सेर	श्वेतपुष्प, श्वेत ध्वजा ५, दीपक, मिल सकें तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प।	भात सेर आटे के पूड़े,आध सेर पूर्ण पोली सायंकाल पश्चिम दिशा दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	सुनन्दनाविधानोक्त	
पंचम दिन मास वर्ष में विडालिका	पेट में दर्द, हिचकी, श्वास, अरुचि, ज्वर,शरीर में गर्मी, तेज।	एक सेर चावलों का आटा	श्वेत चन्दन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेतध्वजा ५, गेहूं के आटे के सतिये।	श्वेत भात, ७ पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	ॐ भगवती ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं मुंच रक्षां कुरु कुरुबलिं गृह्णगृह्णअस्त्रं ठःठः चामुण्डे सर्वरि चण्डिके ठःठःस्वाहा	
षष्ठ दिन मास वर्ष में षट्कारिका	ज्वर, हडफूटन, हंसना कभी २ कभी रोना, मोह, मूर्च्छा।	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प,दीपक ५ ५, श्वेत ध्वजा ५।	भात, ५ मिठाई, ५ सुहाली, ७पूड़ियां,१ प्रहर दिन चड़े पूर्वमेंचौरस्ते	योगिनीविधानोक्त	कूट गुग्गुल, राई, हाथीदांत, घृत
सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका	खांसी, श्वास, वमन, अरुचि, शरीरकम्पन।	चावलों का आटा एक सेर	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक५ श्वेत ध्वजा ५।	परभात,७पूड़ियां, सायंकाल पश्चिमेंचौंरस्तेपर मौन होकर रखना	विडालिका विधानोक्त	
अष्टम दिन मास वर्ष में कामिनी	ज्वर, मुखशोष, अरुचि, सन्ताप।	जल के दोनोंकिनारों की मिट्टी	रक्तचन्दन, ५ रंग की झंडी ५ दीपक ५।	गेहूंकीरोटी,मसूरकीदालहरासाग छागमांस, संध्यामेंचौरस्तेपररखन	विडालिकाविधानोक्त	
नवम दिन मास वर्ष में मदना	ज्वर,खांसी, श्वास, शूल, अफारा, घृणा।	एक सेर गेहूं का आटा	चन्दन, पुष्प, ५ दीपक, ५ रंग की झंडी ५।	भात, मत्स्यमांस, पापड़ी सुहाली उत्तर में प्रातः चौरस्तेपर रखना	ॐ नमोभगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादाय हन हन हुंफट्स्वा	गौश्रृंग, लसुन, सांप की कांचली निम्बपत्र मनुष्यऔर बिल्ली के बाल, राई, गोघृत।
दशम दिन मास वर्ष में रेवती	ज्वर, हडफूटन, शूल, अरुचि, वमन, खांसी, श्वास।	एक सेर गेहूं का आटा	रक्तपुष्प, २५ झंडी, २५ दीपक २५ सतिये।	गुड़ के घी भूने चावल, गोघृत,सायंकालदक्षिणमें चौरस्तेपररखना	ॐ नमो भगवते वैश्वदेवाय हन हुं फट् स्वाहा।	
एकादश दिन मास वर्ष में सुदर्शना	ज्वर, हडफूटन, मुखशोष, अरुचि, रोदन, कृशता।	काले उड़दों काआटा एक सेर	श्वेतपुष्प, २५ दीपक, २५ सफेद झंडी, २५ आटे के सतिये।	श्वेत भात ७पूड़े, सुहाली ७ सायं- व प्रातः दक्षिणमेंचौरस्तेपररखना	ॐ नमो भगवते रावणाय चन्द्रहास वज्र हस्ताय ज्वल २ दुष्टग्रहादीन ॐह्रीं फट् स्वाहा।	
द्वादश दिन मास वर्ष में अद्भुता	ज्वर, दांत चबाना, रोमांच, बहुरोदन, नेत्रपीड़ा, संताप।	चावलों का आटा एक सेर	१३ दीपक, १३ झंडी, १३ सतिये आटे के।	सुहाली पूड़े ७ पूड़ियां ७, मत्स्य- मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिणमें चौरस्ते पय रखना।	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन हन शोषय २ मर्दय २ शोषय२ हुं ३ हन २ दुष्टानां हु हुं फटस्वाहा	

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

अथ नक्षत्र कष्टावली चक्रम् ।

यस्मिनृक्षे यदा नृणां रोगः संजायते तदा । तद्विष्णुपूजाकर्तव्या तत्तदीश्वरतुष्टये ।। ऋ क्षेशरूपं कनकेन कृत्वा तल्लिंगमंत्रैश्च सुगन्धपुष्पैः । वस्त्राक्षतैर्गुग्गुलधूपदीपैर्नैवेद्यताम्बूलफलैश्च सम्यक् । पूजां च कृत्वा भयनाशनाय द्विजाय दद्याततुलशि.

सस्वामिक नक्षत्राणि	कष्टदिनानि चरण १	२	३	४	करे धारणम्	कष्टलक्षणानि	गन्धादिकम्	बलिद्रव्यम्	होमद्रव्यम्	दानभोजनम्	जपनीय मन्त्राः	जप-संख्या
अश्विनी (दस्त्री)	९	११	१०	२०	अपामार्ग मूलम्	वातज्वरअर्द्ध-गात्रपीडानिद्रा भंगबुद्धिभ्रम	श्वेत चन्दनगन्ध कमलपुष्प घृत-गुग्गुलधूप घृतदीप क्षीरमोदक गुडनैवेद्य	गुडौदन	खण्ड यवाज्य	सुवर्णघृतकुम्भ ब्राह्मणभोजन	ॐ अश्विना तेजसा चक्षुःप्राणेन सरस्वती वीर्यम् वाचेन्द्रो बलेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् । ॐ अश्विनी कुमाराभ्यां नमः ।।१ ।।	५ हजार
भरणी (यमः)	०	८०	४०	११	अगस्त-मूलम्	अनेक रोग तीव्र ज्वरआलस्य छर्द रोग ।	अगरगंध करवीरपुष्प घृतगुग्गुल-धूप घृतदीप गुडौदन नैवेद्य	कृसरान्न (खिचडी	घृतमधु तिलाक्षत	गोमहिषीघृतशर्करा छायापात्र ब्राह्मणभोजन ।	ॐ यमायत्वामखायत्वासूर्यस्यत्वातपसे देवस्त्वासवितामध्वानवतु । पृथिव्याः सं स्पृश-स्पाहि अर्चिर सिशोचिरसितपोसियमायनमः	१० हजार
कृत्तिका (अग्निः)	९	११	१६	२८	कर्पास-मूलम्	उरुशूल अतिदाह नेत्रपीड़ा अनिद्रा ।	श्वेतचन्दनगंध जुहीपुष्प घृतगुग्गल-धूपघृतदीपतिलमाषान्नवडार्धीकानैवे	पायस	तिल यव घृत	स्वर्ण गोदान ब्राह्मणभोजन	ॐ अग्निमूर्धा दिवः ककुत्पत्तिः पृथिव्या अयम् । अपां रेतां सिजिन्वति । ॐ अग्नयेनमः	१० हजार
रोहिणी (ब्रह्मा)	७	९	१८	३०	अपामार्ग मूलम्	ज्वरपीडाकुक्षि शूलशिरःपीडा प्रलाप ।	श्वेतचन्दनगंधकमलपुष्प दशांग-धूप घृतदीप घृत पायस नैवेद्य	मध्वाज्य शाल्यन्न क्षीर	क्षौद्रतिलाज्य यव	सप्तधान्य कृष्णा गोदान ५ कुमारीभोजन	ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमपुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनआवः । सुबध्न्या उपमाअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विषः । ॐ ब्रह्मणे नमः ।।४।।	५ हजार
मृगशीर्ष (चन्द्रः)	९	५	७	१०	जयन्ती-मूलम्	अर्द्धगात्रपीडा, महाकष्टत्रिदोष	श्वेतचन्दन गन्ध, कमलपुष्प दशांग धूप घृतदीपपायसअपूपमध्वोदननै.	दधिशर्क-राशाल्य	दधिपायस दधि	तण्डुल सवत्सा गोदानब्राह्मणभोजन	ॐ इमंदेवाअसपत्न सुबध्वं महते क्षत्रायमह तेज्यैष्ठचायमहतेजान राज्यायेद्रिस्येन्द्रियाय इममुष्यपुत्रममुष्यैपुत्रमस्यैविषएषवोऽमीराजासोमोऽस्माकं ब्राह्मणना राजा । ॐचंद्रमसेनम-	१० हजार
आर्द्रा (शिवः)	०	१८	०	०	सचंदनाश्व त्थमूलम्	ज्वरसर्वांगपीडा त्रिदोषअनिद्रा	श्वेतचन्दनगन्ध सौरभपुष्प दशांग धूपघृतदीप पायसौदन नैवेद्य	दध्योदन मध्वाज्य	घृतमधु	कृष्णवृषभकृष्ण वस्त्र ब्राह्मणभोज	ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतो त इषवे नमः ।बाहुभ्यामुतते नमः ।। ॐ रुद्राय नमः ।।६ ।।	१० हजार
पुनर्वसु (अदिति)	७	१४	२	२१	अर्क-मूलम्	ज्वरशिरपीडा । कटिपीडा ।	हरिद्राकुंकुमगन्धसेवन्तिकापुष्पअष्ट गन्धधूपघृतदीपघृताक्तपीतवर्णान्न नैवेद्य	साज्य-पीततण्डुल	घृत तण्डुल	वस्त्रस्वर्णकमल ५ कन्या ५ भोजन	ॐ अदितिर्द्यौ रदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स-पिता सपुत्रः । विश्वेदेवा अदितिः पंचजना अ-दिति जातमदितिर्जनित्वम् । ॐ अदितयेनमः ७।	१० हजार
पुष्य (गुरुः)	७	७	१०	२१	तुषार-मूलम्	ज्वर शूल महा कष्ट ।	कुंकुम गन्ध कमलपुष्प घृतगुग्गुल-धूपघृतदीपघृतपायसशर्करानैवेद्य	समण्डक मोदक	घृत पायस	सुवर्ण गौ पीतवस्त्र ब्राह्मणभोजन	ॐ बृहस्पतेअतियदर्योअर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छ वस ऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहिचित्रम् । ॐ बृहस्पतये नमः ।८।	१० हजार

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आश्लेषा (सर्पः)	०	०	४१	०	पटोल- मूलम्	सर्वांगपीड़ा पा. मृत्युसम कष्ट	कुंकुमअगरगन्ध अगस्त पुष्प घृत गुग्गुलधूपघृतदीप घृतक्षीरनैवेद्य	हवि दध्योदन	शर्करा घृत	सवत्साकृष्णागौ छायापात्रब्राह्मणभोज	ॐनमोस्तु सर्प्पेभ्यो ये केच पृथिवी मनु: येऽन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्य: सर्प्पेभ्यो नम:ॐसर्प्पेनम:	१० हजार
मघा (पितरः)	१५	७	१७	२०	भृंगराज- मूलम्	अर्द्धगात्रपीडा तथाशिरपीडा	श्वेतचन्दन गन्ध चम्पकपुष्प, घृत गुग्गुलधूप घृतदीप घृतमिष्टान्ननै०	सतिलाज्य दुग्धान्न	तिलाज्य तण्डुल	सवस्त्रतिलमाष. दानब्राह्मणभोजन	ॐपितृभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधा नम: पितामहे स्वधायिभ्य: स्वधानम: । प्रपितामहेभ्य: स्वधा स्वधानम: अक्षन्नपितरोमीमदन्तपितरोऽती तृपन्न पितर: पितर: शुन्दध्वम् ॐपितृभ्योनम	१० हजार
पू. फा. (भगः)	०	१५	०	३०	कण्टकारि मूल	ज्वरशिरपीडा गात्रव्यथा	श्वेतचन्दनगन्ध मालतीपुष्प घृत धूपघृतदीपअपूपोदनमोदकनैवेद्य	बिल्व घृतौदन पायस	प्रियंगु कंगनीतिल	पित्तलयवमाषान्न स्वर्णगोदानभोजन	ॐभगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगेमांधियमुदवाददन्न: भगप्रणोजनय गोभिरश्वैर्भगप्रनृभिर्नृवंत: स्याम: ॥ ॐ भगाय नम: ॥११॥	१० हजार
उ. फा. (अर्यमा)	७	१४	७	६०	पटोल- मूलम्	कुक्षिशूल,शिर ज्वरअतिकष्ट	कर्पूरकेसरगन्ध अर्कपुष्पघृतगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायसनैवेद्य ।	घृतशर्कर शाल्यान्न	तिलाज्य	सुवस्त्ररजतस्वर्णान्न गोदानब्राभोजन.	ॐ देव्यावध्वर्यू आगतं रथेन सूर्य्यत्वचा । मध्वायज्ञं समञ्जाथे तं प्रत्नथा यं वेनश्चित्रं ॐ अर्यम्णे नम: ॥ १२ ॥	१० हजार
हस्त (सविता)	१५	१७	१५	०	जाति- मूलम्	अफारा उरुशू. सर्वांगपी.प्रस्वे	रक्तचन्दनकेसरगन्धकमलपुष्पघृत गुग्गुल धूप घृतदीप घृतपा.नैवेद्य.	मिष्टान्न	दधि घृत	सुवर्णपयस्विनीगोदान ब्राह्मणभोजन	ॐविभाडबृहत्पिबतु सौम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपता वावेहुरुतम् । वात जूतो यो अभिरक्षतित्म ना प्रजा: पुपोषपुन्धाविराजति । सवित्रे नम:	५ हजार
चित्रा (विश्वकर्मा	११	९	९	१६	मखव- मूलम्	विचित्रानेकरो ग,अतिकष्ट।	केसरअगरगन्धविचित्रवर्णपुष्पघृत गुग्गुलधूपघृतदीपविचित्रान्नमोदकनै	विचित्रान्न घृत	तिलाज्य तण्डुल	तिलगुडविचित्रवृ ष.छा.पा.ब्रा.भो.	ॐत्वष्टातुरीयो अद्भुत इंद्राग्नी पुष्टिवर्द्धना द्विपदाछन्दऽइंद्रिय मक्षागौर्नवियोदधु: ॥ ॐ विश्वकर्मणे नम: ॥१४॥	१० हजार
स्वाति (वायुः)	६०	१७	३०	०	जाति मूलम्	नानाकष्ट	चन्दनगंधदमनकपुष्पअगरगुग्गुल धूपघृतदीप घृतपायसनैवेद्य	घृत पायस	तिलाज्य यव	स्वर्णरक्तधेनुदान पक्वान्नब्रा. भोज	ॐवायोयेते सहस्त्रिणो रथासस्ते भिराग हि नियुत्वामसोमपीतये ॥ ॐ वायवे नम: ॥१५	१० हजार
विशाखा (इंद्राग्नि)	१५	०	४	१३	गुन्जा- मूलम	कुक्षिशूलसर्वा- ग पीडा	चंदनकेसरगंध कमलपुष्प देवदारु घृतधूप घृतदीप घृतपायसनैवेद्य	सहवि चित्रान्न	आज्य पायस	रक्तपीतवस्त्रकृवृ छायापा.दा.वि.भो	ॐ इंद्राग्नी आगतं सुतं गीर्भिर्नमो वरेण्यम् । अस्यपातं धियोषिता ।॥ ॐ इंद्राग्निभ्यांनम :	१० हजार
अनराधा (मित्रः)	६०	१२	३६	३०	सुपुष्प- मूलम्	तीव्र ज्वर शिर पीडा	केसरगन्ध कमलपुष्प चन्दनधूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	मध्वाज्य माषान्न	गुड यवाज्य	स्वर्णगोछा.पा.दा. ब्रा. भोजन	ॐनमो मित्रस्यवरुणस्य चक्षसे महोदेवायतद् तं सपर्यतं दूरदृशे देवजातायकेतवे दिवसपुत्राय सूर्यायशं सत् । ॐ मित्रायनम: ।१७ ॥	१० हजार
ज्येष्ठा (इन्द्रः)	५९	९	६	४	अपामार्ग मूलम्	व्याकुलतापित्त रोगकम्पन	श्वेतचंदनगंध चम्पकादिसुपुष्पकर्पू रधूप घृतदीप मनोहरचित्रान्न नै.	दध्योदन सुपुष्प	तिलतण्डु ल घृत	स्वर्णतिलनीलवस्त्र ब्राह्मण भोजन	ॐ त्रातारमिन्द्रसवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवं शूर- रमिन्द्रम् । वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्तिन मघवाधात्विन्द्र: ॐशक्रायनम: ॥ १८ ॥	५. हजार

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

(१) जन्मराशि नक्षत्र लग्न में या राशि व लग्न से ।अठवें चन्द्र वा यमघंट कुयोग ो ।

(२) सूर्यवार को मघा द्वादशी या भरणी अनुराधा नक्षत्र ो ।

(३) सोमवार को आर्द्रा या उत्तराषाढा नक्षत्र हो ।

(४) मंगलवार को कृ. मघा व शतभिषा या नन्दा (१।६।११) हो ।

(५) बुधवार को अश्विनी व विशाखा या भद्रा (२।७।१२) आश्ले. हो ।

(६) गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया व मघा हस्त हो ।

(७) शुक्रवार अष्टमी व अश्विनी या आश्लेषा व श्रवण या रिक्ता आर्द्रा व धनिष्ठा हो ।

(८) शनिवार को नवमी व पूषा. या हस्त व पूभा. या पूर्णा (५।१०।१५) व भरणी हो ।

(९) सूर्य मंगल शनिवारों को ४।६।९।१२।१४।३० तिथि भरणी कृत्ति. आर्द्रा आश्ले. पूर्वा ३ विशा. ज्ये. धनि. शत. नक्षत्र हो तो मृत्यु वा मृत्युतुल्य कष्ट होता है ।

परञ्च जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना । क्योंकि बिना मारकेश आये मृत्यु तो होती ही नहीं, हां, ऐसे योग में कष्ट जरूर मृत्युतुल्य होता है । उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुलादान, गोदान तथा मृत्युञ्जय जप करना कल्याणप्रद है ॥

अथ रोग त्रिनाड़ी चक्रम्

आर्द्रा.	पू. फा.	उ.फा.	अनु.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.	प्रथमाः
पुन	मघा	हस्त	विशा	मूल	श्रवण	पू. भा.	अश्वि	रो.	मध्याः
पुष्य	आश्ले.	चित्रा	स्वा.	पू.षा	उ.षा	उ.भा.	रेव.	मृ.	अन्त्याः

सूर्य नक्षत्र दिन नक्षत्र और जन्म नक्षत्र वा नाम नक्षत्र 'रोगत्रिनाड़ी चक्र' में एक ही नाड़ी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है, मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले उस दिन निस्सन्देह रोगी की मृत्यु कहे । यह रोग त्रिनाड़ी चक्र यात्रा तथा रण के समय भी वर्जित करना ।

कालस्य मुखदंष्ट्रा ज्ञानम्

दिन नक्षत्र से नाम नक्षत्र ५।१३।२३ संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार १०।१८ वां नक्षत्र दंष्ट्रा (दाड़ां) होती है । काल के मुख दाड़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यन्त रोगग्रसित पुरुष की मृत्यु पर्यन्त हालत होती है । रोग पर, सर्पादिदर्शन पर, विग्रह-युद्ध में जाने पर, काल के मुख दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है ।

ओं

ज्वर यन्त्र

प	व	क	०
३	४९	८	३३
३५	८७	५	३९
५१	७	३	२५

ज्वर आने से पहले यह यन्त्र लिख कर अपनी कलाई पर धूप देकर बांधे तो बारी का बुखार दूर हो । पहले यंत्र सिद्ध कर लेवे फिर लिख कर देना शुरू करे । विधि—सफेद कागज पर अनार की कलम और लाल चन्दन से २१ सौ लिख कर आटे की गोलियां बना मछलियों को डाल देवे ।

तिथि कष्टावली यन्त्रम्

ति.	तिथीश	कष्टदि.	बलि व दान
१	अग्नि	१२	शर्कराज्य बलि घृतदान
२	ब्रह्मा	५	पायस बलि भोजनदान
३	काम	७	घृतान्न बलि रक्त वस्त्रदान
४	गणेश	१६	मोदकान्न बलि मूंगादान
५	सर्प	२१	पायस बलि दुग्धदान
६	स्कन्द	१२	मोदकान्नबलिचित्रवस्त्रदान
७	सूर्य	८	पायस बलि ताम्रपात्रदान
८	ईश्वर	१३	नानाभक्ष्यबलिपीतवस्त्रदान
९	दुर्गा	१८	मिष्टान्नबलि रक्तवस्त्रदान
१०	यम	२५	कृशरान्नबलि नीलवस्त्रदान
११	विश्वेदेव	७	मोदकान्नबलिपीतवस्त्रदान
१२	विष्णु	७	मोदकान्नबलिश्वेतवस्त्रदान
१३	काम	१०	दधिशर्कराबलि सुवर्णदान
१४	शिव	६०	मिष्टान्नबलि क्षौद्रशाकभो.
१५	चन्द्र	३	दध्योदनबलि रौप्यदान
३०	पितर	१८	पूपकान्नबलि उत्तमान्नभो.

वार कष्टावली यन्त्रम्

वा.	वारेश	क. दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	५	पायसबलि सूर्यदान
चं.	गौरी	८	नानाभक्ष्यबलि चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	५	दुग्धबलि भौमदान
बु.	विष्णु	७	मुद्गान्नबलि बुधदान
बृ.	ब्रह्मा	५	घृतपक्वबलि गुरुदान
शु.	इन्द्र	७	तिलयवाज्यमधुबलिशुक्रदान
श.	यम	१५	माषान्नबलि शनिदान

कालांगविभाग

काल पुरुष के शिर में मेषराशि का स्थान है, मुख में वृष राशि का, दोनों भुजाओं में मिथुन राशि का, हृदय में कर्क राशि का, उदर में सिंह राशि का, कमर में कन्या राशि का, वस्ति (मूत्राशय) में तुला राशि का, गुप्तेन्द्रिय में वृश्चिक राशि का, ऊरु (दोनों जंघाओं) में धनु राशि का, दोनों जानू (घुटनों) में मकर राशि का, पिण्डलियों में कुम्भ राशि का और दोनों पादों में मीन राशि का स्थान है । कई एक आचार्य द्वादश भावों में भी इन अंगों की कल्पना करते हैं जैसे प्रथम भाव में शिर, द्वितीय भाव में मुख, तृतीय भाव में भुजा, चतुर्थ भाव में हृदय, पंचम भाव में उदर, छठे भाव में कमर, सप्तम भाव में वस्ति, अष्टम भाव में गुप्तेन्द्रिय, नवम भाव में ऊरु, दशम भाव में जानू, एकादश भाव में जंघा और द्वादश भाव में पादों को जानना । उपरोक्त मेषादि १२ राशि अथवा लग्नादिद्वादश भाव शुभ ग्रहों में युक्त वा दृष्ट हों तो वह अंग पुष्ट और सुन्दर होता है और पापग्रह से युक्त वा दृष्ट हों तो वह अंग रोगादि से युक्त होता है, अंगों का विचार करके फलादेश कहना युक्तियुक्त होता है ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहाः	गोचराद्यैर्दशाक्रमाद्यैर्ग्रहकलानिष्टफलशमनार्थं प्रत्येक ग्रहाणां दानपदार्थाः													जपनीय मन्त्राः	समय	समिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केशर	मूंगा	रक्त गौ	रक्त चन्दन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	सू. उ.	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कर्पूर	श्वेत बैल	श्वेत चन्दन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	संध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केसर	कस्तूरी	रक्त बैल	रक्त चन्दन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथदांत	कपूर	शस्त्र	फल	९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगंध	दधि	श्वेत घोड़ा	श्वेत चन्दन	१६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सू. उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तैल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णाग	भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	संध्या	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तैल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड्ग	कंबशल	घोड़ा	शूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्रौ	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तैल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारेल	कंबल	बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः	रात्रौ	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कर्पूर	मिसरी	श्वेत चन्दन	हाथीदांत	मुंथेशवत्	मुन्थेशमन्त्रः		मुन्थेशकाले

सूर्यादि ग्रहपीड़ासु स्नानार्थमौषधानि——(यथा सिद्धौषधै रोगानश्येयुर्मंत्रतो भयम् । तथा स्नानविधानेन ग्रहदोषः प्रणश्यति ॥)

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मनशिला	पञ्चगव्य	बिल्वछाल	गोबर	मालती पुष्प	इलायची	काले तिल	लोबान	लोबान
इलायची	गजमद	रक्त चन्दन	अक्षत	श्वेत सरसों	मनशिला	सुरमा	तिलपत्र	तिलपत्र
देवदारु	शंख	धमनी	फल	मुलहठी	सुवृक्षला	लोबान	मुत्थरां	मुत्थरां
केशर	सिप्पी	रक्त पुष्प	गोरोचन	मधु	केशर	धमनी	गजदंत	गजदंत
खश	श्वेतचंदन	सगरफ	मधु	मालती		सौंफ	कस्तूरी	छागमूत्र
मुलठी	स्फटिक	मालकंगनी	मोती			मुत्थरां		
रक्तपुष्प		मौलसिरी	सुवर्ण			खिल्लां		
रक्तकनेर								

सप्त धान्य——उड़द १, मूंगी २, कणक (गेहूं) ३, छोले (चने) ४, जौ ५, धान्य (तण्डुल) ६, कंगनी ७।

अष्टगन्ध——अगर, तगर, कस्तूरी, दोनों कुंकुम, कपूर दोनों । चन्दन ।

सर्वग्रहाणां दोषोशान्तये सामान्यमौषधिस्नानम्

लाजवंती (छुई-मुई), कूट, खिल्लां, कांगनी, जव, सरसों, देवदारु, हलदी, सर्वौषधि, लोध इन औषधियों के जल से सतीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ानाश होती है, तथा पूर्व ही जो दान कह चुके हैं उनके करने से शांति होती है ॥ गुरु के वचन, देवता ब्राह्मणों की वंदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता; जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह भी पीड़ा नहीं करत (श्रीपतिः) ॥

तीर्थ में मुण्डन विचार——मुण्डनं चोपवासञ्च सर्वतीर्थेष्वयं विधिः । वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रं विशालां गिरिजां गयाम् ।

शनि विचारः—— गोचरे द्वादशे नेत्रे हृदये जन्मभे शनिः । द्वितीये गुल्फयोर्मध्ये धूनादौ च विलोमतः ॥ फलं——नेत्रस्थे शत्रुसन्तापो हृदये मानसी व्यथा । चरणे भ्रमणं देशे देशे संचारयेच्छनिः ॥ अथ लघु कल्याणी (ढैया) फलम्——कल्याणी प्रददाति वै रविसुतो राशेश्चतुर्थाष्टमे व्याधिं बन्धुविरोध-देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम् ॥ मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि बह्वेर्भयं । लोहं शस्त्रभयं सदैवमसुखं कुर्यादसौ सर्वदा ॥ १ ॥ अथ बृहत् कल्याणी (साढसती) फलम्——राशौ द्वादश (१२) मूर्ध्नि जन्म (१) हृदये पादौ द्वितीये (२) शनिः । नानावलेशं करोति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत् । हानिः स्यान्मरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम् । रामा ऋद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाथवा ॥ २ ॥

रसतरङ्गिणी——कविराज श्रीनरेन्द्रनाथ मित्र तथा पं० सदानंदजी शास्त्री विरचित । पं० धर्मानंदजीकृत, रसविज्ञान——नामक सरल हिन्दी टीका सहित । हर प्रकार के रस, धातुओं आदि का शोधन, मारण, भस्म आदि के तरीके सब सरल तथा अनुभव में आए हुवे ही लिखे हैं । रसों के विषय पर इससे सरल पुस्तक आपको नहीं मिल सकती । मूल्य १०) रु० ।

मिलने का पता——मोतीलाल बनारसीदास, नयघाट, बनारस

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

गोचरग्रहाणां द्वादश भाव फलबोधक चक्रम् ॥

ग्रहाः	जन्म	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम	षष्ट	सप्तम	अष्टम	नवम	दशम	एका	द्वादश
सूर्य	गमन	हानि	धन-लाभ	ेग	दैन्य	सौख्य	गमन	रोग	पाप	सौख्य	धन पा.	पीड़ा
चन्द्र	पुष्टि	धना.	श्रीः	रोग	सुख	लाभ	धनला.	रोग	मान	सौख्य	लाभ	पीड़ा
मंगल	भय	हानि	श्रीः	वर	रोग	लाभ	कृशता	नष्ट	रोग	शोक	लाभ	व्याधि
बुध	बन्ध	लाभ	भय	लाभ	शोक	लाभ	क्षय	लाभ	हानि	भोग	सौख्य	क्लेश
गुरु	भय	लाभ	रोग	व्यय	सौख्य	शोक	सौख्य	रोग	सन्मान	द्रव्य	धनला.	रोग
शुक्र	सुख	लाभ	धन प्राप्ति	सौख्य	सुत-कष्ट	पीड़ा	विपत्	मित्र-प्राप्ति	धर्मलाभ	दुःख	धनला.	लाभ
शनि	भय	शोक	श्रीः	दुःख	हानि	सौख्य	भय	ेग-	पाप	कलह	धनला.	कष्ट
राहु	हानि	धन-नाश	धन प्राप्ति	वर	शोक	धन प्राप्ति	कलह	ेड़ा	पापकर्म	सौख्य	धन-लाभ	चिंता
केतु	रोग	वैर	सुख	भय	शोक	लाभ	मार्गक.	रोग	दुष्टकर्म	शुभ	कीर्ति	शत्रुभय

॥ अथ ग्रहाणामेकर्गेभोग फलसमयादिज्ञानम् ॥

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	रा. के.	ग्रहाः
मा १	दि.२।	मा१॥	मा.१	म.१२	मा.१	मा३०	मा.१८	एकक्षभोग
आदौ	भांत्ये	भादौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्त्य	अन्त्ये	फलसमयः
दि.५	घ. ३	दि.८	दि. ७	मा. २	दि. ७	मा ६	मा. ६	गंतव्यराशेः
								प्राक्फलम्

शनियंत्र-मिदम्		
११	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

॥ अथ ग्रहतुष्टयर्थधारणाय मणयः ॥

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यं	मुक्ताफलम्,	प्रवाल	पन्ना	पुष्पराग	हीरा,	नीलम	गोमेदम्,	वैडूर्यम्,
विद्रुमम्,	रौप्यम्,	विद्रुमम्,	सुवर्णम्,	मुक्ताफलम्,	रौप्यम्,	लोहम्	राजवर्त,	राजवर्त,

शनि-यन्त्र विधि

यह यन्त्र शनि वार को भोज पत्र पर लिख कर धारण करने से शनि कृत अरिष्ट निवृत्त करता है ।

उपरोक्त गोचर फल जन्म राशि या जन्मलग्न के अंश से आदि लेकर अग्रिम राशि के उतने अंश तक प्रथम भाव एवं द्वादश भावों की अंशों पर कल्पना करने से अधिक मिलता है केवल राशि से फल में अधिक अन्तर रहता है ।

अथ शनैश्चरस्तोत्रम्---पिप्लाद उवाच---ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाय नमोस्तु ते । नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चांतकाय च। मनस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो ! नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोस्तु ते । प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च ॥ इस स्तोत्र को प्रातः पढ़ने से साढसती व ढैया की दुःखद पीड़ा नहीं होती ॥ अथ शनैश्चर पाद विचार---ग्रहगोचर फल विचार में प्रायः शनैश्चर के राशि बदलने पर सुवर्णादिपाद विचार इस प्रकार देखा जाता है कि शनैश्चर जिस दिन जिस समय राश्यन्तर में जावे उस समय अपनी जन्मराशि से चन्द्रमा (जन्मनिरसे रुद्र सुवर्ण हानि) १।६।११ वें स्थान में हो तो सुवर्ण पाद जानना, फल हानि ॥ यदि २।५।९ वें हो तो चांदी के पाद आया जानना फल शुभ (द्विपञ्चनन्दा रजतं शुभं च) यदि ४।८।१२ वें हो तो लोह के पाद आया जानना फल कष्ट (चतुरष्टमद्वादशलोहकष्टम्) यदि ३।७।१०वें हो तो ताम्रपाद आया जानना फल शुभ (त्रिसप्तदशमे ताम्रं शुभञ्च) अथ सुवर्ण पादफलं--- कुटुम्बरोधं बहुरोगयुक्तं क्लेशोदयं चैव करोति नित्यम् । द्रव्यार्थनाशं बहुलं करोति सुवर्णपादे स्वजने विरोधम् ॥ १ ॥ अथ रजतपाद फलम्---व्यापारमुग्रं धनधान्यसम्पत्महत्प्रतापः खलु राजमान्यम् । तद्वर्षमध्ये सुखसम्पदाप्तिः स्यान्मंगलं वै यदि रौप्यपादे ॥ २२ ॥ अथ ताम्रपाद फलम्---अनन्तलक्ष्मीं प्रकरोति लाभंकलत्रपुत्रैः सुतसम्पदाप्तिम् ।लाभोदयं चैव करोति सौख्यं शरीरसौख्यं खलु ताम्रपादे ॥ ३ ॥ अथ लोहपाद फलम्---शरीरपीड़ां रुधिरप्रकोपं कलत्रपीड़ां पशु-पुत्र-पीड़ांम् । व्यापारनाशं नृपतेर्भयञ्च लोहस्य पादे खलु निर्धनत्वम् ॥ ४ ॥

ग्रह पीड़ा नाशकारी नवग्रह मुद्रिका

ई. बुध पन्ना	प. शुक्र हीरा	आ. चन्द्र मोती
उ. बृ. पुखरा.	मध्येसू. माणि.	द. भौम मूंगा
वा. केतु वडूर्य	प. शनि नीलम	नै. राहु गोमेद

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहाणां दृष्ट्यादि चक्रम्

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रहाः
३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	०	३।१०	३।१०	ग्रहाणां एकपाददृष्टिः
५।९	५।९	५।९	५।९	०	५।९	५।९	५।९	५।९	द्विपाददृष्टिः
४।८	४।८	०	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	त्रिपाददृष्टिः
७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	३।७।१०	७	७	सम्पूर्णदृष्टिः
२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४२	ग्रहाणां वर्षाणि
हरिवंश श्रवण	त्रिपुर जप	षष्ठी जप	कांस्य दान	अमावस्या व्रत	गोरक्षा	मृत्युञ्जय जप	भुजग दान	ध्वजा दान	नेष्ट ग्रहस्य वर्षे दानोपाय साधनं
कृ. उफा. उषा.	रो. ह. श्र.	मृ. चि. ध.	अश्ले. ज्ये. रे.	पुन. वि. पूभा.	भ. पूफा. पूषा.	पुष्य अ. उभा.	आर्द्रा. स्वा. श.	म. मू. अश्वि.	विंशोत्तरी नक्षत्राणि
६	१०	७	१७	१६	२०	१९	१८	७	विंशोत्तरी वर्षाणि
च. म. बृ.	र. बु.	र. बृ. चं.	र. रा. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बु.	मित्र-ग्रहाः
बु.	मं. शु. गु. श.	शु. श.	मं. श. गु.	श. रा.	मं. गु.	गु.	गु.	०	सम-ग्रहाः
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रु-ग्रहाः
मेष १०	वृषभ ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन १५	धनु १५	उच्चराशयः परमोच्चांशाः
तुला १०	वृश्चि. ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २०	धनुः १५	मिथुन १५	नीच राशयः नीचांशाः
सिंह	कर्क	मे. वृश्चि.	मि. क.	ध. मी.	वृष. तु.	म. कु.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूल त्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्ण
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पु. स्त्री. नपुंसक
चतुरस्र	व. स्थूल.	चतुष्को.	वृत्त	वृत्त	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ	आकार
मध्यान्ह	अपरान्ह	मध्यान्ह	प्रभात	प्रभात	अपरान्ह	अपरान्ह	अपरा.	अपरा.	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैऋत्य	नैऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लोह	लोह	लोह	धातु
चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजगपद	अपद	अपद	पाद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्व	सत्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षीस्थिर	चर	पक्षी.	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभू.	दग्ध	श्मशान	वाणी	जलभू	उत्कट	ऊषार	ऊषर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	वायु	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सान्ध	विवर	विवर	स्थान

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

अथ नक्षत्र राशि ज्ञान चक्रम्

राशिज्ञाने विशेषः

नक्षत्र वा राशि में श और स में ब और व में कोई भेद नहीं होता, तथा जिस के नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें। (संयोगजाक्षरे[1] नाम्नि ग्राह्यं तत्रादिमाक्ष-रम्)

राशयः	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्राणि	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू. फा.	उ. फा.	उ. फा.	हस्त	चित्रा	चित्रा	स्वाति	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूला	पू. षा.	उ. षा.	उ. षा.	अभिजित्	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू. भा.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
प्रथमचरण	चू	ली	आ	०	ओ	वे	०	कु	के	०		डी	मा	मो	टे	०	पू	पे	०	रू	ती	०	ना	नो	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीयच०	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू	मी	टा	०	टो	ष	पो	०	रे	तू	०	नी	या	यो	ध	०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीयच०	चो	ले	०	उ	वी	०	का	ङ	ह	०	हो	डे	मू	टी	०	पा	ण	०	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ च०	ला	लो	०	ए	वु	०	की	छ	०	हि	डा	डो	मे	टू	०	पी	ठ	०	री	ता	०	तो	नं	यू	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	चि

नाम्नि ऋलृक्[2] अनुस्वारमात्रायां न भवन्ति ते। चेद् भवन्ति तदा ज्ञेया इ उ ए च यथाक्रमम् ॥१॥ बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्चन। ततः पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वर-विशारदैः ॥ २ ॥ प्रसुप्तो भाषिते येन येनागच्छति शब्दितः। तस्य नामाद्यवर्णे या मात्रा स्वरः स एव हि ॥ ३ ॥ अथ जन्मराशि-नामराश्योर्प्रधानता निर्णीयते—विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे। जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत् ॥ ४ ॥ देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके ॥ नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ॥ ५ ॥ काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भवरणे नामराशेः प्रधानता ।३॥ कुर्यात्षोडश[3] कर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते ॥ ७ ॥ विवाहघटनं चैव लग्नजं ग्रहजं बलम्। नामभाच्चिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा ॥ ८ ॥

अभिजित्-निर्णयः—वैश्वप्रान्त्यांघ्रिः श्रुति-तिथि-भागतोभिजित्स्यात् ॥ उत्तराषाढा का चौथा चरण श्रवण का पहला १५ वां भाग जोड़ के उसके चार भाग करो, उसको अभिजित् का एक चरण मान कर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करो। उत्तराषाढा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढा का एक २ चरण मानो। श्रवण का १५वां भाग छोड़ के जो शेष रहे उसके चार भाग करो, उसको श्रवण का १—१ चरण मानो ॥ उस प्रकार को प्रायः सामान्यगणक नहीं जानते एतदर्थ यहां लिखा गया है। अपने बच्चों का सुन्दर व शुद्ध नाम रखना चाहते हो तो "राश्यभिधान कल्पलता" मोतीलाल बनारसीदास, गायघाट बनारस' से मंगाइये। मूल्य १।) रु०।

नक्षत्र विषघटी ज्ञानम्—अब विषघटी के स्पष्ट करने की क्रिया समझ लीजिये, क्योंकि नक्षत्रगुणज्ञानचक्र में नक्षत्रों की विषघटी के मध्यम ध्रुवांक लिखे हैं, इनका स्पष्ट ऐसे करना, यथा— जिस दिन विषघटी देखना है उस दिन के सर्वक्ष से उसी नक्षत्र के ध्रुवांक को गुणा कर ६०का भाग देनेसे जो लब्धि मिले वही विषघटी के प्रवेश का समय है और विषघटी ४ घटी की होती है, इनका भी स्पष्ट करना जरूरी है। उदाहरण—मघा के सर्वक्ष ५५ को मघा के ध्रुवांक ३० से गुणा कर ६० का भाग देने से लब्धि २७।३० मिले, बस इसी समय से विषघटी का प्रारम्भ हुआ, विषघटी ४ को ५५ से गुणा कर ६० का भाग देने से लब्ध ३।४० मिले, बस इतने समय तक अर्थात् २७।३० से ३१।१० तक शुभ कार्य नहीं करना।

टिप्पणी—(१) ज्ञ्जोर्ज्ञः, यथा ज्ञानचन्द्रस्य मकरराशिः। कषसंयोगे क्षः, यथा क्षेमचन्द्रस्य मिथुनराशिः। एवं श्यालारामस्य कुम्भराशिः। (२) यथा—ऋषभदेवः ऋतकरामः लृतरामः। (३) गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तोन्नयनं ततः। जातकर्माभिधेयं च निष्क्रमप्राशने क्रमात्। चूडोपनयनं वेद-व्रतानां च चतुष्टयम्। गोदान-सेवलोन्मोक्षौ विवाहः षोडशक्रियः ॥

जन्मकुण्डली से विशेष विचार और इष्ट शुद्धि

लघु भ्राता का जन्म समय जानना—(१) जन्म लग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जोड़े जो राशि हो उस पर जब गोचर में गुरु ग्रह आवे तब भाई या बहन का जन्म होता है।

(२) तृतीयेश, तृतीयस्थग्रह, तृतीयेशस्थ राशीश की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है यदि भ्रातृ-प्रतिबन्धक योग न हो तो।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना—(१) जन्म लग्नेश के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटावे, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है तब भाई या बहन को कष्ट होता है।

(२) लग्नेश स्पष्ट में से तृतीयेश स्पष्ट घटावे. शेष में दशमेश स्पष्ट और मंगल स्पष्ट घटावे (यथा ल०—तृ०—शे०। द०+मं = यो. शे.—यो = शे.) शेष राशि में जब गोचर का शनि होता है तब भ्रातृकष्ट होता है।

(३) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, मंगल इन चारों स्पष्टों को जोड़ कर जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर शनि होता है उस काल में भ्रातृकष्ट होता है।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़ कर जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब भ्रातृकष्ट जानिये।

माता की मृत्यु का समय जानना—(१) जन्म के सूर्य स्पष्ट में से चन्द्रस्पष्ट को घटावे तो शेष के उस राशि में या त्रिकोण राशि में या उस शेष राशि के नवांश राशि में जब गोचर का शनि वा गुरु होगा तब माता की मृत्यु का समय जानना।

(२) सुखेश, चन्द्रमा या इनके साथ वाला ग्रह सुखस्थ ग्रह चतुर्थ भाव पूर्णदर्शी ग्रह इनमेंजो माता के लिये विशेष अरिष्टकारी ग्रह हो उस ग्रह की दशान्तर्दशा में माता को कष्ट होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पुत्रोत्पत्ति का समय जानना—(१) जन्मलग्नेश पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़े योग फल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों के त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब सन्तान होती है।

(२) चं० ल० गु० इन तीनों से पंचम स्थानेश या नवम स्थानेश की दशान्तर्दशा में सन्तानोत्पत्ति होती है।

विवाह स्त्री सुख होने का समय जानना—जन्म लग्नेश सप्तमेश को जोड़ कर जो राशि हो उस राशि में जब गोचर का गुरु आवे तब विवाह होता है।

(२) चन्द्र राशीश और अष्टमेश को जोड़े उस राशि में जब गोचर का गुरु हो तब विवाह होता है।

(३) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो उस राशि से द्वितीय भाव में जब गोचर में गुरु चन्द्र होते हैं तब विवाह होता है।

(४) शु० चं० सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय जानना—(१) गुलिकस्पष्ट से सूर्यस्पष्ट घटावें, शेष राशि के त्रिकोण में गोचर का शनि जब हो तब पिता रोगग्रस्त होता है। और उक्त शेषराश्यादि के समय जब गोचर का गुरु होता है तब पिता की मृत्यु होती है।

(२) सूर्य से १।२।७।१२ भाव में जो पापग्रह हो तो उसकी दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

पराशरोक्त प्राणपद से जन्मेष्ट काल शुद्ध करना—जहां अटे-सटे से लग्न बनाया गया हो, या जन्मपत्री के लग्न की अपेक्षा लग्न अधिक शुद्ध देखना हो तो इष्टकाल की घड़ियों को ४ से गुणा करें। पल १५ से अधिक हों तो १५ का भाग देकर जो लब्ध आवे वह चारगुणी की हुई इष्ट घटी के अंक में मिला दें। १५ का भाग देने से जो शेष पल रहें उनको दुगने कर चतुर्गुणित इष्ट घटी के नीचे रखना। पश्चात् १२ का भाग देना शेष राशिअंश बचे उनमें स्पष्ट सूर्य यदि चरराशि का हो तो ज्यों का त्यों, स्थिर में हो तो ८ राशि मिला कर, द्विस्वभाव, में हो तो ४ राशि मिला देने से राश्यादि प्राण पद बन जाता है। प्राणपद मनुष्यों की कुण्डली में प्रायः १।५।९ स्थान में, पशुओं की कुण्डली में २।६।१० स्थान में, पक्षियों की कुण्डली में ३।७।११ स्थान में और कीट सर्प जलचर जन्तुओं की कुण्डली में ४।८।१२ स्थान में रहता है। लग्न के व प्राणपद के अंश सदा एक समान रहते हैं॥

गंग यति निदान

जैनयति गंग विरचित। निदान विषयक अत्युत्तम ग्रन्थ। इस पुस्तक में बड़े सरल तरीके से हर एक प्रकार के रोग की पहचान लिखी है। मूल्य ६) रु.

मोतीलाल बनारसीदास, गायघाट, बनारस

भावी विचार

(१) पौष मास में मूल नक्षत्र से लेकर भरणी नक्षत्र तक के ११ नक्षत्रों को ध्यान पूर्वक देखकर कापी में लिख रक्खें, यदि इन दिनों में बादल हों तो आगे बर्षाकाल में सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र से लेकर विशाखा तक ११ नक्षत्रों मे वर्षा होवे। अर्थात मूल नक्षत्र में बादल हों तो आगे वर्षा काल में सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र वर्षता निकले। ऐसे ही पूर्वाषाढा से पुन-वसु, उत्तराषाढा से पुष्य, श्रवण से आश्लेषा, धनिष्ठा से मघा शतभिषा से पूर्वाफाल्गुणी, पूर्वाभाद्रपद से उ.फा. उ.भा. से हस्त, रेवती से चित्रा, अश्विनी से स्वाति और भरणी से विशाखा नक्षत्र में वर्षा होवे॥ सुज्ञ जनों को चाहिये कि इन दिनों को अवश्य देखें और विचार पूर्वक अपने पास नोट कर लें जिस से वर्षा का अन्दाजा ध्यान में रहे॥

(२) माघ शुक्ल सप्तमी को पूर्व उत्तर की वायु चले, आकाश बादलों से ढका रहे वा बिजली चमके तो आगामी वर्ष अच्छा होता है, इस दिन आकाश निर्मल हो तो दुर्भिक्ष पड़ता है, निश्चय है॥

(३) माघ शुक्ल नवमी को बादल या वर्षा आदि हो तो भाद्रपद में वर्षा अच्छी होती है।

(४) चैत्रकृष्ण में आकाश का निर्मल रहना अच्छा है, यदि यहां मूल से भरणी नक्षत्र तक बादल व वर्षा हो तो अनावृष्टि होती है। पौष में तो इन नक्षत्रों में बादल होना अच्छा है और इधर इस मास में निर्मल रहना अच्छा है॥

(५) चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को वर्षा बिजली या मेघ गर्जन हो तो श्रावण भाद्रपद में वर्षा की खेंच जरूरी होती है॥

(६) अश्विनी भरणी नक्षत्र पर सूर्य रहते यदि वायु- शास्त्रसम्बन्धी कोई वर्षानाशक अपयोग बना हो, परन्तु कृत्तिका के सूर्य में बिजली छींटे आदि हो जायें तो अशुभ फल नहीं होता है। रोहिणी में तपे, कृत्तिका में छींटे बिजली वा वर्षा हो और मृगशिर में वायु चले तो वर्षाकाल में अच्छी वर्षा होती है, परन्तु रोहिणी में मेघ गर्जे, थोड़ी वर्षा हो वा वायु चले, कृत्तिका में तपे पर मेघ गर्जन बिजली छींटे न हों, मृगशीर्ष में तपत हो तो वर्षा में खेंच होती है और दुर्भिक्ष पड़ता है॥

(७) कृत्तिका में यदि वर्षा बूंदा बांदी हो जाय तो वायुमण्डल में यदि पहिले कुछ अशुभ योग भी हुए हों तो उनका बुरा फल नहीं होता, वर्षा काल में अच्छा पानी बर्षता है। अतः कृत्तिका के सूर्य में बून्दा बांदी बिजली बादल का होना अच्छा है।

(८) रोहिणी पर सूर्य तब तक सूर्य अच्छा तपना चाहिये, गर्मी अधिक हो तो वर्षा श्रेष्ठ, वायु अधिक हो तो वर्षा की खेंच और वर्षा हो तो पहिले वर्षा की खींच होकर पीछे वर्षा होती है, इन १५ दिनों में वायु बादल बिजली वर्षा होनाहितकर नहीं, स्वच्छ धूप पड़नी चाहिये, रोहिणी में बून्दाबांदी होने पर वर्षा की खेंच जरूर होती है यह अनुभवसिद्ध है, आषाढी पूर्णिमा की वायु अच्छी होने पर भी इसके खेंच का असर तो पहिले होता ही है॥

(९) मृगशिर नक्षत्र पर सूर्य रहे तब तक जोर का पवन चलना अच्छा है, ... [illegible] ... होती है और कम भी होती है॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

मोतीलाल बनारसीदास, गायघाट, बनारस
Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS
...रहे तब तक जोर का पवन चलना अच्छा है, यदि वायु न चले तो वर्षा देर से आती है और कम भी होती है।

द्वादश राशियों का मासिक फलादेश सं० २००६ वि०

	"वैशाख"	ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन
मेष	व्यापार से लाभ, विवाद में जय स्त्रीकी ओरसे चिन्ता कष्ट।	कारोवार मध्यम, स्वजनों से विरोध, सन्ततिकष्ट, हरानी।	सन्ततिचिन्ता, लाभ अच्छा, नीच से भय, मित्रमिलाप।	सन्ततिवगृहचिन्ता,लाभउत्तम कारोवारकी उन्नति।	लाभ खर्च सम, शत्रु भय, गृह भूम्यादि चिन्ता, वायु विकार।	कार्य सिद्धि में विघ्न, वायु विकार, सन्तति चिन्ता, लाभ मध्यम।
वृष	लाभ कम, कारोबार की चिन्ता, सफर स हानि वायु विकार,	कारोवार उत्तम,यात्रामेंभय, राज पक्ष शुभ, पुत्र चिन्ता।	यात्रामें लाभ, वन्धु सुखशिर व नेत्र पीड़ा,सज्जन समागम।	मित्र मिलाप, कारोवारमें गड़वड़ी,शिरपीड़ा,सफर हो।	मित्र मिलाप,राजभय, लाभ मध्यम,शरीरकष्ट,दुःस्वप्न।	राज्यवशत्रुकीचिन्ता,मित्रसे प्रसन्नता,कारोवार में हानि।
मिथुन	मान वृद्धि, धर्मकृत्य में खर्च, लाभ उत्तम, तीर्थाटन।	मित्र मिलाप,कारोवारउत्तम शुभ में खर्च, पुत्र सेखुशी।	उत्तमलाभ,भाग्यवृद्धि सन्तति सुख,स्त्री चिन्ता,शरीरदुर्वल।	लाभअच्छा,भाग्यवृद्धि उत्साह शत्रुनाश स्वास्था मध्यम।	स्वास्थ्यमेंबिगाड़,मित्रविरोध सफर,लाभउत्तमखर्चज्यादा	गुप्त चिन्ता, लाभ मध्यम, मान वृद्धि, सत्पुरुषों सेमेल।
कर्क	चित्तभ्रम, अधर्म में प्रवृत्ति, लाभ कम, कारोबार में चिन्ता,	अधर्ममें प्रवृत्तिचित्तखिन्न, धनहानि,शिर व नेत्रपीड़ा।	स्वास्थ्य मध्यम, अकस्मात् लाभ,शत्रुभय,धर्ममें प्रवृत्ति।	कार्य सिद्धि मेंविघ्न,रक्त पित्त कष्ट,लाभकम,मासान्तशुभ।	कारोवारमध्यम,पशुहानि, गुप्तचिन्ता,शत्रुभय, उदासी	विवादसेभय,लाभ कमबन्धु कष्ट,स्वास्थ्यखराब वचिन्ता
सिंह	वायु विकार, शत्रुक्षय, अनेक चिन्ता, बन्धु विरोध।	खर्च विशष,यात्रा में कष्ट, शत्रु भय, कारोवारगड़बड़।	स्त्रीपुत्रव जायदादकीचिन्ता, कारोवार मध्यममित्रविरोध	मित्रबन्धुसे विरोध, लाभसे खर्चज्यादा,शिरवनेत्र कष्ट।	खर्चविशेष,उदर विकार, लाभ में रुकावट, स्त्री सुख	अकस्मातलाभ,सन्तति सुख, शत्रु भय, वृथा यात्रा,वायुपीड़ा
कन्या	सन्ततिकष्ट, कारोवार मध्यम, हैरानी, राजभय।	रोग भय, गृह चिन्ता,विवाद में हानि, मित्र बन्धु विरोध।	अशुभस्वप्न,उदासी,शत्रुभय, सन्तानद्वाराखर्च,लाभ कम।	स्त्री कीचिन्ता,कारोवार से लाभ कम,जलवशत्रुसे हानि।	कारोवारमध्यम,लाभहोकर भीहाथनआवे,नीच भय।	धर्म में रुचि, कारोवार मध्यम,अपयश,बन्धु चिन्ता।
तुला	शत्रुनाश, मित्र चिन्ता, वृथा विशेष खर्च, लाभ उत्तम।	सन्ततिकी चिन्ता, शत्रुनाश, लाभ उत्तम, राज्यसे मान।	हानिलाभसम,राज्यमेंविजय, मासकेअन्तमेंस्वास्थ्यखराब।	शत्रु नाश,सन्तति चिन्ता,उदर विकार,राज्यपक्षसे विजय।	राजपक्षसेमान,लाभमध्यम, स्वास्थ्यखराबगृहचिन्ता।	मित्रवियोग,कारोवार उत्तम, जायदादयापशु की चिन्ता।
वृश्चिक	लाभ कम, शरीर कष्ट, धर्ममें खर्च, प्रदेश यात्रा, स्त्री सुख।	गृह पुत्र, स्त्री के लिये खर्च, लाभउत्तम, शरीरसुखकी चिन्ता।	यात्रा से लाभ, स्त्री सुख, सम्बन्धियों व मित्रों से विरोध, गुप्त चिन्ता।,	कारोवार मध्यम, मित्र द्वारा लाभ, शिर पीड़ा, उत्साह वृद्धि।	मिष्टान्न व प्रिय वस्तु की प्राप्ति, गुप्त चिन्ता, लाभ श्रेष्ठ, सफर।	उत्साह वृद्धि, वायु विकार मित्र मिलाप, लाभ खर्च सम।
धन	धर्म में अरुचि, रक्तविकार शत्रुभय, कारोवार मध्यम।	लाभ होते हुए भी कोषमें न रहे,कार्यमें विघ्न उदासी।	यश,कारोबारकीचिन्तामित्र बन्धु से मदद, निद्रा कम।	मित्रबन्धुमिलाप,धनहानि, उदरवशिरमेंपीड़ा, सफर हो।	नयेकार्यकाविचार,अंगपीड़ा विवादभय, धर्ममेंअरुचि	उद्योगसे भीलाभ स्त्रीसुख,पशुलाभ,कारोवारकी चिन्ता।
मकर	स्वास्थ्य मध्यम,राजसुख, स्थानान्तरकी चिन्ता, यात्रामें कष्ट।	कारोवारमें विघ्न,शरीरसुख मध्यम, मित्र बन्धु विरोध।	स्वास्थ्य मध्यम, कारोवारमें हानि,वाहनभय,कार्यमेंविघ्न	रोजगारकीचिन्ता,वायुपीड़ा विवादसे हानि, वृथायात्रा	उत्साहमेंकमी,परिवारमें वृद्धिलाभखर्चसम,चिन्ताहो	कारोवारकी चिन्ता,बुद्धिभ्रम, बन्धुविरोध, वृथा यात्रा।
कुम्भ	लाभ कम, वृथा खर्च, स्त्री चिन्ता कारोवार मध्यम।	दुःस्वप्न,वृथाविवाद,यात्रामें हानिबन्धुविरोध,स्त्रीचिन्ता	गतमासकीअपेक्षाकुछअच्छा, गुप्त चिन्तारहे,मित्र सुख।	यात्राचिन्ता,बन्धुविरोध,कारोवार में हानि,स्त्रीकष्ट,पुत्रसुख,	शत्रुजलसे भय, सज्जन मिलाप,कारोवारकीचिन्ता	मस्तक व उदरमें रोग स्त्री के कारण खर्च, लाभअच्छा।
मीन	सन्तति की चिन्ता, वायु विकार, शत्रु नाश, व्रण, या चोट भय।	शत्रु नाश,शुभमें खर्च,राज्य पक्ष शुभ, सफरमें कष्ट।	लाभकम,खर्चअधिक,सन्तति चिन्ता,यात्रामेंकष्ट पशु भय।	शत्रु नाश, सन्तति चिन्ता, कारोवारमेंगड़बड़ी,पशुलाभ।	कारोवारमध्यम,रोगभय, वृथाविवाद,मित्रमिलाप।	लाभ मध्यम,शत्रुनाश,कारोवारकी चिन्ता,राज्यसे मान।

सूचना—उपर्युक्त राशिफल सामूहिक रूपेण स्थूल मानसे मिलता है सूक्ष्मयथार्थ मासिक फल जानना चाहें तो अपना वर्ष फल बनवाईये।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पुत्रोत्पत्ति का समय जानना--(१) जन्मलग्नेश पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़े योग फल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों के त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब सन्तान होती है ।

(२) चं० ल० गु० इन तीनों से पंचम स्थानेश या नवम स्थानेश की दशान्तर्दशा में सन्तानोत्पत्ति होती है ।

विवाह स्त्री सुख होने का समय जानना--जन्म लग्नेश सप्तमेश को जोड़ कर जो राशि हो उस राशि में जब गोचर का गुरु आवे तब विवाह होता है ।

(२) चन्द्र राशीश और अष्टमेश को जोड़े उस राशि में जब गोचर का गुरु हो तब विवाह होता है ।

(३) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो उस राशि से द्वितीय भाव में जब गोचर में गुरु चन्द्र होते हैं तब विवाह होता है ।

(४) शु० चं० सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है ।

पिता के खतरे का समय जानना--(१) गुलिकस्पष्ट से सूर्यस्पष्ट घटावें, शेष राशि के त्रिकोण में गोचर का शनि जब हो तब पिता रोगग्रस्त होता है । और उक्त शेषराश्यादि के समय जब गोचर का गुरु होता है तब पिता की मृत्यु होती है ।

(२) सूर्य से १।२।७।१२ भाव में जो पापग्रह हो तो उसकी दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है ।

पराशरोक्त प्राणपद से जन्मेष्ट काल शुद्ध करना--जहां अटे-सटे से लग्न बनाया गया हो, या जन्मपत्री के लग्न की अपेक्षा लग्न अधिक शुद्ध देखना हो तो इष्टकाल की घड़ियों को ४ से गुणा करें । पल १५ से अधिक हों तो १५ का भाग देकर जो लब्ध आवे वह चारगुणी की हुई इष्ट घटी के अंक में मिला दें । १५ का भाग देने से जो शेष पल रहें उनको दुगने कर चतुर्गुणित इष्ट घटी के नीचे रखना । पश्चात् १२ का भाग देना शेष राशिअंश बचे उनमें स्पष्ट सूर्य यदि चरराशि का हो तो ज्यों का त्यों, स्थिर में हो तो ८ राशि मिला कर, द्विस्वभाव, में हो तो ४ राशि मिला देने से राश्यादि प्राण पद बन जाता है । प्राणपद मनुष्यों की कुण्डली में प्रायः १।५।९ स्थान में, पशुओं की कुण्डली में २।६।१० स्थान में, पक्षियों की कुण्डली में ३।७।११ स्थान में और कीट सर्प जलचर जन्तुओं की कुण्डली में ४।८।१२ स्थान में रहता है । लग्न के व प्राणपद के अंश सदा एक समान रहते हैं ॥

गंग यति निदान

जैनयति गंग विरचित । निदान विषयक अत्युत्तम ग्रन्थ । इस पुस्तक में बड़े सरल तरीके से हर एक प्रकार के रोग की पहचान लिखी है । मूल्य ६) रु.

मोतीलाल बनारसीदास, गायघाट, बनारस

भावी विचार

(१) पौष मास में मूल नक्षत्र से लेकर भरणी नक्षत्र तक के ११ नक्षत्रों को ध्यान पूर्वक देखकर कापी में लिख रक्खें, यदि इन दिनों में बादल हों तो आगे वर्षाकाल में सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र से लेकर विशाखा तक ११ नक्षत्रों मे वर्षा होवे । अर्थात मूल नक्षत्र में बादल हों तो आगे वर्षा काल में सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र वर्षता निकले । ऐसे ही पूर्वाषाढा से पुन- वसु, उत्तराषाढा से पुष्य, श्रवण से आश्लेषा, धनिष्ठा से मघा शतभिषा से पूर्वाफाल्गुणी, पूर्वाभाद्रपद से उ.फा. उ.भा. से हस्त, रेवती से चित्रा, अश्विनी से स्वाति और भरणी से विशाखा नक्षत्र में वर्षा होवे ॥ सुज्ञ जनों को चाहिये कि इन दिनों को अवश्य देखें और विचार पूर्वक अपने पास नोट कर लें जिस से वर्षा का अन्दाजा ध्यान में रहे ॥

(२) माघ शुक्ल सप्तमी को पूर्व उत्तर की वायु चले, आकाश बादलों से ढका रहे वा बिजली चमके तो आगामी वर्ष अच्छा होता है, इस दिन आकाश निर्मल हो तो दुर्भिक्ष पड़ता है, निश्चय है ॥

(३) माघ शुक्ल नवमी को बादल या वर्षा आदि हो तो भाद्रपद में वर्षा अच्छी होती है ।

(४) चैत्रकृष्ण में आकाश का निर्मल रहना अच्छा है, यदि यहां मूल से भरणी नक्षत्र तक बादल व वर्षा हो तो अनावृष्टि होती है । पौष में तो इन नक्षत्रों में बादल होना अच्छा है और इधर इस मास में निर्मल रहना अच्छा है ॥

(५) चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को वर्षा बिजली या मेघ गर्जन हो तो श्रावण भाद्रपद में वर्षा की खेंच .जरूरी होती है ॥

(६) अश्विनी भरणी नक्षत्र पर सूर्य रहते यदि वायु- शास्त्रसम्बन्धी कोई वर्षानाशक अपयोग बना हो, परन्तु कृत्तिका के सूर्य में बिजली छींटे आदि हो जायें तो अशुभ फल नहीं होता है । रोहिणी में तपे, कृत्तिका में छींटे बिजली वा वर्षा हो और मृगशिर में वायु चले तो वर्षाकाल में अच्छी वर्षा होती है, परन्तु रोहिणी में मेघ गर्जे, थोड़ी वर्षा हो वा वायु चले, कृत्तिका में तपे पर मेघ गर्जन बिजली छींटे न हों, मृगशीर्ष में तपत हो तो वर्षा में खेंच होती है और दुर्भिक्ष पड़ता है ॥

(७) कृत्तिका में यदि वर्षा बूंदा बांदी हो जाय तो वायुमण्डल में यदि पहिले कुछ अशुभ योग भी हुए हों तो उनका बुरा फल नहीं होता, वर्षा काल में अच्छा पानी वर्षता है । अतः कृत्तिका के सूर्य में बून्दा बांदी बिजली बादल का होना अच्छा है ।

(८) रोहिणी पर सूर्य तब तक सूर्य अच्छा तपना चाहिये, गर्मी अधिक हो तो वर्षा श्रेष्ठ, वायु अधिक हो तो वर्षा की खेंच और वर्षा हो तो पहिले वर्षा की खींच होकर पीछे वर्षा होती है, इन १५ दिनों में वायु बादल बिजली वर्षा होनाहितकर नहीं, स्वच्छ धूप पड़नी चाहिये, रोहिणी में बून्दाबांदी होने पर वर्षा की खेंच .जरूर होती है यह अनुभवसिद्ध है, आषाढी पूर्णिमा की वायु अच्छी होने पर भी इसके खेंच का असर तो पहिले होता ही है ॥

(९) मृगशिर नक्षत्र पर सूर्य रहे तब तक जोर का पवन चलना अच्छा है, यदि वायु न चले तो वर्षा देर से आती है और कम भी होती है ॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

द्वादश राशियों का मासिक फलादेश सं० २००६ वि०

	"वैशाख"	ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन
मेष	व्यापार से लाभ, विवाद में जय स्त्रीकी ओरसे चिन्ता कष्ट।	कारोवार मध्यम, स्वजनों से विरोध, सन्ततिकष्ट, हरानी।	सन्ततिचिन्ता, लाभ अच्छा, नीच से भय, मित्रमिलाप।	सन्ततिवगृहचिन्ता, लाभउत्तम कारोवारकी उन्नति।	लाभ खर्च सम, शत्रु भय, गृह भूम्यादि चिन्ता, वायु विकार।	कार्य सिद्धि में विघ्न, वायु विकार, सन्तति चिन्ता, लाभ मध्यम।
वृष	लाभ कम, कारोबार की चिन्ता, सफर म हानि वायु विकार,	कारोवार उत्तम, यात्रामेंभय, राज पक्ष शुभ, पुत्र चिन्ता।	यात्रामें लाभ, बन्धु सुखशिर व नेत्र पीड़ा, सज्जन समागम।	मित्र मिलाप, कारोवारमें गड़बड़ी, शिरपीड़ा, सफर हो।	मित्र मिलाप, राजभय, लाभ मध्यम, शरीरकष्ट, दुःस्वप्न।	राज्यवशत्रुकीचिन्ता, मित्रसे प्रसन्नता, कारोवार में हानि।
मियुन	मान वृद्धि, धर्मकृत्य में खर्च, लाभ उत्तम, तीर्थाटन।	मित्र मिलाप, कारोवारउत्तम शुभ में खर्च, पुत्र सेखुशी।	उत्तमलाभ, भाग्यवृद्धि सन्तति सुख, स्त्री चिन्ता, शरीरदुर्बल।	लाभअच्छा, भाग्यवृद्धि उत्साह शत्रुनाश स्वास्था मध्यम।	स्वास्थ्यमेंविगाड़, मित्रविरोध सफर, लाभउत्तमखर्चज्यादा	गुप्त चिन्ता, लाभ मध्यम, मान वृद्धि, सत्पुरुषों सेमेल।
कर्क	चित्तभ्रम, अधर्म में प्रवृत्ति, लाभ कम, कारोवार में चिन्ता,	अधर्ममें प्रवृत्तिचित्तखिन्न, धनहानि, शिर व नेत्रपीड़ा।	स्वास्थ्य मध्यम, अकस्मात् लाभ, शत्रुभय, धर्ममें प्रवृत्त।	कार्य सिद्धि मेंविघ्न, रक्त पित्त कष्ट, लाभकम, मासान्तशुभ।	कारोवारमध्यम, पशुहानि, गुप्तचिन्ता, शत्रुभय, उदासी	विवादसेभय, लाभ कमबन्धु कष्ट, स्वास्थ्यखराव वचिन्ता
सिंह	वायु विकार, शत्रुक्षय, अनेक चिन्ता, बन्धु विरोध।	खर्च विशष, यात्रा में कष्ट, शत्रु भय, कारोवारगड़बड़।	स्त्रीपुत्रव जायदादकीचिन्ता, कारोवार मध्यममित्रविरोध	मित्रबन्धुसे विरोध, लाभसे खर्चज्यादा, शिरवनेत्र कष्ट।	खर्चविशेष, उदर विकार, लाभ में रुकावट, स्त्री सुख	अकस्मातलाभ, सन्तति सुख, शत्रु भय, वृथा यात्रा, वायुपीड़ा
कन्या	सन्ततिकष्ट, कारोवार मध्यम, हैरानी, राजभय।	रोग भय, गृह चिन्ता, विवाद में हानि, मित्र बन्धु विरोध।	अशुभस्वप्न, उदासी, शत्रुभय, सन्तानद्वाराखर्च, लाभ कम।	स्त्री कीचिन्ता, कारोवार से लाभ कम, जलवशत्रुसे हानि।	कारोवारमध्यम, लाभहोकर भीहाथनआवे, नीच भय।	धर्म में रुचि, कारोवार मध्यम, अपयश, बन्धु चिन्ता।
तुला	शत्रुनाश, मित्र चिन्ता, वृथा विशेष खर्च, लाभ उत्तम।	सन्ततिकी चिन्ता, शत्रुनाश, लाभ उत्तम, राज्यसे मान।	हानिलाभसम, राज्यमेंविजय, मासकेअन्तमेंस्वास्थ्यखराब।	शत्रु नाश, सन्तति चिन्ता, उदर विकार, राज्यपक्षसे विजय।	राजपक्षसेमान, लाभमध्यम, स्वास्थ्यखराबगृहचिन्ता।	मित्रवियोग, कारोवार उत्तम, जायदादयापशु की चिन्ता।
वृश्चिक	लाभ कम, शरीर कष्ट, धर्ममें खर्च, प्रदेश यात्रा, स्त्री सुख।	गृह पुत्र, स्त्री के लिये खर्च, लाभउत्तम, शरीरसुखकी चिन्ता।	यात्रा से लाभ, स्त्री सुख, सम्बन्धियों व मित्रों से विरोध, गुप्त चिन्ता।,	कारोवार मध्यम, मित्र द्वारा लाभ, शिर पीड़ा, उत्साह वृद्धि।	मिष्टान्न व प्रिय वस्तु की प्राप्ति, गुप्त चिन्ता, लाभ श्रेष्ठ, सफर।	उत्साह वृद्धि; वायु विकार मित्र मिलाप, लाभ खर्च सम।
धन	धर्म में अरुचि, रक्तविकार शत्रुभय, कारोवार मध्यम।	लाभ होते हुए भी कोषमें न रहे, कार्यमें विघ्न उदासी।	यश, कारोबारकीचिन्तामित्र बन्धु से मदद, निद्रा कम।	मित्रबन्धुमिलाप, धनहानि, उदरवशिरमेंपीड़ा, सफर हो।	नयेकार्यकाविचार, अंगपीड़ा विवादभय, धर्ममेंअरुचि	उद्योगसे भीलाभ स्त्रीसुख, पशुलाभ, कारोवारकी चिन्ता।
मकर	स्वास्थ्य मध्यम, राजसुख, स्थानान्तरकी चिन्ता, यात्रामें कष्ट।	कारोवारमें विघ्न, शरीरसुख मध्यम, मित्र बन्धु विरोध।	स्वास्थ्य मध्यम, कारोवारमें हानि, वाहनभय, कार्यमेंविघ्न	रोजगारकीचिन्ता, वायुपीड़ा विवादसे हानि, वृथायात्रा	उत्साहमेंकमी, परिवारमें वृद्धिलाभखर्चसम, चिन्ताहो	कारोवारकी चिन्ता, बुद्धिभ्रम, बन्धुविरोध, वृथा यात्रा।
कुम्भ	लाभ कम, वृथा खर्च, स्त्री चिन्ता कारोवार मध्यम।	दुःस्वप्न, वृथाविवाद, यात्रामें हानिबन्धुविरोध, स्त्रीचिन्ता	गतमासकीअपेक्षाकुछअच्छा, गुप्त चिन्तारहे, मित्र सुख।	यात्राचिन्ता, बन्धुविरोध, कारोवार में हानि, स्त्रीकष्ट, पुत्रसुख,	शत्रुजलसे भय, सज्जन मिलाप, कारोवारकीचिन्ता	मस्तक व उदरमें रोग स्त्री के कारण खर्च, लाभअच्छा।
मीन	सन्तति की चिन्ता, वायु विकार, शत्रु नाश, व्रण, या चोट भय।	शत्रु नाश, शुभमें खर्च, राज्य पक्ष शुभ, सफरमें कष्ट।	लाभकम, खर्चअधिक, सन्तति चिन्ता, यात्रामेंकष्ट पशु भय.	शत्रु नाश, सन्तति चिन्ता, कारोवारमेंगड़बड़ी, पशुलाभ।	कारोवारमध्यम, रोगभय, वृथाविवाद, मित्रमिलाप।	लाभ मध्यम, शत्रुनाश, कारोवारकी चिन्ता, राज्यसे मान।

सूचना—उपर्युक्त राशिफल सामूहिक रूपेण स्थूल मानसे मिलता है सूक्ष्मयथार्थ मासिक फल जानना चाहें तो अपना वर्ष फल बनवाईये।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

द्वादश राशियों का मासिक फलादेश सं० २००६ वि०

	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुण	चैत्र
मेष	चित्तभ्रम,शत्रुनाश,कारोवार मध्यम, वाडों की इत्तराजी।	कार्य सिद्धि, मित्र मिलाप, सन्तति चिन्ता, कारोवार उत्तम ।	सफर में हानि, बन्धु सुख, मास के मध्य में लाभ, चित्त प्रसन्न ।	स्त्री-पुत्रार्थ खर्च, कारोवार ठीक, धर्ममेंप्रवृत्ति,गुप्तचिन्ता	राजपक्ष मध्यम, उत्साह कम, उदर विकार, लाभ कम,	स्वास्थ्य मध्यम, कारोबार ढीला, शत्रुनाश, बन्धु सुख ।
वृष	चित्त उदास, पशु पीड़ा, गत मास की अपेक्षा कुछ ठीक	विवाद भय, बन्धुओं से बिरोध, नवीन काम का विचार।	धर्म कृत्य में प्रवृत्ति, कारो-वार में हानि, उद्वेग, स्त्री द्वारा खर्च।	स्त्रीकीओरसे खुशी,शत्रुपीड़ा, राज्यपक्षसेचिन्ता पशु भय ।	लाभ होकर भी हाथ में न रहे, स्त्री से विषाद, बन्धु मिलाप ।	शत्रु भय, कारोवार की चिन्ता, पशु पीड़ा, यात्रा में कष्ट, ।
मिथुन	लाभ उत्तम, स्त्री चिन्ता, कारोवार अच्छा, नौकर से सावधान।	उत्साह वृद्धि, बन्धु कष्ट, वृथा खर्च, कारोवार से लाभ।	वायु पीड़ा, भाग्य वृद्धि, यात्रा से लाभ, मास का पूर्वार्ध शुभ ।	सन्ततिकेकारणखर्च,कारोवार श्रेष्ठ, यात्रा में कष्ट।	रोजगार मध्यम, पशुलाभ यात्रा सुख, बन्धु पीड़ा ।	राज पक्ष शुभ, कारोवार में उन्नति, स्त्री कष्ट चिन्ता ।
कर्क	कुटुम्बमेंकष्ट,स्त्रीसुख,उत्तम लाभ खर्च सम, हैरानी ।	वाहन भय,खर्च अधिक,नीच से विवाद, मासान्तकुछ शुभ।	लाभ कम, शिर व नेत्र में कष्ट, प्रिय वस्तुकावियोग।	लाभकम,मित्रवियोग,स्वास्थ्य मेंगड़बड़ी,स्थानान्तर भीहो।	लाभ मध्यम,चित्तभ्रम,वाहन सुख,पशुपीड़ा,यात्रामें कष्ट ।	लाभकम, खर्चविशेष, गुप्त चिन्ता,बन्धुमिलाप,शत्रुपीड़ा।
सिंह	नीचभय, धन व मान हानि, लाभ में विघ्न, गुप्त चिन्ता	कारोवार मध्यम, सज्जन मिलाप,गुप्तचिन्ता,निरुत्साह	बन्धुओं से बिगाड़ स्त्री सुख कारोवारकी चिन्ता,रोग भय	कारोवारढीला,बन्धुसुख,मान प्राप्ति। कार्यान्तरकाविचार।	लाभसे खर्चविशेष,बन्धुओं से बिगाड़, नये कामकी चिन्ता ।	लाभमध्यम,बन्धुओंसे अनवन, वृथा यात्रा उदासी ।
कन्या	सन्ततिचिन्ता, बन्धुस्नेह म-ध्यम,लाभवृद्धि,स्त्रीसेविगाड़	कुटुम्ब में क्लेश, सफर से भय, कारोवार कुछ ठीक ।	चौरभय, स्त्रीको कुछ कष्ट, लाभकम,खर्चज्यादा,हैरानी।	दुःस्वप्न, विवादभय,स्त्रीद्वारा खर्च, गृह सम्बन्धि चिन्ता ।	सन्तति की ओरसेखुशी,लाभ मध्यम, नीचसेभय, उद्वेग ।	लाभ हो, साथ ही शुभा-शुभ कामोंमें खर्च,स्त्रीकी चिन्ता ।
तुला	व्यापारसे लाभ, शत्रुनाश, विवादमें वृथा खर्च, सफर भी हो।	वृथा खर्च, कार्य सिद्धि, व्यापार से लाभ; स्वास्थ्य श्रेष्ठ ।	कार्यसिद्धि में विलम्ब, लाभ मध्यम, पुत्र, स्त्री चिन्ता, शिर पीड़ा।	बन्धुमिलाप,लाभउत्तम, नये कार्यकाविचार,उत्साहवृद्धि।	कारोवार से लाभ, शुभ में खर्च, जमीन मकानात की चिन्ता ।	स्त्री पुत्रों द्वारा खर्च विशेष लाभमध्यम, गुप्तचिन्ता।
वृश्चिक	स्वास्थ्य अच्छा, कारोवार उत्तम, पशु से भय, उन्नति हो।	कारोवार में वृद्धि, धर्म में प्रवृत्ति, स्त्री चिन्ता, राज्य से मान।	स्वास्थ्य मध्यम, लाभ अच्छा, वाहन सुख, सज्जन मिलाप, ।	बड़े पुरुषों से सुख मिले,लाभ मध्यम,पुत्रादिद्वारा खर्च ।	वायु विकार, व्यापार से लाभ, उत्साह वृद्धि, स्त्री सुख ।	पुत्रद्वारा खर्च,उदर विकार लाभ अच्छा, राज्य से विजय ।
धनु	कारोवार मध्यम, जायदाद की चिन्ता हो ।	बन्धुओं से खुशी, वृथा यात्रा, मासान्तमें धन व धर्मलाभ।	लाभकम,नये कार्यकेविचारों में असफलता, मित्र सुख, ।	धर्म में अरुचि,स्वास्थ्यखराब, अकस्मात् हानि,चिन्तावृद्धि ।	शरीर में पीड़ा,यात्रा,गत मास की अपेक्षा लाभअच्छा ।	शरीर सुख मध्यम, लाभखर्च सम, उत्साह हीन,उदासी ।
मकर	उन्नति,उत्साहवृद्धि,कारोवार ढीला, स्त्री सुख,बड़ोंसे मान ।	शरीर कष्ट, हैरानी, स्त्री व सन्तति कष्ट,ठगोंसे सावधान	रोजगारकीचिन्ता,क्लेशचित्त भ्रम,मासकाअन्त्यभागशुभ ।	विवाद भय, लाभ कम,खर्च विशेष, उद्वेग, गृह में क्लेश ।	राजपक्ष से चिन्ता, लाभ कम, नेत्र व शिर में कष्ट ।	गतमासकीअपेक्षालाभ अच्छा, शत्रु से पराजय,हैरानी ।
कुम्भ	शरीरअस्वस्थ, लाभमें रुका-वटें, बन्धु मित्रसे सहायता ।	कारोवार मध्यम, सुख की चिन्ता,वृथा खर्च स्त्री कष्ट ।	शुभ विचार, कारोवार कुछ ठीक,शिर व मस्तकमें रोग ।	स्वास्थ्य अच्छा ,अग्नि वचौर सेभय,लाभखर्चसम,सुभोजन ।	लाभ अच्छा, चित्त में उद्वेग, स्त्री, पुत्र चिन्ता,वायु पीड़ा ।	यात्रा में कष्ट, उदर विकार वृथा खर्च, गृहस्थ चिन्ता।
मीन	लाभश्रेष्ठ,बन्धुसुख,स्त्रीकष्ट पशु पीड़ा,यात्राका विचार।	शिर पीड़ा,लाभअच्छा,मित्रों से खुशी, अचानक चिन्ता ।	चित्तमें उद्वेग,कारोवारठीक, नजदीक की यात्रा से लाभ ।	ठगोंकाभय,लाभअच्छा, शिर मस्तक में कष्ट,समीपयात्रा ।	राजपक्ष शुभ, लाभ मध्यम उदर विकार, शत्रु नाश ।	लाभउत्तम मित्रवियोगस्वा-स्थ्यमें गड़बड़, शुभ विचार ।

सूचना—उपर्युक्त राशिफल सामूहिक रूपेण स्थूलमान से मिलता है सूक्ष्म यथार्थ मासिक जानना चाहें तो अपना वर्षफल बनवाइये ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

विदेशों और द्वीपान्तरों के अक्षांशादि २५

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वर्षा विज्ञान ।

सूर्य के रोहिणी नक्षत्र पर रहते नीचे लिखे दिनों में जहां कहीं थोड़ी सी वर्षा हो तो इतने दिनों तक वहां वर्षा न होवे जैसे

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
७५	५०	४५	४२	३९	३४	२१	३०	२८	२४	२१	१६	१२

रोहिणी में सूर्य प्रवेश के प्रथम दिन थोड़ी सी वर्षा हो तो उसदिन से ७२ दिन तक वर्षा की खेंच रहती है। सूर्य रोहिणी पर रहे उन दिनों में गर्मी ज्यादा पड़े तो आगे वर्षा श्रेष्ठ। वायु से राजाओं में विग्रह। थोड़ी वर्षा से संवत् नेष्ट, दैवात यदि अधिकवर्षा हो जावे और नदियों में वर्षा का जल भी चल पड़े तो अशुभ फल नष्ट होकर वर्षा अच्छी होती है। उन दिनों में बिजली से वर्षा की कमी। अधिक दिन की बिजली से शुभ, बादल की दिशा में वर्षाकी कमी। निर्मल दिशा में वर्षा अधिक होती है।

विदेशों और द्वीपान्तरों के अक्षांशादि २५

काण्डा (लंका)	७।११उ.	१।३१	+ ०।४०	४७पू.
कैरो (मिस्र)	३०।३६उ.	७।५	– ७।३१	४४४ प
न्यूयार्क (अमेरिका)	४०।२७उ.	१०।१६	–२५।४	१४९७प
अर्जेंटायना (द.अ)	२६।१२द.	५।५४	–२३।३४	१४०७प
मैक्सिको (उ. अ)	१९।१८उ.	४।१२	–२९।१४	१७४७प
रोम (इटली)	४१।३३उ	१०।३९	–१०।३४	६२७पू.
इस्फहान (ईरान)	३२।२७उ	७।३८	– ४।३०	२४३ प
मक्का (अरब)	२१।० उ.	४।२६	– ६।४	३५७ प.
कुस्तुन्तुनिया (तुर्की)	४१।० उ	१०।२९	– ७।५४	४६७ प.
काबुल (अफगा)	३४।२७उ.	८।१३	– २।१३	६६प.

वर्षा ज्ञानसारणी

दिसंबर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
जून जौलाई	जू. १४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	जौ. १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
जनवरी	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
जौलाई अगस्त	जौ. १५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	अ. १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
फरवरी	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८			
अगस्त सितंबर	अ. १५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	सि. १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मार्च	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
सितंबर अक्टूबर	सि. १२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	अ. १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अप्रेल	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
अक्टूबर नवंबर	अ. १३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	न. १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२

वर्षा ज्ञान सारणी से वर्षा जानने की रीति—दिसंबर, जनवरी, फरवरी मार्च इन चारों मासोंकी तारीखों में जिनजिन तारीखों में जहां वर्षा होती है। उसके हिसाब से ही वर्षा ऋतु में जौलाई, अगस्त, सितंबर, अक्टूबर इन चार मासों में वहां वर्षा प्रायः हुआ करती है। प्राचीन ज्योतिष के वृष्टि विज्ञान के सिद्धान्त से आधुनिक समय से अनुसार भारत में १२ दिसंबर के बाद ही शीत काल में वर्षा साधारण रूप से होने का नियम है। जैसे मान लो कि शीतकाल में लुधियाना में १९ दिसंबर को वर्षा हुई है तो वर्षा ऋतु में वहां २ जौलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार मान लिया कि शीतकाल में १५ जनवरी को देहली में वर्षा हुई है तो ऊपर की वर्षा ज्ञानसारणी यह बता देगी कि वर्षा ऋतु में वहां २९ जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार जैसे कि २२ फरवरी को शीतकाल में कहीं वर्षा हुई हो तो वहां ५ सितम्बर को वर्षा होगी। वर्षा ज्ञान के लिये शीतकाल में होने वाली वर्षा की तारीख वार टाईम सहित नोट करके देखने से वर्षा ऋतु की वर्षा का ज्ञानठीक हो सकता है, विशेष सूक्ष्मता के लिये मेघगर्भ तथा ग्रहोंका सप्त नाड़ी चक्रादि विचार करना चाहिये।

चरक संहिता

श्रीयुत जयदेवजी विद्यालंकार, आयुर्वेदाचार्यकृत सरल तथा विस्तृत हिन्दी अनुवाद सहित। तृतीय संस्करण छप कर तैयार है। यह अनुवाद कितना उपयोगी है यह इसकी अत्यन्त बढ़ती हुई माँग को देखकर ही आप अन्दाजा लगा सकते हैं। पक्की कपड़े की दो जिल्दों सहित मूल्य ३२) रु.

प्रकाशकः—

मोतीलाल बनारसीदास,

गायघाट. बनारस

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वर्षकुण्डली राष्ट्रनायक नेहरूजी

आकाशी कौंसिलका विचार

गवर्नर जनरल पदारूढ कुण्डली

सू.८मं शु.६ ६बु. ७गु.के ५श १० ४ ११ १च.रा. मं.३ १२ २

गताब्दा ५९ प्र ६०

विमृश्य ग्रहसद्गतिं मुनिवचः सिद्धान्तयित्वा स्फुटम् । शास्त्रं शाकुनकं विचार्य नितरा-मालोच्य सत्संहिताः ॥
राष्ट्रे राजसमाजधर्मविषये ह्युद्भाविनी या स्थितिः । सा शम्भोः कृपया यथामति मया प्रागेव निर्णीयते ॥

६ श.४ ७के म.५ ३ गु. शु. ८ २ च९बु ११ रा.१ १० १२

२१ जून सन ४८ दिन के १० बज कर २० मि०

इस वर्ष आकाशी कौंसिल (ग्रहपरिषद्) के राजा मन्त्री आदि दशाधिकारियों तथा आर्षविचारपूर्वक भारत एवं अन्य राष्ट्रों के वर्ष वर्षेशादि लग्नों और शकुनशास्त्र व सूक्ष्म-ग्रहयोगों को ध्यान में रखते हुए तथा राष्ट्रनायकों की दशा वर्ष प्रवेश आदि अनेक प्रकार की ऊहापोहके अनन्तर श्रीप्रभु कृपा से ज्ञात होता है कि यह वर्ष भारत की विजय के लिए शुभ होते हुए भी राज्याधिकारियों के लिए इसका विशेष भाग संघर्षमय ही व्यतीत होगा और कई राष्ट्रों की प्रजा में पापबुद्धि बढे घोर विग्रह हों, हाहाकार मचे चतुष्पदों का और म्लेच्छों का महानाश हो इधर जनता में उद्भ्रान्त विचारधारा फैली रहेगी। आन्तरिक शान्ति नहीं आवेगी। सीमाओं की दुर्घटनाओं तथा अन्य नई २ समस्याओं से प्रायः कई बेर सब का चित्त-घबरावेगा तथा धर्म की ओर कुछ ध्यान होगा। दक्षिण में साढे पन्द्रह अक्षांश के आसन्न किसी शासक वर्ग के विरुद्धक्रान्ति फैलेगी तथा रक्त पात भी होगा। जिससे वहां का शासक वर्ग डगमगा जायगा। देहली वा देहली प्रान्त को विक्रमी सं, २००७ के भाद्रपद तक भय, रोग उपद्रवों की आशंका है पीछे जब शनि कर्क में आ कर विशेषमलीन वर्ण का हुआ था तो इसने काश्मीर में तबाही शुरू कर दी थी '(कर्के काशमीरके बाधा) अब यह सिंह में आ गया है आकाश में जिस समय भी इसके बिम्ब का वर्ण रूक्ष-पिलाई या विशेष कालिमा लिए दीखेगा तभी इन्द्रप्रस्थे मृगाधिपे इत्यादि आचार्योक्त वाणी का अशुभ फल शुरू हो जावेगा। श्रीराष्ट्र-नायक पं० नहरू एवं माननीय राजगोपालाचार्य तथा श्रद्धेय श्री पटेल महोदय से हमारी प्रार्थना है कि अपने पूर्वजमहर्षियों तथा आचार्यों के वाक्यों पर श्रद्धा रख कर इस वर्ष विश्व-शान्ति के लिए विशेष कर भारत को युद्ध विनाश यातना से बचाने के लिए सपाद लक्ष श्री चण्डी महायज्ञ विधिपूर्वक पुण्य सलिला श्री यमुना जी के तट पर करावें। इस विधान से भारत की स्वतंत्रता अक्षुण्ण रहेगी। जनता में सुख शान्ति बरतेगी। उपद्रवों का नाश होगा और आप का इससे भी विशेष उत्कर्ष बढेगा। गत महासमर के समय देहली में जो विश्व-शान्ति यज्ञ हुआ था उसका प्रभाव तो पूर्णाहुति पड़ते ही दीखने लगाथा यह जगविश्रुत बात है। स्मरण रहे कि वि० सं०२०१० के पौष तक भारत के शत्रु इसकी स्वतन्त्रता के विरुद्ध अनेक चालें चलेंगे सो राष्ट्र के कर्णधारोंको अत्यन्त सावधानी की आवश्यकता है इस वर्ष यद्यपि सरकारी मशीनरीमें कुछ परिवर्तन के योग तो हैं परन्तु आमूल परिवर्तन जैसे स्वतन्त्र देशों में होने चाहियें वैसे योग वि०,सं० २००९ के बाद ही होंगे। गवरनर पदारूढ कुण्डलीलग्न में स्थिर का भौम द्विस्वभाव का गुरु पड़ा है अतः ज्ञात होता है कि भारत-ब्रिटिश सम्बन्ध अभी पूर्णतया टूटने के योग नहीं हैं। वि० सं० २००९के अनन्तर भारत राष्ट्र नायकों की योग्यता २६ से औपनिवेशिक स्थिति की मंजिल को पार कर पूर्णस्वतन्त्रता तक पहुँचने के योग्य हो जा-वेगा। वर्तमान राष्ट्र नायक की वर्ष कुण्डली में शनि गुरु की स्थिति ऐसी है कि नहरू सरकार दैशिक कठिन समस्याओं को सफलता से हल करेगी ; और उत्तरोत्तर शक्ति भी प्राप्त करती जावेगी। इस वर्ष बेकारी कुछ अंश तक दूर हो जावेगी पूर्णतया सं० २००७ में आषाढ कृष्ण ७ के बाद। इस वर्ष में किसी शासक को शस्त्र भय का योग है सावधान। वर्षेशकुण्डली में षष्ठेश नीच हो कर केन्द्र में बैठा है इस लिए भारत के आन्तरिक शत्रु यहां के मुसलमानादिक भी भारत से सहानुभूति दिखायेंगे। कुछेक नीच गुरुवशात् गुप्त षड़यन्त्र योजना में लगेंगे। परन्तु भाग्यस्थ उच्च भृगु के कारण भारत का अहित न कर सकेंगे उल्टे स्वयं हानि उठावेंगे। मजदूरों के अधिपति शनि धनस्थ होने के कारण कई जगह इन की कारखानों के धनिक स्वामियों से अनबन हो कर हड़तालों की स्थिति बन जावेगी। पर गुरु की मित्र दृष्टि से वह स्थिति शीघ्र ही दूर भी हो जावेगी। वि० सं० २००७ तक कलकारखानों की नीति में स्वतन्त्र-राष्ट्रों की तरह कोई विशेष परिवर्तन न हो गा। पञ्चमेश भौम का यहां विद्वान्.उच्च के भृगुके साथ स्थान सम्बन्ध होने से इस वर्ष में सरकार की ओर से विद्या प्रसार की विशेषयोजना ब-नेगी। और धीरे धीरे कार्यरूप में परिणत होनी शुरू होगी। गुरुगतिवशात् वि० सं० २००८ से देववाणी संस्कृत का भविष्य उत्तरोत्तर उज्ज्वल होगा। विद्याजीवि विद्वान् लेखकों तथा प्रकाशकों को निरंतर लाभ होता रहेगा। केन्द्र में सूर्य राहु और त्रिकोण में भौम है, अतः कई प्रदेशों में जमीन कर की वृद्धि होगी और कहीं बिल्कुल माफ होगी। और यही योग इस वर्ष आर्य अनार्य दोनों देशों की जनता में शस्त्र विद्या सैनिक शिक्षार्थ उल्लास बढाता है। बुध स्वयं राजा मन्त्री है अतः बिजली से किसी जगह भयंकर जानमाल की हानि होगी। कई जंगलों तथा मकानों कारखाने आदि को अग्नि प्रकोप से भारी हानि पहुंचेगी। कई जगह चोर डाकुओं से भी जनता कष्ट पावेगी। स्वतन्त्र भारत की जन्मदशानुसार यद्यपि भारत सरकार की आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी तथा कार्य कोई नहीं रुकेगा, मशीनरी आदि की उन्नति निरन्तर होती रहेगी। भौमगतिवशात् कंट्रोल अन्न वस्त्रादिक पर होगा फिर भी व्यापारेश बुध की स्थिति विशेष अशुभ नहीं अतः व्यापार कुशल जन कई तरह के व्यापारों द्वारा लाभा-न्वित रहेंगे। अन्त्यजेश राहु के प्रभाव से हरिजन आदि उन्नति की ओर अग्रसर रहेंगे इन पर उच्च वर्णों का प्रभाव वि० सं० २००८ तक अत्यन्त कम हो जावेगा। इसी अवधि में कई जगह इन से वैमनस्य दंगे फसाद भी होंगे। वि० सं० २००९ के कार्तिक बाद किसी राजनै-तिक कारणवश इन की उन्नति रुक जावेगी। अन्य जातियों से फिर यह पूर्ववत प्रेमभाव पैदा करनेके लिये प्रयत्नशील होंगे। ग्रहगति बड़ी विचित्र है बड़े भूस्वामी रईसोंकी दिक्कतें बहुधा सं० २००६ माघ तक रहेंगी। कांग्रेस की वर्ष कुण्डली को देखते हुए ज्ञात होता है कि सं० २००६ में कोई छोटा बड़ा चुनाव हो तो १६ विस्वे और सं० ७ में चुनाव हो तो१७विस्वे सफलता मिलेगी। सेवा त्यागादि आदर्श पथ से गिरे हुए कई उन्मत्त कांग्रेसियों को सं० २००७ में फल मिलेगा। राष्ट्रनायक नेहरूजी की वर्ष कुण्डली की ग्रह स्थिति से ज्ञात होता है कि इसवर्ष आपका यश प्रताप और भी बढेगा और नवजात स्वतन्त्रता पर दासताकी छाया गिराने वाले तथा आतंक फैलाने वाले दुष्ट पुरुषों की खबर भी आप द्वारा खब ली जावेगी। तथा अना-श्रित---शरणार्थियों की समस्या भी सुलझाई जावेगी। होनेवाले कांग्रेसवालों के अवाञ्छनीय मतभेद को और किसी पूर्वीय भूभाग के झगड़े को भी आप निवृत्त करेंगे। काश्मीर की समया

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

का हल आषाढ शुक्ल १२ के पूर्व हो जावेगा। युद्ध में अन्तिम विजय भारत का निश्चित है। प्रभु कृपा तो अखण्ड काश्मीर की सूचक है।

पश्चिमीय राजपूताने की राजनैतिक स्थिति अभी डावांडोल सी रहेगी। पर मध्य राजपूताने के वासियों का वर्षारम्भ से ही भारत सरकार में पूर्ण विश्वास और सहयोग का भाव बढ़ना प्रारम्भ हो जावेगा। नवनिर्मित हिमाचल प्रदेश का अधिष्ठाता गुरु है इसकी गति विधि को देखते हुए यह प्रदेश शनैः शनैः उत्तरोत्तर उन्नति के पथ पर अग्रसर होता दीखता है। गोचरभ्रमण से गुरु कर्क राशि में आने तक यह प्रदेश समृद्धिशाली हो जावेगा। "आकाशी कौंसिल का अन्य देशों पर प्रभाव" इस वर्ष इंग्लैण्ड की आर्थिक स्थिति खराब रहेगी। प्रधान मन्त्री श्री एटली को महाचिन्ता तथा अनेक अड़चनों का सामना करना पड़ेगा। अमेरिका में महाविग्रह उत्पात होगा। ब्रिटेन और अमेरिका में परस्पर मनोमालिन्य का बीजांकुरित तो हो जावेगा परन्तु परिस्थिति वशात् दोनों एकता सूत्र में बद्ध रहेंगे। यवन देशों में संघर्ष से युद्ध विद्रोहाग्नि की चिनगारियां उड़ती रहेंगी। फिलस्तीन के समीप समुद्री प्रदेश में बड़ी व जहाज की कई दुर्घटनाएं होंगी। बहमा में आषाढ तक दंगे खून खराबी होने के और भी योग हैं। यहां की जनता में साम्यवाद की विचारधारा उठेगी पर अभी असफल रहेगी। चीन में अशान्ति का वातावरण बना रहेगा। फ्रांस की राजनैतिक और आर्थिक स्थिति वि० सं० २००७ के भाद्रपद तक खराब रहेगी। रूस में धन जन हानि के योग हैं किसी से संघर्ष के अतिरिक्त प्रकृति के उत्पात से भी कष्ट होगा। जापान में गत वर्ष की अपेक्षा जनता में उत्साह वृद्धि होगी नियन्त्रण ढीला पड़ेगा। नये उद्योग धंदे चालू होंगे। भावि युद्ध में जापान पहिले जिस के साथ सम्मिलित होकर लड़ेगा अन्त में उनहींका शत्रु हो कर विपक्ष में मिल जावेगा। इसवर्ष पाकिस्तान की ग्रह स्थिति शुभ नहीं अपने दुर्भाग्य से युद्धभय तथा आन्तरिक कलह एवं अर्थपीड़ित होकर स्वयं विनाश की ओर पग बढाएगा। तथा सब ओर से बेइज्जत होकर युद्धादि से भारी जानोमाल की हानि भी उठावेगा। चीन-श्याम लंकादिकमें भी पाकिस्तान के प्रतिकूल विशेष घृणा विरोध होकर रहेगा। कहीं तो इसके विरुद्ध प्रतिक्रिया भी देखने में आवेगी। पाकिस्तानेश्वर शनि के साथ सिंह में भौम युति देखें क्या खेल दिखाती है। यहां की जनता प्रायः नौकरशाही के पंजे में जकड़ी रहेगी। पश्चिमी पाकिस्तान के ईशानकोण में अक्षांश ३३।३४ के आसन्न परस्पर कुछ लूट मार विद्रोह भी होगा। यद्यपि भारत को पाकिस्तान अपनी भयंकरता का पूर्ण परिचय देगा तो भारत भी इसे लोहे के चने चबाकर रहेगा। अन्त में इसे हतभाग्य होना पड़ेगा। आकाशी कौंसिल का व्यक्तित्व पर प्रभाव"

श्रद्धेय नहरू जी को इस वर्ष कष्ट व मानसिक अशान्ति रहेगी विदेशीय वाङ्मय तथा शस्त्रमय संघर्ष का भी सामना करना पड़ेगा। कठिन समय में अन्य पूर्वीय राष्ट्रों का सहयोग प्राप्त होगा। अन्त में सब तरह से विजय पताका आप की लहरावेगी शनि गुरु की स्थिति शत्रु से खतरा सूचित करती है सावधानी जरूरी है। श्री पटेल महोदय को किसी बन्धुवर्ग के वियोग का योग है। आपका प्रभाव अभी और बढेगा। आप द्वारा स्वतन्त्र भारत की जड़ अत्यन्त दृढ होती चली जावेगी। श्री राजगोपालाचार्य जी की नीति से इस वर्ष भारत की कई अड़चनें दूर होंगी आषाढ या आश्विन के अनन्तर आप की विदेश यात्रा भी होगी गोस्वामी श्री गणेश दत्त जी महाराज का इस वर्ष उत्तरोत्तर यश बढे, धार्मिक कृत्यों में विशेष व्यय हो। साथ ही लाभ भी अच्छा रहे ऐसे योग हैं। ३ नवंबर सन् १९४९ से ६१ वां वर्ष आप को प्रवेश होगा वह शुभ नहीं यहाँ मन में अशान्ति घबराट स्वास्थ्य में विशेष बिगाड का २७ भय होगा प्रभु आप के त्यागमय धार्मिक शरीर को चिरंजीव रक्खे यही विनय है।

"व्यापारिक विचार" इस वर्ष में चान्दी तांबा पित्तल लाल वस्त्र तेजर हेंगे और अन्न की उत्पत्ति अच्छी होगी भाव समान रहेगा। ज्येष्ठ कृष्ण ७ तक और भाद्रशुक्ल १० मी से वर्षा ऋतु के अन्त तक गेहूँ कुछ तेजी पर रहेगी। ज्येष्ठ कृष्णा ११ के अनन्तर २० दिन के अन्दर अन्न संग्रह करना ठीक है। वर्षारम्भ में १ मास तक घृत तैल मसूर तेज रहेंगे। मार्गशीर्ष में धान्य संग्रह करें तो दो मास में लाभ उठा लेवे। पौष से पूर्व सरसों तोरिया बिनौले का स्टाक करने वालों को लाभ की सम्भावना है। दीपमाला के बाद लाल मिर्च के व्यापारी लाभ में रहेंगे। इसी तरह पौष के बाद घास तूड़ी के व्यापारियों को लाभ होगा वैशाख कृ० १ से १४ तक रूई में ५० मन्दे ज्येष्ठ कृ० १३ को रूई में १०।२० मन्दे। ज्येष्ठ शुक्ल में ३ से रूई में तेजी का उच्छाला आवे। आषाढ़ शुक्ल में रूई एकदम मंदी हो पहिले तेज रहे। श्रावण कृष्ण ७ को रूई में १० और भाद्रपद कृष्ण ६ से ९ तक १०।२० तेज रहे।

वैशाख शुदि में सरसों तोरिया का भाव खासा मन्दा होगा। आश्विन शु० ४ से कार्तिक शुक्ल तक रूई में खासी तेजी आवे। भाद्रपद शुदि से आश्विन शुदि तक गुड़ का भाव मन्दा चल सकता है। गत वर्षों की तरह गुड़ में अबकेसा मन्दा चलना असम्भव है। अब तेजी का ख्याल रक्खें श्रावण शु० ३ से भाद्रपद कृ० ३० तक ऐसे ही माघ शु० १ से फाल्गुण कृ० १४ तक रूई आदि प्रायः प्रत्येक वस्तु भाव में मंदी चलेगा। तेजी वालों को घबराहट होगी। इस योग में रूई करीब ५० मंदा होगी। श्रावण भाद्रपद में लाल रंग तेज,राजा बुध के कारण भारत के पूर्व दक्षिण में कहीं दुर्भिक्ष हो। घृत तैल, गुड़ मिर्च खण्ड के भाव में व्यापारियों को लाभ रहेगा और साधु ब्राह्मण संतुष्ट रहेंगे। सोना चांदी रूईके व्यापार में विशेष लाभलेना हो तो पत्र लिखें। वर्षाः—इस वर्ष चौमासा प्रायः सर्वत्र उत्तम वर्षेगा। आषाढ शु० १ से श्रावण कृ० ८ तक कई प्रान्तों में वर्षा की रुकावट या खण्ड वृष्टि होगी। श्रावण की नवमी से वर्षा सर्वत्र अच्छी होगी। भाद्रपद शुक्ल में भारी वर्षा के योग है। शीतकाल में गुरु शुक्र के कारण उत्तम वर्षा हो। माघ कृष्ण में ३० के आसन्न झड़ी लगे।

भयरोगोपद्रव—इसवर्ष मरु देश में रोग भय विशेष हो। समुद्र तटवर्ति देशों को सैनिक भय। यवन देशों में पेचिश और मियादी ज्वर का प्रभाव रहेगा। भारत में भी कई जगह महामारी भय, पीड़ा, व्याकुलता रहे। भाद्रपद से शनि सूर्य की युति घोड़ों को कष्ट तथा प्रजा में रोग उत्पातादि भय देती है। चैत्र शुक्ल में कहीं महा भय हो। शासकों को चिन्ता व्यापे। ज्येष्ठ आषाढ में कहीं उपद्रव जनहानि हो। कूर्मचक्रानुसार बंगाल कलिंग उड़ीसा में अन्न कष्ट और रोगोपद्रव हो। महोदयो। ज्योतिः शास्त्र दृष्ट्या ग्रहगत्यनुकूल और श्री प्रभु कृपा-वशात्– जो मुझे विश्व का शुभाशुभ फल दीख पड़ा वह अपनी अल्पमति के अनुसार लिख दिया है। आगे भविष्य के निर्माता सर्वज्ञ सर्वेश्वर जो चाहेंगे वही होकर रहेगा।

(देवेन विहितं कर्म को विजानाति मानवः) शुभेच्छुः—वघाट नरेशाश्रितो मुकुन्द वल्लभः

नोटः—प्रभुकी कृपासे इस पञ्चाङ्ग की भविष्यवाणी की यथार्थता के कारण फलित ज्योतिष को न मानने वालों में भी इसका प्रचार बहुत बढ़ रहा है। गतवर्ष वर्णित जल प्रकोप बम्बई के निकट उपद्रव, भारतके शत्रुओंके नतमस्तक होने आदिकी सत्यता की साक्षी बाढ़ रजाकारी अत्याचार व निज़ाम की हार दे रही है। हाथ कंगन को आरसी क्या? पंचांग आपके पास है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पुत्रोत्पत्ति का समय जानना--(१) जन्मलग्नेश पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़े योग फल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों के त्रिकोण राशिमें जब गोचर का गुरु होता है तब सन्तान होती है ।

(२) चं० ल० गु० इन तीनों से पंचम स्थानेश या नवम स्थानेश की दशान्तर्दशा में सन्तानोत्पत्ति होती है ।

विवाह स्त्रीसुख होने का समय जानना--(१) जन्म लग्नेश सप्तमेश को जोड़ कर जो राशि हो उस राशि में जब गोचर का गुरु आले तब विवाह होता है ।

(२) राशीश और अष्टमेश को जोड़े उस राशि में जब गोचर का गुरु हो तब विवाह होता है ।

(३) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो उस राशि से द्वितीय भाव में जब गोचर में गुरु चन्द्र होते हैं तब विवाह होता है ।

(४) शु० चं० सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है ।

पिता के खतरे का समय जानना--(१)गुलिकस्पष्ट से सूर्यस्पष्ट घटावें, शेष राशि के त्रिकोण में गोचर का शनि जब हो तब पिता रोगग्रस्त होता है। और उक्त शेषराश्यादि के समय जब गोचर का गुरु होता है तब पिता की मृत्यु होती है ।

(२) सूर्य से १।२।७।१२ भाव में जो पापग्रह हो तो उसकी दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है ।

पराशरोक्त प्राणपद से जन्मेष्ट काल शुद्ध करना--जहां अर्द्ध-सर्द्ध से लग्न बनाया गया हो, या जन्मपत्री के लग्न की अपेक्षा लग्न अधिक शुद्ध देखना हो तो इष्टकाल की घड़ियों को ४ से गुणा करें। पल १५ से अधिक हों तो १५ का भाग देकर जो लब्ध आवे वह चारगुणी की हुई इष्ट घटी के अंक में मिला दें। १५ का भाग देने से जो शेष फल रहें उनको दुगने कर चतुर्गुणित इष्ट घटी के नीचे रखना। पश्चात् १२ का भाग देना शेष राशिअंश बचे उनमें स्पष्ट सूर्य यदि चरराशि का हो तो ज्यों का त्यों, स्थिर में हो तो ८ राशि मिला कर, द्विस्वभाव में हो तो ४ राशि मिला देने से राश्यादि प्राणपद बन जाता है। प्राणपद मनुष्यों की कुण्डली में प्रायः १।५।९ स्थान में पशुओं की कुण्डली में २।६।१० स्थान में पक्षियों की कुण्डली में ३।७।११ स्थान में और कीट सर्प जलचर जन्तुओं की कुण्डली में ४।८।१२ स्थान में रहता है। लग्न के व प्राणपद के अंश सदा एक समान रहते हैं ॥

सृष्टि-क्रम-वर्णन

अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने । समस्तजगदाधारमूर्तये ब्रह्मणे नमः ॥१॥ विनायकं प्रणम्यादौ देवीं वाग्देवतां गुरुम् । सँव्वत्सरफलं वक्ष्ये लोकानां हितकाम्यया ॥२॥ सम्यक् विचार्य गणितं दैवज्ञजनतुष्टिदम् । मुकुन्दवल्लभेनेदं तिथिपत्रं विनिर्मितम् ॥३॥ अनेन धार्मिकजनः कालज्ञानसहायिना । तिथिपत्रेण सन्तुष्टो भवत्वित्येव याच्यते ॥४॥ तिथिर्वारञ्च नक्षत्रं योगः करणमेव च । पञ्चांगस्य फलं श्रुत्वा गंगास्नानफलंलभेत् ॥५॥ प्राप्ते नूतनवत्सरे प्रतिगृहं कुर्याद्ध्वजारोपणं, स्नानं मंगलमाचरेद्द्विजवरैः सार्द्धं सुपूजोत्सवम् । देवानां गुरुयोषिताञ्च शिशवोऽलंकारवस्त्रादिभिः, सम्पूज्यो गणकः फलं च शृणुयात्तस्माच्च लाभप्रदम् ॥६॥ पारिभद्रस्य पत्राणि कोमलानि विशेषतः । सपुष्पाणि समानीय चूर्णं कृत्वा विधानतः ॥७॥ मरीचिर्हिंगुलवणमजमोदा सशर्करैः । तिंतिडीमलनं कृत्वा भक्षयेद्रोगशान्तये२८ ॥८॥ पंचांगस्थं गणेशं द्विजगणकयुतं पूजयित्वार्थिवृन्दं, सन्तोष्यनेकदानैः परमसुखयुतो भोजयित्वान्नमिष्टम्।शृण्वन्, गीतानिवाद्यानिचविविधकथास्तद्दिनंसंक्रमेत,क्रीडन्स्त्रीभिश्च सार्द्धं त्वहनि निशि नगो यावदब्दं सुखी स्यात् ॥९॥ ये चैत्रशुक्लप्रतिपत्तिथौ फलं शृण्वन्ति भक्त्या प्रतिवार्षिकं नराः । ते दुःखदारिद्रयरुगादिवर्जिता नन्दन्ति लोके धनधान्यसंकुलाः॥१०॥ शाकस्य श्रवणात्सुपुण्यजननं सँवत्सरस्याढ्यतां, राज्ञो राजकुले जयो विजयते मन्त्री फलं वृद्धिदम् धान्यं धान्यपतेः रसं रसपतेः क्षेत्रेषु वृद्धिस्तथा, सस्यं सर्वसुखञ्च वत्सरफलं संशृण्वतां सिद्धिदम् ॥११॥ इति सँवत्सरादिफलश्रुतिः ॥

सृष्टि के संक्षिप्त इतिहास की अवतरणिका--समस्त जगत् की उत्पत्ति स्थिति और लय कारणरूप ब्रह्मा की आयु अपने ही दिनों के मान से सौ वर्ष की होती है। अब ब्रह्मा की आयु के ५० वर्ष व्यतीत होकर, ५१ वें वर्ष के प्रथम दिन का उदय है। इस दिन की १३ घड़ी, ४२ पल, ३ विपल, ४३ प्रतिविपल व्यतीत हो चुकी हैं। मनुष्यमान से ब्रह्मा की आयु का विस्तार इस प्रकार है--एक चतुर्युगी का एक महायुग होता है, उसकी सौरमान से वर्षसंख्या ४३२०००० है। इस प्रकार के एक हजार युगों का ब्रह्मा का एक दिन होता है (ऐसे ब्रह्मा के हजार युगों की विष्णु की एक घड़ी होती है, विष्णु के १२ लाख युगों का रौद्रकलार्ध होता है, रुद्र के अर्बुद संख्यक युगों का अक्षरात्मक ब्रह्म होता है) ब्रह्मा के इस एक दिन में जो १४ मन्वन्तर होते हैं, उनमें से १ स्वायम्भुव, २ स्वारोचिष, ३ उत्तम, ४ तामस, ५ रैवत, ६ चाक्षुष, यह छे मनु व्यतीत हो गये हैं, अब सातवाँ वैवस्वत मन्वन्तर चल रहा है, उसमें भी २७ चतुर्युगी गत होकर अठाईसवीं चतुर्युगी के ३ युग व्यतीत हो गये, हैं और यह २८ वां कलियुग है ॥

अथ युगकाल व्यवस्था--सतयुग-कार्तिक शुक्ल नवमी बुधवार के प्रथम पहर श्रवण नक्षत्र वृद्धियोग में सतयुग की उत्पत्ति हुई, इसकी आयु १७२८००० वर्ष की थी, इसमें श्रीनारायण के मत्स्य,, कच्छप, वराह और नृसिंह, ये ४ अंशावतार हुए, श्रीमत्स्यजी ने वेदों के चौर शंखासुर को मार कर ब्रह्मा को वेद लाकर दिये, भगवान् कच्छप ने पृथ्वी की रक्षार्थ मन्दराचल को पीठ पर धारण कर शेषनाग की डोर से देवदैत्यों द्वारा समुद्र-मंथन करा कर चौदह रत्न प्रकट किये। श्रीवराहजीने हिरण्याक्ष का वध करके रसातल में गई हुई पृथ्वी का उद्धार किया। श्रीनृसिंहावतार ने हिरण्कशिपु का वध करके भक्त प्रह्लाद की रक्षा की। इस युग में धर्म अपने चारों पर कायम था, गौएँ कामधेनु के समान होती थीं, प्रायः स्वर्ण के पात्र और सिक्के के स्थान में रत्न का परस्पर व्यवहार था। इच्छित वर्षा होती थी, एक बार बीज बो कर २१ बार काटते थे। ब्राह्मण चारों वेद के जानकार तथा सत्यभाषी, परद्रव्य-परस्त्री-पराङ्मुख और त्यागी होते थे। शाप देने और वर प्रदान करने में भी समर्थ थे। स्त्रियें पद्मिनी और पतिव्रता होती थीं। शासक (राजवंश) वर्ग न्यायपरायणान्तःकरण से प्रजा को और सपुत्रवत् समझते हुए राज्य करते थे। वैश्य लोग सत्यवक्ता धर्मात्मा व्यापारी और शूद्र लोग सेवाधर्म में रहते हुए जीवन व्यतीत करते थे। इस युग में तीर्थ पुष्कर प्रधान था।

त्रेतायुग--वैशाख शुक्ल तृतीया चन्द्रवार के द्वितीय प्रहर रोहिणी नक्षत्र शोभन योग में त्रेतायुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु १२९६००० वर्ष की थी, इसमें भगवान् के श्रीवामन, श्रीपरशुराम और श्रीरामचन्द्र ये तीन अवतार हुए श्री वामनजी ने राजा बलि से ३ पैर पृथ्वी दान लेकर समग्र पृथ्वी को ३ पैर में नाप बलि को पाताल का राज्य दिया। श्री परशुरामजी

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ने कर्तव्यविमुख एवं अन्यायी विलासिता के प्रेम में प्रमत्त अभिमानी क्षत्रियों का नाश करके २१ बार ब्राह्मणराज्य स्थापित किया था । श्री रामचन्द्रजी ने महा-अभिमानी राक्षसराज रावण का वध करके देवता और ऋषियों को निर्भय किया था । इस युग में धर्म तीन पैर का रह गया था । गौएँ त्रिकाल दूध देनेवाली होती थीं, प्रायः चान्दी के पात्र और स्वर्ण के सिक्के का व्यवहार था, वर्षा मौके पर होती थी, एक बार बोकर सात बार काटते थे । ब्राह्मण तीन वेदों के वक्ता और किञ्चिन्न्यून तपोनिष्ठ परस्त्री-परद्रव्य से पराङ्मुख होतेथे, वर शाप देने में समर्थ थे । स्त्रियें चित्रिनी पतिव्रता होती थीं। इस युग में सूर्यवंशी धर्मात्मा क्षत्रियों का राज्य था। विचित्र विमानों द्वारा वह इन्द्रलोक पर्यन्त भी जाते थे । वैश्य लोग सत्यवादी और सत्य की तुला में तोलते थे । शूद्र स्वधर्मानुसार सेवा में तत्पर रहते थे । इस युग में तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था । द्वापर---माघ कृष्ण ३० शुक्रवार तृतीय प्रहर धनिष्ठा नक्षत्र वरियान् योग में द्वापरयुग की उत्पत्ति हुई, इसकी आयु ८६४००० वर्ष की थी । इसमें पूर्ण ब्रह्म के श्रीकृष्ण श्रीबलदेव ये दो अवतार हुए । भगवान् श्रीकृष्ण ने दैत्यराज कंसादि दुष्टों का वध किया, तथा संसारार्णवमग्न जीवों के उद्धारार्थ अर्जुन को लक्ष्य करके गीता ज्ञान का उपदेश दिया । श्री-बलदेव जी ने सामयिक लीला करते हुए दुष्टों का नाश करके धर्म का उद्धार किया । इस युग में धर्म दो पैर वाला रह गया था, गौएँ दो वक्त घटपूर्ण दुग्ध देने वाली होती थीं । प्रायः ताम्र पित्तल के पात्र और स्वर्ण तथा रौप्यमयी मुद्राओं का व्यवहार होने लगा था । वर्षा समय पर हो जाती थी, एक बार अन्न बीज कर ३ बार काटते थे । ब्राह्मण लोग दो वेदों के पारंगत होते थे और कुछ असत्य विशेषतया सत्यवक्ता तथा तप यज्ञ देव-पूजनादि करने वाले किञ्चित् लोभयुक्त वाक्यसिद्धि वाले अर्थात् वर और शाप देने में समर्थ थे । स्त्रियें शंखिनी जाति की सुशीला धर्मयुक्ता होती थीं । इस युग में धर्मप्राण चन्द्रवंशी राजा हुए । प्रायः चारों वर्ण अपने अपने वर्णाश्रम धर्म पर कायम थे, परस्त्री-परद्रव्य से लोग डरते थे । इस युग में तीर्थ कुरुक्षेत्र प्रधान था । कलियुग---भाद्रपद कृष्ण १३ अर्धरात्रि के समय आश्लेषा नक्षत्र व्यतिपात योग में कलियुग की उत्पत्ति हुई थी, इसकी आयु ४३२००० वर्ष की है । इसमें भगवान् के अवतार श्री बुद्ध और श्री कल्कि (निष्कलंक) हैं जिनमें अहिंसा धर्म के उद्धारक श्री बुद्धावतार तो हो चुके, और कल्कि अवतार जब कलियुग के ८२१ वर्ष शेष रहेंगे तब शंभल ग्राम में विष्णुयश ब्राह्मण के घर होगा; इस अवतार द्वारा दुष्टोंका नाश होकर पृथ्वी पर लुप्तधर्म की स्थापना के साथ साथ न्यायपरायण क्षत्रियराज्य भी कायम होगा । इस युग में एक पैर वाला धर्म रह जायगा । गौएं दूध कम देंगी, मृण्मय पात्र और ताम्रमयी तथा कर्गल मुद्रा प्रायः चलेगी । अति-वृष्टि और अनावृष्टि से देशों में भय का सञ्चार होगा । ब्राह्मण लोग वेदज्ञान से शून्य तथा स्नान सन्ध्या तपश्चर्या से भी हीन होंगे । क्षत्रिय लोग अपने धर्म को तिलाञ्जलि दे देंगे । वैश्य लोग व्यापार में असत्य व्यवहार विशेष रूप से उपयोग में लाने लगेंगे, शास्त्रनिन्दित मृतचर्म (जूता आदि) के व्यापार से भी लाभ उठायेंगे, शूद्र लोग पाखण्डी होकर बहुधा उच्चवर्ण वालों के उपदेष्टा होंगे । प्रजा में वर्णसंकरत्व बढ़ जायगा, भूतों की पूजा होगी, अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी । स्त्रियें ज्यादा हस्तिनी पैदा होंगी, व्यभिचारिणी स्त्री अपने को सती कहेंगी । पतिव्रता कहीं कहीं देखने में आवेंगी । पुरुष स्त्रियों के वश में होकर चलेंगे । स्त्रियों के छोटी आयु में गर्भ होने लगेगा । पिता कन्या-विक्रय करेंगे । गौ ब्राह्मण की हत्या से भय न करेंगे । पुत्रों का माता पिता के साथ द्रव्य के कारण प्रेम रहेगा । राज्यव्यवस्था में धर्म का स्थान शून्य के बराबर होगा । धर्म-कर्म और तीर्थ पर लोगों की श्रद्धा कम होगी । इस युग में प्रधान तीर्थ गंगा हरिद्वार होगा ।

अथ कलिरूपं चोक्तं चिरन्तनैः---पिशाचवदनः क्रूरः कलिश्च कलहप्रियः । धृत्वा वामकरे शिश्नं दक्षे जिह्वाञ्च नृत्यति ॥ अथ कलिमाहात्म्यम्---धर्मः प्रव्रजितस्तपः प्रचलितं सत्यं च दूरे गतं, पृथ्वी मन्दफला नराः कपटिनश्चित्तञ्च शाठ्योज्झितम् । राजानोऽर्थपरा ह्यरक्षणपराः पुत्राः पितुर्द्वेषिणः साधुः सीदति दुर्जनः प्रभवति प्राप्ते कलौ दुर्युगे ॥ निर्बीजा पृथ्वी निरोषधिरसा नीचा महत्त्वं गताः, भूपाला निजधर्मकर्मरहिता विप्राः कुमार्गं गताः । भार्या भर्तृविरोधिनी पररता पुत्रा पितुर्द्वेषिणो, हा ! कष्टं खलु वर्तते कलियुगे धन्या मृता ये नराः ॥ न देवे देवत्वं कपटपटवस्तापसजनाः, जनो मिथ्यावादी विरलतरवृष्टिर्जलधरः । प्रसन्ना नीचाश्च अवनिपतयो दुष्टमतयो, जना शिष्टा नष्टा अहह ! कलिकालो विलसति ॥ कलौ गंगायाः स्थितिः---पृथिवी गंगया हीना भविष्यत्यन्तिमे कलौ, तदैव विष्णुस्त्यजति मेदिनीं नरपुंगव । भगीरथं प्रति गंगावाक्यञ्च---यावद्धरण्यां तुलसी प्रपूज्यते गुर्लभस्थो दिवि कल्प-पादपः । यावत्समुद्रं बड़वानलश्च वसामि तावत्तव चक्रखाते ॥ इति॥ कलौ दशसहस्राणीति वाक्यमन्तिमकलौ ज्ञेयम्, नान्येषु कलिष्विति ॥

वर्षफलविचार २००६

अथ श्रीमन्नृपतिधर्ममूर्ति-विक्रमादित्यानां राज्यसिंहासनाध्यासनादतीताब्दानि तत्संवताभिधः २००६ श्रीमन्नृपतिचक्रचूड़ामणि शक जातियवननिर्बीजक शालिवाहनराज्याद् गतहायनानि तत् शकाभिधः १८७१ श्रीकृष्णजन्म सं० ५१८५ श्री महावीर निर्वाण (जैन) संवत्सरः २४७५–७६ ईस्वीसन् १९४९–५० हिजरी सन् १३६८–६९ फसली सन् १३५५ वर्षादौगुरुमानेन प्रभवादिषष्ठ्यब्दानां मध्ये विष्णु विंशत्यां शुभकृत् (३६) (त्रिकाण्डमण्डनः---श्रौतस्मार्तक्रियाः सर्वाः कुर्याच्चन्द्रमसर्तुषु । तदभावे तु सौरर्तुष्विति ज्योतिर्विदां मतम् । तथा आर्ष्टिषेणि---समरेत्सर्वत्रकर्मादौ चान्द्रसंवत्सरं सदा नान्यां यस्माद्वत्सरादौ प्रवृत्तिस्तस्य कीर्तिताः) नाम्नः संवत्सरस्तस्यफलं---स्वामी गुरु, अतिवर्षा, राजा प्रजासुखेन वर्तते उत्तरपथे वह्निभयं चैत्रेवैशाखे समर्घता धातुसमर्घता श्रावणे नवमीतिथितो वर्षा अन्नसमर्घता भाद्र-पदे महान् मेघः वह्निभय अन्नकलसिका एका फदिया नाणकैरष्टभिः घृततैलं समर्घं कार्तिका-दिमासत्रयं युगंधरी गोधूमचणकतिलमुद्गतंदुला, इत्यादि, अन्नं समर्घम्, राज्ञांपरस्परविरोधः ज्येष्ठादिमासेषु सर्ववस्तु समर्घं फाल्गुणे किंचिदुत्पातः मरुदेशेरोगः परं सुभिक्षम् ।

। अथाब्दवर्षे १ राजा बुधः २ मन्त्री बुधः ३ सस्येशः शनिः ४ धान्येशः गुरुः ५ मेघेशो भौमः ६ रसेशश्चन्द्रः ७ नीरसेशश्चन्द्रः ८ फलेशोभौमः ९ धनेशोभृगु १० दुर्गेशो भौमः ।

अथैषां फलानि:--राजाबुधस्तस्यफलम्, (काम्बोज काश्मीर कलिंगदेशेषुसर्वदेशेषुच) बुधस्यराज्ये प्रकुर्वतेदानदयाजनोऽपिस्वास्थ्यं सुभिक्षंधनधान्यसंकु-सजलंमहीतलं गृहे गृहेतूर्यविवाहमंगलं ॥ शशिसुते शुभमन्त्री समागतेस्वपतिना लम् ॥१॥ मन्त्री बुधस्तस्यफलं (वाल्हीकमालवयोः) कुरुते मदनक्रियाम् ॥ बहुधनंबहुवारि समन्वितं यवमसूरिचणान्नमहर्घता ॥२॥ (स्वयंराजा स्वयं मन्त्री चौराग्निरोगादिभयम्) सस्येशः शनिस्तस्य फलं (पौण्ड्रविदर्भयोः) रविसुते यदि-धान्यपतौजनोनृपतिभिः परिपीड़ित विग्रहः ॥ गदभयं तृणधान्यहरं सदा दुरितवादविवाद युता नराः ॥३॥ धान्येशोगुरुस्तस्यफलम् (नर्मदातटे मध्यदेशे च) गुरौधान्यपतौयाति यव-गोधूमशालयः ॥ पच्यन्ते सर्व देशेषुयज्वानो ब्रह्मवादिनः ॥४॥ मेघेशोभौमः तस्यफलं (मागध-

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

देश) अवनिजे जलदस्यपतौ भुवि श्रुतिविचारविहीनधराभवाः ।। क्वचिदपि प्रचुरं जलमल्पकं क्वचिदपि प्रचुरं बहु तापदम् ।।५।। रसेशो चन्द्रस्तस्यफलं (कोंकणमागधयोः) यदिविधौ-रसपे भुवि मानवो नवनवां युवतीं बुभुजे प्रियाम् ।। जलधराबहु वारिविधायका रसवती धन-धान्यवतीमही ।।६।। नीरसेशोभृगुस्तस्यफलम् (मालवदेशे) कर्पूरागुरुगन्धानां हेममौक्तिक वाससाम् ।। अर्घवृद्धिः प्रजायेत नीरसेशोभृगुर्यदि ।।७।। फलेशोभौमस्तस्य फलम् । (सर्वदेशे) फलपतिर्यदिभूतनयोभवेत्सुबहुपुष्पफलान्वितमेदिनी ।। गतभया नृतदेशजनास्तदा नृपतयो बहुविग्रहकारकाः ।।८।। धनेशोभृगुस्तस्य फलम् (सर्वत्र) द्रविणपोभृगुजो द्रविणैर्युताः समधनाः सकलाः भुविमानवाः । समसुखाः क्रयविक्रयजीविनो नृपतयो जनपालनतत्पराः ।।९।। दुर्गेशो-भौमस्तस्य फलम्——(सर्वदेशे) अवनिजो गढनायकतां गतो विविधदुःख–वियोगसमन्वितः ।। जनपदेषु जनाः क्रयविक्रये भयविशेषतया न फलं क्वचित् ।।१०।। नौ मेघों मे से आवर्त नाम मेघ राज का फल——जौ गेहूं कपास की खेती में हानि जल कम वर्षे। द्वादश नागों में सुबुधन नाम नागराज का फल——मनुष्यों में सुबुद्धि आवे वर्षा मध्यम हो। सप्त वायु में संवह नाम वायु का प्रभाव रहेगा। इस वर्ष रोहिणी का निवास पर्वत में है फल——वर्षा थोड़ी हो। वर्ष का निवास कुम्भकार के घर में है फल——अनावृष्टि से कष्ट हो। संवत् की सवारी सिचाण पशु विशेष शनैश्चर की दृष्टि दक्षिण में है, सोमवती अमावस्या २ श्रावण तथा पौष में है। संवत् विश्वे ५

अथवर्षादीना विश्वामानम् ।। वर्षा १७ धान्य ८ तृण ५ शीत ५ तेज ५ वायुः १३ वृद्धिः १५ क्षय १७ विग्रह ११ क्षुधाः ५ तृषा १५ निद्रा ११ आलस्य १५ उद्यम ५ शान्ति ११ क्रोधः ११ दम्भ ११ पाखण्ड ८ लोभ ७ मैथुन ८ रसनिष्पतिः १३ फलनिष्पतिः ११ उत्साह ३ उग्रत्व ३ पाप १८।। पुण्यं १।। व्याधिः ३ व्याधिनाशः ७ आचार १५ अनाचार १३ मरण ३ जन्म ५ देशोपद्रव ५ देशस्वास्थ्य ५ चोरभय ७ चोरनाश १३ अग्नि ७ अग्निशान्ति ७ टिड्डो ७ तोता १५ मूषक १५ सोना १५ ताम्बा ७ खचक्र ३ परचक्र ७ अतिवृष्टि १५ अनावृष्टि १५ उद्भिज (तरुगुल्माद्याः) ९ जरायुज (नृगवाद्या ३) अण्डज (पक्षिसर्पाद्या) ११ स्वेदजाः (कृमिदंशाद्याः) ५

अथनववर्ष प्रवेशः—— सं० २००५ वि० चैत्रकृ० ३० भौमवारको इष्टघटी ३३।२६ परकन्यालग्नमें नववर्षका प्रवेश होता है। सो इस वर्ष मध्य देश में प्रजा को कष्ट हो——बंगाल में कोई उपद्रव हो। पश्चिम के देशों में लून खराबी तथा घृत अन्न महंगे होवे। दक्षिण प्रदेश में प्रजारोग से कष्ट पावे। वर्षेशलग्नम्; सं० २००६ वि० चैत्र शु० १५ बुधवार को इष्टघटी १८।४ कर्क लग्न में श्रीसूर्य मेषराशि में प्रवेश होंगे। लग्नेश चन्द्रमा केतु के साथ केन्द्र में बैठा है और लग्न को गुरु की उच्च दृष्टि है! अतः

यदा शुभ ग्रहं दृष्टं लग्नस्यात्तु तदाशुभम् ।

अर्थात्——वर्षलग्न को शुभग्रह देखते हों तो प्रजा को धनधान्यादि वस्तुओं का सुख अच्छा मिलता है। पर यहां लग्नेश क्रूरयुक्त होने से पूर्ण शुभ फल नहीं देगा! ज्येष्ठ पौष माघ महीनों में कोई अशुभ फल प्रकट होगा।

जन्म तथा वर्ष लग्न से शुभाशुभ विचारः——

जन्मलग्न वर्षलग्न से वर्षेशलग्न यदि आठवां १२ वां हो तो वह वर्ष पुरुष के लिये शुभ नहीं होता।

सूर्यका आर्द्रा प्रवेश सामयिक फल विचार——सं० २००६ आषाढ कृ० १० भौमवार को इष्टघटी ४२।४५ पर मकर लग्न में सूर्य नारायण आर्द्रा नक्षत्र पर प्रवेश होंगे, उस समय३ तात्कालिक तिथि एकादशी है! फल-धनधान्य सस्ते हों! वारभौम है फल——शस्त्रघात से राजाओं को भय हो, नक्षत्र अश्विनी है, फल——पशु वृद्धि हो, अतिगण्डयोग फल——राजयुद्ध होवे, समय फल——सुख हो, लग्न फल——सूर्यषष्ठे चन्द्रमा चतुर्थे बैठे है लग्न में अपनी नीच जलचर राशि में गुरु बैठे हैं। अतः वर्ष में वृष्टि सुख-प्रद नहीं होगी। और जनता में तंगदस्ती भी व्यापेगी। गुरूदय फल——फाल्गुण में गुरु का उदय होता है। सो प्रजा में रोग उपद्रव खण्ड-वृष्टि होवे, मकरराशिस्थ गुरु फल——पशुओं की हानि, घी दूध अनाज रक्त वस्त्र महंगे, राजाओं में विग्रह। धनुराशिस्थ गुरु फल—— तिल-गुड़ सस्ते व्यापार में विशेष उथलपुथल मचे ।।

स्तम्भ चतुष्टय विचार—— इस वर्ष जलस्तंभ का सम्पर्क ५५।४६ पर होने से जलयोग उत्तम है। तृणस्तंभ का सम्पर्क ५७।१८ होने से तृणोत्पत्ति भी श्रेष्ठ है। वायु का स्तंभ केवल चतुर्थांशमात्र है सो वायु के उपद्रव प्रायः कम होने का योग है।

अन्नस्तंभ का सम्पर्क घट्यादि २०।३३ होने से तृतीयांश रहा है सो प्रजा में अन्न की कमी अवश्य ही रहेगी। आर्षभान (वर्ष की रक्षा के चार दुर्ग) विचार——

गत पौष कृष्ण ३० को मूल का सम्पर्क ४९।५८ था। इस वर्ष वैशाख शुक्ल तृतीया को रोहिणी का सम्पर्क पूर्ण है। श्रावण शुक्ल १५ के साथ श्रावण का सम्पर्क प्रायः पूर्ण ही है। और कार्तिक शुक्ल १५ को कृतिका नक्षत्रका सम्पर्क किञ्चिन्मात्र भी नहीं हैअतः यह वर्ष अन्न की उत्पत्ति के लिए रुपये में ११ आने देखने में आवेगा।

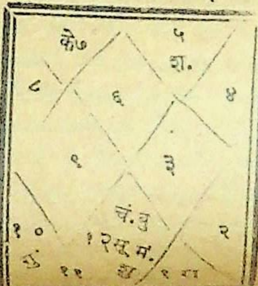
अखै तीज रोहणी नहिं होई। पौष अमावस मूल न जोई।। राखी श्रवणों हीन विचारो। कार्तिक पुण्यो कृतिका टारो। मही माह खलबली प्रकाशे। कहे भडली साख विनाशे ।।

।।अथलाभव्ययचक्रम् ।। लाभ व्यय देखने की रीतिः——

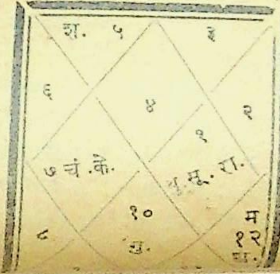
मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशयः
२	११	२	११	१४	२	११	२	१४	८	८	१४	लाभः
५	११	११	५	२	११	११	५	८	११	११	८	व्ययम्

लाभ और व्यय के अंकों को जोड़ कर १ घटावे और आठ ८ का भाग देवें शेष १।२।६।७ बचें तो उसवर्ष में लाभ, उत्तम होवे, और शेष ३।४।५।० बचे तो लाभ बहुत कम होवे। और चिन्ता भी रहे।

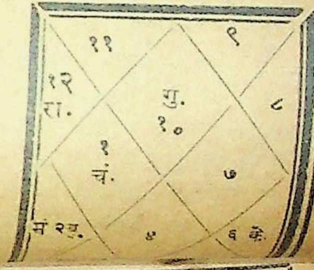
वर्षलग्नम्



वर्षेशलग्नम् (जगल्लग्नम्)



आर्द्राप्रवेशलग्नम्।



CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

त्रिराशिपति चक्रम्

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

* अथ वर्षप्रवेश सारणीयम् *

गताब्द	वार	घटी	पल	विपल
१	१	१५	३१	३०
२	२	३१	३	०
३	३	४६	३४	३०
४	५	२	६	०
५	६	१७	३७	३०
६	०	३३	९	०
७	१	४८	४०	३०
८	३	४	१२	०
९	४	१९	४३	३०
१०	५	३५	१५	०
११	६	५०	४६	३०
१२	१	६	१८	०
१३	२	२१	४९	३०
१४	३	३७	२१	०
१५	४	५२	५२	३०
१६	६	८	२४	०
१७	०	२३	५५	३०
१८	१	३९	२७	०
१९	२	५४	५८	३०
२०	४	१०	३०	०
२१	५	२६	१	३०
२२	६	४१	३३	०
२३	०	५७	४	३०
२४	२	१२	३६	०
२५	३	२८	७	३०
२६	४	४३	३९	०
२७	५	५९	१०	३०
२८	०	१४	४२	०
२९	१	३०	१३	३०
३०	२	४५	४५	०
३१	४	१	१६	३०
३२	५	१६	४८	०
३३	६	३२	१९	३०
३४	०	४७	५१	०
३५	२	३	२२	३०
३६	३	१८	५४	०
३७	४	३४	२५	३०
३८	५	४९	५७	०
३९	०	५	२८	३०
४०	१	२१	०	०
४१	२	३६	३१	३०
४२	३	५२	३	०
४३	५	७	३४	३०
४४	६	२३	६	०
४५	०	३८	३७	३०
४६	१	५४	९	०
४७	३	९	४०	३०
४८	४	२५	१२	०
४९	५	४०	४३	३०
५०	६	५६	१५	०
५१	१	११	४६	३०
५२	२	२७	१८	०
५३	३	४२	४९	३०
५४	४	५८	२१	०
५५	६	१३	५२	३०
५६	०	२९	२४	०
५७	१	४४	५५	३०
५८	३	०	२७	०
५९	४	१५	५८	३०
६०	५	३१	३०	०
६१	६	४७	१	३०
६२	१	२	३३	०
६३	२	१८	४	३०
६४	३	३३	३६	०
६५	४	४९	७	३०
६६	६	४	३९	०
६७	०	२०	१०	३०
६८	१	३५	४२	०
६९	२	५१	१३	३०
७०	४	६	४५	०
७१	५	२२	१६	३०
७२	६	३७	४८	०
७३	०	५३	१९	३०
७४	२	८	५१	०
७५	३	२४	२२	३०
७६	४	३९	५४	०
७७	५	५५	२५	३०
७८	०	१०	५७	०
७९	१	२६	२८	३०
८०	२	४२	०	०

वर्षफल साधन प्रकारः-(१) अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष करना हो) मेंसे जन्मसमय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे वह गतवर्ष जाने। स्मरण रहे कि मघार्कप्रवेश के प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनन्तर का यदि वर्ष करना हो तो पिछाड़ी के संवत् से करना (वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्रसौरात्) इस प्रकार गतवर्ष ला कर उसी गताब्द अंक के नीचे जो सारणी में वारादि अंक हैं उनमें जन्म का वार इष्ट घड़ी पल जोड़ने से वर्ष प्रवेश होता है। यदि नीचे घट्यादि अंक सॉठ से अधिक हों तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जानाः ऊपर के वारांक में सात से अधिक आ जाय तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से वर्षप्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट होगा। (२) जिस दिन जन्मसमय के स्पष्ट सूर्यवत् वर्ष में सूर्य मिले उसी दिन ठीक वर्षप्रवेश जानना। प्रविष्टों के अनुसार कभी २ वार नहीं मिलता सो वहां पर मुख्य वर्षप्रवेश का वार जानना योग्य है। इस इष्ट के अनुसार आगे लिखी स्वदेशीय लग्नसारणी से लग्न साधन करके वर्षकुंडली लगाना। वर्षप्रवेश समय का सूर्य जन्म समय के स्पष्ट सूर्यवत् तब मिलता है जब कि जन्म और वर्षप्रवेशसामयिक गणित एक ही करण ग्रन्थ से की हो। वर्ष बनाने में जन्मस्थान की स्वदेशीय सारणियों से वर्षलग्नादि साधन करे अन्यथा वर्षपत्र अशुद्ध होगा। मुन्थानयनप्रकारः——गताब्दवृन्द में जन्मलग्न जोड़ कर उसमें १२ का भाग देना, जो शेष बचे वह मुन्था जानना; यह मुन्था प्रतिदिन ५ कला चलती है।

अथ त्रिपताकी चक्रम्——तिरछी और खड़ी तीन २ रेखा खींच कर उनके कोण परस्पर मिला कर त्रिपताकीचक्र तैय्यार करो, उस चक्र के पूर्व की मध्य रेखा पर वर्षप्रवेश का लग्न रख कर अन्य स्थानों में शेष क्रमशः ११ राशियों को स्थापन करो, अब ग्रह स्थापन करने की यह विधि है कि गतवर्षों में एकयुक्त कर ९ का भाग देने से जो शेष रहे उनकी संख्या की राशि पर जन्मराशि से चन्द्रमा होता है, एकयुक्त गताब्दों में ४ का भाग देने से जो शेष रहे उसी संख्या पर शेष ग्रह जन्मस्थान से होते हैं, परंच राहु केतु को विपरीत जानना ॥ फल——यदि उक्त चक्र में राहु के साथ चन्द्रमा का वेध होवे तो कष्ट, सूर्य के वेध से सन्ताप, शनैश्चर से रोग, भौम के वेध से शरीर पीड़ा होती है; शुभग्रहों के वेध से जय सौख्यलाभ होता है, शुभाशुभ ग्रहों का वेध देख कर वर्ष का फल कहें ॥

त्रिराशिपति चक्रम्

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	राशयः
सू	शु	श	शु	वृ	च	बु	मं	श	मं	वृ	चं	दि ल. प.
वृ	चं	बु	मं	सू	शु	श	शु	श	मं	वृ	चं	रा ल. प.

अथ हर्ष बलम्।

स्थानबल——सूर्य लग्न से ९, च० ३, मं० ६, बु० १, गु० ११, शु० ५, श० १२, इन स्थानों में ५ बल देते हैं। स्वोच्चबल——सू० १।५, चं० २।४, मं० १।८।१०, बु० ३।६, गु० ९।१२।४, शु० २।७।१२, श० १०।११।७ इन स्थानों में ५ बल देते हैं। पुरुष स्त्री बल——स्त्रीग्रह (चं० बु० शु० श०)) १।२।३।७।८।९ और पुरुष ग्रह (सू० मं० बु०) ४।५।६।१०।११।१२ वें स्थानों में ५ बल देते हैं। दिनरात्रिबल——दिन के वर्षेष्ट में पुरुष ग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्री ग्रह ५ बल देते हैं। मित्र शत्रु ज्ञानम्——जिस ग्रह का मित्रादि देखना है उस ग्रह से ३।५।९।११ इन स्थानों पर जो ग्रह हों वह उसके मित्र होते हैं और २।६।८।१२ वें हों तो सम, १।४।७।१० वें होवें तो शत्रु।

वर्षेश निर्णये दृष्टि ज्ञानम्——९।५ वें ४५ कला, ३रे ४० कला, ११ वें १० कला, ४।१० वें १५ कला, और १।७वें पूर्ण कला (६० कला) दृष्टि होती हैं।

अथ वर्षेश निर्णयः——जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश ४, समयेश ५, दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि में हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्रराशि का स्वामी इन पाचों अधिकारियों में से जो सबसे बलवान हो और लग्न को देखे वह वर्षेश होगा, यदि पांचों में से कोई भी लग्न को न देखता हो तो उनमें से जो अधिक बलवान हो वही वर्षेश्वर होगा। कई ग्र हों का बल समान हों तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह। बलदृष्टि अधिकार यह तीनों समान हों तो मुन्थेश ही वर्षेश होगा॥ यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे वा जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश होगा॥ फल——वर्षेश ६।८।१२ वे अस्तंगत हीन बली हो तो वर्ष में दुःख शोकचिन्ता भय विशेष होगा, यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखैश्वर्य की वृद्धि हो।

मुद्दा दशा चक्र विधिः

जन्मनक्षत्र की संख्या में गतवर्षगण जोड़ के २ घटा दें, ९ से भाग करने पर जो शेष बचे वह सूर्य से लेकर मुद्दा दशा होती है। योगिनी के लिये जन्मनक्षत्रसंख्या में गताब्द जोड़े, ३ और जोड़े, ८ से शेष करे तो मंगलादि योगिनी होती है॥

मुग्धादशा क्रमः

शेषं	ग्रहाः	मास	दिन
१	सूर्य	०	१८
२	चंद्र	१	०
३	भौम	०	२१
४	राहु	१	२४
५	बृह.	१	१८
६	शनि	१	२७
७	बुध	१	२१
८	केतु	०	२१
९	शुक्र	२	०

वर्षयोगिनीमतेन मुद्दादशा

मं.	पि.	ध.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
०	०	१	१	१	२	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

कामधेनु करामात (करामाती पुस्तक)

इसमें अक्षय यौवन व स्वास्थ्य लाभ के तथा बिना औषधि कठिन रोग निवृत्ति के सहज गुर (उपाय) व्यापार झगड़े (मुकदमे) आदि में नुकसान से बचने के उपाय, सर्वकामना पूर्ति की विधि, साधु महात्माओं के अनुभूत टोटके, अष्टसिद्धि प्राप्ति के उपाय, शत्रुवशीकरण आदि २ अनेकों अद्भुत वस्तुएँ दी गई हैं। मूल्य केवल २)

मिलने का पता——मोतीलाल बनारसीदास, गायघाट, बनारस।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

देश) अवनिजे जलदस्यपतौ भुवि श्रुतिविचारविहीनधराभवाः ।। क्वचिदपि प्रचुरं जलमल्पकं क्वचिदपि प्रचुरं बहु तापदम् ।।५।। रसेशो चन्द्रस्तस्यफलं (कोंकणमागधयोः) यदिविधौ-रसपे भुवि मानवो नवनवां युवतीं बुभुजे प्रियाम् ।। जलधराबहु वारिविधायका रसवती धन-धान्यवतीम्मही ।।६।। नीरसेशोभृगुस्तस्यफलम् (मालवदेशे) कर्पूरागुरुगन्धानां हेममौक्तिक वाससाम् ।। अर्घवृद्धिः प्रजायेत नीरसेशोभृगुर्यदि ।।७।। फलेशोभौमस्तस्य फलम्। (सर्वदेशे) फलपतिर्यदिभूतनयोभवेत्सुबहुपुष्पफलान्वितमेदिनी ।। गतभया नृतदेशजनास्तदा नृपतयो बहुविग्रहकारकाः ।।८।। धनेशोभृगुस्तस्य फलम् (सर्वत्र) द्रविणपोभृगुजो द्रविणैर्युताः समधनाः सकलाः भुविमानवाः। समसुखाः क्रयविक्रयजीविनो नृपतयो जनपालनतत्पराः ।।९।। दुर्गेशो-भौमस्तस्य फलम्——(सर्वदेशे) अवनिजो गढनायकतां गतो विविधदुःख–वियोगसमन्वितः ।। जनपदेषु जनाः क्रयविक्रये भयविशेषतया न फलं क्वचित् ।।१०।। नौ मेघों मे से आवर्त नाम मेघ राज का फल——जौ गेहूं कपास की खेती में हानि जल कम वर्षे। द्वादश नागों में सुबुधन नाम नागराज का फल——मनुष्यों में सुबुद्धि आवे वर्षा मध्यम हो। सप्त वायु में संवह नाम वायु का प्रभाव रहेगा। इस वर्ष रोहिणी का निवास पर्वत में है फल——वर्षा थोड़ी हो। वर्ष का निवास कुम्भकार के घर में है फल——अनावृष्टि से कष्ट हो। संवत् की सवारी सिचाण पशु विशेष शनैश्चर की दृष्टि दक्षिण में है, सोमवती अमावस्या २ श्रावण तथा पौष में है। संवत् विश्वे ५ अथवर्षादीना विश्वामानम् ।। वर्षा १७ धान्य ८ तृण ५ शीत ५ तेज ५ वायुः १३ वृद्धिः १५ क्षय १७ विग्रह ११ क्षुधाः ५ तृषा १५ निद्रा ११ आलस्य १५ उद्यम ५ शान्ति ११ क्रोधः ११ दम्भ ११ पाखण्ड ८ लोभ ७ मैथुन ८ रसनिष्पतिः १३ फलनिष्पतिः ११ उत्साह ३ उग्रत्व ३ पाप १८।। पुण्यं १।। व्याधिः ३ व्याधिनाशः ७ आचार १५ अनाचार १३ मरण ३ जन्म ५ देशोपद्रव ५ देशस्वास्थ्य ५ चोरभय ७ चोरनाश १३ अग्नि ७ अग्निशान्ति ७ टिड्डी ७ तोता १५ मूषक १५ सोना १५ ताम्बा ७ खचक्र ३ परचक्र ७ अतिवृष्टि १५ अनावृष्टि १५ उद्भिज (तरुगुल्माद्याः) ९ जरायुज (नृगवाद्या ३) अण्डज (पक्षिसर्पाद्या) ११ स्वेदजाः (कृमिदंशाद्याः) ५

अथनववर्ष प्रवेशः—— सं० २००५ वि० चैत्रकृ० ३० भौमवारको इष्टघटी ३३।२६ परकन्यालग्नसें नववर्षका प्रवेश होता है। सो इस वर्ष मध्य देश में प्रजा को कष्ट हो——बंगाल में कोई उपद्रव हो। पश्चिम के देशों में खून खराबी तथा घृत अन्न महंगे होवे। दक्षिण प्रदेश में प्रजारोग से कष्ट पावे। वर्षेशलग्नम्; सं० २००६ वि० चैत्र शु० १५ बुधवार को इष्टघटी १८।४ कर्क लग्न में श्रीसूर्य मेषराशि में प्रवेश होंगे। लग्नेश चन्द्रमा केतु के साथ केन्द्र में बैठा है और लग्न को गुरु की उच्च दृष्टि है ! अतः

यदा शुभ ग्रहै दृष्टं लग्नस्यातु तदाशुभम् ।

अर्थात्——वर्षलग्न को शुभग्रह देखते हों तो प्रजा को धनधान्यादि वस्तुओं का सुख अच्छा मिलता है। पर यहाँ लग्नेश क्रूरयुक्त होने से पूर्ण शुभ फल नहीं देगा ! ज्येष्ठ पौष माघ महीनों में कोई अशुभ फल प्रकट होगा।

जन्म तथा वर्ष लग्न से शुभाशुभ विचारः——

जन्मलग्न वर्षलग्न से वर्षेशलग्न यदि आठवां १२ वां हो तो वह वर्ष पुरुष के लिये शुभ नहीं होता।

को इष्टघटी ४२।४५ पर मकर लग्न में सूर्य नारायण आर्द्रा नक्षत्र पर प्रवेश होंगे, उस समय ३° तात्कालिक तिथि एकादशी है ! फल-धनधान्य सस्ते हों ! वारभौम है फल——शस्त्रघात से राजाओं को भय हो, नक्षत्र अश्विनी है, फल——पशु वृद्धि हो, अतिगण्डयोग फल——राजयुद्ध होवे, समय फल——सुख हो, लग्न फल——सूर्यषष्ठे चन्द्रमा चतुर्थे बैठे हैं लग्न में अपनी नीच जलचर राशि में गुरु बैठे हैं।अतः वर्ष में वृष्टि सुख-प्रद नहीं होगी। और जनता में तंगदस्ती भी व्यापेगी। गुरूदय फल——फाल्गुण में गुरु का उदय होता है। सो प्रजा में रोग उपद्रव खण्ड-वृष्टि होवे, मकरराशिस्थ गुरु फल——पशुओं की हानि,घी दूध अनाज रक्त वस्त्र महंगे,राजाओं में विग्रह। धनुराशिस्थ गुरु फल—— तिल-गुड़ सस्ते व्यापार में विशेष उथलपुथल मचे ।।

स्तम्भ चतुष्टय विचार—— इस वर्ष जलस्तंभ का सम्पर्क ५५।४६ पर होने से जलयोग उत्तम है। तृणस्तंभ का सम्पर्क ५७।१८ होने से तृणोत्पत्ति भी श्रेष्ठ है। वायु का स्तंभ केवल चतुर्थांशमात्र है सो वायु के उपद्रव प्रायः कम होने का योग है।

अन्नस्तंभ का सम्पर्क घट्यादि २०।३३ होने से तृतीयांश रहा है सो प्रजा में अन्न की कमी अवश्य ही रहेगी। आर्षमान (वर्ष की रक्षा के चार दुर्ग) विचार——

गत पौष कृष्ण ३० को मूल का सम्पर्क ४९।५८ था। इस वर्ष वैशाख शुक्ल तृतीया को रोहिणी का सम्पर्क पूर्ण है। श्रावण शुक्ल १५ के साथ श्रावण का सम्पर्क प्रायः पूर्ण ही है। और कार्तिक शुक्ल १५ को कृतिका नक्षत्रका सम्पर्क किञ्चिन्मात्र भी नहीं हैअतः यह वर्ष अन्न की उत्पत्ति के लिए रुपये में ११ आने देखने में आवेगा।

अखै तीज रोहणी नहि होई। पौष अमावस मूल न जोई।। राखी श्रवणों हीन विचारो। कार्तिक पुण्यो कृतिका टारो। मही माह खलबली प्रकाशे। कहे भडली साख विनाशे ।।

।।अथलाभव्ययचक्रम् ।। लाभ व्यय देखने की रीतिः——

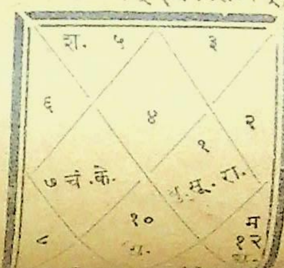
मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशयः
२	११	२	११	१४	२	११	२	१४	८	८	१४	लाभः
५	११	११	५	२	११	११	५	८	११	११	८	व्ययम्

लाभ और व्यय के अंकों को जोड़ कर १ घटावे और आठ ८ का भाग देवें शेष १।२।६।७ बचें तो उसवर्ष में लाभ, उत्तम होवे, और शेष ३।४।५।० बचे तो लाभ बहुत कम होवे। और चिन्ता भी रहे।

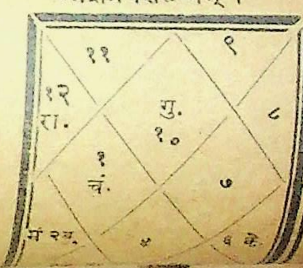
वर्षलग्नम्



वर्षेशलग्नम् (जगल्लग्नम्)



आर्द्राप्रवेशलग्नम् ।



CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

* अथ वर्षप्रवेश सारणीयम् *

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

त्रिराशिपति चक्रम्

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	राशयः
सू	शु	श	शु	वृ	च	बु	मं	श	मं	वृ	चं	दि ल. प.
वृ	चं	बु	मं	सू	शु	श	शु	श	मं	वृ	चं	रा ल. प.

वर्षफल साधन प्रकारः-(१) अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष करना हो) मेंसे जन्मसमय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे वह गतवर्ष जाने। स्मरण रहे कि मषार्कप्रवेश के प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनन्तर का यदि वर्ष करना हो तो पिछाड़ी के संवत् से करना (वर्षायनर्तुगपूर्वकमत्रसौरात्) इस प्रकार गतवर्ष ला कर उसी गताब्द अंक के नीचे जो सारणी में वारादि अंक हैं उनमें जन्म का वार इष्ट घड़ी पल जोड़ने से वर्ष प्रवेश होता है। यदि नीचे घटयादि अंक सौंठ से अधिक हों तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना; ऊपर के वारांक में सात से अधिक आ जाय तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से वर्षप्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट होगा। (२) जिस दिन जन्मसमय के स्पष्ट-सूर्यवत् वर्ष में सूर्य मिले उसी दिन ठीक वर्षप्रवेश जानना। प्रविष्टों के अनुसार कभी २ वार नहीं मिलता सो वहां पर मुख्य वर्षप्रवेश का वार जानना योग्य है। इस इष्ट के अनुसार आगे लिखी स्वदेशीय लग्नसारणी से लग्न साधन करके वर्ष-कुंडली लगाना। वर्षप्रवेश समय का सूर्य जन्म समय के स्पष्ट सूर्यवत् तब मिलता है जब कि जन्म और वर्षप्रवेशसामयिक गणित एक ही करण ग्रन्थ से की हो। वर्ष बनाने में जन्मस्थान को स्वदेशीय सारणियों से वर्षलग्नादि साधन करे अन्यथा वर्षपत्र अशुद्ध होगा। मुन्थानयनप्रकारः--गताब्दवृन्द में जन्मलग्न जोड़ कर उसमें १२ का भाग देना, जो शेष बचे वह मुन्था जानना; यह मुन्था प्रतिदिन ५ कला चलती है।

अथ त्रिपताकी चक्रम्--तिरछी और खड़ी तीन २ रेखा खींच कर उनके कोण परस्पर मिला कर त्रिपताकीचक्र तैय्यार करो, उस चक्र के पूर्व की मध्य रेखा पर वर्षप्रवेश का लग्न रख कर अन्य स्थानों में शेष क्रमशः ११ राशियों को स्थापन करो, अब ग्रह स्थापन करने की यह विधि है कि गतवर्षों में एकयुक्त कर ९ का भाग देने से जो शेष रहे उनकी संख्या की राशि पर जन्मराशि से चन्द्रमा होता है, एकयुक्त गताब्दों में ४ का भाग देने से जो शेष रहे उसी संख्या पर शेष ग्रह जन्म-स्थान से होते हैं, परंच राहु केतु को विपरीत जानना॥ फल---यदि उक्त चक्र में राहु के साथ चन्द्रमा का वेध होवे तो कष्ट, सूर्य के वेध से सन्ताप, शनैश्चर से रोग, भौम के वेध से शरीर पीड़ा होती है; शुभग्रहों के वेध से जय सौख्यलाभ होता है, शुभाशुभ ग्रहों का वेध देख कर वर्ष का फल कहें॥

अथ हर्ष बलम्।

स्थानबल---सूर्य लग्न से ९, चं० ३, मं० ६, बु० १, गु० ११, शु० ५, श० १२, इन स्थानों में ५ बल देते हैं। स्वोच्चबल---सू० १।५, चं० २।४, मं० १।८।१०, बु० ३।६, गु० ९।१२।४, शु० २।७।१२, श० १०।११।७ इन स्थानों में ५ बल देते हैं। पुरुष स्त्री बल---स्त्रीग्रह (चं० बु० शु० श०)) १।२।३।७।८।९ और पुरुष ग्रह (सू० मं० बु०) ४।५।६।१०।११।१२ वें स्थानों में ५ बल देते हैं। दिनरात्रिबल---दिन के वर्षेष्ट में पुरुष ग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्री ग्रह ५ बल देते हैं। मित्र शत्रु ज्ञानम्---जिस ग्रह का मित्रादि देखना है उस ग्रह से ३।५।९।११ इन स्थानों पर जो ग्रह हों वह उसके मित्र होते हैं और २।६।८।१२ वें हों तो सम, १।४।७।१० वें होवें तो शत्रु।

वर्षेश निर्णये दृष्टि ज्ञानम्---९।५ वें ४५ कला, ३।११ वें ४० कला, ११ वें १० कला, ४।१० वें १५ कला, और १।७वें पूर्ण कला (६० कला) दृष्टि होती हैं।

अथ वर्षेश निर्णयः---जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश ४, समयेश ५, दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि में हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्रराशि का स्वामी इन पाचों अधिकारियों में से जो सबसे बलवान हो और लग्न को देखे वह वर्षेश होगा, यदि पांचों में से कोई भी लग्न को न देखता हो तो उनमें से जो अधिक बलवान हो वही वर्षेश्वर होगा। कई ग्र हों का बल समान हों तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह। बलदृष्टि अधिकार यह तीनों समान हों तो मुन्थेश ही वर्षेश होगा॥ यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे वा जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश होगा॥ फल---वर्षेश ६।८।१२ वे अस्तंगत हीन बली हो तो वर्ष में दुःख शोकचिन्ता भय विशेष होगा, यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखैश्वर्य की वृद्धि हो।

मुद्दा दशा चक्र विधिः

जन्मनक्षत्र की संख्या में गतवर्षगण जोड़ के २ घटा दें, ९ से भाग करने पर जो शेष बचे वह सूर्य से लेकर मुद्दा दशा होती है। योगिनी के लिये जन्मनक्षत्रसंख्या में गताब्द जोड़े, ३ और जोड़े, ८ से शेष करे तो मंगलादि योगिनी होती है॥

मुद्दादशा क्रमः

शेष	ग्रहाः	मास	दिन
१	सूर्य	०	१८
२	चंद्र	१	०
३	भौम	०	२१
४	राहु	१	२४
५	बृह.	१	१८
६	शनि	१	२७
७	बुध	१	२१
८	केतु	०	२१
९	शुक्र	२	०

वर्षयोगिनीमतेन मुद्दादशा

मं.	पि.	ध.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
० १०	० २०	१ ०	१ १०	१ २०	२ ०	२ १०	२ २०

कामधेनु करामात (करामाती पुस्तक)

इसमें अक्षय यौवन व स्वास्थ्य लाभ के तथा बिना औषधि कठिन रोग निवृत्ति के सहज गुर (उपाय) व्यापार झगड़े (मुकद्दमे) आदि में नुकसान से बचने के उपाय, सर्वकामना पूर्ति की विधि, साधु महात्माओं के अनुभूत टोटके, अष्टसिद्धि प्राप्ति के उपाय, शत्रुवशीकरण आदि २ अनेकों अद्भुत वस्तुएँ दी गई हैं। मूल्य केवल २)

मिलने का पता—मोतीलाल बनारसीदास, गायघाट, बनारस।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

॥ लग्न सारणीयम् ॥

पलभा ७।१२

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	स्वोदय पलानि
मेष ०	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	२०६
	३८	४५	५२	५९	५	१२	१९	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३१	३६	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	
वृष १	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	२४२
	३१	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३८	४८	५८	८	१६	२४	३३	४१	४९	८	१६	२४	३३	४१	४९	५७	७	१७	२७	३७	४७	७	
मिथुन २	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	२९९
	१०	२०	३०	४०	४९	७	१७	२७	३९	५०	२	१२	२४	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	
कर्क ३	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	३४७
	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२६	३८	५०	१	१३	२५	३७	४९	१	१३	२५	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	५९	११	२३	३५	
सिंह ४	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	३५६
	४७	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	
कन्या ५	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४०
	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	
तुला ६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	३४०
	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१४	२६	३७	४९	१	१३	२५	३७	४९	१	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३५	४७	५९	११	
वृश्चिक ७	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	३५६
	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	
धनु ८	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	३४७
	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	
मकर ९	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	२९९
	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	
कुम्भ १०	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	२४२
	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५६	३	१०	१७	२४	३१	३८	४४	५१	५८	५	
मीन ११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२०६
	१२	१९	२६	३३	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२२	२९	३६	४३	५०	५७	४	१०	१७	२४	३१	

॥ दशमलग्न सारणीयम् ॥ (सर्वोपयोगी)

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	लङ्कोदय पलानि
मेष ०	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	२७८
	३३	४२	५२	१	१०	१९	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	
वृष १	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	२९९
	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३४	
मिथुन २	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	३२३
	४४	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	१९	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	
कर्क ३	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	३२३
	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	
सिंह ४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२९९
	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	
कन्या ५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	२७८
	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४	
तुला ६	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	२७८
	३३	४२	५२	१	१०	१९	२९	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	
वृश्चिक ७	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	२९९
	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	
धनु ८	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	३२३
	४४	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	
मकर ९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	३२३
	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	
कुम्भ १०	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	२९९
	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३६	४६	
मीन ११	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	२७८
	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४	

उदाहरण——स्पष्ट सूर्य १।१५।५०।४०, इसकी राशि १ अंश १५ के प्रमाण लग्नसारणी में कोष्ठक देखा तो ८।४८ है। इसमें इष्ट घट्यादि ९।५ मिलाया तो १७।५३ हुए यह इष्ट युक्त किया हुआ लग्नसारणी का कोष्टक हुआ इस इष्टकोष्टक से अल्पकोष्ठक सारणी में देखा तो (१७।५१ तीन राशि ५ अंश के कोष्ठक में मिलता, है, इस कारण ३ कर्क राशि के ५ अंश लिये। इसके नीचे सूर्य की कला ५० विकला ४० को युक्त किया तो ३।५।५०।४० हुआ, तदनन्तर इष्टयुक्त कोष्ठक १७।५३ और अल्पकोष्ठक १७।५१ का अन्तर किया तो पल २ हुआ, इसमें अल्पकोष्ठक १७।५१ और ऐष्य (आगे का) कोष्ठक १८।२ के अन्तर पल ११ का भाग दिया तो लब्धि ० अंश आया, शेष २ को ६० से गुणा किया तो १२० हुए, इनमें फिर भाजक ११ का भाग दिया तो लब्धि १० कला आई; शेष १० बचे इनको ६० गुणा किया तो ६०० हुए, इनमें भाजक ११ का फिर भाग दिया तो लब्धि ५५ विकला आई। इस अंशादि फल ०।१०।५५ की प्रथम आये हुए राश्यादि ३।५।५०।४० में युक्त किया तो राश्यादि ३।६।१।३५ यह सूक्ष्म स्पष्टलग्न हुआ॥

```
११) २ (०।१०।५५
    ६०
   ----
   १२०
   ११०
   ----
    १०
    ६०
   ----
   ६००
   ६०५
```

अथ दशमलग्न साधनम्——सूर्योदयात् घट्यादि इष्टकाल में से दिनार्ध हीन करना, जो शेष बचे वह दशमभाव का इष्ट होता है (यदि इष्ट में से दिनार्ध न घट सके तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर घटाना)। इसी दशम भावेष्ट को जन्मकालीन इष्ट मान कर इस दशम-लग्नसारणी द्वारा पूर्ववत् लग्न की क्रिया करने से दशम भाव सिद्ध होता है। कभी कभी दशमभाव में नवम या एकादश राशि भी हो जाती है। दशमभाव में ६ राशि युक्त करने से चतुर्थभाव और लग्न में ६ राशि युक्त करने से सप्तमभाव होता है।

भावसाधनम्——चतुर्थभाव में लग्न को हीन करके शेष का षष्ठांश लेवे, उस षष्ठांश को लग्न में ५ बार युक्त करे, अर्थात् प्रथम बार षष्ठांश को लग्न में युक्त करने से द्वितीयभाव की आरम्भसन्धि होगी, फिर उसी आरंभसन्धि में षष्ठांश युक्त करने से दूसरा भाव होवेगा। इसी प्रकार क्रमपूर्वक ५ बार षष्ठांश युक्त करने से चतुर्थभाव की आरंभ सन्धि तक चारों भाव हो जावेंगे। इसके अनन्तर एक २ बढाते हुए उत्क्रम से चतुर्थभाव की आरंभ सन्धि से लग्न की विरामसन्धि तक १ से ५ पर्यन्त केवल राशिसंख्या में युक्त करने से सन्धिसहित ६ भाव हो जावगे, अर्थात् चतुर्थभाव की आरम्भसन्धि में १ राशि युक्त करने से पंचम भाव की आरम्भसन्धि हो जावेगी, तीसरे भाव में २ राशि युक्त करने से पंचम भाव होगा, इसी प्रकार क्रमपूर्वक सन्धिसहित ६ भाव हो जावेंगे इसके अनन्तर शेष ६ भावों के साधन उपर्युक्त सन्धि सहित छः ही भावों में ६–६ राशि युक्त करने से सन्धि सहित

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ शकः १८७१ चैत्रशुक्लपक्षः १ (मार्च-अप्रैल सन् १९४९) उत्तरायणं दक्षिणगोलः वसन्तर्तुः

दि. मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि.	अं.	मु. जमादि	चन्द्र सञ्चारः			सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्य सूर्य स्पष्टः उदय-काले			
३०	४६	१	बु.	३८	५४	रे.	४५	३६	ऐं.	४५	५५	किं	६	२१	१८	३०	२९	मे.	४५	३६	६	२०	६	४०	११	१५	५६	५५
३०	५०	२	गु.	४३	१९	अ.	५१	१३	वै.	४६	४२	बा.	११	६	१९	३१	३०	मे.			६	१८	६	४०	११	१६	५६	६
३०	५४	३	शु.	४६	५२	भ.	५५	५५	वि.	४६	४५	तै.	१५	५	२०	१	१	मे.			६	१७	६	४१	११	१७	५५	१६
३०	५८	४	श.	४९	१०	कृ.	५९	३०	प्री.	४५	५४	व.	१८	१	२१	२	२	वृ.	११	४९	६	१६	६	४१	११	१८	५४	२३
३१	३	५	र.	५०	१५	रो.	६०	०	आ.	४४	६	व.	१९	४२	२२	३	३	वृ.			६	१५	६	४१	११	१९	५३	२८
३१	७	६	चं.	५०	०	रो.	१	५२	सौ.	४१	२६	कौ.	२०	८	२३	४	४	मि.	३२	२२	६	१४	६	४२	११	२०	५२	३०
३१	१२	७	मं.	४८	३०	मृ.	२	५३	शो.	३७	३१	ग.	१९	१५	२४	५	५	मि.			६	१३	६	४३	११	२१	५१	३३
३१	१६	८	बु.	४५	५०	आ.	२	४६	अ.	३२	४९	वि.	१७	१०	२५	६	६	क.	४६	५०	६	१२	६	४३	११	२२	५०	३३
३१	२०	९	गु.	४२	११	पु.	१/५९	३/२८	सु.	२७	१६	बा.	१४	०	२६	७	७	क.			६	१०	६	४३	११	२३	४९	२९
३१	२४	१०	शु.	३७	४०	श्ले.	५६	३२	धृ.	२१	२	तै.	९	५६	२७	८	८	सिं.	५६	३२	६	९	६	४४	११	२४	४८	२३
३१	२८	११	श.	३२	३१	म.	५२	५८	शू.	१४	१३	व.	५	५	२८	९	९	सिं.			६	८	६	४४	११	२५	४७	१४
३१	३२	१२	र.	२६	५१	पू.फा	४८	५९	ग.	६/५९	५४/२१	बा.	२६	५१	२९	१०	१०	सिं.			६	६	६	४४	११	२६	४६	३
३१	३६	१३	चं.	२०	५३	उ.फा	४४	५१	ध्रु.	५१	३५	तै.	२०	५३	३०	११	११	कं.	२	५७	६	५	६	४५	११	२७	४४	४९
३१	४१	१४	मं.	१४	५४	ह.	४०	४१	व्या.	४३	५४	व.	१४	५४	३१	१२	१२	कं.			६	४	६	४६	११	२८	४३	३२
३१	४५	१५	बु.	८	५६	चि.	३६	४२	ह.	३६	२२	ब.	८	५६	१	१३	१३	तु.	८	४१	६	३	६	४७	११	२९	४२	१५

उ. भा. यां बुधः ४४।१७ पञ्चकसमाप्तिः ४५।३६ रेवत्यां रवेः ❋
चन्द्रदर्शनम् पूर्वास्तं बुधः ३।५७
अप्रैल ४ ता, ३० जमादि. लाखर सु. ६ गणगौरी ३ पू. मत्स्यज,
भ. १८।१ उ. ४९।१० या.
रेव. भौमः ३३।४५ रेव. शुक्रः २१।४०
अश्वि. १ राहुः चित्रायां ३ केतुश्च ३७।४२ मेला माई सरखाना
भ. ४८।३० उ. ❋ ४३।४१ चान्द्रसंवत्सरारम्भः नवरा. घटस्था. ()
भ. १७।१० या. रेवत्यां बुधः ४८।२५ श्रीदुर्गा ८ मेला श्रीमनसादेवी
श्रीराम ९ व्रतम् () वर्ष फ. श्रवणं. निम्बपत्र भक्षणम्।
÷ बुधः २०।५७ वैशाख स्नानारम्भः
भ. ५।५ उ. ३२।३१ या. कामदा ११ व्र.
उ. षा. यां ४ गुरुः ४१।४५ प्रदोष व्र.
वक्रगत्या मघायां २ शनिः १४।१७ अनङ्ग १३
भ. १४।५४ उ. ४१।५५ या. सत्यव्रतम
अश्वि. सं. मेषेऽर्कः १८।४ मू. ३० ... ।४ उ. अश्वि. मेषे च ÷

चैत्रशुक्ल ८ बुध इष्टम् ०।० दिनगणः ५११५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	११	९	११	४	०	६
२२	१८	१५	६	१९	६	३	३
५०	३२	५	५	५५	५२	१५	१५
३३	३५	२८	४९	५५	१६	३८	३८
५९	४६	११६	७	७४	२	३	३
०	१६	२८	३०	१३	३८	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	अ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
रे. २	रे. १	उ.भा. ४	उ.षा. ३	रे. १	म. ३	अ. १	चि. ३

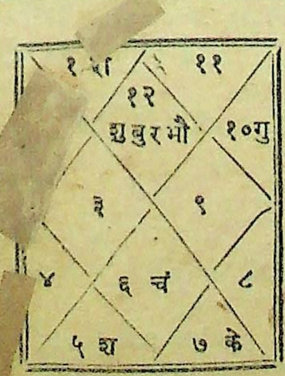


इस पक्ष में रूई पहिले मन्दी होकर तेज रहे। गुड़ खण्डमें मन्दी। सूत रेशमी-ऊनीवस्त्र घी तेल तेज। चान्दीमें घटाबढ़ी रुख तेज गेहूँ जौ चना का भाव मजबूत रहे, दक्षिणके देशमें कोई उपद्रव होवे प्रजाको भय व्यापे। घोड़ा खच्चरके व्यापारी लाभ में रहेंगे।

तिथि ५।६ और १२ से १५ तक कहीं कहीं बादल चाल बूँदा बाँदी गरद गुबार उड़नेके योग हैं।

शकुन विचार–यदि द्वितीया को चन्द्र श्याम रंग बादलोंसे ढका हुआ हो और अस्त समय फिर दृष्टिगोचर हो जाए तो घृतादि वस्तुकी कीमत बढ़े। चैत्रशुदि जो पंचमी दक्षिण पूर्व वाय, वर्षा भी होवे कछु भादों तेज बिकाय। चैत्रशुदि जो त्रयोदशी धूल उड़े दरम्यान, आगे वर्षा हो नहीं ऐसा लो तुम जान।

चैत्रशुक्ल १५ बुध इष्टम् ०।० दिनगणः ५१२२



सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	११	९	११	४	०	६
२९	२३	२९	६	२८	६	२	२
४२	१४	१५	५५	३६	३६	५३	५३
१५	२२	५४	५५	७	२५	२४	२४
५८	४६	[illegible]	७	७४	१	३	३
४३	९	२०	१	१३	५९	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	अ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
रे. ४	रे. ३	रे. ४	उ.षा. ४	रे. ४	म. २	अ. १	चि. ३

चैत्र मास में दूध दही और मिष्ठान्न स्वयं न खाकर ब्राह्मणदम्पतिकी पूजा कर बारीक वस्त्र और मिठाई उनको देवे; यह गौरीव्रत कल्याण कारक है॥ यदि कोई रामनवमी का व्रत न रखकर अन्य व्रत रखता है तो उसे उनका भी फल नहीं मिलता क्योंकि यह व्रत सर्वश्रेष्ठ है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

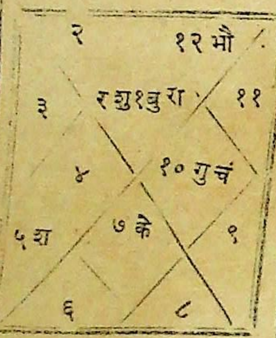
संवत् २००६ शकः १८७१ वैशाखकृष्णपक्षः २

[illegible]ल सन् १९४९ ई०) उत्तरायणं गोलौ वसन्तर्तुः सायन-वृषार्काद् ग्रीष्मर्तुः

दि. मा. घ.	दि. मा. प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	दि.	अं.	मु.	चन्द्र सञ्चारः	घ.	प.	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्य सूर्य स्पष्टः उदय-काले				
३१	५०	१	गु.	३	१८	स्वा	३३	११	व.	२९	१२	कौ.	३	१८	२	१४	१४	तु.			६	१	६	४७	०	०	४०	५७	अ[illegible] मेषे च शुक्रः ७।५७
अवम्		२	शु.	२४	५१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
३१	५५	३	शु.	२३	४३	वि.	३०	१५	सि.	२२	३०	व.	२५	५६	३	१५	१५	वृ.	१५	५९	६	०	६	४८	०	१	३९	३६	म.[illegible]६ उ. ५३।४३ या. गुड फ्राईडे
३२	००	४	श.	२०	७	अनु.	२८	११	व्य.	१६	३१	ब.	२१	५०	४	१६	१६	वृ.			६	०	६	४९	०	२	३८	१३	श्री[illegible] ४ व्र.
३२	४	५	र.	४७	३१	ज्ये	२६	५७	व.	११	२१	कौ.	१८	४९	५	१७	१७	ध.	२६	५७	५	५९	६	५०	०	३	३६	४७	ईस्टरसंडे
३२	९	६	चं.	४६	६	मू.	२६	४९	प.	६	४७	ग.	१६	४८	६	१८	१८	ध.			५	५७	६	५०	०	४	३५	१९	म. ४६।६ उ.
३२	१४	७	मं.	४५	५६	पू.षा	२७	५४	शि.	३	१७	वि.	१६	१	७	१९	१९	म.	४३	३०	५	५६	६	५१	०	५	३३	५०	म. १६।१ या. भरण्यां बुधः ३६।५३ सा.वृषेभानुः ४०।१२ *
३२	१९	८	बु.	४७	७	उ.षा	३०	१८	सि.	०/२	४८/४	वा.	१६	३१	८	२०	२०	म.			५	५५	६	५२	०	६	३२	१७	[illegible] * ग्रीष्मर्तुः प्रा. अगस्त्यस्तः २५।३४
३२	२४	९	गु.	४९	३०	श्र.	३३	५६	शु.	५८	४७	तै.	१८	१८	९	२१	२१	म.			५	५४	६	५३	०	७	३०	४२	आश्व. मेषे भौमः १।१६
३२	२८	१०	शु.	५३	३	ध.	३८	५४	शु.	५९	९	व.	२१	१६	१०	२२	२२	कुं.	६	१८	५	५३	६	५४	०	८	२९	६	म. २१।१६ उ. ५३।३ या. पञ्चकारम्भः ६।१८
३२	३३	११	श.	५७	२८	श.	४४	२७	ब्र.	६०	०	ब.	२५	१५	११	२३	२३	कुं.			५	५२	६	५४	०	९	२७	२७	वरूथिनी ११ व्र. स्मा.
३२	३५	१२	र.	६०	०	पू.भा	५०	३७	ब्र.	०	१०	कौ.	२९	५८	१२	२४	२४	मी.	३४	६	५	५१	६	५४	०	१०	२५	४८	भरण्यां. शुक्रः ५५।१० पश्चिमोदयं बुधः ५४।५५ वैष्णवानां ११ व्र.
३२	३९	१२	चं.	२	२९	उ.भा	५७	१३	ऐं.	१	३६	तै.	२	२९	१३	२५	२५	मी.			५	५०	६	५५	०	११	२४	३	प्रदोष व्रतम् [illegible]
३२	४२	१३	मं.	७	४५	रे.	६०	००	वै.	३	१२	व.	७	४५	१४	२६	२६	मी.			५	४९	६	५६	०	१२	२२	१४	म. ७।४५ उ. २९।१४ या. भरण्या रविः ५९।३१ कृत्तिका बुधः ९।६
३२	४६	१४	बु.	१२	४४	रे.	३	३३	वि.	४	३६	श.	१२	४४	१५	२७	२७	मे.	३	३३	५	४८	६	५६	०	१३	२०	२५	वृषे बुधः ५८।४३ पञ्चक समाप्तिः ३।३३
३२	५०	३०	गु.	१७	२	अ.	९	२३	प्री.	५	३७	ना.	१७	२	१६	२८	२८	मे.			५	४७	६	५६	०	१४	१८	३६	मेला पञ्चपुर (पञ्जौर)

वैशाखकृष्ण ८ बुध इष्टम् ०।० दिनगणः ५१२९

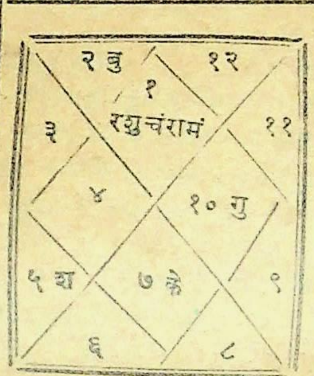
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	११	०	९	०	४	०	६
६	२९	१४	७	७	६	२	२
३२	१३	८	३८	१५	२५	३१	३१
१७	१९	५६	१०	२५	२६	९	९
५८	४५	१२७	५	७४	१	३	३
२७	२३	१	१०	१३	१६	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
[illegible]	अ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
अ.	रे.	भ.	[illegible]	अ.	म.	अ.	चि.
२	४	१	७/४	३	२	१	३



इस पक्षमें राजाओं में परस्पर विरोध मूगी माठ अलसी ऊन मन्दी होगा। गेहूँ जौ चना के भाव में पहिले कुछ मन्दा आकर फिर तेजी में रहेगा। रूई चान्दी सूत वस्त्र तिल तेल तेज रहें। यहाँ जो वस्तु मन्दी हो उसे खरीदकर रखनेसे शीघ्र ही लाभ होगा। ति. १ से ६ तक और ९।११।१२को कहीं २ आकाश में बादल चाल या बूँदा बाँदी होगी। शकुन विचार-वैशाखवदी त्रयोदशी मंगल या रविवार। खाँड पान सेंधा नमक ये सब तेज विचार। वैशाख वदी आठें दिना बिजली गर्जन होय। संवत् अच्छा जानिये संशय करो न कोय॥ वैशाख वदी एकादशी प्रबल मेघ जो जान। धान्य बीज खेती करो अच्छा संवत मान॥

वैशाख मासमें प्याऊ (छबील) लगानी चाहिये

वैशाखकृष्ण ३० गुरावभिष्टम् ०।० दिनगणः ५१३७



सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	०	१	९	०	४	०	६
१४	५	०	८	१७	६	२	२
१८	१६	२	१६	८	१९	५	५
३६	१९	१७	४४	२०	३७	४४	४४
५८	४५	१०७	४	७४	०	३	३
११	१८	४८	१९	१०	३३	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
[illegible]	अ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
भ.	अ.	कृ.	[illegible]	भ.	म.	अ.	चि.
१	२	२	७/४	२	२	१	३

और भगवत्प्रीत्यर्थ अभिषेकपात्र शिवजी पर देना तथा जूता पंखा, छतरी, बारीक कपड़े, चन्दन, जलपात्र (घड़ा झज्झर आदि), फूलोंके हार, सुन्दर २ नये २ केले तथा दाख आदि फल देने चाहिये। चैत्रशुक्ल १५ अथवा मेष संक्रान्तिसे वैशाख स्नान आरम्भ होता है। स्नान संकल्प—देशकालौ संकीर्त्य मम [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ शकः १८७१ वैशाखशुक्लपक्षः ३

(अप्रैल-मई सन् १९४९ ई०) उत्तरायणगोलौ ग्रीष्मर्तुः

दि·	मा·	ति·	वा·	घ·	प·	न·	घ·	प·	यो·	घ·	प·	क·	घ·	प·	हि. दिनाङ्क	अं· मेषार्क	मु· मुसल्मानी	चन्द्र सञ्चारः			सू·उ· रेल्वे		सू·अ· रेल्वे		नित्य सूर्यस्पष्टः उदय-काले				
३२	५३	१	शु·	२०	२६	भ·	१४	२०	आ·	५	५७	ब·	२०	२६	१७	२९	२९	वृ·	३०	१७	५	४६	६	५७	०	१५	१६	४६	चन्द्रदर्शनम्
३२	५७	२	श·	२२	४०	कृ·	१८	१०	सौ·	५	२०	कौ·	२२	४०	१८	३०	१	वृ·			५	४५	६	५८	०	१६	१४	५४	रजब मु. ७ श्रीपरशुरामजयन्ती ३ (रात्रिप्रथमयामव्यापिनी ग्राह्य है)
३३	१	३	र·	२३	३८	रो·	२१	१५	शो·	३	५३	ग·	२३	३८	१९	१	२	मि·	५१	४२	५	४५	६	५८	०	१७	१३	०	भ. ५३।२८ उ. मई ५ ता. ३१ अक्षय ३ त्रेतायुगादि
३३	४	४	चं·	२३	१८	मृ·	२२	१०	अ·	५/५७	२४/५२	वि·	२३	१८	२०	२	३	मि·			५	४४	६	५९	०	१८	११	२	भ. २३।१८ या. मार्गी शनिः १५।०
३३	८	५	मं·	२१	४४	आ·	२२	१८	धृ·	५३	२४	बा·	२१	४४	२१	३	४	मि·			५	४३	७	०	०	१९	९	३	
३३	१२	६	बु·	१८	५९	पुन	२१	१७	शू·	४८	५	तै·	१८	५९	२२	४	५	क·	६	३३	५	४२	७	०	०	२०	७	०	रोहिण्यां बुधः ३।१३
३३	१५	७	गु·	१५	१६	पु·	१९	२१	गं·	४२	४	व·	१५	१६	२३	५	६	क·			५	४२	७	१	०	२१	४	५४	भ. १५।१६ उ. ४२।५९ या. कृत्ति. शुक्रः ४३।४०
३३	१९	८	शु·	१०	४३	श्ले·	१६	३४	वृ·	३५	२२	ब·	१०	४३	२४	६	७	सिं·	१६	३४	५	४१	७	२	०	२२	२	५०	
३३	२३	९	श·	५	२६	म·	१३	९	ध्रु·	२८	१०	कौ·	५	२६	२५	७	८	सिं·			५	४०	७	२	०	२३	०	४२	
क्षयम्		१०	श·	५४	१५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
३३	२७	११	र·	५३	३९	पूफा.	९	१५	व्या·	२०	४१	व·	२६	४०	२६	८	९	कं·	२३	१३	५	३९	७	३	०	२३	५८	३३	भ. २६।४० उ. ५३।३९ या. भरि. भौमः ४६।३३ वृषेशुक्रः २५।५०*
३३	३०	१२	चं·	४७	३२	उ.फा	५	७	ह·	१३	०	ब·	२०	३६	२७	९	१०	कं·			५	३८	७	३	०	२४	५६	२४	मोहिनी ११ व्र. वैष्णवानाम् * मोहिनी ११ व्र. स्मा.
३३	३४	१३	मं·	४१	२९	ह·	०/५६	५४/५६	व·	५/५७	[illegible]/५२	कौ·	१४	३१	२८	१०	११	तु·	२९	२२	५	३७	७	४	०	२५	५४	१३	कृत्ति. रविः ४७ ३३ भौमप्रदोष व्र.
३३	३८	१४	बु·	३५	४७	स्वा	५३	१८	व्य·	५०	४१	ग·	८	३८	२९	११	१२	तु·			५	३६	७	५	०	२६	५१	५९	भ. ३५।४७ उ. पश्चिमोदयो भृगुः ४५।० श्रीनृसिंह १४ व्र. **प.उ.भृ.**
३३	४१	१५	गु·	३०	३३	चि·	५०	१४	व·	४३	५८	वि·	३	१०	३०	१२	१३	वृ·	३६	०	५	३६	७	५	०	२७	४९	४३	भ. ३।१० या. कूर्मज. यमायसान्नजलकुम्भदानम् वैशाखस्ना. समा.

वैशाखशुक्ल ८ शुक्र इष्ट· ०।० दिनगणः ५१४५

सू·	मं·	बु·	गु·	शु·	श·	रा·	के·
०	०	१	९	०	४	०	६
२२	११	१२	८	२७	६	१	१
२	१५	४०	४४	०	१९	४०	४०
५०	४३	३४	६	०	२३	१९	१९
५७	४५	८१	२	७३	०	३	३
५६	७	११	५३	२५	११	११	११
क्रान्ति	मा·	मा·	मा·	मा·	मा·	व·	व·
	अ·	उ	उ·	अ·	उ·	अ·	अ·
भ·	अ·	रो·	[illegible]	कृ·	म·	अ·	चि·
३	४	१	७/४	१	२	१	३

२ बु | १२ | ३ | मं रा १ शु र | ११ | ४ चं | १० गु | ५ श | ७ के | ९ | ६ | ८

इस पक्षमें वायु का जोर रहेगा, प्रजामें क्लेश युद्धभय रहे। रूई सूत पहिले खासी मन्दी होकर बादमें तेजी होवे। अफीम तेज शेयर चान्दी मूंगफली, सरसों, हींग मन्दी हो। ति. ३।४ और ११ से १५ तक पश्चिमोत्तर में बादल व कुछ वर्षाके छींटे पड़नेका योग पाया जाता है।

श० नि०—वैशाखसुदी साते दिना बाजे पूर्वबाय। बादल हो बिजली दिखे और बुँद पड़ जाय। धान्य इकट्ठे तुम करो सुनलो ध्यान लगाय। भादों मासमें लाभहो इसमें संशय नाय। शुक्लपक्ष वैशाखकी तिथि दशमी दिन देख, बादल हो श्रावण विषै जल नहिं पड़े विशेष। वैशाखसुदी नौमी दिना बादल हो भरपूर। चातुर्मास वर्षा नहीं घटे प्रजा को नूर।

वैशाखशुक्ल ३ को यदि गङ्गास्नान, देवदर्शन किया जाय तो वह अक्षय फल देता है। इस पक्षमें, सभी रस सुवर्ण, अन्नके साथ पानीके घड़े, जौ गेहूँ चणेके सत्तू, दही चावल पंखा छत्री और जूता पितृ तथा देवताओंके निमित्त ब्राह्मणोंको दान दें। दानका संकल्प—"नामगोत्रमुच्चार्य्य-अद्यैतदसं शीतलोदकयुतं घटं विष्णुप्रीतये अमुकगोत्रायामुकशर्मणे विप्राय तुभ्यमहं संप्रददे" इसी तृतीयाको भगवान् श्रीपरशुरामजी का जन्मदिवस है।

वैशाखशुक्ल १५ गुरु इष्टम् ०।० दिनगणः ५१५१

२ शु बु | १२ | ३ | रा १ र मं | ११ | ४ | १० गु | ५ श | ७ के चं | ९ | ६ | ८

सू·	मं·	बु·	गु·	शु·	श·	रा·	के·
०	०	१	९	१	४	०	६
२७	१५	१९	८	४	६	१	१
४९	४३	१७	५६	२३	२५	२१	२१
४३	१२	३८	५६	४९	५	१५	१५
५७	४४	४९	१	७३	०	३	३
४४	३१	१	४४	५५	५४	११	११
क्रान्ति	मा·	मा·	मा·	मा·	मा·	व·	व·
	अ·	उ·	उ·	उ·	उ·	अ·	अ·
कृ·	भ·	रो	[illegible]	कृ·	म·	अ·	चि·
२	१	३	७/४	३	२	१	३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ शकः १८७१ ज्येष्ठकृष्णपक्षः ४ — (मई सन् १९४९ ई०) उत्तरायणगोलौ ग्रीष्मर्तुः

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि.	अं.	सु.	चन्द्र सञ्चारः			सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदय-काले				
३३	४५	१	शु.	२६	०	अनु.	४८	१	प.	३७	५२	कौ.	२६	०	३१	१३	१४	वृ.			५	३५	७	६	०	२८	४९	२५	
३३	४९	२	श.	२२	१८	ज्ये	४६	३१	शि.	३२	२६	ग.	२२	१८	१	१४	१५	ध.	४६	३१	५	३४	७	७	०	२९	४५	६	म. ५०।५७ उ० सं. वृषेऽर्कः १५।२३ मु. १५ पुण्यं १५।२३ या.
३३	५२	३	र.	१९	३६	मू.	४६	११	सि.	२७	५२	वि.	१९	३६	२	१५	१६	ध.			५	३४	७	८	१	०	४२	४६	म. १९।३६ या० श्रीगणेश ४ व्र.
३३	५६	४	चं.	१८	४	पू.षा	४७	३	सा.	२४	१३	बा.	१८	४	३	१६	१७	ध.			५	३३	७	८	१	१	४०	२३	राहि. शुक्रः ३३।१२
३४	००	५	मं.	१७	४९	उ.षा	४९	८	शु.	२१	३७	तै.	१७	४९	४	१७	१८	म.	२	३४	५	३२	७	९	१	२	३८	०	
३४	३	६	बु.	१८	५१	श्र.	५२	३४	शु.	१९	५८	व.	१८	५१	५	१८	१९	म.			५	३१	७	१०	१	३	३५	३४	म. १८।५१ उ. ४९।५९ या० मृगे बुधः ३२।२५
३४	७	७	गु.	२१	८	ध.	५७	४	ब्र.	१९	१८	ब.	२१	८	६	१९	२०	कुं.	२४	४९	५	३१	७	१०	१	४	३३	६	पञ्चकारम्भः २४।४९
३४	११	८	शु.	२४	३३	श.	६०	०	ऐं.	१९	३२	कौ.	२४	३३	७	२०	२१	कुं.			५	३०	७	११	१	५	३०	३५	वक्रीगुरुः ३६।० सा० मिथुने भानुः ४४।११
३४	१४	९	श.	२८	५१	श.	२	२४	वै.	२०	३०	ग.	२८	५१	८	२१	२२	मी.	५२	१३	५	३०	७	१२	१	६	२८	३	मघायां ३ शनिः ३२।४६
३४	१७	१०	र.	३३	४८	पू.भा	८	४६	वि.	२१	५४	व.	१	१९	९	२२	२३	मी.			५	२९	७	१३	१	७	२५	३०	म. १।१९ उ. ३३।४८ या. वक्री बुधः १९।४७
३४	१९	११	चं.	३८	५७	उ.भा	१५	१८	प्री.	२३	३६	व.	६	२२	१०	२३	२४	मी.			५	२९	७	१३	१	८	२२	५६	अपरा ११ व्र. भद्रकाली
३४	२१	१२	मं.	४३	५२	रे.	२१	४६	आ.	२५	९	कौ.	११	२४	११	२४	२५	मे.	२१	४३	५	२९	७	१४	१	९	२०	२०	रो. रविः ४१।२८ पञ्चक समाप्तिः २१।४३
३४	२२	१३	बु.	४८	९	अ.	२७	४४	सौ.	२६	१८	ग.	१६	०	१२	२५	२६	मे.			५	२९	७	१५	१	१०	१७	४२	म. ४८।९ उ. पश्चिमास्तं बुधः २३।२६ प्रदोष व्रतम्
३४	२४	१४	गु.	५१	३२	भ.	३२	५६	शो.	२६	५१	वि.	१९	५०	१३	२६	२७	वृ.	४८	५७	५	२८	७	१५	१	११	१५	३	म. १९।५० या. व. राहि. बुधः ५३।१८ कृत्ति० भौमः ५५।५३
३४	२५	३०	शु.	५३	४४	कृ.	३७	०	अ.	२६	३०	च.	२२	३८	१४	२७	२८	वृ.			५	२८	७	१६	१	१२	१२	२३	मृगेशुक्रः २३।४० वटसावित्री ३० व्रतम्

ज्येष्ठकृष्ण ८ शुक्र इष्टम् ०।० दिनगणः ५१५९

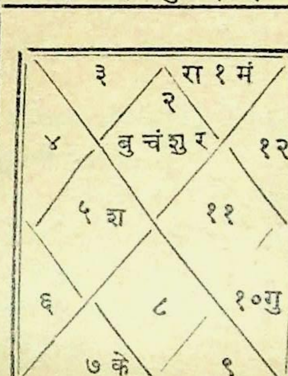
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	०	१	९	१	४	०	६
५	२१	२३	९	१४	६	०	०
३०	३७	४४	४	१४	३६	५५	५५
३५	१२	१७	२३	६	४७	४९	४९
५७	४४	१६	०	७३	१	३	३
३२	२	२७	११	३४	५२	११	११
सौरम.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
कृ.	भ.	मृ.	पुं.	रो.	मृ.	अ.	चि.
३	३	१	४	२	२	१	३



इस पक्ष में प्रजा में रोग तपस्वियों को भयपीड़ा हो, गेहूँ, चना, जौ, चान्दी आदिक भाव तेजी पर चलें ति. १० से मन्दे का रुख रहेगा। और रूई, मूँग, तिल, कुछ मन्दे रहें। तिथि १।२।३।८।९।१३।१४।३० को उत्तर भारत में बिजली की चमक व कहीं कहीं कुछ वर्षा होने के योग पाए जाते हैं। शकुनविचार—ज्येष्ठ वदी जो पंचमी बाजे दक्षिण वाय। घृत, तैल, तिल, लाभ दे आसो जाके माय। ज्येष्ठ वदी मावस दिना मेघ घटा होजाय। अनावृष्टि दुर्भिक्ष हो ऐसा योग बताय ॥

इस अमावस्या को वैधव्य नाश करने वाला "वट-सावित्री" व्रत होता है। ज्ये. कृष्ण ३० को पतिव्रता स्त्रियाँ वट के नीचे ३ रात रहकर सत्यवान् के साथ सावित्री की (अशक्त हों तो मिट्टी की) मूर्ति बनाकर फलपुष्प व धूप दीप नैवेद्य हल्दी कंठसूत्र और कुंकुम केसर आदि उपचारों से विधिपूर्वक पूजन कर और 'ओंकारपूर्विका देवी वीणापुस्तकधारिणी। वेदमातर्नमस्तेस्तु अवैधव्यं प्रयच्छ मे ॥" इस मन्त्र से अर्घ्य देकर बाद में "सावित्रीयं मया दत्ता सहिरण्या महासती। ब्रह्मणः प्रीणनार्थाय ब्राह्मणः प्रतिगृह्यताम् ॥" इस मन्त्र से मूर्ति ब्राह्मण को देवें ॥

ज्येष्ठकृष्ण ३० शुक्र इष्टम् ०।० दिनगणः ५१६६



सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	०	१	९	१	४	०	६
१२	२६	२३	९	२२	६	०	०
१२	४३	१८	०	५०	५२	३३	३३
२३	४१	११	३६	५६	५५	३५	३५
५७	४३	१६	१	७३	२	३	३
२०	४१	१५	१२	५१	२५	११	११
सौरम.	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रो.	कृ.	रो.	पुं.	रो.	म.	अ.	चि.
१	१	४	४	४	३	१	३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

…नवत्र हल्दी कंठसूत्र और कुंकुम केसर आदि उपचारों से विधिपूर्वक पूजन कर और 'ओंकारपूर्विका देवी वीणापुस्तकधारिणी । वेदमातनमस्तस्तु अवैधव्यं प्रयच्छ मे ।।" इस मन्त्र से अर्घ्य देकर बाद में "सावित्रीयं मया दत्ता … ब्राह्मण को देवें ।।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ शकः १८७१ ज्येष्ठशुक्लपक्षः ५ — (मई-जून सन् १९४९ ई०) उत्तरायणगोलौ ग्रीष्मर्तुः

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि. ज्येष्ठ	अं. जून	मु. साबा.	चन्द्र सञ्चारः			सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्य सूर्यस्पष्टः उदय-काले				
३४	२७	१	शा.	५४	४१	रो.	३९	५५	सु.	२५	२०	कि	२४	१२	१५	२८	२९	वृ.			५	२८	७	१६	१	१३	९	४३	
३४	२९	२	र.	५४	१९	मृ.	४१	३४	धृ.	२३	५	बा.	२४	३०	१६	२९	३०	मि.	१०	४५	५	२८	७	१६	१	१४	७	१	चन्द्रदर्शनम्
३४	३१	३	चं.	५२	४४	आ.	४२	०	शू.	१९	५०	तै.	२३	३१	१७	३०	१	मि.			५	२८	७	१६	१	१५	४	१६	सावान मु० ८ रम्भा ३ व्र.
३४	३२	४	मं.	४९	५७	पुन	४१	१५	गं.	१५	३६	व.	२१	२०	१८	३१	२	क.	२५	३६	५	२८	७	१७	१	१६	१	३१	भ. २१।२० उ. ४९।५७ या. वृषे भौमः ३०।२१
३४	३४	५	बु.	४६	१२	पु.	३९	२९	वृ.	१०	३१	ब.	१८	४	१९	१	३	क.			५	२८	७	१७	१	१६	५८	४४	मिथुने शुक्रः ४९।४ जून ६ ता. ३०
३४	३६	६	गु.	४१	३५	श्ले.	३६	५४	ध्रु.	४/५८	४०/११	कौ.	१३	५३	२०	२	४	सिं.	३६	५४	५	२८	७	१७	१	१७	५५	५६	उदयं भौमः १७।२०
३४	३७	७	शु.	३६	१९	म.	३३	३६	ह.	५१	८	ग.	८	५७	२१	३	५	सिं.			५	२८	७	१८	१	१८	५३	७	भ. ३६।१९ उ.
३४	३९	८	श.	३०	३२	पूफा.	२९	४९	व.	४३	४६	वि.	३	२५	२२	४	६	कं.	४३	४८	५	२७	७	१९	१	१९	५०	१६	भ. ३।२५ या.
३४	४०	९	र.	२४	२६	उफा.	२५	४५	सि.	३६	१३	कौ.	२४	२६	२३	५	७	कं.			५	२७	७	१९	१	२०	४७	२४	
३४	४२	१०	चं.	१८	१४	ह.	२१	२९	व्य.	२८	३३	ग.	१८	१४	२४	६	८	तु.	४९	२९	५	२७	७	१९	१	२१	४४	३२	भ. ४५।११ उ. मीने राहुः कन्यायां केतुश्च ३३।३७ श्रीगङ्गादशहरा
३४	४३	११	मं.	१२	९	चि.	१७	२९	व.	२१	३	वि.	१२	९	२५	७	९	तु.			५	२७	७	२०	१	२२	४१	३९	भ. १२।९या. मृग रविः ४०।१७ आर्द्रा.शुक्रः१५।१५ निर्जला ११ व्र.
३४	४५	१२	बु.	६	२२	स्वा	१३	४४	प.	१३	४८	बा.	६	२२	२६	८	१०	वृ.	५६	१९	५	२७	७	२१	१	२३	३८	४४	प्रदोष व्रतम्
३४	४६	१३	गु.	१	४	वि.	१०	३१	शि.	६	५९	तै.	१	४	२७	९	११	वृ.			५	२७	७	२१	१	२४	३५	४८	भ. ५६।२४ उ.
अवम्		१४	गु.	५५	२०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
३४	४८	१५	शु.	५२	३८	अनु.	८	४	सि.	०/५७	०५/५३	वि.	२४	३१	२८	१०	१२	वृ.			५	२६	७	२२	१	२५	३२	५१	भ. २४।३१ या.

ज्येष्ठशुक्ल ८ शनाविष्टम् ०।० — दिनगणः ५१७४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	१	९	२	४	०	६
१९	२	१९	८	२	७	०	०
५०	३१	३९	४४	४२	१७	८	८
१६	३४	४०	४६	४४	१७	८	८
५७	४३	३०	२	७३	३	३	३
९	३०	४६	४२	५१	२२	११	११
क्रान्तिः	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रो.	कृ.	रो.	ज्ये.	मृ.	म.	अ.	चि.
३	२	३	४	३	३	१	३



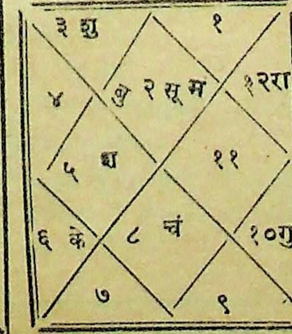
इस पक्षमें धूप अधिक पड़े। प्रजाको हैजा आदिसे कष्ट। गेहूँ जौ चना मूँगी मोठ बाजरा मसूर अलसी घीगुड़ खण्ड मूँगफली सरसों के भाव में तेजी रहे। रूई में खासी घटा बढ़ी, पहिले मन्दी होकर फिर तेजी होवे।

ति. ३ से ७ तक वर्षा बादल चाल व वायु का जोर रहेगा बिजली भी चमकेगी। ति. ८से वायु प्रचंड चलेगी।

शकुनविचार--ज्येष्ठ मासमें आर्द्रासे चित्रातक जोय नभमें चमके बिजली अथवा बादल होय। चौमासा बरसे नहीं सारा सूखा जाय। जितना भी यह योग हो उतना जल टपकाय। ज्येष्ठसुदी सप्तमदिने बिजुरी मेघ निहार। दक्षिणदिशि वायु चले तिल से लाभ अपार॥ तिथि पूर्णमासी को वर्षा होने पर दुर्भिक्ष होता है।

ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को संवत्सरका मुख माना है इसलिये उस दिन विशेष स्नान और दान करने से 'बिना दी हुई वस्तु पर अपना हक जमा लेना, तीनों प्रकार की अवैध हिंसा और परस्त्रीसेवन, कटु तथा मिथ्याभाषण, चुगली, निन्दा, व्यर्थ भाषण, पराई वस्तु को चाहना, दूसरे का बुरा सोचना' ये १० पाप दूर हो जाते हैं। यदि गंगा में न जा सकें तो सतलज आदि नदी में ही स्नान करके गंगा की पूजा करें।

ज्येष्ठशुक्ल १५ शुक्र इष्टम् ०।० — दिनगणः ५१८०



सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	१	९	२	४	११	५
२५	६	१६	८	१०	७	२९	२९
३२	४९	४६	२५	१	३९	४९	४९
५१	५२	३०	८	४८	१४	३	३
५७	४२	४	३	७३	३	३	३
३	५८	२२	५८	३४	५४	११	११
क्रान्तिः	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मृ.	कृ.	रो.	ज्ये.	आ.	म.	रे.	चि.
१	४	३	४	२	३	४	२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

आषाढ़ बदि १२ गुरुवार सं २००६ [illegible] को रात्रि के [illegible] पुत्री उत्पन्न हुई जिस का प्रसिद्ध नाम [illegible]

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत २००६ शकः १८७१ आषाढ़कृष्णपक्षः ६

दि· मा·		ति·	वा·	घ·	प·	न·	घ·	प·	यो.	घ·	प·	क·	घ·	प·	हि· आषा·	अं· जून	मु· [illegible]	चन्द्र सञ्चारः			सू· उ· रेल्वे		सू· अ· रेल्वे		नित्य सूर्य स्पष्टः उदय-काले			
३४	४९	१	श·	४९	४८	ज्ये	६	२५	शु·	५०	२९	बा·	२१	१३	२९	११	१३	घ·	६	२५	५	२६	७	२२	१	२६	२९	५४
३४	५१	२	र·	४८	१०	मू·	५	४८	शु·	४६	४०	तै·	१८	५९	३०	१२	१४	घ·			५	२६	७	२२	१	२७	२६	५५
३४	५२	३	चं·	४७	४६	पू.षा	६	२५	ब्र·	४३	५०	व·	१७	५८	३१	१३	१५	म·	२१	५२	५	२६	७	२३	१	२८	२३	५४
३४	५४	४	मं·	४८	४३	उ.षा	८	१४	ऐं·	४२	१	ब·	१८	१४	१	१४	१६	म·			५	२६	७	२४	१	२९	२०	५३
३४	५५	५	बु·	५०	५०	श्र·	११	२२	वै·	४१	१४	कौ·	१९	४६	२	१५	१७	कुं·	४३	२९	५	२६	७	२४	२	०	१७	५२
३४	५७	६	गु·	५४	७	ध·	१५	३६	वि·	४१	१९	ग·	२२	२८	३	१६	१८	कुं·			५	२६	७	२४	२	१	१४	५०
३४	५८	७	शु·	५८	२०	श·	२०	५४	प्री·	४२	१०	वि·	२६	१३	४	१७	१९	कुं·			५	२६	७	२५	२	२	११	४६
३५	०	८	श·	६०	०	पू.भा	२६	५८	आ·	४३	३३	बा·	३०	४५	५	१८	२०	मी·	१०	२७	५	२६	७	२६	२	३	८	४१
३५	१	८	र·	३	१०	उ.भा	३३	२९	सौ·	४५	१३	कौ·	३	१०	६	१९	२१	मी·			५	२६	७	२६	२	४	५	३६
३५	३	९	चं·	८	१४	रे·	३९	५९	शो·	४६	५१	ग·	८	१४	७	२०	२२	मे·	३९	५९	५	२६	७	२६	२	५	२	३१
३५	४	१०	मं·	१३	८	अ·	४६	५	अ·	४८	७	वि·	१३	८	८	२१	२३	मे·			५	२५	७	२७	२	५	५९	२७
३५	६	११	बु·	१७	२४	भ·	५९	२८	सु·	४८	४९	बा·	१७	२४	९	२२	२४	मे·			५	२५	७	२७	२	६	५६	२२
३५	४	१२	गु·	२०	४८	कृ·	५५	४८	धृ·	४८	४०	तै·	२०	४८	१०	२३	२५	वृ·	७	३३	५	२६	७	२८	२	७	५३	१८
३५	३	१३	शु·	२३	२	रो·	५९	२	शू·	४७	४१	व·	२३	२	११	२४	२६	वृ·			५	२७	७	२८	२	८	५०	११
३५	१	१४	श·	२४	३	मृ·	६०	०	गं·	४५	३९	श·	२४	३	१२	२५	२७	मि·	२९	५९	५	२७	७	२७	२	९	४७	४
३५	०	३०	र·	२३	४५	मृ·	०	५७	वृ·	४२	३७	ना·	२३	४५	१३	२६	२८	मि·			५	२७	७	२७	२	१०	४३	५६

(जून सन् १९४९ ई०) उत्तरायणगोलौ सायनकर्कार्काद् दक्षिणायनं वर्षर्तुश्च

भ. १७।५८ उ. ४७।३६ या. पूर्वोदयं बुधः १६।५०
सं. मिथुनेऽर्कः४१।६ मु.३० पुण्य मध्यान्होत्तरम् रोहि.भौमः२६।५४
पञ्चकारम्भः ४३।२९
भ. ५४।७ उ. मार्गीबुधः १७।२५
भ. २६।१३ या.
पुन. शुक्रः ८।२९

भ. ४०।४१ उ. पञ्चकसमाप्तिः ३९।५९
भ. १३।८ या. आर्द्रा.रविः ४२।४५ सा. कर्के भानुः १४।५ *
योगिनी ११ व्र. *दक्षिणायनम् । वर्षर्तु प्रा.
प्रदोष व्र.
भ. २३।२ उ. ५३।३२ या.

कर्के शुक्रः १९।४६

आषाढ़कृष्ण ८ रवाविष्टम् ०।० दिनगणः ५१८९

सू·	मं·	बु·	गु·	शु·	श·	रा·	के·
२	१	१	९	२	४	११	५
४	१३	१५	७	२१	८	२९	२९
५	१३	४३	४४	३	१७	२०	२०
३६	१८	५५	५३	०	३१	२७	२७
५६	४२	१०	५	७३	५	३	३
५५	२०	५५	६	२३	६	११	११
	मा·	मा·	व·	मा·	मा·	व·	व·
	उ·	उ·	उ·	उ·	उ·	अ·	अ·
मृ· ४	रो· १	रो· २	उ·षा ३ ४	पु· १	म· ३	रे· ४	चि· २

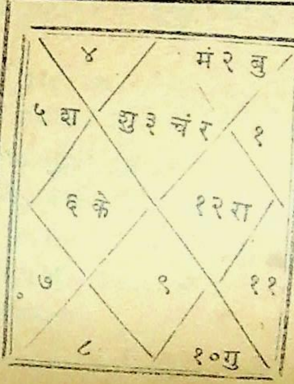


इस पक्षमें धूप तेज पड़े, ति.६ से चान्दी, सोना, रूई मन्दी हो। अलसी गेहूँ जौ चना चावल नमक घी लालमिर्च गुड़ शक्कर तेल तिल मसूर तेज रहें।

ति. १ से ३ तक वर्षा दक्षिणोत्तर में होगी। ति. ४ से ६ तक और ९।१०।१३।१४।३० को बादल वायु का वेग खण्ड वृष्टि के योग हैं।

शकुनविचार—पहिला दिन आषाढ़का गगन करै घनघोर। भूप लड़ैं झगड़ा बढ़े काल पड़े चहुँ ओर॥ आषाढ़वदी जो अष्टमी बादल ऊगे चन्द। वर्षा अच्छी होयगी मिटे सभी दुख द्वन्द॥१॥ काला बादल करबरा धौंलो करे सुकाल। चन्दा ऊगे निर्मला निश्चय पड़े दुकाल। आषाढ़ वदी नौमी दिना बिजली बादल होय। धान्य बेच खेती करो संशय करो न कोय॥

आषाढ़कृष्ण ३० रवाविष्टम् ०।० दिनगणः ५१९६



सू·	मं·	बु·	गु·	शु·	श·	रा·	के·
२	१	१	९	२	४	११	५
१०	१८	१९	७	२९	८	२८	२८
४३	८	८	५	३५	५१	५८	५८
५६	४६	२८	२	४६	४३	१२	१२
५६	४२	४३	६	७३	५	३	३
५२	२७	४५	११	२०	२	११	११
	मा·	मा·	व·	मा·	मा·	व·	व·
	उ·	उ·	उ·	उ·	उ·	अ·	अ·
आ· २	रो· ३	रो· ३	उ·षा [illegible]	पु· २	म· ३	रे· ४	चि· २

आषाढ़ में एक बार भोजन करने से बहुत धन धान्य और [illegible]
की पूजा करें। इस मासमें [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

([illegible] सन् १९४९ ई०) दक्षिणायन-

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

आषाढ़ में एक बार भोजन करने से बहुत धन धान्य और पुत्रों की प्राप्ति होती है।
की पूजा करें।

संवत् २००६ शकः १८७१ आषाढ़ शुक्लपक्षः ७

(जून-जुलाई सन् १९४९ ई०) दक्षिणायन-मुत्तरगोलः वर्षर्तुः

दि·मा·	ति·	वा·	घ·	प·	न·	घ·	प·	यो.	घ·	प·	क·	घ·	प·	हि· आषाढ़	अं· जुलाई	मु· रमजान	चन्द्र सञ्चारः			सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्य सूर्य स्पष्टः उदय-काले			
३४ ५८	१	चं·	२२	११	आ·	१	३८	ध्रु·	३८	३५	ब·	२२	११	१४	२७	२९	क·	४६	१५	५	२८	७	२७	२	११	४०	४९
३४ ५७	२	मं·	१९	२७	पुन.	१ २९	७ ३३	व्या·	३३	४०	कौ·	१९	२७	१५	२८	१	क·			५	२९	७	२७	२	१२	३७	४१
३४ ५५	३	बु·	१५	४२	श्ले·	५७	१०	ह·	२७	५८	ग·	१५	४२	१६	२९	२	सिं·	५७	१०	५	२९	७	२७	२	१३	३४	३३
३४ ५३	४	गु·	११	७	म·	५४	१	व·	२१	३५	वि·	११	७	१७	३०	३	सिं·			५	३०	७	२७	२	१४	३१	२५
३४ ५२	५	शु·	५	५०	पू.फा	५०	२०	सि·	१४	३७	बा·	५	५०	१८	१	४	सिं·			५	३०	७	२७	२	१५	२८	१०
३४ ५०	६	श·	०	३	उ.फा	४६	१७	व्य·	७ ५३	१७ ५५	तै·	०	३	१९	२	५	कं·	४	१९	५	३१	७	२७	२	१६	२५	१९
अवम्	७	श·	१३	१२	०	०	०	०.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३४ ४९	८	र·	४७	३९	ह·	४२	७	प·	५२	४	वि·	२०	४७	२०	३	६	कं·			५	३१	७	२७	२	१७	२२	१
३४ ४७	९	चं·	४१	३३	चि·	३८	२	शि·	४४	३२	बा·	१४	३६	२१	४	७	तु·	१०	५	५	३२	७	२६	२	१८	१८	५३
३४ ४६	१०	मं·	३५	४१	स्वा	३४	१२	सि·	३७	१३	तै·	८	३७	२२	५	८	तु·			५	३२	७	२६	२	१९	१५	४५
३४ ४४	११	बु·	३०	२०	वि·	३०	५२	सा·	३०	१७	व·	३	०	२३	६	९	वृ·	१६	४२	५	३२	७	२६	२	२०	१२	३७
३४ ४३	१२	गु·	२५	३४	अ·	२८	११	शु·	२३	५५	बा·	२५	३४	२४	७	१०	वृ·			५	३३	७	२६	२	२१	९	२८
३४ ४१	१३	शु·	२१	४१	ज्ये·	२६	२२	शु·	१८	१४	तै·	२१	४१	२५	८	११	ध·	२६	२२	५	३४	७	२६	२	२२	६	१९
३४ ४०	१४	श·	१८	४८	मू·	२५	३२	ब्रं·	१३	२०	व·	१८	४८	२६	९	१२	ध·			५	३४	७	२६	२	२३	३	१०
३४ ३८	१५	र·	१७	२	पू.षा.	२५	५२	ऐं·	९	१९	ब·	१७	२	२७	१०	१३	म·	४१	१५	५	३५	७	२६	२	२४	०	२

चन्द्रदर्शनम्
रमजान मु. ९ रोजा शुरू श्रीजगदीश रथयात्रा
म. ४३।२४ उ. पुष्ये शुक्रः २३।२४ व.गत्या उ.षा.यां ३ गु. ५७।२५
म. ११।७ या. मृगे बुधः २८।५०
जुलाई ७ ता. ३१
म. ५३।५५ उ.

म. २०।४७ या. मृगे भौमः २२।७

पुन. रविः ४६।४४ मिथुनेबुधः ४५।१
म. ३।० उ. ३०।२० या. देवशयनी ११ व्र. चातुर्मास्य व्रत *
प्रदोष व्र. * नियमाद्यारम्भश्च
मघायां ४ शनिः २६।४६
म. १८।४८ उ. ४७।५५ या. आश्ले. शुक्रः ३८।३९ वायुपरीक्षा †
आर्द्रा. बुधः २।३२ श्रीगुरुव्यासयोः पूजा मन्वादिः
† ध्वजारोपणम्

आषाढ़शुक्ल ८ रवाविष्टम् ०।० दिनगणः ५२०३

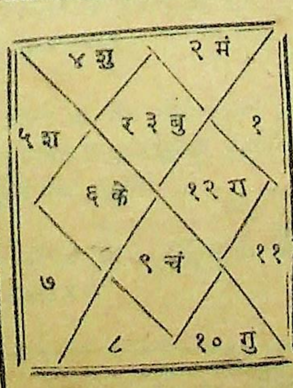
सू·	मं·	बु·	गु·	शु·	श·	रा·	के·
२	१	१	९	३	४	११	५
१७	२३	२६	६	८	९	२८	२८
२२	१	१७	१९	८	२८	३५	३५
१	५५	१७	३४	३१	४८	५५	५५
५६	४१	७३	६	७३	५	३	३
५१	३८	५२	४३	१	२६	११	११
क्रान्ति	मा·	मा·	व·	मा·	मा·	व·	व·
	उ·	उ·	उ·	उ·	उ·	अ·	अ·
आ·	रो·	मृ·	पुं·	पुं·	म·	रे·	चि·
४	४	१	३	२	३	४	२



इस पक्षमें वृक्ष टूटें और पशुओं की हानि हो। रुई चांदीमें मन्दी रहे, राजाओंमें विरोध शेयरके भावमें तेजी हो। गेहूँ चना अलसी घी तेल गुड़ खाण्ड शक्करके भावमें भी तेजी होवे। आकाशमें बादल चाल बहुत रहेगी कहीं ज्यादा कहीं कम ऐसे वर्षा होगी। ति. ५।८।१०।१४।१५ को खण्ड वृष्टि का योग है।

शकुन विचार–शुक्लपक्ष आषाढ़ शर पश्चिम धनुष दिखाय। पश्चिमकी वायु चले जल वर्षे झड़ लाय। तृणका संग्रह कीजिये बेचो कार्तिक मास। निश्चय उसमें लाभ हो, कर लेना विश्वास। आषाढ़सुदी नौमी दिना ना बादल ना बीज। हलफाड़ ईंधन करो बैठा खावो बीज। आषाढ़ १५ दिने जो वर्षे सुरराय। एक मास तक अन्नकी निश्चय तेजी खाय।

आषाढ़शुक्ल १५ रवाविष्टम् ०।० दिनगणः ५२१०



सू·	मं·	बु·	गु·	शु·	श·	रा·	के·
२	१	२	९	३	४	११	५
२४	२७	६	५	१६	१०	२८	२८
०	५१	३५	२९	४०	९	१३	१३
२	३६	३८	२०	२६	४०	३९	३९
५६	४१	९९	७	७३	६	३	३
५२	६	०	२३	१	१९	११	११
क्रान्ति	मा·	मा·	व·	मा·	मा·	व·	व·
	उ·	उ·	उ·	उ·	उ·	अ·	अ·
पुं·	मृ·	मृ·	पुं·	श्ले·	म·	रे·	चि·
२	२	४	३	१	४	४	२

चातुर्मास्य व्रत के आरम्भ करते समय "इमं करिष्ये नियमं निर्विघ्नं कुरु मेऽच्युत। इदं व्रतं मया देव गृहीतं पुरतस्तव। गृहीतेऽस्मिन् व्रते देव पंचत्वं यदि मे भवेत्। तदा भवतु सम्पूर्णं त्वत्प्रसादाज्जनार्दन!" इस मन्त्र से प्रार्थना पूर्वक संकल्प कर चातुर्मास में निम्न गलगल राजमाष मूली कद्दू गन्ना यह वस्तुएं छोड़ देवे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

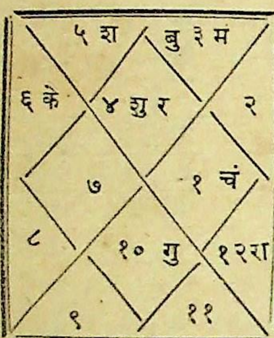
Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ शकः १८७१ श्रावणकृष्णपक्षः ८ — (जुलाई सन् १९४९ ई०) दक्षिणायनमुत्तरगोलः वर्षर्तुः

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि.	अं. जुलाई	मु.	चन्द्र सञ्चारः			सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्य सूर्य स्पष्टः उदय-काले				
३४	३६	१	चं.	१६	३१	उ.षा	२७	२५	वै.	६	१८	कौ.	१६	३१	२८	११	१४	म.			५	३५	७	२५	२	२४	५६	५६	
३४	३५	२	मं.	१७	१०	श्र.	३०	१४	वि.	४	१७	ग.	१७	१०	२९	१२	१५	म.			५	३५	७	२५	२	२५	५३	५०	म. ४१।१४ उ.
३४	३३	३	बु.	१९	१९	ध.	३४	१५	प्री.	३	१९	वि.	१९	१९	३०	१३	१६	कुं.	२	१४	५	३६	७	२५	२	२६	५०	४२	म. १९।१९ या. मिथुनेभौमः ७।३३ पञ्चकारम्भः २।१४ *
३४	३२	४	गु.	२२	३१	श.	३९	२१	आ.	३	११	बा.	२२	३१	३१	१४	१७	कुं.			५	३६	७	२५	२	२७	४७	३६	* श्रीगणेश ४ व्र.
३४	३०	५	शु.	२६	३९	पू.भा	४५	१५	सौ.	३	५६	तै.	२६	३९	३२	१५	१८	मी.	२८	४७	५	३७	७	२५	२	२८	४४	३३	पूर्वास्तं बुधः २४।४०
३४	२९	६	श.	३१	२४	उ.भ	५१	४२	शो.	५	१२	व.	३१	२४	१	१६	१९	मी.			५	३८	७	२५	२	२९	४१	३०	म. ३१।२४ उ. सं. कर्केऽर्कः १९।३० मु.४५ पुण्यं घ. १९।३० या.
३४	२७	७	र.	३६	२८	रे.	५८	१६	अ.	६	४८	वि.	३	५६	२	१७	२०	मे.	५८	१६	५	३८	७	२५	३	०	३८	२८	म. ३।५६ या. पुन. बुधः १२।३ पञ्चकसमाप्तिः ५८।१६
३४	२६	८	चं.	४१	२२	अ.	६०	०	सु.	८	२८	बा.	८	५५	३	१८	२१	मे.			५	३८	७	२४	३	१	३५	२६	
३४	२४	९	मं.	४५	४१	अ.	४	३१	धृ.	९	४८	तै.	१३	३१	४	१९	२२	मे.			५	३९	७	२४	३	२	३२	२५	पुष्ये रविः ५०।८
३४	२२	१०	बु.	४९	८	भ.	१०	४	शू.	१०	३९	व.	१७	२४	५	२०	२३	वृ.	२६	१३	५	३९	७	२४	३	३	२९	२४	म. १७।२४ उ. ४९।८ या. मघा. सिंहे च शुक्रः ५९।४८
३४	२१	११	गु.	५१	२५	कृ.	१४	४२	गं.	१०	४१	ब.	२०	१६	६	२१	२४	वृ.			५	४०	७	२३	३	४	२६	२२	कर्के बुधः ५८।५८ कामदा ११ व्र.
३४	१९	१२	शु.	५२	३२	रो.	१८	१३	वृ.	९	५०	कौ.	२१	५८	७	२२	२५	मि.	४९	१९	५	४०	७	२३	३	५	२३	२१	आर्द्रा. भौमः ५६।९ सा. सिंहे भानुः ५१।५९ निम्बार्काणां ११ व्र.
३४	१७	१३	श.	५२	१९	मृ.	२०	२५	ध्रु.	८	०	ग.	२२	२५	८	२३	२६	मि.			५	४१	७	२२	३	६	२०	२१	म. ५२।१९ उ. पुष्ये बुधः ३२।५५ प्रदोष व्र.
३४	१४	१४	र.	५०	५३	आ.	२१	२३	व्या.	५	८	वि.	२१	३६	९	२४	२७	मि.			५	४१	७	२२	३	७	१७	२२	म. २१।३६ या.
३४	११	३०	चं.	४८	१४	पुन.	२१	८	ह.	१ ५८	१ २८	च.	१९	३७	१०	२५	२८	क.	६	११	५	४२	७	२१	३	८	१४	२४	हरियाली ३०

श्रावणकृष्ण ८ चन्द्र इष्टम् ०।० — दिनगणः ५२१८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	२	३	९	३	४	११	५
१	३	४	२६	२६	१०	२७	२७
३५	१९	२८	२३	२३	५९	४८	४८
२६	५	१२	४२	४२	१३	१२	१२
५६	४०	१२१	७	७२	६	३	३
५८	३४	३०	२३	४०	२९	११	११
सौम्य.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुष्य.	मृ.	पुष्य.	उ.षा.	श्ले.	म.	रे.	चि.
४	३	१	३	३	४	४	२



इस पक्षमें प्रजामें रोग भय पहिले, अन्नभाव कुछ मन्दा होकर बादमें हरप्रकारका गल्ला अनाज तेज होगा, मूंग उर्द अलसी सरसों घृत गुड़ खण्ड मूंगफली मन्दी रहेगी। ति. १२ से रूईमें २०।२५ टका मन्दी हो। चांदी में २ टका के करीब तेजी। और श्वेत वस्त्र सस्ता होगा। ति. १।२।४।५ ९।१२।१३ को वर्षा वायु के साथ होगी।

शकुन विचार—तम ग्यारस दिन गर्जना नभका भला न चीन। अन्न भाव घट जायगा दुनिया तेरह तीन। श्रावण पहली पंचमी वर्षे करे निहाल। पवन चले तो अति बुरी पड़े हलाहल काल। श्रावणवदी एकादशी जो नभवर्षा होय अच्छा संवत् होयगा संशय करो न कोय

श्रावणमें प्रति सोमवार को यदि समर्थ हो तो निराहार व्रत रखे नहीं तो रात्रिको भोजन कर लेवें। शिव तथा पार्वती का प्रतिमा बनाकर 'ॐनमः शिवाय' मन्त्र का जप करने से शिवलोक की प्राप्ति होती है और अपुत्र को पुत्र, निर्धन को धन, मूर्ख को विद्या प्राप्त होती है, घी, दूध, घड़ा, तिल, जौ, फल देने से भगवान् प्रसन्न होते हैं। सिंह और कर्क के सूर्य में सभी नदियां रजस्वला होती हैं अतः उसमें स्नान नहीं करना चाहिये।

श्रावणकृष्ण ३० चन्द्र इष्टम ०।० — दिनगणः ५२२५

शु ५ श | मं ३ ६
६ के | बु ४ र | २
७ | १ | १२
८ | १० गु | रा
९ | ११

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	२	३	९	४	४	११	५
८	८	६	३	४	११	२७	२७
१४	३	२५	३३	५३	४५	२५	२५
२४	३१	५२	४७	२४	३२	५७	५७
५७	४०	१२८	७	७२	६	३	३
२	३२	५०	५१	४४	४६	११	११
सौम्य.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुष्य.	आ.	पुष्य.	उ.षा.	म.	म.	रे.	चि.
२	१	१	३	२	४	४	२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ शकः १८७१ श्रावणशुक्लपक्षः ६

(जुलाई अगस्त सन् १९४९ ई०) दक्षिणायनमुत्तरगोलः वर्षर्तुः

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	श्रावण	अगस्त	सफर	चन्द्र सञ्चारः	घ.	प.	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्य सूर्य स्पष्टः उदय-काले				
२४	७	१	मं.	४४	३४	पु.	१९	४८	सि.	५०	५१	कि.	१६	२४	११	२६	२९	क.			५	४२	७	२१	३	९	११	२८	व. उ. षा. यां. २ गुरुः ४८।५५ नक्षत्रारम्भः
३४	३	२	बु.	४०	५	श्ले.	१७	३९	व्य.	४४	३२	बा.	१२	२९	१२	२७	३०	सिं.	१७	३९	५	४३	७	२०	३	१०	८	३३	चन्द्रदर्शनम्
३४	०	३	गु.	३४	५०	म.	१४	३८	व.	३७	३९	तै.	७	२७	१३	२८	१	सिं.			५	४३	७	१९	३	११	५	४०	सब्वाल मु. १० ईन्द संधारातीज
३३	५७	४	शु.	२९	६	पू.फा	११	५	प.	३०	२२	व.	१	५८	१४	२९	२	कं.	२५	५	५	४४	७	१९	३	१२	२	४८	म. १।५८ उ. २९।६ या. आश्ले. बुधः ५२।४८
३३	५३	५	श.	२३	०	उ.फा	७	६	शि.	२२	४८	बा.	२३	०	१५	३०	३	कं.			५	४५	७	१८	३	१२	५९	५६	नाग ५
३३	५०	६	र.	१६	४६	ह.	२ / ५८	५७ / ५३	सि.	१५	५	तै.	१६	४६	१६	३१	४	तु.	३२	२४	५	४५	७	१८	३	१३	५७	६	पू. फा. यां शुक्रः ५८।१२ [* जयन्ती
३३	४७	७	चं.	१०	३८	स्वा	५४	५६	सा.	७	३०	व.	१०	३८	१७	१	५	तु.			५	४६	७	१७	३	१४	५४	१७	म. १०।३८ उ. ३७।४२ या. अगस्त ८ ता. ३१ श्री गो. तुलसी*
३३	४३	८	मं.	४	४७	वि.	५१	२८	शु.	० / ५३	६ / १	ब.	४	४७	१८	२	६	वृ.	३७	२०	५	४७	७	१६	३	१५	५१	२९	आश्ले. रविः ५१।११ श्री दुर्गा ८ मेला श्रीनयनादेवी व चिन्तपूर्णी
अवम्		९	मं.	५४	३५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०			०	०	०	०	०	०	०	०	
३३	४०	१०	बु.	५४	३६	अ.	४८	३७	ब्रं.	४६	३०	तै.	२६	५९	१९	३	७	वृ.			५	४८	७	१५	३	१६	४८	४३	
३३	३६	११	गु.	५०	३८	ज्ये	४६	३८	ऐं.	४०	३७	व.	२२	३७	२०	४	८	ध.	४६	३८	५	४९	७	१४	३	१७	४५	५८	म. २२।३७ उ. ५०।३८ या. पवित्रा ११ व्र.
३३	३३	१२	शु.	४७	४१	मू.	४५	३१	वै.	३५	३३	ब.	१९	९	२१	५	९	ध.			५	४९	७	१३	३	१८	४३	१३	मघा. सिंहे च बुधः ३८।१३ विष्णोः पवित्रार्पणम्
३३	३०	१३	श.	४५	५०	पू.षा.	४५	३३	वि.	३१	१८	कौ.	१६	४५	२२	६	१०	ध.			५	५०	७	१३	३	१९	४०	३१	प्रदोषव्रतम् [= (रक्खड़ी) भद्रोत्तरम्
३३	२७	१४	र.	४५	१३	उ.षा	४६	४७	प्री.	२८	३	ग.	१५	३१	२३	७	११	म.	०	५१	५	५१	७	१२	३	२०	३७	५०	म. ४५।१३ उ. पू. फा. १ शनिः २९।३१
३३	२३	१५	चं.	४५	५५	श्र.	४९	१९	आ.	२५	४६	वि.	१५	३४	२४	८	१२	म.			५	५१	७	१२	३	२१	३५	११	म. १५।३४ या. पश्चिमोदयं बुधः ४१।५४ रेव. ३ राहुः चि. १ केतुश्च+

[+ २६।४२ ऋषि तर्पणं यजुर्वेदिनां श्रावणीकर्म रक्षाबन्धनम् =

श्रावणशुक्ल ८ भौम इष्टम् ०।० दिनगणः ५२३३

	सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
	३	२	३	९	४	४	११	५
	१५	१३	२२	३	१४	१२	२७	२७
	५१	२४	५७	३३	३४	४०	०	०
	२९	५७	१८	२९	५१	५५	३१	३१
	५७	३९	१११	७	७३	६	३	३
	१२	५७	२४	२६	४३	५४	११	११
[illegible]		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
	पु.	आ.	श्ले.	उ.षा.	पू.फा.	म.	रे.	चि.
	४	३	२	२	१	४	४	२

श ५ शु — ३ मं — ६ के — बु ४ र — २ — ७ चं — १ — ८ — १० गु — १२ रा — ९ — ११

इस पक्षमें रूईम २०।३० टकाकी और चान्दा में २।३ की वढ़ा घटी होकर मन्दी होवे। खेतीमें कहीं-कहीं हानि हो। अनाजके भावमें तेजी होवे, तमाखू बारदाना कुछ मन्दा रहे। पक्षान्तमें व्यापारमें विशेष उथल पुथल मचे। ति० ४ से १२ तक तथा १५ को अच्छी वर्षा होगी कहीं नदियोंके तट टूटेंगे।

श० वि०—श्रावण शुक्ला पंचमी और छठ को जान। कुछ वर्षा पश्चिम पवन तो दुर्भिक्ष पिछान॥ श्रावण शुक्ला पंचमी बर्सत मेघ अपार। यह लक्षण है अति भले सुख पावे संसार॥ श्रावण शुक्ला पञ्चमी नागपञ्चमी होती है, यह परविद्धा ही ग्रहण करनी चाहिये अर्थात् षष्ठी युक्त का ही ग्रहण होता है इस दिन दर्वाजेके दोनों तरफ गोबरके सर्प बनाकर घी, दूध, जल, खिल्लां, धूप, दही और दूर्वासे पूजा करें और ब्राह्मण को पुष्पोपहारादिसे सन्तुष्ट करें ऐसा करनेसे सर्पभय नहीं रहता। श्रावणी और होली भद्रामें नहीं मनानी चाहिये, क्योंकि ऐसा करनेसे राजा का अनिष्ट और ग्राममें अग्निभय होता है।

श्रावणशुक्ल १५ चन्द्र इष्टम् ०।० दिनगणः ५२३९

बु शु ५ श — ३ मं — ६ के — र ४ — २ — ७ — १ — ८ — चं १० गु — १२ रा — ९ — ११

	सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
	३	२	४	९	४	४	११	५
	२१	१७	४	१	२१	१३	२६	२६
	३५	२३	२३	५१	४९	२३	४१	४१
	११	१६	२८	४	५१	३७	२५	२५
	५७	३९	११०	६	७२	७	३	३
	२१	२५	२८	२०	३९	७	११	११
[illegible]		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
	श्ले.	आ.	म.	उ.षा.	पू.फा.	पू.फा.	रे.	चि.
	२	४	२	२	३	१	४	२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ शकः १८७१ भाद्रकृष्णपक्षः १० (अगस्त सन् १९४९ ई०) दक्षिणायनमुत्तरगोलः वर्षर्तुः

दि·मा·		ति·	वा·	घ·	प·	न·	घ·	प·	यो·	घ·	प·	क·	घ·	प·	हि· मास	अं· अगस्त	मु· मुहर्रम	चन्द्र सञ्चारः			सू·उ· रेल्वे		सू·अ· रेल्वे		नित्य सूर्य स्पष्टः उदय-काले			
३३	१९	१	मं·	४७	५७	ध·	५३	५	सौ·	२४	३५	बा·	१६	५६	२५	९	१३	कुं·	२१	१२	५	५१	७	१०	३	२२	३२	३२
३३	१५	२	बु·	५१	३	श·	५७	५८	शो·	२४	१४	तै·	१९	३०	२६	१०	१४	कुं·			५	५२	७	९	३	२३	२९	५५
३३	१२	३	गु·	५५	१०	पू.भा	६०	०	अ·	२४	४६	व·	२३	६	२७	११	१५	मी·	४७	१६	५	५३	७	८	३	२४	२७	१९
३३	८	४	शु·	५९	५७	पू.भा	३	४२	सु·	२५	५३	ब·	२७	३३	२८	१२	१६	मी·			५	५४	७	७	३	२५	२४	४३
३३	५	५	श·	६०	०	उ.भा	१०	३	धृ·	२७	२७	कौ·	३२	३०	२९	१३	१७	मी·			५	५४	७	७	३	२६	२२	८
३३	१	५	र·	५	३	रे·	१६	३७	शू·	२९	२	तै·	५	३	३०	१४	१८	मे·	१६	३७	५	५५	७	६	३	२७	१९	३६
३२	५७	६	चं·	९	५९	अ·	२२	५९	गं·	३०	२६	व·	९	५९	३१	१५	१९	मे·			५	५५	७	५	३	२८	१७	७
३२	५४	७	मं·	१४	२३	भ·	२८	४४	वृ·	३१	२२	ब·	१४	२३	१	१६	२०	वृ·	४४	५७	५	५५	७	४	३	२९	१४	४०
३२	५०	८	बु·	१७	५७	कृ·	३३	३५	ध्रु·	३१	३२	कौ·	१७	५७	२	१७	२१	वृ·			५	५६	७	३	४	०	१२	१५
३२	४६	९	गु·	२०	२१	रो·	३७	२३	व्या·	३०	४६	ग·	२०	२१	३	१८	२२	वृ·			५	५७	७	२	४	१	९	५१
३२	४३	१०	शु·	२२	३५	मृ·	३९	५५	ह·	२९	१०	वि·	२१	३५	४	१९	२३	मि·	८	३९	५	५८	७	१	४	२	७	२८
३२	३९	११	श·	२१	३०	आ·	४१	८	व·	२६	२५	बा·	२१	३०	५	२०	२४	मि·			५	५८	७	०	४	३	५	६
३२	३५	१२	र·	२०	११	पुन.	४१	१०	सि·	२२	४०	तै·	२०	११	६	२१	२५	क·	२६	९	५	५८	६	५९	४	४	२	४५
३२	३२	१३	चं·	१७	३९	पु·	४०	३	व्य·	१७	५९	व·	१७	३९	७	२२	२६	क·			५	५९	६	५८	४	५	०	२८
३२	२८	१४	मं·	१४	४	श्ले·	३८	५	व·	१२	२८	श·	१४	४	८	२३	२७	सि·	३८	५	५	५९	६	५७	४	५	५८	१२
३२	२४	३०	बु·	९	३९	म·	३५	१६	प·	[illegible]	[illegible]	ना·	९	३९	९	२४	२८	सि·			५	५९	६	५६	४	६	५५	५७

पञ्चकारम्भः २१।१२ [* चन्द्रोदयः रेल्वे घं. १०।७

भ. २३।६ उ. ५५।१० या. पुन. भौमः ५८।८ कज्जली ३

उ. फा. यां शुक्रः १।२५ श्रीगणेश ४ व्र.

पू. फा. यां बुधः ०।१६ [÷ स्वतन्त्रोत्सवदिनम्

कन्या. शुक्रः ४७।२४ पञ्चकसमाप्तिः १६।३७ चन्दनषष्ठी व्र. *

भ. ९।५९ उ. ४४।११ या. अस्तं शनिः ३८।१८ भारत÷

मघा सं. सिंहेऽर्कः ४७।४ मु. ३० जन्माष्टमीव्र. स्मा. चन्द्रोदयः रेल्वे घं. ११।८

श्रीकृष्णजन्माष्टमी वैष्ण. चन्द्रोदयः रेल्वे घं. ११।४३

भ. ५०।५८ उ. गुग्गा ९

भ. २१।३५ या.

अजा ११ व्र. सर्वेषाम् [† शरदृतु प्रा.

उ. फा. यां बुधः २०।१७ गोवत्स १२

भ. १७।३९ उ. ४५।५१ या०

कन्या. बुधः ३४।४७ हस्तेः भृगुः ३।५० सा. कन्यायां भानुः १५।१ †

कुशोत्पाटिनी ३० "ॐ हुं फट्" इति मन्त्रेण

भाद्रकृष्ण ८ बुधइष्टम् ०।० दिनगणः ५२४८

सू·	मं·	बु·	गु·	शु·	श·	रा·	के·
४	२	४	९	५	४	११	५
०	२३	१९	०	२	१४	२६	२६
१२	१७	५४	५४	३९	३०	१२	१२
१५	२७	०	१८	२५	१८	४७	४७
५७	३९	१७	५	७२	८	३	३
३५	३	३७	३५	१४	१७	११	११
सौम्य	मा·	मा·	व·	मा·	मा·	व·	व·
	उ·	उ·	उ·	उ·	अ·	अ·	अ·
म· १	पुन· १	पू.फा· २	उ.फा· २	उ.फा· २	पू.फा· १	रे· ३	चि· १

के ६ शु ४

७ बु र ५ श ३ मं

८ २ चं

९ ११ १

१० गु १२ रा

इसपक्षमें रूई और शेयर मन्दे, ति० ४ से तेज़ी रहे, चान्दीमें तेज़ी, अलसीमें घटा बढ़ी, चावल गेहूँ घी, तेल बिनौला सरसों लालमिर्च गुड़ खण्ड तेज़ रहे। सिंह संक्रांतिका पुण्यकाल ८ बुधवारको १ पहर दिन चढ़े तक है। ति० १।२।३।६।७।९।१० को वर्षा बिजलीकी चमक वायुका जोर रहेगा।

श० वि०—भादोकारी तीजमें उत्तर दिशा प्रदोष। बादल लखसुख मानिये मिटे मिटाया दोष। संग्रह करलो अन्नका रुका रहे षट मास। लाभ होय उस मालमें कर लेना विश्वास॥ भादवकी दोयज दिना जो ना दीखे चन्द। धान्यसमृद्धि पशु बढ़ें प्रजामें हो आनन्द॥ ति. १४ को वर्षा हो तो प्रजामें रोगभय हो।

भाद्रकृष्ण ३० बुधइष्टम् ०।० दिनगणः ५२५५

के ६ बु शु ४

७ श ५ चं र ३ मं

८ २

९ ११ १

१० गु १२ रा

सू·	मं·	बु·	गु·	शु·	श·	रा·	के·
४	२	५	९	५	४	११	५
६	२७	०	०	११	१५	२५	२५
५५	४९	३६	१७	३	२२	५०	५०
५७	२६	४३	२०	३२	३०	३०	३०
५७	३८	८७	५	७२	७	३	३
४५	४२	२१	१०	०	४४	११	११
सौम्य	मा·	मा·	व·	मा·	मा·	व·	व·
	उ·	उ·	उ·	उ·	अ·	अ·	अ·
म· ३	पुन· ३	उ.फा· २	उ.फा· २	ह· १	पू.फा· १	रे· ३	चि· १

भाद्रपदमें दही छोड़ना चाहिये। इस अष्टमीको कृष्णकी पूजा और व्रत करनेसे सभी पाप दूर हो जाते हैं। व्रत न रखनेसे दोष लगता है। लिखा भी है कि यदि कोई भी स्त्री या पुरुष कृष्णाष्टमीका व्रत न करे तो वह जंगलमें व्याध (हिंसक जन्तु) होता है। आधी रातके समय अष्टमी रोहिणीसे युक्त जब हो वही मुख्यकाल माना गया है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ शकः १८७१ भाद्रशुक्लपक्षः ११

(अगस्त-सितम्बर सन् १९४९ ई०) दक्षिणायनम् उत्तरगोलः शरदृतुः

दि·मा·		ति·	वा·	घ·	प·	न·	घ·	प·	यो·	घ·	प·	क·	घ·	प·	हि. भाद्र	अं. सितंब.	मु. जिल्का	चन्द्र सञ्चारः			सू· उ· रेल्वे		सू· अ· रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदय-काले			
३२	१९	१	शु·	४	३२	पू.फा	३१	४८	सि·	५२	७	ब·	४	३२	१०	२५	२९	कं·	४५	४९	६	०	६	५५	४	७	५३	४४
अवम्		२	शु·	५४	१९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३२	१५	३	शु·	५२	५०	उ.फा	२७	५४	सा·	४४	३४	तै·	२५	५१	११	२६	१	कं·			६	१	६	५४	४	८	५१	३४
३२	१०	४	श·	४६	३९	ह·	२३	४८	शु·	३६	४९	व·	१९	४४	१२	२७	२	तु·	५१	४३	६	१	६	५३	४	९	४९	२६
३२	५	५	र·	४०	४२	चि·	१९	३८	शु·	२९	९	ब·	१३	४०	१३	२८	३	तु·			६	२	६	५२	४	१०	४७	१०
३२	०	६	चं·	३४	४२	स्वा	१५	३८	ब्र·	२१	३७	कौ·	७	४२	१४	२९	४	वृ·	५७	५६	६	३	६	५०	४	११	४५	१५
३१	५५	७	मं·	२९	१८	वि·	१२	३	ऐं·	१४	२५	ग·	२	०	१५	३०	५	वृ·			६	४	६	४९	४	१२	४३	१३
३१	५०	८	बु·	२४	३१	अनु.	९	१	वै·	७	४१	व·	२४	३१	१६	३१	६	वृ·			६	४	६	४७	४	१३	४१	१२
३१	४६	९	गु·	२०	३५	ज्ये·	६	५२	वि·	५६	३१/१८	कौ·	२०	३५	१७	१	७	ध·	६	५२	६	५	६	४६	४	१४	३९	१२
३१	४१	१०	शु·	१७	३६	मू·	५	३०	आ·	५१	४९	बा·	१७	३६	१८	२	८	ध·			६	६	६	४५	४	१५	३७	१४
३१	३६	११	श·	१५	४५	पू.षा.	५	१४	सौ·	४८	१६	वि·	१५	४५	१९	३	९	म·	२०	२८	६	६	६	४४	४	१६	३५	११
३१	३१	१२	र·	१५	५	उ.षा	६	१०	शो·	४५	४४	बा·	१५	५	२०	४	१०	म·			६	७	६	४३	४	१७	३३	२६
३१	२६	१३	चं·	१५	४५	श्र·	८	२२	अ·	४४	१६	तै·	१५	४५	२१	५	११	कुं·	४०	७	६	८	६	४२	४	१८	३१	३३
३१	२२	१४	मं·	१७	४५	ध·	११	५२	सु·	४३	३७	व·	१७	४५	२२	६	१२	कुं·			६	८	६	४०	४	१९	२९	४३
३१	१७	१५	बु·	२०	५१	श·	१६	२७	धृ·	४३	५६	ब·	२०	५१	२३	७	१३	कुं·			६	८	६	३९	४	२०	२७	५६

चन्द्रदर्शनम् मेला श्री बाबा गुसाईंयाणा

जिल्काद मु. ११ हरितालिका व्र.
म. १९।४४ उ. ४६।३९ या. कर्के भौमः २३।७ पत्थर (कलङ्क ४)*
वक्रग. उ. षा. यां. १ धनुषि च गुरुः २।४१ ऋषि ५
[* चन्द्रास्तः रेल्वे घं. ८।४५
म. २९।१८ उ. ५६।५४ या.पू.फा.यां रविः ३८।३ हस्ते बुधः५६।४५
श्रीदधीचि जयन्ती दुर्वा ८ [+ सम्प्रदाय का महोत्सव)
पुष्ये भौमः ३६।४७ सितंबर ९ ता. ३० श्रीचन्द्र ९ (उदासीन+
म. ४६।४७ उ. [= १३।३६ अगस्त्योदयः ४८।५८ पद्मा११व्र.स.
म. १५।४५ या. चित्रायां शुक्रः १६।१६ पू. फा. यां २ शनिः =
प्रदोषव्र. श्री वामन १२ मेला अंबाला व पटियाला ।
पञ्चकारम्भः ४०।७
म. १७।४५ उ. ४५।१८ या श्री अनन्त १४ व्र.
प्रौष्ठपदी श्राद्धम्

भाद्रपदशुक्ल ८ बुध इष्टम् ०।० दिनगणः ५२६२

सू·	मं·	बु·	गु·	शु·	श·	रा·	के·
४	३	५	८	५	४	११	५
१३	२	१०	२९	१९	१६	२५	२५
४१	१८	४	४८	२५	१४	२८	२८
१२	४३	५	२५	५५	४९	१५	१५
५७	४७	७५	३	७१	७	३	३
५९	५५	१८	४०	३८	३०	११	११
सौरिणः	मा·	मा·	व·	मा·	मा·	व·	व·
	उ·	उ·	उ·	उ·	अ·	अ·	अ·
पू.फा. १	पु· ४	ह· १	उ.षा. १	ह· ३	पू.फा. १	रे· ३	चि· ३

बु ६ शु के | ४
७ | श ५ र | ३
८ चं | २
९ गु | ११ | १
१० | १२

इस पक्ष में रुई पहिले मन्दी होकर बाद में तेज रहे। गुड़ खण्डमें मन्दी हो, रेशमी वस्त्र घी तेलमें तेजी। चान्दीमें खासी घटा बढ़ी हो। यहाँ वक्रगतिसे धनुराशिमें गुरु फिर आ रहे हैं गेहूँ चना गुड़ मन्दा हो अनाजकी उत्पत्ति अच्छी होगी। भैंस पशु मँहगे होंगे। ति. ११ में चान्दी सोनेमें भारी घटा बढ़ी होगी सावधानी से व्यापार करें। ति. ३।४।५।६ और ९ से १४ तक खण्ड वृष्टि के योग हैं।

श०वि०—भाद्रों मासमें जानिये विशाखा चित्रा स्वात। ये नक्षत्र वर्षें नहीं वर्षा का अपघात॥ भादों सुदी जो पूर्णिमा बादल बिजली गाज। बादल चन्दा ऊगसी जल्दी बेचो नाज॥ जो चन्दा निर्मल उगे घन ना बिजली होय। गेहूँ जौ संचय करो लाभ सवाया होय॥

भाद्रपदशुक्ल ३० बुध इष्टम् ०।० दिनगणः ५२६९

शु ६ बु के | ४ मं
७ | श ५ र | ३
८ | २
गु ९ | ११ चं | १
१० | १२ रा

सू·	मं·	बु·	गु·	शु·	श·	रा·	के·
४	३	५	८	५	४	११	५
२०	६	१७	२९	२७	१७	२५	२५
२७	४४	५८	२८	४६	९	६	६
५६	३८	१९	५	२३	११	५९	५९
५८	३७	६०	२	७१	७	३	३
१३	४४	४७	२७	२४	४१	११	११
सौरिणः	मा·	मा·	व·	मा·	मा·	व·	घ·
	उ·	उ·	उ·	उ·	अ·	अ·	अ·
पू.फा. ३	पु· २	ह· ३	उ.षा. १	चि· २	पू.फा. २	रे· ३	चि· १

भाद्रपद शुक्ला ४ को चन्द्रदर्शन करनेसे झूठा कलंक लगता है। अतः इस दिन चन्द्रदर्शन न करे और यदि भूल-चूकसे हो जाये तो "ॐसिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः। सुकुमारकमारोदीस्तव ह्येष स्यमन्तकः॥" इस मन्त्र को पूर्व अथवा उत्तर की तरफ मुँह क.के जपनेसे दोष का परिहार हो जाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ शकः १८७१ आश्विनकृष्णपक्षः १२ (सितम्बर सन् १९४९ ई०) दक्षिणायनमुत्तरगोलः शरदृतुः

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि. क्रान्ति.	अं. सितंब.	मु. जिलहिजा	चन्द्र सञ्चारः			सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्य सूर्य स्पष्टः उदय-काले				
३१	१२	१	शु.	२४	५९	पू.भा	२२	२	शू.	४४	५४	कौ.	२४	५९	२४	८	१४	मी.	५	३८	६	९	६	३८	४	२१	२६	११	तुलायां शुक्रः ५२।४६ पितृपक्ष—महालयारम्भः
३१	७	२	शु.	२९	४९	उ.भा	२८	१३	ग.	४६	१८	ग.	२९	४९	२५	९	१५	मी.			६	९	६	३६	४	२२	२४	२६	
३१	२	३	श.	३४	५९	रे.	३४	४६	वृ.	४७	५३	व.	२	२४	२६	१०	१६	मे.	३४	४६	६	१०	६	३५	४	२३	२२	४४	म. २।२४ उ. ३४।५९ या. पञ्चकसमाप्तिः ३४।४६
३०	५८	४	र.	४०	०	अ.	४१	१४	ध्रु.	४९	१६	ब.	७	३०	२७	११	१७	मे.			६	११	६	३४	४	२४	२१	४	श्रीगणेश ४ व्र.
३०	५३	५	चं.	४४	३१	भ.	४७	७	व्या.	५०	१६	कौ.	१२	१५	२८	१२	१८	मे.			६	११	६	३२	४	२५	१९	२७	
३०	४९	६	मं.	४८	१३	कृ.	५२	१३	ह.	५०	३४	ग.	१६	२२	२९	१३	१९	वृ.	३	२३	६	१२	६	३१	४	२६	१७	५४	म. ४८।१३ उ. उ.फा.यां रविः २३।२२ चि. बुधः २३।२३
३०	४३	७	बु.	५०	४३	रो.	५६	१४	व.	४९	५३	वि.	१९	२८	३०	१४	२०	वृ.			६	१३	६	३०	४	२७	१६	२५	म. १९।२८ या. स्वात्यां शुक्रः ३१।३
३०	३८	८	गु.	५२	६	मृ.	५९	३	सि.	४८	२१	बा.	२१	२४	३१	१५	२१	मि.	२७	३८	६	१३	६	२८	४	२८	१४	५७	बघाट महीमहेन्दुधर्ममार्तण्ड राजर्षि श्री १०५ राजासाहिब सोलन*
३०	३३	९	शु.	५२	८	आ.	६०	०	व्य.	४५	४७	तै.	२२	७	१	१६	२२	मि.			६	१४	६	२७	४	२९	१३	२९	सं. कन्यायामर्कः ४७।४२ मु. १५ पुण्यं परदिने १ यामया. ‡
३०	२९	१०	श.	५०	५६	आ.	०	३८	व.	४[illegible]	१३	व.	२१	३२	२	१७	२३	क.	४५	५३	६	१४	६	२६	५	०	१२	२	म. २१।३२ उ. ५०।५६ या. [* जन्मोत्सव
३०	२४	११	र.	४८	३०	पुन.	०	५८	प.	३७	४१	ब.	१९	४३	३	१८	२४	क.			६	१४	६	२४	५	१	१०	३७	मार्गीगुरुः ३८।१२ इन्दिरा ११ व्र.
३०	१९	१२	चं.	४५	२	पु.	५८	५	शि.	३२	१८	कौ.	१६	४६	४	१९	२५	सिं.	५८	१६	६	१४	६	२३	५	२	९	१५	निम्बार्काणां ११ व्र. [‡ सौभाग्यवतीनां श्राद्धम्
३०	१४	१३	मं.	४१	४२	म.	५५	३७	सि.	२६	१३	ग.	१३	२२	५	२०	२६	सिं.			६	१५	६	२२	५	३	७	५६	म. ४१।४२ उ. उदयः शनिः १२।५३ प्रदोषव्र.
३०	९	१४	बु.	३५	१७	पू.फा	५२	१५	सा.	१९	२९	वि.	८	२९	६	२१	२७	सिं.			६	१६	६	२०	५	४	६	४०	म. ८।४० या वक्री बुधः ३३।४१ शस्त्राग्नि विषादिहतानां श्राद्धम्
३०	४	३०	गु.	३०	३	उ.फा	४८	२७	शु.	१२	१३	च.	२	५०	७	२२	२८	कं.	६	१८	६	१७	६	१९	५	५	५	२६	आश्लेषायां भौमः ५८।३५ अज्ञात मृत तिथीनां श्राद्धम् सर्वपितृणाञ्च

आश्विनकृष्ण ८ गुरा।वष्टम् ०।० दिनगणः ५२७७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	३	५	८	६	४	११	५
२८	११	२४	२९	७	१८	२४	२४
१४	४४	१९	१५	१५	८	४०	४०
५७	५६	४४	३२	१४	५६	३३	३३
५८	३७	३४	०	७१	७	३	३
३२	३७	३८	४७	२०	२६	११	११
सौम्य.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
उ.फा १	पुष्य. ३	चि. १	उ.षा. १	स्वा १	पू.फा. २	रे. ३	चि. १

के ६ बु — ४ म — ७ शु — श ५ र — ३ — ८ — २ चं — ९ गु — ११ — १ — १० — १२ रा

इस पक्षमें प्रायः अधिकारी, राजा लोग अधर्ममें प्रवृत्त रहें। रूई अफीममें तेज़ी हो चान्दीमें २।३ टकाकी घटाबढ़ी होकर तेजी। सोनामें १ टकाकी तेजी रहे, तांबा लोहा कुछ तेज़ कहीं ओले भी पड़ेंगे। ति. १२ से १४ तक रूईमें मन्दी होकर फिर तेज़ी चलेगी। ति. २ से ६ तक और ९ से १३ तक कहीं २ खण्ड वृष्टिके योग हैं।

शकुन विचार—आसोज बदी जो चौथको होय वार रविवार। घृत बेचो गल्ला लेवो इसमें लाभ विचार। दशमी और एकादशी और द्वादशी जान। घन गर्जे बिजली खीवै गेहूँ तेज पिछान ॥

आश्विनमें दूध वर्जित है। श्राद्ध समय निर्णय—एकोद्दिष्ट श्राद्ध मध्यान्हमें, वृद्धिनिमित्तक प्रातःकाल में दैविक पूर्वाण्हमें, और पार्वणश्राद्ध अपराण्हमें करना चाहिये। दिनमानके पांच भाग करने पर पहिले भागको प्रातः, द्वितीय को संगव, तीसरेको मध्यान्ह, चौथेको अपराण्ह और पाँचवें को सायान्ह कहते हैं। जो व्यक्ति विधिपूर्वक श्राद्ध करता है, वह परलोकमें बड़ी भारी तृप्ति शुभ लोकों और [illegible] प्राप्त करता है।

आश्विनकृष्ण ३० गुराविष्टम् ०।० दिनगणः ५२८४

७ शु — ५ श — ८ — बु चं ६ के र — ४ मं — ९ गु — ३ — १० — १२ रा — २ — ११ — १

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	३	५	८	६	४	११	५
५	१६	२६	२९	१५	१९	२४	२४
५	४	८	१५	२०	१	१८	१८
२६	२६	२४	५०	५४	१२	१७	१७
५८	३६	१	०	७०	७	३	३
४६	५७	२६	३६	३७	१९	११	११
सौम्य.	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
उ.फा ३	पुष्य ४	चि. १	उ.षा. १	स्वा ३	पू.फा. २	रे. ३	चि. १

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

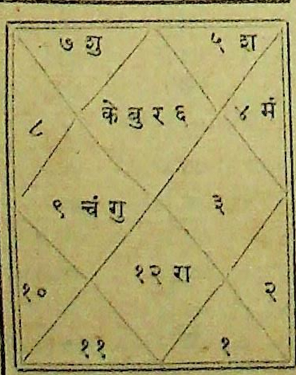
पांचवें को सायान्ह कहते हैं । जो व्यक्ति विधिपूर्वक श्राद्ध करता है ... तीसरेको मध्यान्ह, चौथेको अपराण्ह और
Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ शकः १८७१ आश्विनशुक्लपक्षः १३ (सितम्बर अक्टूबर सन् १९४९ ई०) दक्षिणायनगोलौ शरदृतुः

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि. आश्वि.	अं. अक्टू.	मु. जिल्हिज	चन्द्र सञ्चारः	घ.	प.	सू. उ. रेल्वे घ.	प.	सू. अ. रेल्वे घ.	प.	नित्य सूर्य स्पष्टः उदय-काले रा.	अं.	क.	वि.	
३०	०	१	शु.	२४	६	ह.	४४	२१	शु.	४ ५६	३१ ५७	ब.	२४	६	८	२३	२९	कं.			६	१८	६	१८	५	६	४	१५	सा. तुलायां भानुः ८।२९ दक्षिणगोलः मातामहश्राद्धम् शारद* ५
२९	५५	२	श.	१८	०	चि.	४०	९	ऐं.	४९	८	कौ.	१८	०	९	२४	३०	तु.	१३	१५	६	१८	६	१६	५	७	३	५	चन्द्रदर्शनम् [* नवरात्रारम्भः घटस्था.
२९	५०	३	र.	११	५८	स्वा.	३६	७	वै.	४१	३०	ग.	११	५८	१०	२५	१	तु.			६	१९	६	१५	५	८	१	५७	म. ३९।१४ उ. विशाखायां भृगुः ४९।१४ जिल्हेज मु. १२
२९	४६	४	चं.	६	११	वि.	३२	२५	वि.	३४	७	वि.	६	११	११	२६	२	वृ.	१८	२०	६	२०	६	१३	५	९	०	५१	भ. ६।११ या. [+ सरस्वत्यावाहनं धर्मसिन्धुवचनात्
२९	४२	५	मं.	०	४९	अ.	२९	१३	प्री.	२७	१३	बा.	०	४९	१२	२७	३	वृ.			६	२१	६	१२	५	९	५९	४८	हस्तेऽर्कः ०।१५ पश्चिमास्तो बुधः २३।२२ मेला माई सरखाना
अवम्		६	मं.	५५	१६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
२९	३७	७	बु.	५२	१२	ज्ये.	२६	५२	आ.	२१	१	ग.	२४	८	१३	२८	४	ध.	२६	५२	६	२१	६	११	५	१०	५८	४८	भ. ५२।१२ उ. हस्ते वक्री बुधः १।१५
२९	३२	८	गु.	४९	१७	मू.	२५	१७	सौ.	१५	१७	वि.	२०	४४	१४	२९	५	ध.			६	२२	६	१०	५	११	५७	५०	भ. २०।४४ या. श्रीदुर्गा ८ मेला श्री ज्वालामुखी व तारादेवी +
२९	२८	९	शु.	४७	२९	पू.षा	२४	४६	शो.	१३	१०	बा.	१८	२३	१५	३०	६	म.	३९	५६	६	२३	६	९	५	१२	५६	५३	पू. फा. यां ३ शनिः ६।४८ श्री सरस्वत्या पूजनम् महा ९
२९	२३	१०	श.	४६	५२	उ.षा	२५	२५	अ.	६	३८	तै.	१७	१०	१६	१	७	म.			६	२३	६	८	५	१३	५५	५७	अक्टूबर १० ता. ३१ विजया १० मेला दशहरा बौद्धजयन्ती†
२९	१९	११	र.	४७	३५	श्र.	२७	२०	सु.	३	४५	व.	१७	१३	१७	२	८	कुं.	५८	५६	६	२४	६	६	५	१४	५५	४	भ. १७।१३ उ. ४७।३५ या. पापाङ्कुशा ११ व्र. पञ्चकारम्भः ५८।५६
२९	१५	१२	चं.	४९	३८	ध.	३०	३३	धृ.	२	५४	ब.	१८	३६	१८	३	९	कुं.			६	२४	६	५	५	१५	५४	१४	निंबार्काणां ११ व्र. [† सरस्वतीविसर्जनम् २५।२५ उप.
२९	१०	१३	मं.	५१	४६	श.	३४	५०	शू.	१	०	कौ.	२१	१२	१९	४	१०	कुं.			६	२४	६	४	५	१६	५४	२७	वृश्चिके शुक्रः २४।२ भौमप्रदोष व्र.
२९	५	१४	बु.	५६	५७	पू.भा	४०	१३	गं.	१	१	ग.	२४	५१	२०	५	११	मी.	२३	५३	६	२५	६	३	५	१७	५२	४२	भ. ५६।५७ उ. [‡ १६।२० कार्ति. स्ना. प्रा. चन्द्रग्रहणम्
२९	१	१५	गु.	६०	०	उ.भा	४६	१६	वृ.	१	४४	वि.	२९	२४	२१	६	१२	मी.			६	२७	६	१	५	१८	५२	०	भ. २९।२४ या. कोजागरी व्र. शरत् १५
२८	५७	१	शु.	१	५२	रे.	५२	४९	ध्रु.	२	५८	ब.	१	५२	२२	७	१३	मे.	५२	४९	६	२७	६	०	५	१९	५१	२१	आकाशदीपदानं पञ्चकसमाप्तिः ५२।४९ अनुराधायां भृगुः ‡

आश्विनशुक्ल ८ गुराविष्टम् ०।० दिनगणः ५२९१

	सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
	५	३	५	८	६	४	११	५
	११	२०	२२	२९	२३	१९	२३	२३
	५७	२०	२७	२५	२४	५२	५६	५६
	५०	१३	५०	२३	१२	१६	०	०
	५९	३६	५३	१	७०	७	३	३
	२	१८	१७	४१	१६	३८	११	११
क्रान्ति		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
	ह. १	श्ले. २	ह. ४	उ.षा. १	चि. २	पू.फा. २	रे. ३	चि. १



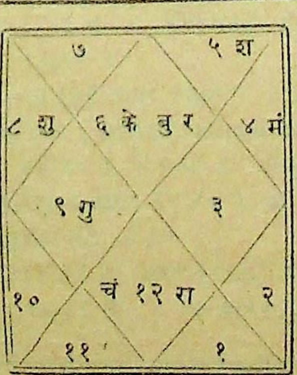
इस पक्षमें प्रजा युद्ध वा रोगादिसे पीडित रहेगी, गुड़ खण्ड अलसी तेज मूंगफली सोना चान्दी घी तेल मंदा। रुईमें १५टका मन्दा हो। गेहूँ जौ बाजरा मूंगी मोठ तेज़ ति. ७ से चान्दी तेज़ रेशमी वस्त्र और शेयर मन्दे।

ति. ५ व ७ से १० तक वर्षा का योग है। और १५ को कहीं २ बून्दा बान्दी होगी।

शा० वि०—साते आठे क्वार सुदी जो वर्षा हो जाय। राज प्रजा दोनों सुखी सब संशय मिट जाय ॥१॥ आसोज मासमें जानिए बादल पर्वतकार। वर्षा उसी दिन होयगी ऐसा योग विचार ॥ २ ॥

आश्विन शुक्ला १ को वैधृति और चित्राके प्रथम पादको छोड़कर कुम्भ स्थापन करे। कन्या पूजन विधि—प्रत्येक दिन एक २ कन्याकी पूजा करे, अथवा ९।९ की, या प्रति दिन एक २ बढ़ावे, अथवा द्विगुण या त्रिगुणित बढ़ाता जावे। नित्य नौ कन्याओंकी पूजा करनेसे भूमि और द्विगुणित करनेसे ऐश्वर्यकी प्राप्ति होती है। एक वर्षकी कन्याका पूजन न करे। और भी विशेष नियम है कि सर्व कार्योंकी सिद्धिके लिये ब्राह्मणी, युद्धके लिये क्षत्रिया, धनके लिये वैश्य। सुखके लिये शूद्रा और दारुणकार्य सिद्धिके लिये अत्यज कन्याकी विधिपूर्वक पूजा करे।

आश्विनशुक्ल १५ शुक्रइष्टम् ०।० दिनगणः ५२९९



	सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
	५	३	५	८	७	४	११	५
	१९	२५	१३	२९	३	२०	२३	२३
	५१	८	५५	४७	१	४८	३०	३०
	२१	५३	२६	४५	८	५०	३३	३३
	५९	३५	५५	३	६९	७	३	३
	२१	२८	४८	१८	३६	४	११	११
क्रान्ति		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
	ह. ३	श्ले. ३	ह. २	उ.षा. १	चि. ४	पू.फा. ३	रे. ३	चि. २

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ शकः १८७१ कार्तिककृष्णपक्षः १४ — (अक्टूबर सन् १९४९ ई०) दक्षिणायनगोलौ शरदृतुः

दि·	मा·	ति·	वा·	घ·	प·	न·	घ·	प·	यो·	घ·	प·	क·	घ·	प·	हिं. आंग्ल.	अ·	मु·	चन्द्र सञ्चारः			सू·उ· रेल्वे		सू·अ· रेल्वे		नित्य सूर्यस्पष्टः उदय-काले			
२८	५२	१	श·	७	६	अ·	५९	१९	व्या·	४	२८	कौ·	७	६	२३	८	१४	मे·			६	२७	६	०	५	२०	५०	४३
२८	४७	२	र·	१२	१५	भ·	६०	०	ह·	५	५३	ग·	१२	१५	२४	९	१५	मे·			६	२८	५	५८	५	२१	५०	७
२८	४२	३	चं·	१६	५१	भ·	५	२६	व·	६	५०	वि·	१३	५१	२५	१०	१६	वृ·	२१	४६	६	२९	५	५७	५	२२	४९	३३
२८	३७	४	मं·	२०	३९	कृ·	१०	४७	सि·	७	१५	बा·	२०	३९	२६	११	१७	वृ·			६	२९	५	५७	५	२३	४९	२
२८	३२	५	बु·	२३	१६	रो·	१५	३	व्य·	६	४९	तै·	२३	१६	२७	१२	१८	मि·	४६	३८	६	२९	५	५६	५	२४	४८	३२
२८	२८	६	गु·	२४	४०	मृ·	१८	१२	व·	५	२८	व·	२४	४०	२८	१३	१९	मि·			६	३०	५	५५	५	२५	४८	४
२८	२३	७	शु·	२४	५२	आ·	२०	४	प·	३ / ५९	६ / ४५	व·	२४	५२	२९	१४	२०	मि·			६	३०	५	५३	५	२६	४७	४०
२८	१९	८	श·	२३	४६	पुन	२०	४२	सि·	५५	२५	कौ·	२३	४६	३०	१५	२१	क·	५	३२	६	३२	५	५२	५	२७	४७	१८
२८	१४	९	र·	२१	२६	पु·	२०	८	सा·	५०	१३	ग·	२१	२६	३१	१६	२२	क·			६	३३	५	५०	५	२८	४६	५८
२८	९	१०	चं·	१८	३	श्ले·	१८	३२	शु·	४४	१५	वि·	१८	३	१	१७	२३	सिं·	१८	३२	६	३३	५	४८	५	२९	४६	३९
२८	५	११	मं·	१३	४८	म·	१६	६	शु·	३७	३६	बा·	१३	४८	२	१८	२४	सिं·			६	३४	५	४७	६	०	४६	२२
२८	०	१२	बु·	८	४८	पूफा.	१२	५६	ब्र·	३०	२५	तै·	८	४८	३	१९	२५	कं·	२७	१	६	३५	५	४६	६	१	४६	९
२७	५५	१३	गु·	३	१६	उ.फा	९	१५	ऐं·	२२	५२	व·	३	१६	४	२०	२६	कं·			६	३६	५	४५	६	२	४५	५८
अवम्		१४	गु·	५३	५२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२७	५०	३०	शु·	५१	२१	ह·	५	११	वै·	१५	७	च·	२४	१५	५	२१	२७	तु·	३३	४	६	३७	५	४४	६	३	४५	४९

म. ४४।३३ उ. + ७।४३ चित्रायामर्कः ३१।४ रे० २ राहुः()
म. १६।५१ या. करक (करवा) ४ व्र. चन्द्रोदय रात्रौ रेल्वे घं. +
पूर्वोदयो बुधः ५।३७
() हस्ते ४ केतुश्च १८।५० उ. षा. यां २ मकरे च गुरुः १५।१४
म. २४।४० उ. ५४।४६ या. मार्गीबुधः २५।५२
अहोई ८ (सायंकाल व्यापिनी ग्राह्य है)
मघायां सिंहे भौमः १४।४७
म. ४९।४४ उ.
म. १८।३ या. सं. तुलायामर्कः १३।३१ मु. १५ पुण्यं १३।३१या.
ज्येष्ठायां भृगुः ५२।६ रमा ११ व्र. सर्वेषाम् गोवत्सपूजनम्
प्रदोष व्र. धन १३ यमाय दीपदानं
म. ३।१६ उ. ३१।३४ या. श्रीहनुमज्जन्मदिनम् नरकहरा १४ *
*रूप १४ गुरौ समस्त दिन रात्रि गते भृगौसूर्योदयात्प्रागेव चन्द्रो.स्ना.
श्रीमहालक्ष्मी पूजनं दीपमाला शेषरात्रौ दारिद्र्य निस्सारणम्

कार्तिककृष्ण ८ शनाविष्टम् ०।० दिनगणः ५३०७

सू·	मं·	बु·	गु·	शु·	श·	रा·	के·
५	३	५	९	७	४	११	५
२७	२९	११	०	१२	२१	२३	२३
४७	५१	१८	२१	१४	४२	५	५
१८	२२	५४	१८	५६	३२	७	७
५९	३५	१५	४	६९	६	३	३
३८	१०	२२	५२	१४	५३	११	११
[illegible]	मा·	मा·	मा·	मा·	मा·	व·	व·
	उ·	उ·	उ·	उ·	उ·	अ·	अ·
चि· २	श्ले· ४	ह· १	उ.फा. २	अनु. ३	पू.फा. ३	रे· २	ह· ४

७ | ५ श
८ शु | के ६ बु र | ४ मं
९ | ३ चं
१० गु | १२ रा | २
११ | १

इस पक्षम कई जगह अग्निभय हो। अनाजके भावमें तेजी होकर पक्षान्तमें मन्दा होवे। ति ५ से रूईमें विशेष घटा बढ़ी हो। सुवर्णमें और लाल वस्तुओंमें प्रायः तेजी आवे। चान्दीमें घटा बढ़ी होकर तेजी होवे। गौ भैंसके भावमें तेजी हो। मोती घी तेल कुछ मन्दा होगा। तुलासंक्रांति भद्रामें लगी है अतः ब्रह्मणादि उत्तम जातिवालोंको कष्ट, प्रजामें दैवी उपद्रव हो, गरीवों को अन्न संकट रहे।

ति. ३।४।७।८।९।११ को आकाशमें कहीं २ बादल चाल मेघ गर्जन होगा।

शकुन विचार—कातिक वदी दोयज दिना और तीजको जान। इस दिन वर्षा होय तो आगे वर्षा मान॥ कार्तिक वदी एकादशी वर्षा बादल होय। आषाढ़-मास वर्षा अधिक संशय करो न कोय॥ कार्तिक मास में दाल छोड़ देनी चाहिये, जो मनुष्य कार्तिक मास में प्रातः स्नान करता है, जितेन्द्रिय रहता है, जप करता है, हविष्य भक्षण करता है तथा शान्त रहता है वह सब पापों से छूट जाता है। स्नान संकल्प—"मम वाङ्मनः कायजाशेषपाप-क्षयद्वारा श्रीराधादामोदरप्रीत्यर्थम् अमुकतीर्थे कार्तिकस्नानमहं करिष्ये।"

कार्तिककृष्ण ३० शुक्रइष्टम् ०।० दिनगणः ५३१३

८ शु | चं के बु ६
९ | ७ र | ५ श मं
१० गु | ४
११ | १ | ३
१२ रा | २

सू·	मं·	बु·	गु·	शु·	श·	रा·	के·
६	४	५	९	७	४	११	५
३	३	१६	०	१९	२२	२२	२२
४५	१९	२	५३	५	२१	४६	४६
४९	४१	२०	४२	१०	१४	२	२
५९	३४	६८	५	६८	६	३	३
५१	३४	६	५६	७	१०	११	११
[illegible]	मा·	मा·	मा·	मा·	मा·	व·	व·
	उ·	उ·	उ·	उ·	उ·	अ·	अ·
चि· ४	म· १	ह· २	उ.फा. २	ज्ये १	पू.फा. ३	रे· २	ह· ४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

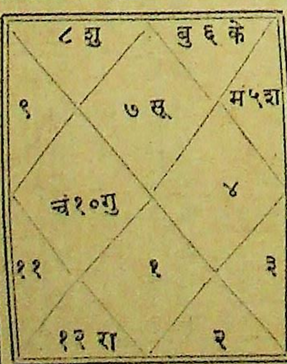
संवत् २००६ शकः १८७१ कार्तिकशुक्लपक्षः १५ (अक्टूबर-नवम्बर सन् १९४९ ई०) दक्षिणायन गोलौ शरदृतुः सा. वृश्चिकार्काद् हेमन्तर्तुः

दि.मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि. कार्तिक	अं. नवंबर	मु. मुहर्रम	चन्द्र सञ्चारः			सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्य सूर्यस्पष्टः उदय-काले			
२७	४५	१	श.	४५	२४	चि.	० ५६	५७ ५३	वि.	७० ५१	१३ २८	कि	१८	२१	६	२२	२८	तु.			६	३७	५	४३	६	४	४५	४२
२७	४१	२	र.	३९	४२	वि.	५३	४	आ.	५१	५७	बा.	१२	३३	७	२३	२९	वृ.	३९	१	६	३७	५	४१	६	५	४५	३७
२७	३६	३	चं.	३४	२५	अनु.	४९	४६	सौ.	४४	४९	तै.	७	४	८	२४	१	वृ.			६	३८	५	४१	६	६	४५	३४
२७	३२	४	मं.	२९	४७	ज्ये.	४७	५	शो.	३८	१५	व.	२	६	९	२५	२	ध.	४७	५	६	३९	५	४०	६	७	४५	३५
२७	२८	५	बु.	२५	५९	मू.	४५	१७	अ.	३२	२१	बा.	२५	५९	१०	२६	३	ध.			६	४०	५	३९	६	८	४५	३७
२७	२४	६	गु.	२३	८	पू.षा	४४	३०	सु.	२७	१६	तै.	२३	८	११	२७	४	म.	५९	३६	६	४०	५	३८	६	९	४५	४०
२७	२१	७	शु.	२१	२७	उ.षा	४४	५३	धृ.	२३	२	व.	२१	२७	१२	२८	५	म.			६	४१	५	३७	६	१०	४५	४६
२७	१७	८	श.	२०	५६	श्र.	४६	२९	शू.	१९	४७	व.	२०	५६	१३	२९	६	म.			६	४२	५	३७	६	११	४५	५४
२७	१३	९	र.	२१	४४	ध.	४९	२१	गं.	१७	३३	कौ.	२१	४४	१४	३०	७	कुं.	१८	१५	६	४२	५	३६	६	१२	४६	४
२७	९	१०	चं.	२३	५६	श.	५३	२२	वृ.	१६	२१	ग.	२३	५६	१५	३१	८	कुं.			६	४३	५	३५	६	१३	४६	१६
२७	५	११	मं.	२७	१०	पूभा.	५८	३०	ध्रु.	१५	५९	वि.	२७	१०	१६	१	९	मी.	४२	१३	६	४४	५	३४	६	१४	४६	३१
२७	२	१२	बु.	३१	२६	उभा.	६०	०	व्या.	१६	२७	बा.	३१	३६	१७	२	१०	मी.			६	४४	५	३३	६	१५	४६	४७
२६	५८	१३	गु.	३६	२४	उभा.	४	२८	ह.	१७	२९	कौ.	३	५१	१८	३	११	मी.			६	४६	५	३२	६	१६	४७	७
२६	५४	१४	शु.	४१	४३	रे.	१०	५३	व.	१८	४८	ग.	९	३	१९	४	१२	मे.	१०	५३	६	४७	५	३१	६	१७	४७	२८
२६	५०	१५	श.	४६	५६	अ.	१७	४२	सि.	२०	९	वि.	१४	२०	२०	५	१३	मे.			६	४८	५	३१	६	१८	४७	५०

अन्नकूटम् गोवर्द्धनपूजनम् यष्टिकाकर्षणम् (रस्साकशी)
चन्द्रदर्शनम्, स्वात्यामर्कः ५४।३७ सा.वृश्चिके भानुः २६।५३ *
मुहर्रम् १ सन् १३६९ हिजरी
भ. २।६ उ. २९।४७ या.
चित्रायां बुधः २०।४०
* भाईदूज २, यम २, बलराज, कलमदवात पूजा,
भ. २१।२७ उ. ५१।११ या. गोपाष्टमी (सायं व्यापिनी ग्राह्य है)
+ स्नानसमाप्तिः सत्यव्रतम्
पञ्चकारम्भः१८।१५ तुलायां बुधः३४।५९ पू.फा.यां. ४ श.५८।५२ †
भ. ५५।३३ उ. पूर्वास्तोबुधः ४६।१७
भ. २७।१० या. नवम्बर ११ ता. ३० प्रबोधिनी ११ व्र. सर्वेषां ()
ताजिया दहे () तुलसी विवाहः भीष्मपञ्चकारम्भः
स्वात्यां बुधः ४०।२ प्रदोष व्र.
भ. ४१।४३ उ. पञ्चक समाप्तिः १०।५३
भ. १४।२० या. श्रीगुरुनानकदेवजयन्तीमेला पुष्करराज कार्तिक +
† मूले धनुषि च शुक्रः ४८।२०

कार्तिकशुक्ल ८ शनाविष्टम् ०।० दिनगणः ५३२१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	४	५	९	७	४	११	५
११	७	२७	१	२८	२३	२२	२२
४५	५२	२७	४६	०	९	२०	२०
५४	२३	४७	४४	२५	५८	३५	३५
६०	३४	९४	६	६६	५	३	३
८	३	९	५०	०	४६	११	११
क्रान्ति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
स्वा २	म. ३	चि. २	फ़ं २	ज्ये. ४	फ़ं ३	रे. २	ह. ४



इस पक्षमें पृथ्वी पर युद्धभय हो, प्रजामें परस्पर लड़ाई झगड़े हों, गुड़ खण्ड अलसी सरसों घी तेल बिनौला तेलमें घटाबढ़ी रख तेज, रूईमें खांसी घटा बढ़ी चलेगी पहिले कुछ मन्दा होकर बादमें तेजी चलेगी, गेहूँ चना लकड़ीके भावमें समान रहे।

ति. ७ से १० तक और १३ से १५ तक कहीं २ बादल चाल बूंदा बांदी होगी।

कार्तिकसुदी एकादशी बादल वर्षा होय। चार मास वर्षा अधिक संशय करो न कोय॥ कार्तिकशुक्ल ११ कहिये देव उठान। जितनी घड़ियां होंयगी आधा सेरा धान॥ ति. १ को सूर्यको कुंडल पड़े तो तिल तेल तेज हो।

भाईदूजके दिन अपनी बहनके घर जाकर वहीं पर उसके हाथसे प्रेमपूर्वक भोजन करे और उसे यथा शक्ति अनेक प्रकारके दान देवे। कार्तिक मासमें आंवलेके नीचे ब्राह्मणोंको भोजन करावे और बादमें आप भी उसी वृक्षके नीचे भोजन करे आंवलेकी छायामें श्राद्ध और उसके पत्र फलोंसे विष्णुकी पूजा करनेसे बड़ा भारी पुण्य होता है, क्योंकि सभी देव ऋषि यज्ञ और तीर्थोंका आंवलेके नीचे निवास होता है।

कार्तिकशुक्ल १५ शनाविष्टम् ०।० दिनगणः ५३२८

८
६ के
९ शु
७ बु सू.
५ शमं
४
१० गु
११
१ च
३
१२ रा
२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	४	६	९	८	४	११	५
१८	११	८	२	५	२३	२१	२१
४७	४५	५१	४०	५१	४९	५८	५८
५०	२२	२९	१९	५६	१	१९	१९
६०	३२	९८	७	६५	५	३	३
२२	५०	३९	५५	१३	२४	११	११
क्रान्ति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
स्वा ४	म. ४	स्वा १	फ़ं २	मू. २	फ़ं ४	रे. २	ह. ४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ शकः १८७१ मार्गकृष्णपक्षः १६

(नवम्बर सन् १९४९ ई०) दक्षिणायनगोलो हेमन्तर्तुः

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि. कार्तिक	अं. नवम्बर	मु. मुहर्रम	चन्द्र संचारः			सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्य सूर्य स्पष्ट उदयकाले			
२६	४६	१	र.	५१	३७	भ.	२३	३७	व्य.	२१	१२	बा.	१९	१९	२१	६	१४	वृ.	३९	५९	६	४९	५	३०	६	१९	४८	१५
२६	४३	२	चं.	५५	२८	कृ.	२९	९	ह.	२१	४६	तै.	२३	३२	२२	७	१५	वृ.			६	५०	५	२९	६	२०	४८	४३
२६	३९	३	मं.	५८	९	रो.	३३	४२	प.	२१	३२	व.	२६	४९	२३	८	१६	वृ.			६	५१	५	२८	६	२१	४९	११
२६	३५	४	बु.	५९	४१	मृ.	३७	१०	शि.	२०	२७	ब.	२८	५५	२४	९	१७	मि.	५	२६	६	५१	५	२८	६	२२	४९	४०
२६	३१	५	गु.	५९	५१	आ.	३९	१९	सि.	१८	२१	कौ.	२९	४६	२५	१०	१८	मि.			६	५१	५	२७	६	२३	५०	१०
२६	२७	६	शु.	५८	४८	पुन.	४०	१४	सा.	१५	१५	ग.	२९	२०	२६	११	१९	क.	२५	०	६	५२	५	२७	६	२४	५०	४१
२६	२४	७	श.	५६	३२	पु.	३९	५६	शु.	११	९	वि.	२७	४०	२७	१२	२०	क.			६	५३	५	२६	६	२५	५१	१६
२६	२०	८	र.	५२	११	श्ले.	३८	३२	शु.	६	११	बा.	२४	२२	२८	१३	२१	सिं.	३८	३२	६	५४	५	२५	६	२६	५१	५४
२६	१६	९	चं.	४८	५८	म.	३६	२०	ब्र.	० ५३	२२ १४	तै.	२०	३४	२९	१४	२२	सिं.			६	५४	५	२४	६	२७	५२	३२
२६	१२	१०	मं.	४४	२	पू.फा	३३	१७	वै.	४६	४९	व.	१६	३०	३०	१५	२३	कं.	४७	२३	६	५५	५	२४	६	२८	५३	११
२६	८	११	बु.	३८	३३	उ.फ	२९	४२	वि.	३९	१९	ब.	११	१८	१	१६	२४	कं.			६	५६	५	२४	६	२९	५३	५२
२६	५	१२	गु.	३२	४३	ह.	२५	३९	प्री.	३१	३२	कौ.	५	३८	२	१७	२५	तु.	५३	३४	६	५८	५	२३	७	०	५४	३५
२६	१	१३	शु.	२६	४३	चि.	२१	२९	आ.	२३	३६	व.	२६	४३	३	१८	२६	तु.			६	५९	५	२२	७	१	५५	२०
२५	५७	१४	श.	२०	४८	स्वा	१७	२१	सौ.	१५	४८	श.	२०	४८	४	१९	२७	वृ.	५९	२५	७	०	५	२१	७	२	५६	७
२५	५३	३०	र.	१५	११	वि.	१३	२६	शो.	८	९	ना.	१५	११	५	२०	२८	वृ.			७	१	५	२१	७	३	५६	५५

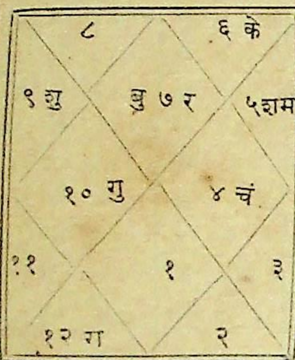
विशाखायामर्कः ११।४३
पू. फा. यां भौमः ५२।२६
म. २६।४९ उ. ५८।९ या.
उ. षा. यां ३ गुरुः ३४।४९ श्रीगणेश ४ व्र.

म. ५८।४८ उ. विशाखायां बुधः ४८।७
म. २७।४० या. पू. षा. यां भृगुः ७।६
श्रीमहाकालभैरवजयन्ती ८

म. १६।३० उ. ४४।२ या.
सं. वृश्चिकेऽर्कः ६।८ मु. ४५ पुण्यं १ यामयावत्, उत्पन्ना ११ व्र. स.
वृश्चिके बुधः ५९।१५ मल्ल १२
म. २६।४३ उ. ५३।४३ या. प्रदोषव्रतम्।
अनु. रविः २३।३५
अनुराधायां बुधः ४।२४

मार्गकृष्ण ८ रवाविष्टम् ०।० दिनगणः ५३३६

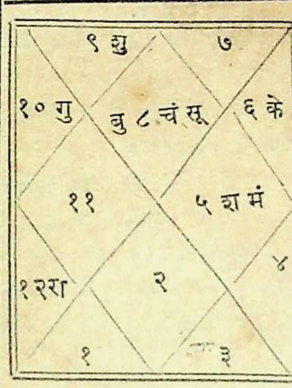
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	४	६	९	८	४	११	५
२६	१६	२१	३	१४	२४	२१	२१
५१	५	५७	५१	१७	२९	३२	३२
५४	२४	४	४६	३१	३१	५१	५१
६०	३१	९७	१००	६३	४	३	३
३८	५९	४८	११	४३	५१	११	११
सौम्य.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
वि.	पू.फा.	चि.	उ.षा.	पू.षा.	पू.फा.	रे.	ह.
३	१	१	३	१	४	२	४



इस पक्षमें पशु और घी तेल सोना चान्दी सरसों अलसीके भावमें तेजी हो। गेहूँके भावमें घटा बढ़ी होकर तेजी रहे। ऊनी कपड़ा ताम्बा, लालरंग तेज़, लकड़ी कोयला का बाज़ार सम रहे ति. १३ से घी, तेल, अनाज, अफीम मन्दी हो। रूईमें विशेष घटा बढ़ी हो। ति. १२ और ५ से ९ तक कहीं२ बादल चाल देखनेमें आवेगी। श० वि०—ति. १४।३० को सूर्य बादलोंसे ढँका रहे तो तृण धान्य महंगा होवे। मंगशिर की तिथि सतमी नवमी दिश ईशान। वायु चले बादर दिखे वर्षा थोड़ी जान॥

मार्ग कृष्णाष्टमी को कालभैरवके मन्दिरमें जाकर व्रत रखने और जागरण करनेसे सभी पाप दूर हो जाते हैं। इस मासमें देविका (पुरमंडल) में स्नान करनेका बड़ा महात्म्य है। मार्गशीर्ष मासमें साढ़े तीन करोड़ देवता और साठ हजार तीर्थ ये सब पुरमण्डल (देविका) में आ जाते हैं। यदि किसी ने व्रत करने की प्रतिज्ञा की हुई हो किन्तु रोग आदि कारणवश इस समय यह व्रत न रख सके तो किसी अपने प्रतिनिधिसे रखा लेवे। व्रतमें पुत्र, पत्नी, भाई, पति, पुरोहित और मित्र ये प्रतिनिधि माने गए हैं।

मार्गकृष्ण ३० रवाविष्टम् ०।० दिनगणः ५३४३



सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	७	९	८	४	११	५
३	१९	३	४	२१	२५	२१	२१
५६	४६	१३	५९	२८	०	१०	१०
५५	५५	१	०	३४	११	३५	३५
६०	३१	९५	१०	६०	३	३	३
४८	४४	४५	१३	३३	४३	११	११
सौम्य.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अनु.	पू.फा.	वि.	उ.षा.	पू.षा.	पू.फा.	रे.	ह.
१	३	४	३	३	४	२	४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ शकः १८७१ मार्गशुक्लपक्षः १७ (नवम्बर दिसम्बर सन् १९४९ ई०) दक्षिणायनगोलौ हेमन्तर्तुः

दि. मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि. मार्ग.	अं. नवंबर	मु. सफ़र	चन्द्र सञ्चारः			सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदय-काले			
२५	४९	१	चं.	१०	१	अनु.	९	५६	अ.	० ५४	५० ०	ब.	१०	१	६	२१	२९	वृ.			७	२	५	२१	७	४	५७	४८
२५	४६	२	मं.	५	३०	ज्ये.	७	७	धृ.	४७	५२	कौ.	५	३०	७	२२	३०	ध.	७	७	७	३	५	२०	७	५	५८	४०
२५	४३	३	बु.	१	४७	मू.	५	८	शू.	४२	२८	ग.	१	४७	८	२३	१	ध.			७	३	५	२०	७	६	५९	३६
अवम्		४	बु.	५७	१८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	४०	५	गु.	५७	३१	पू.षा.	४	२	गं.	३७	५२	ब.	२८	१८	९	२४	२	म.	१९	३	७	३	५	२०	७	८	०	३२
२५	३९	६	शु.	५७	९	उ.षा	४	६	वृ.	३४	१५	कौ.	२७	२०	१०	२५	३	म.			७	४	५	२०	७	९	१	२९
२५	३७	७	श.	५८	६	श्र.	५	२०	ध्रु.	३१	४०	ग.	२७	३८	११	२६	४	कुं.	३७	६	७	५	५	२०	७	१०	२	२७
२५	३५	८	र.	६०	०	ध.	८	५३	व्या.	३०	४	वि.	२९	१५	१२	२७	५	कुं.			७	५	५	२०	७	११	३	२६
२५	३४	८	चं.	०	२४	श.	११	४०	ह.	२९	२२	ब.	०	२४	१३	२८	६	कुं.			७	६	५	२०	७	१२	४	२७
२५	३२	९	मं.	३	४८	पू.भा	१६	३३	व.	२९	३०	कौ.	३	४८	१४	२९	७	मी.	०	२०	७	७	५	२०	७	१३	५	२९
२५	३०	१०	बु.	८	१३	उ.भा	२२	१५	सि.	३०	१६	ग.	८	१३	१५	३०	८	मी.			७	७	५	२०	७	१४	६	३३
२५	२८	११	गु.	१३	१८	रे.	२८	३७	व्य.	३१	२९	वि.	१३	१८	१६	१	९	मे.	२८	३७	७	८	५	२०	७	१५	७	३८
२५	२६	१२	शु.	१८	४२	अ.	३५	१०	व.	३२	५०	बा.	१८	४२	१७	२	१०	मे.			७	९	५	२०	७	१६	८	४४
२५	२५	१३	श.	२३	५६	भ.	४१	२९	प.	३४	०	तै.	२३	५६	१८	३	११	वृ.	५७	५४	७	१०	५	२०	७	१७	९	५१
२५	२३	१४	र.	२८	३७	कृ.	४७	११	शि.	३४	४२	व.	२८	३७	१९	४	१२	वृ.			७	११	५	२०	७	१८	१०	५९
२५	२२	१५	चं.	३२	३०	रो.	५१	५९	सि.	३४	४५	वि.	०	३४	२०	५	१३	वृ.			७	११	५	२०	७	१९	१२	८

चन्द्रदर्शनम् सा. धनुषि भानुः १३।३१
म. ३१।१९ उ. ५९।५ या. सफर मु. २

[+ श्रीगीताजयन्ती मोक्षदा ११ म. / उ.
उ. षा. यां भृगुः १२।१५
म. ५८।६ उ. पञ्चकारम्भः ३७।६
म. २९।१५ या.
मकरे भृगुः ३९।३५ ज्येष्ठायां बुधः २९।५४
उ. षा. यां ४ गुरुः ३०।१४
म. ४०।४५ उ.
म. १३।१८ या. पञ्चकसमाप्तिः २८।३७ दिसम्बर १२ ता.३१ +
ज्ये. रविः ३०।४४ प्रदोषव्रतम्
उ. फा. यां भौमः ५१।३७
म. २८।३७ उ. पिशाचमोचनश्राद्धम्
म. ०।३४ या० सत्यव्रतम् । श्रीदत्तजयन्ती

मार्गशीर्षशुक्ल ८ चन्द्र इष्टम् ०।० दिनगणः ५३५१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	७	९	८	४	११	५
१२	२३	१५	६	२९	२५	२०	२०
४	४९	५२	२३	२२	३०	४५	४५
२७	३०	५२	३१	४	३६	७	७
६१	२९	९४	१०	५६	३	३	३
१	४६	३८	४८	४८	१४	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अनु. ३	पू.फा. ४	अनु. ४	उ.षा. ३	उ.षा. १	पू.फा. ४	रे. २	ह. ४

८ | ७
१० गु | बु ८ र | ६ के
११ चं | श ५ म
१२ रा | २ | ४
१ | ३

इस पक्षमें प्रजामें अग्निका भय हो अमरीका और मुंबईमें रूई के भावमें कुछ तेजी। उत्तरभारतमें रूईमें पहिले कुछ मन्दी होकर फिर तेज हो, चान्दीमें घटा बढ़ी होकर मन्दी होवे। तैल गुड़ खण्ड तिल मूगफली बिनौला सरसों अलसी तेज। गेहूँके बाजार में घटा बढ़ी हो ति.९ से रुख तेज। ति.० २ से ८ तक और १० से १४ तक उत्तर भारतमें कहीं २ वर्षा और कहीं बून्दा बान्दी होगी।

शकुन वि०—मंगशिर शुक्ला पक्ष में तिथि की होवे हान। रोग दोष दुर्भिक्ष हो यह तुम निश्चय जान॥ मार्गशीर्ष के काम्य-रविवार व्रत में भक्ष्य-पदार्थ लिखते हैं—मार्गशीर्ष में ३ तुलसी के पत्ते खावे, पौषमें ३ पल घी (१पल-३ तोले ४ माशे का होता है)।

मार्गशीर्षशुक्ल १५ चन्द्र इष्टम् ०।० दिनगणः ५३५८

९ | ७
शु १० गु | बु ८ र | के ६
११ | मं ५ श
१२ रा | २ च | ४
३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	७	९	९	४	११	५
१९	२७	२६	७	५	२५	२०	२०
१२	१२	५१	४३	४९	५२	२२	२२
८	२५	२२	१५	३०	१६	५१	५१
६१	२९	९३	१२	५५	२	३	३
९	२६	४	४१	४६	४६	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ज्ये. १	पू.फा. १	ज्ये. ४	उ.षा. ४	उ.षा. ३	पू.फा. ४	रे. २	ह. ९

माघ में ३ मुट्ठी तिल, फाल्गुन में ३ पल दही, चैत्र में ३ पल दूध, वैशाखमें गोबर, ज्येष्ठमें ३ अञ्जली पानी, आषाढ़ में ३ कालीमिर्च, श्रावणमें ३ पल सत्तु, भाद्रपद में गोमूत्र के ३ गण्डूष, आश्विनमें शक्कर और कार्तिकमें हविष्य भक्षण करे। स्कन्द का कार्त्तिकेय का पूजन रात्रि के प्रथम प्रहर में करना चाहिए।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(दिसम्बर सन् १९४९ ई०) दक्षिणायनगोलौ हेमन्तर्तुः

संवत् २००६ शकः १८७१ पौषकृष्णपक्षः १८

दि.मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि.	अं.	मु.	चन्द्र सञ्चारः			सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्य सूर्यस्पष्टः उदय-काले			
२५	१९	१	मं.	३५	१३	मृ.	५५	४३	सा.	३३	५२	बा.	३	५२	२१	६	१४	मि.	२३	५१	७	११	५	२०	७	२०	१३	१८
२५	१८	२	बु.	३६	४५	आ.	५८	११	शु.	३२	७	तै.	५	५९	२२	७	१५	मि.			७	१२	५	२०	७	२१	१४	३०
२५	१६	३	गु.	३६	५५	पुन	५९	२०	शु.	२९	२१	व.	६	५०	२३	८	१६	क.	४४	३	७	१३	५	२०	७	२२	१५	४३
२५	१५	४	शु.	३५	५२	पु.	५९	२१	ब्र.	२५	३४	ब.	६	२४	२४	९	१७	क.			७	१४	५	२०	७	२३	१६	५८
२५	१३	५	श.	३३	३४	श्ले.	५८	१०	ऐं.	२०	५१	कौ.	४	४३	२५	१०	१८	सिं.	५८	१०	७	१४	५	२०	७	२४	१८	१४
२५	[illegible]	६	र.	३०	१४	म.	५६	९	वै.	१५	१८	ग.	१	५४	२६	११	१९	सिं.			७	१५	५	२०	७	२५	१९	३०
२५	१०	७	चं.	२६	५	पूफा.	५३	१५	वि.	९	२	ब.	२६	५	२७	१२	२०	सिं.			७	१६	५	२०	७	२६	२०	४८
२५	८	८	मं.	२१	९	उ.फा	४९	४४	प्री.	२ ५४	७ ४२	कौ.	२१	९	२८	१३	२१	कं.	७	२२	७	१७	५	२०	७	२७	२२	६
२५	७	९	बु.	१५	४४	ह.	४५	४८	सौ.	४७	०	ग.	१५	४४	२९	१४	२२	कं.			७	१८	५	२०	७	२८	२३	२५
२५	५	१०	गु.	९	२७	चि.	४१	३८	शो.	३९	७	वि.	९	५७	१	१५	२३	तु.	१३	४३	७	१८	५	२०	७	२९	२४	४५
२५	३	११	शु.	४	१	स्वा	३७	२८	अ.	३१	११	बा.	४	१	२	१६	२४	तु.			७	१८	५	२०	८	०	२६	६
मावस्		१२	शु.	५४	१०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०			०	०	०	०	०	०	०	०
२५	२	१३	श.	५२	४०	वि.	३३	२९	सु.	२३	२६	ग.	२५	२१	३	१७	२५	वृ.	१९	२९	७	२०	५	२१	८	१	२७	२७
२५	०	१४	र.	४७	३४	अनु.	२९	५४	धृ.	२५	५७	वि.	२०	७	४	१८	२६	वृ.			७	२१	५	२१	८	२	२८	४९
२४	५९	३०	चं.	४३	७	ज्ये	२६	५४	शू.	८	५५	च.	१५	२०	५	१९	२७	ध.	२६	५४	७	२१	५	२१	८	३	३०	११

मूले धनुषि च बुधः ०।२५
म. ६।५० उ. ३६।५५ या.
श्रवणे भृगुः ५१।५८ श्रीगणेश ४ व्र.

म. ३०।१४ उ. ५८।९ या. कन्यायां भौमः १।३१
रे. १ राहुः हस्ते ३ केतुश्च १०।५९

म. ४२।५० उ.
म. ९।५७ या. सं. धनुषि मूले चार्कः ३४।३३ मु. ३० पुण्यं +
श्रवणे १ गुरुः १४।२ सफला ११ व्र.
[+ मध्यान्होत्तरम् पश्चिमोदयो बुधः २२।२४ पू. षा. यां. बुधः ३५।०
म. ५२।४० उ. प्रदोष व्र.
म. २०।७ या.

पौषकृष्ण ८ भौमइष्टम् ०।० दिनगणः ५३६६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	५	८	९	९	४	११	५
२७	०	९	९	१२	२६	१९	१९
२२	५२	२०	१९	३२	१०	५७	५७
६	४	१६	२६	५६	३७	२४	२४
६१	२६	९२	१२	४६	२	३	३
१८	२७	१८	२५	२३	२	११	११
सौरम.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ज्ये. ४	उ.फा. २	मू. ३	उ.षा. ४	श्र. १	पू.भा. ४	रे. १	ह. ३

९ बु | ७
१० गुशु | ८ सू. | ६ केमं
११ | ५ श चं
१२ | २ | ४
१ | ३

इस पक्ष में शीत विशेष पड़े। रुई चान्दी के भावमें मन्दी चले। ति.५ से सोना गुड़ खण्ड अनाज में मन्दे का रुख हो। ति. ७ से रुई में करीब १५ टका तेजी होवे, साथ ही सोने में १ चान्दी में ३ या ४ टका की तेजी हो। ति. ११ से गेहूँ जौ चना सस्ते और घृत चावल उड़द मूंगो तेज़। विदेशी औषधियों में और घोड़ों के भाव में भी तेज़ी रहे। ति. २ से ६ तक वर्षा होनेके योग हैं। ति.७ से ठंडी वायु विशेष चलेगी।

शकुन विचार—पौ. कृ. ८ को जो पूर्व दिशा में बादल हो और गर्जना भी सुनाई दे तो आगे तृण और अनाज तेज होवेगा। तेरस-चौदस मावस पौष वदी में जान। तीन दिनों में गर्भ हो श्रावण वर्षा मान॥

पौषकृष्ण ३० चन्द्रइष्टम् ०।० दिनगणः ५३७२

१० गु शु | ८ चं.
११ | ९ बु सू | ७
१२ रा | ६ मं के
१ | ३ | ५ श
२ | ४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	५	८	९	९	४	११	५
३	३	१८	१०	१६	२६	१९	१९
३०	२८	३५	३४	५३	१९	३८	३८
११	५९	६	४४	४९	३४	१९	१९
६१	२५	९२	१२	४०	१	३	३
२२	५४	१०	२८	१	३४	११	११
सौरम.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मू. २	उ.फा. ३	पू.षा. २	श्र. १	श्र. ३	पू.भा. ४	रे. १	ह. ३

चतुर्दशी व अमावस के दिन जिस देश में प्रातः सूर्योदय बादलों में से हो तो वहाँ पशुओं के चारे की दिक्कत होगी। पौष मास में घर, महल, बगला, कोठी, नगर ग्राम आदि दान करने से बड़ा भारी पुण्य होता है और दाता पर भगवान् विष्णु परम प्रसन्न हो जाते हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

संवत् २००६ शकः १८७१ पौषशुक्लपक्षः १६															हि.	अं.	मु.	चन्द्र			सू. उ.		सू. अ.		नित्य सूर्य स्पष्टः			
दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	पौष	दिसम्बर	रविउ.	सञ्चारः			रेल्वे		रेल्वे		उदय-काले			
२४	५७	१	मं.	३९	३०	मू.	२४	४६	ग.	७ २/६	३०/४६	कि.	११	१९	६	२०	२८	ध.			७	२२	५	२२	८	४	३१	३३
२४	५६	२	बु.	३६	५६	पू.षा.	२३	२६	ध्रु.	५१	५२	बा.	८	१३	७	२१	२९	म.	३८	२३	७	२३	५	२२	८	५	३२	५६
२४	५४	३	गु.	३५	२९	उ.षा.	२३	१३	व्या.	४७	५२	तै.	६	१३	८	२२	१	म.			७	२४	५	२२	८	६	३४	२०
२४	५६	४	शु.	३५	१५	श्र.	२४	९	ह.	४४	५३	व.	५	२२	९	२३	२	कुं.	५४	१६	७	२४	५	२२	८	७	३५	४५
२४	५७	५	श.	३६	२३	ध.	२६	२३	व.	४२	५५	व.	५	४९	१०	२४	३	कुं.			७	२४	५	२३	८	८	३७	१०
२४	५९	६	र.	३८	४८	श.	२९	५४	सि.	४१	५४	कौ.	७	३५	११	२५	४	कुं.			७	२४	५	२४	८	९	३८	३६
२५	०	७	चं.	४२	१९	पू.भा	३४	३१	व्य.	४१	४६	ग.	१०	३४	१२	२६	५	मी.	१८	२२	७	२५	५	२५	८	१०	४०	३
२५	२	८	मं.	४६	५१	उ.भा	४०	५	व.	४२	२२	वि.	१४	५	१३	२७	६	मी.			७	२५	५	२६	८	११	४१	३०
२५	४	९	बु.	११	५९	रे.	४६	१९	प.	४३	२७	बा.	१९	२५	१४	२८	७	मे.	४६	१९	७	२५	५	२७	८	१२	४२	५७
२५	५	१०	गु.	५७	२६	अ.	५२	५२	शि.	४४	४९	तै.	२४	४३	१५	२९	८	मे.			७	२६	५	२८	८	१३	४४	२३
२५	७	११	शु.	६०	०	भ.	५९	१५	सि.	४६	४	व.	३०	४	१६	३०	९	मे.			७	२६	५	२९	८	१४	४५	४९
२५	९	११	श.	२	४२	कृ.	६०	०	सा.	४६	५७	वि.	२	४२	१७	३१	१०	वृ.	१५	४३	७	२६	५	३०	८	१५	४७	१५
२५	१०	१२	र.	७	२२	कृ.	५	८	शु.	४७	१७	बा.	७	२२	१८	१	११	वृ.			७	२६	५	३०	८	१६	४८	४१
२५	१२	१३	चं.	११	९	रो.	१०	१३	शु.	४६	४२	तै.	११	९	१९	२	१२	मि.	४२	११	७	२६	५	३१	८	१७	५०	७
२५	१४	१४	मं.	१३	४५	मृ.	१४	९	ब्रं.	४५	१९	व.	१३	४५	२०	३	१३	मि.			७	२६	५	३२	८	१८	५१	३३
२५	१५	१५	बु.	१५	१२	आ.	१६	५७	ऐं.	४२	५३	व.	१५	१२	२१	४	१४	मि.			७	२७	५	३३	८	१९	५२	५८

(दिसम्बर १९४९ जन० सन् १९५० ई०) दक्षिणायन-गोलौ सा. मकरा, उत्तरायणं शिशिरर्तुश्च

चन्द्रदर्शनम् सा. मकरे भानुः ३७।२८ उत्तरायणं शिशिरर्तु प्रा.।
रविउलावल मु. ३
भ. ५।२२ उ. ३५।१५ या. पञ्चकारम्भः ५४।१६
उ. षा. यां बुधः २६।२९

भ. ४२।१९ उ. मकरे बुधः ४७।३६ जन्मदिन श्रीगुरुगोविन्दसिंह जी
भ. १४।५ या.
पू.षा.यां रविः ३६।११ पञ्चकसमाप्तिः ४६।१९

भ. ३०।४ उ. धनिष्ठायांभृगुः ५३।२४ वक्रीशनिः ०।१ पुत्रदा ११ व्र. स्मा.
भ. २।४२ या. श्रवणे २ गुरुः ३३।५० पुत्रदा ११ व्र. वै. निं.
जनवरी १ ता. ३१ सन् १९५० ई० प्रदोष व्र.

भ. १३।४५ उ. ४४।२८ या. सत्यव्रतम्।
माघ स्नान व्रत नियमाद्यारम्भश्च

पौषशुक्ल ८ भौम इष्टम् ०।०   दिनगणः ५३८०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	५	९	९	९	४	११	५
११	६	०	१२	२१	२६	१९	१९
४१	४२	१७	१८	३९	२५	१२	१२
३०	४६	९	५०	४०	५९	५३	५३
६१	१३	८२	१३	२८	०	३	३
२७	३०	५५	८	४१	२२	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मू.	उ.फा.	उ.फा.	फा.	फा.	उ.फा.	रे.	ह.
४	४	२	१	४	४	१	३

बु १० गु शु | ८ | ११ | ९ सू | ७ | चं १२ रा | मं ६ के | १ | ३ | ५ श | २ | ४

इस पक्षमें आकाश बादलोंसे घिरा रहे और कहीं ओले पड़ें व्यापारियोंका व्यापार अधिक चलते हुए भी लाभ कम हो। रूईमें १५।२० टकाकी चांदीमें २।३ टकाकी घटाबढ़ी होकर मंदी होवे, अलसीमें तेज़ी ति. ८ से सोना चांदीमें तेजी रहे ति. १० से सरसों मूंगफली तोरियाके भावमें तेज़ी चले, और प्रजामें कहीं लूटमारसे हानि हो। यहां एकादशीकी वृद्धि घीके भावमें मंदी करेगा ति. २ से ६ तक उत्तम वषा हो १ दिन झड़ी लगे। ति. ११से पूर्णमासी तक खंड वृष्टि हो।

शकुन विचार—पौषसु. १४ दिना बिजली का घनघोर। शुभ वर्षा आषाढ़में बोलें दादुर मोर। ति. ७।८।९को जल वर्षें तो आगामी चौमासा उत्तम रहे।

पौषशुक्ल १५ बुधइष्टम् ०।०   दिनगणः ५३८८

बु १० बृ शु | ८ | ११ | सू ९ | ७ | १२ रा | मं के ६ | १ | ३ च | ५ श | २ | ४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	५	९	९	९	४	११	५
१९	९	९	१४	२४	२६	१८	१८
५२	३५	१२	७	३५	२६	४७	४९
५८	३१	३६	१	४६	१२	२७	२९
६१	२०	४८	१३	१५	०	३	३
२५	१८	०	४१	११	१८	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.फा.	उ.फा.	उ.फा.	श्र.	ध.	उ.फा.	रे.	ह.
२	४	४	२	१	४	१	३

यदि ति. १३ को जल बरसे तो गेहूँ आगे तेज हो, रोकने में लाभ होवेगा। पौष मासमें स्नान दानादि कर्मोंके लिए नर्मदा श्रेष्ठ मानी गई है। व्रत वाले दिन दातुन नहीं करनी चाहिए, क्योंकि लिखा है "जो पुरुष श्राद्ध वाले दिन काष्ठ की दातुन करता है उसके साथ कुल नष्ट हो जाते हैं।"

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ शकः १८७१ माघकृष्णपक्षः २० (जनवरी सन् १९५० ई०) उत्तरायणं दक्षिणगोलः शिशिरर्तुः

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि. पंचांग	अं. तारीख	मु. तारीख	चन्द्र सञ्चारः			सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्य सूर्यस्पष्टः उदय-काले			
२५	१७	१	गु.	१५	१७	पुन	१८	२८	वै.	३९	२८	कौ.	१५	१७	२२	५	१५	क.	३	५	७	२६	५	३३	८	२०	५४	२५
२५	१९	२	शु.	१४	८	पु.	१८	४३	वि.	३५	४	ग.	१४	८	२३	६	१६	क.			७	२७	५	३४	८	२१	५५	५१
२५	२०	३	श.	११	४६	श्ले.	१७	४९	प्री.	२९	४८	वि.	११	४६	२४	७	१७	सिं.	१७	४९	७	२७	५	३५	८	२२	५७	१७
२५	२२	४	र.	८	२४	म.	१५	५८	आ.	२३	४५	बा.	८	२४	२५	८	१८	सिं.			७	२७	५	३६	८	२३	५८	४२
२५	२४	५	चं.	४	९	पूफा.	१३	१६	सौ.	१७	२	तै.	४	९	२६	९	१९	कं.	२७	२५	७	२८	५	३६	८	२५	०	६
क्षयम्		६	चं.	५५	४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	७	०	५	०	०	०	०	०
२५	२५	७	मं.	५३	४६	उफा.	९	५२	शो.	९	४८	वि.	२६	२०	२७	१०	२०	कं.			७	२८	५	३७	८	२६	१	३०
२५	२७	८	बु.	४७	५७	ह.	६	२	अ.	२ ५४	११ २१	बा.	२०	५१	२८	११	२१	तु.	३३	५९	७	२८	५	३८	८	२७	२	५३
२५	२८	९	गु.	४२	३	चि.	१ ५७	५७ ४४	धृ.	४६	२३	तै.	१५	०	२९	१२	२२	तु.			७	२८	५	३९	८	२८	४	१६
२५	३०	१०	शु.	३६	१७	वि.	५३	४२	शू.	३८	३५	व.	९	१०	१	१३	२३	वृ.	३९	४३	७	२८	५	३९	८	२९	५	३८
२५	३२	११	श.	३०	४७	अनु.	४९	५८	गं.	३१	०	ब.	३	३२	२	१४	२४	वृ.			७	२८	५	४०	९	०	७	१
२५	३३	१२	र.	२५	४६	ज्ये.	४६	४६	वृ.	२३	४८	तै.	२५	४६	३	१५	२५	ध.	४६	४६	७	२८	५	४१	९	१	८	२३
२५	३५	१३	चं.	२१	२५	मू.	४४	२६	ध्रु.	१७	१०	व.	२१	२५	४	१६	२६	ध.			७	२८	५	४२	९	२	९	४५
२५	३७	१४	मं.	१७	५७	पूषा.	४२	५२	व्या.	११	११	श.	१७	५७	५	१७	२७	म.	५७	४०	७	२८	५	४२	९	३	११	६
२५	३८	३०	बु.	१५	२६	उषा.	४२	२०	ह.	६	०	ना.	१५	२६	६	१८	२८	म.			७	२७	५	४३	९	४	१२	२५

श्रवणे बुधः १५।१७ हस्ते भौमः १३।२५
म. ४२।५७ उ.
म. ११।४६ या. श्रीगणेश जन्म (संकष्टहरणी) ४ व्र. चन्द्रोदय + [+ रेल्वे घ. ८।४५
वक्री बुधः २४।१७
म. ५९।१३ उ.

म. २६।२० यां. उ. षा. याम्यर्कः ३७।३८ वक्री भृगुः ४।४६
पश्चिमास्तो बुधः १।२३ वक्री उ. षा. यां. बुधः १८।२७
लोहड़ी महोत्सवः पंजाबदेशे
म. ९।१० उ. ३६।१७ या. सं. मकरेऽर्कः ५३।७ मु. ४५ पुण्यंपरदिने
षट्तिला ११ व्र. स.
श्रवणे ३ गुरुः ५।२७
म. २१।२५ उ. ४९।४१ या.

युगादि, मौनी ३० प्रयाग स्नाने फलाधिक्यम्

माघकृष्ण ८ बुधइष्टम् ०।० दिनगणः ५३९५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	५	९	९	९	४	११	५
२७	११	१०	१५	२५	२६	१८	१८
५	४८	१०	४३	३०	१८	२५	२५
५३	२५	५२	१	०	५८	११	११
६१	१७	२५	३	०	१	३	३
२३	४२	३७	३६	७	२६	११	११
क्रान्ति	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.षा.	ह.	श्र.	श्र.	ध.	पू.फा.	रे.	ह.
१	२	१	२	१	४	१	३

१० बु गु शु
८
११
९ सू.
७
१२ रा.
६ मं चं के
१
३
५ श
२
४

इस पक्ष में किसी प्रान्त की चना आदि की खेती को हानि पहुँचे शीत अधिक पड़े गुड़ अलसी, चना में तेज़ी ति. ५ से रूईमें १५।२० टकाकी तेज़ी होकर फिर मन्दी होवे चान्दीमें घटा बढ़ी होकर २।४ टका की तेज़ी होवे। शेयरोंके भावमें भी तेज़ी होवे, चौपाये मन्दे। ति. ८ को रूईमें १०, २० मन्दे ति. ११ से अनाजके भावमें मन्दा चले। लोहा जस्त पीतल तेज होकर फिर १४ दिन बाद मन्दा हो। ति. १ से ८ तक उत्तम वर्षा और १४।३० को भी कहीं२ वर्षा होगी बादल चाल फिर भी बनी रहेगी।

श० वि—माघ बदी जो पंचमी बादल होवे जान। वर्षा कछु होवे नहीं भादो वर्षा जान॥ माघवदी जो६को निर्मल हो आकाश। तो तुम निश्चय जानियो निपजै नहीं कपास॥ माघमें मूली छोड़ देनी चाहिये। जो पुरुष माघ में प्रातः सूर्योदय के समय किसी सुन्दर नदीमें स्नान करता है वह अपने सात कुल और माता पिताके साथ देवशरीर धारण कर स्वर्गमें आनन्दसे रहता है। स्नान का मन्त्र यह है—'दुःखदारिद्र्यनाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च। प्रातः स्नानकरोम्यद्य माघे पापविनाशनम्'

माघकृष्ण ३० बुधइष्टम् ०।० दिनगणः ५४०२

११
९
१२ रा
१० बुशुगुसू चं
८
७
१
२
४
६ मंके
३
५ श

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	५	९	९	९	४	११	५
४	१३	३	१७	२४	२६	१८	१८
१२	४२	२०	२१	१७	६	२	२
२५	७	२४	१८	५३	४७	५५	५५
६१	१५	७५	१४	१४	१	३	३
१९	२१	४	१३	२०	५९	११	११
क्रान्ति	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.षा.	ह.	पू.षा.	श्र.	ध.	पू.फा.	रे.	ह.
३	२	३	३	१	४	१	३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ शकः १८७१ माघशुक्लपक्षः २१ | (जनवरी फरवरी सन् १९५० ई०) उत्तरायणं दक्षिणगोलः शिशिरर्तुः

दि·मा		ति·	वा·	घ·	प·	न·	घ·	प·	यो·	घ·	प·	क·	घ·	प·	हि· माघ	अं· जनवरी	मु· रबिला	चन्द्र सञ्चारः			सू· उ· रेल्वे		सू· अ· रेल्वे		नित्य सूर्य स्पष्टः उदय-काले			
२५	४०	१	शु·	१४	७	श्र·	४३	१	व·	५८ ९	४३ २६	ब·	१४	७	७	१९	२९	म·			७	२७	५	४४	९	५	१३	४२
२५	४३	२	शु·	१४	३	ध·	४४	४८	व्य·	५६	८	कौ·	१४	३	८	२०	३०	कुं·	१३	५४	७	२७	५	४४	९	६	१५	०
२५	४६	३	श·	१५	२१	श·	४८	११	व·	५४	५४	ग·	१५	२१	९	२१	१	कुं·			७	२७	५	४५	९	७	१६	१६
२५	४९	४	र·	१७	५०	पू.भा	५२	३२	प·	५४	२७	वि·	१७	५०	१०	२२	२	मी·	३६	२७	७	२७	५	४६	९	८	१७	३१
२५	५३	५	चं·	२१	३०	उ.भा	५७	५५	शि·	५४	५३	बा·	२१	३०	११	२३	३	मी·			७	२७	५	४७	९	९	१८	४५
२५	५७	६	मं·	२६	५	रे·	६०	०	सि·	५५	५६	तै·	२६	५	१२	२४	४	मी·			७	२६	५	४८	९	१०	१९	५९
२६	१	७	बु·	३१	१८	रे·	४	०	सा·	५७	११	व·	३१	१८	१३	२५	५	मे·	४	०	७	२५	५	४९	९	११	२१	१२
२६	५	८	गु·	३६	४७	अ·	१०	२९	शु·	५८	३३	वि·	४	२	१४	२६	६	मे·			७	२५	५	५०	९	१२	२२	२३
२६	८	९	शु·	४२	१	भ·	१६	५७	शु·	५९	३९	बा·	९	२४	१५	२७	७	वृ·	३३	२७	७	२४	५	५१	९	१३	२३	३३
२६	१२	१०	श·	४६	३६	कृ·	२२	५९	ब्र·	६०	०	तै·	१४	१९	१६	२८	८	वृ·			७	२४	५	५२	९	१४	२४	४२
२६	१६	११	र·	५०	१८	रो·	२८	१६	ब्र·	०	१३	व·	१८	२७	१७	२९	९	वृ·			७	२२	५	५२	९	१५	२५	५०
२६	२०	१२	चं·	५२	५१	मृ·	३२	२७	ऐं·	५८ ०	५९ ३	ब·	२१	३४	१८	३०	१०	मि·	०	२१	७	२२	५	५३	९	१६	२६	५७
२६	२४	१३	मं·	५४	८	आ·	३५	३३	वि·	५६	५५	कौ·	२३	३०	१९	३१	११	मि·			७	२१	५	५४	९	१७	२८	२
२६	२७	१४	बु·	५४	७	पुन.	३७	२०	प्री·	५३	५१	ग·	२४	८	२०	१	१२	क·	२१	५३	७	२१	५	५६	९	१८	२९	६
२६	३१	१५	गु·	५२	४८	पु·	३७	५३	आ·	४९	४८	वि·	२३	२८	२१	२	१३	क·			७	२१	५	५७	९	१९	३०	८

सा. कुम्भे भानुः ५७।१८ श्रीवल्लभ जयन्ती गुरोर्वार्द्धक्यारंभः३७।४८
चन्द्रदर्शनम् पञ्चकारम्भः १३।५४ वक्री श्रव. भृगुः ३६।२४ व. +
भ. ४६।३५ उ. रविलाखर मु. ४
भ. १७।५० या. अस्तोगुरुः ३७।४८ [अ·गु·]
श्रव. रविः ४०।२३ पूर्वोदयो बुधः ३८।३५ वसन्त ५ श्री ५
वक्री पू. षा. यां बुधः ३।३७ अभि. नि. रविः ३२।४०
भ. ३१।१८ उ. शुक्रस्य वार्द्धक्यारम्भः १६।४८ पञ्चकसमाप्तिः *
भ. ४।२ या. भीष्माष्टमी
[+ धनु. बुधः ४२।१९ अभि. प्र. रविः ६४।२३
पश्चिमास्तो भृगुः १६।४८ [प· अ· शु·]
भ. १८।२७ उ. ५०।१८ या. मार्गी बुधः ७।३४ श्रवणे ४ गुरुः १०।२६
[* ४।० रथ ७ (अरुणोदयस्नाने महत्फलम्)
प्रदोष व्र. कल्पादिः
भ. ५४।७ उ. पूर्वोदयो भृगुः ३७।४८ पू· उ· शु· फरवरी २ ता० =
भ. २३।२८ या. सत्यव्रतम् [= २८ मेला श्रीजयन्तीदेवी

माघशुक्ल ८ गुराविष्टम् ०।० दिनगणः ५४१०

सू·	मं·	बु·	गु·	शु·	श·	रा·	के·
९	५	८	९	९	४	११	५
१२	१५	२५	१९	२०	२५	१७	१७
२२	१८	३०	२४	३९	४७	३७	३७
२३	५०	२९	४२	०	३५	२९	२९
६१	१०	३०	१४	३०	२	३	३
११	४	४७	१३	४०	५३	११	११
मा·	व·	मा·	व·	व·	व·	व·	
क्रान्ति	उ·	उ·	अ·	उ·	उ·	अ·	अ·
श्र· १	ह· २	छं· ४	श्र· ३	श्र· ४	छं· ४	रे· १	ह· ३

११ ९ बु
१२
१० गु शु सू
८
१ चं
७
२
४
के ६ म
३
५ श

इस पक्षमें चान्दी २ या २॥ रूईमें १० या १५ खण्ड गुड़में ।।।) करीब तेजी हो । उड़द, चना, चावल, गेहूँमें घटा बढ़ी विशेष होकर बादमें मन्दा रहे शेयर के भावमें तेजी, यहां मकरमें गुरु अस्त होते हैं सो आगे तिल उड़दकी उत्पत्ति अच्छी होगी। पक्षान्तमें रूई सूत सोना चान्दी घी चावल तेज हो। किसी राज्य पर विपत्ति आवे गुजरात और कर्णाटक, देशमें फसल को हानि होगी। ति० १ से ५ तक और १० से १५ तक वर्षाके योग हैं।

(श. वि.) माघ सुदी सप्तमी बादल बिजली होय। पूर्व उत्तर बायु चलै संवत् अच्छा होय ।। माघ उजाली दूज वा तीज रखो जल धार। चमके दामिनि जानिये चौमासा भयकार ।।

माघशुक्ल १५ गुराविष्टम् ०।० दिनगणः ५४१७

११ ९ बु
१२ रा
१० गु शु सू
८
१
७
२
४ चं
६ मंके
३
५ श

सू·	मं·	बु·	गु·	शु·	श·	रा·	के·
९	५	८	९	९	४	११	५
१९	१६	२५	२०	१५	२५	१७	१७
३०	१५	४५	५४	२६	२५	१५	१५
८	५४	५४	४७	१०	५२	१५	१५
६१	६	२३	१४	३६	४	३	३
२	५८	५३	१७	७	१०	११	११
मा·	मा·	मा·	व·	व·	व·	व·	
क्रान्ति	उ·	उ·	अ·	उ·	उ·	अ·	अ·
श्र· ३	ह· २	छं· ४	श्र· ४	श्र· २	छं· ४	रे· १	ह· ३

माघशुक्ला सप्तमीको सूर्योदयके समय स्नान करनेसे सूर्यग्रहण स्नानके तुल्य फल होता है, स्नान मन्त्र यह है—यदा जन्मकृतं पापं यदा जन्मांतरार्जितम्। मनोवाकायजं यच्च ज्ञाताऽज्ञाते च ये पुनः ।। इति सप्तविधं पापं स्नानोन्मे सप्त सप्तिके। सप्तव्याधिसमायुक्तं हर माकरि सप्तमी"। भीष्माष्टमी—माघ शुक्लाष्टमीको जो मनुष्य भीष्मको जल देते हैं उनके एक वर्षके सब पाप नष्ट हो जाते हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ शकः १८७१ फाल्गुनकृष्णपक्षः २२

(फरवरी सन् १९५० ई०) उत्तरायणं दक्षिणगोलः शिशिरर्तुः

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि. माघ	अं. फरवरी	मु. रबिउस्सानी	चन्द्र सञ्चारः			सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्य सूर्य स्पष्टः उदय-काले			
२६	३५	१	शु.	५०	१९	श्ले.	३७	१३	सौ.	४४	५०	बा.	२१	३३	२२	३	१४	सिं.	३७	१३	७	२०	५	५८	९	२०	३१	९
२६	३९	२	श.	४६	५०	म.	३५	३२	शो.	३९	४	तै.	१८	३४	२३	४	१५	सिं.			७	१९	५	५९	९	२१	३२	८
२६	४३	३	र.	४२	३०	पू.फा	३२	५८	अ.	३२	३७	व.	१४	४०	२४	५	१६	कं.	४७	१०	७	१९	५	५९	९	२२	३३	६
२६	४६	४	चं.	३७	२८	उ.फा	२९	४५	सु.	२५	३४	ब.	९	५९	२५	६	१७	कं.			७	१९	६	०	९	२३	३४	१
२६	५०	५	मं.	३१	५७	ह.	२५	५९	धृ.	१८	६	कौ.	४	४३	२६	७	१८	तु.	५३	५६	७	१८	६	१	९	२४	३४	५५
२६	५४	६	बु.	२६	७	चि.	२१	५२	शू.	१०	१९	व.	२६	७	२७	८	१९	तु.			७	१७	६	२	९	२५	३५	४८
२६	५८	७	गु.	२०	१२	स्वा	१७	३९	गं.	५४	२४ ३६	ब.	२०	१२	२८	९	२०	वृ.	५९	३३	७	१६	६	२	९	२६	३६	४२
२७	२	८	शु.	१४	२४	वि.	१३	३१	धु.	४६	५७	कौ.	१४	२४	२९	१०	२१	वृ.			७	१५	६	३	९	२७	३७	३६
२७	५	९	श.	८	५६	अनु	९	४२	व्या.	३९	३८	ग.	८	५६	३०	११	२२	वृ.			७	१५	६	४	९	२८	३८	२८
२७	९	१०	र.	३	५५	ज्ये.	६	२६	ह.	३२	४९	वि.	३	५५	१	१२	२३	ध.	६	२६	७	१४	६	५	९	२९	३९	१९
अवम्		११	र.	५५	४५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२७	१३	१२	चं.	५६	१४	मू.	३	५०	व.	२६	४४	कौ.	२७	५७	२	१३	२४	ध.			७	१३	६	५	१०	०	४०	६
२७	१७	१३	मं.	५३	४९	पू.षा	२	५	सि.	२१	२२	ग.	२५	२	३	१४	२५	म.	१६	५४	७	१२	६	६	१०	१	४०	५१
२७	२१	१४	बु.	५२	३५	उ.षा	१	२१	व्य.	१६	५०	वि.	२३	१२	४	१५	२६	म.			७	११	६	७	१०	२	४१	३४
२७	२४	३०	गु.	५२	३६	श्र.	१	४५	व.	१३	१६	च.	२२	३५	५	१६	२७	कुं.	३२	३६	७	११	६	८	१०	३	४२	१६

उ.षा.यां बुधः ४१।१३

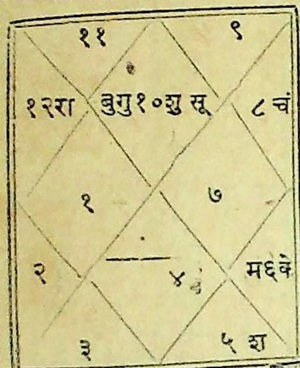
म. १४।४० उ. ४२।३० या. धनि. रविः ४५।५८
श्रीगणेश ४ व्र.

म. २६।७ उ. ५३।९ या. मकरे बुधः ७।३५
श्रीसीता जन्माष्टमी (अर्द्धरात्र व्यापिनी ग्राह्य है)

म. ३६।२५ उ.
म. ३।५५ या. सं.कुम्भेऽर्कः २०।१७ मु. ३० पुण्यं ४।७१ उप., ×
×वक्री भौमः ४०।० धनि. १ गुरुः १०५०
उ.भा.यां ४ राहुः हस्ते २ केतुश्च ५।३९
म. ५३।४९ उ. भौम प्रदोष व्र.
म. २३।१२ या. श्रीमहाशिवरात्रिव्रतम्
पञ्चकारम्भः ३२।३६

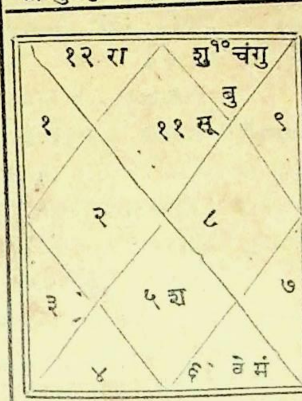
फाल्गुनकृष्ण ८ शुक्रइष्टम् ०।० — दिनगणः ५४२५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	५	९	९	९	४	११	५
२७	१६	१	२२	१२	२४	१६	१६
३७	४४	४५	४८	८	५६	४९	४९
३६	२०	१४	५०	१०	१०	५०	५०
६०	०	५९	१४	२७	३	३	३
५४	३६	१२	४५	५८	५४	११	११
सौरप.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ध.	ह.	उ.षा.	श्र.	श्र.	पू.फा.	रे.	ह.
२	३	२	४	१	४	१	३



इस पक्षमें सोना चान्दीमें तेजी। गेहूँ, ज्वार, मक्की जौ चनाके भावमें पहिले मन्दा ति० १० के बाद तेज रहे, गुड़ शक्करमें घटाबढ़ी रुख मन्दा, ऊनी, सूती, रेशमी वस्त्र कुछ सस्ते रहें। सरसों अलसी पहिले मन्दी, बादमें तेज, ति. ९ से रूईमें खासी तेजी हो। यहां फाल्गुण कृ. ६ को चित्रानक्षत्र का होना, अनाज की अच्छी उत्पत्ति का सूचक है। तिथि ५ से १२ तक ठंडी वायुका जोर और खंड वृष्टि होगी। श०वि०—फाल्गुण बदी तीज को जान। दीखे पवन मेघ प्रमान॥ आसोज शुदीमें वर्षाहोय। रात दिना वर्षे मन मोय। फाल्गुण कारीदूजदिन निर्मल रहे अकाश। श्रावणभादों जल बहु सुधर जाय चौमास॥

फाल्गुनकृष्ण ३० गुराविष्टम् ०।० — दिनगणः ५४३१



सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	५	९	९	९	४	११	५
३	१६	८	२४	१०	२४	१६	१६
४२	३७	१९	१४	१५	२१	३०	३०
१६	३७	४४	२४	१८	५९	४५	४५
६०		७०	१४	१३	४	३	३
४२	१८	५१	१३	१६	१८	११	११
सौरप.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ध.	ह.	उ.षा.	ध.	श्र.	पू.फा.	उ.भा.	ह.
४	२	४	१	१	४	४	२

फाल्गुन कृष्णमें शिवरात्रि व्रत अवश्य करना चाहिये इससे मनुष्यका कल्याण होता है। चाहे सौर हो अथवा वैष्णव या किसी और देवताके मानने वाला हो क्यों न हो वह शिवरात्रि व्रतके बिना किसी देवता की पूजाके फलको प्राप्त नहीं करपाता।। शिवरात्रि की चतुर्दशी प्रदोषव्यापिनी ही ग्रहण करनी चाहिये। क्योंकि उस दिन रात्रिमें जागरण करना होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ शकः १८७१ फाल्गुनशुक्लपक्षः २३																हि.	अं.	मु.	चन्द्र			सू. उ.		सू. अ.		नित्य सूर्य स्पष्टः			
दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.		फाल्गु.	फरवरी	जमादि	सञ्चारः			रेल्वे		रेल्वे		उदय-काले			
२७	२८	१	शु.	५३	५७	ध.	३	२६	प.	१०	४४	कि	२३	१६		६	१७	२८	कुं.			७	१०	६	८	१०	४	४२	५६
२७	३२	२	श.	५६	३०	श.	६	२२	शि.	९	१२	बा.	२५	१४		७	१८	२९	मी.	५४	२५	७	९	६	९	१०	५	४३	३४
२७	३६	३	र.	६०	०	पू.भा	१०	२६	सि.	८	३३	तै.	२८	२२		८	१९	१	मी.			७	८	६	१०	१०	६	४४	११
२७	४१	३	चं.	०	१४	उ.भा	१५	३८	सा.	८	४७	ग.	०	१४		९	२०	२	मी.			७	७	६	११	१०	७	४४	४६
२७	४६	४	मं.	४	५०	रे.	२१	३७	शु.	९	४१	वि.	४	५०		१०	२१	३	मे.	२१	३७	७	६	६	१२	१०	८	४५	२०
२७	५१	५	बु.	१०	३	अ.	२८	२	शु.	१०	५८	बा.	१०	३		११	२२	४	मे.			७	५	६	१३	१०	९	४५	५२
२७	५६	६	गु.	१५	२७	भ.	३४	३६	ब्रं.	१२	२६	तै.	१५	२७		१२	२३	५	वृ.	५१	८	७	३	६	१४	१०	१०	४६	२१
२८	१	७	शु.	२०	३५	कृ.	४०	४४	ऐं.	१३	४२	व.	२०	३५		१३	२४	६	वृ.			७	२	६	१४	१०	११	४६	४७
२८	६	८	श.	२५	६	रो.	४६	१३	वै.	१४	३०	ब.	२५	६		१४	२५	७	वृ.			७	१	६	१४	१०	१२	४७	११
२८	११	९	र.	२८	४०	मृ.	५०	४१	वि.	१४	३८	कौ.	२८	४०		१५	२६	८	मि.	१८	२७	७	०	६	१५	१०	१३	४७	३३
२८	१६	१०	चं.	३१	५	आ.	५४	१	प्री.	१३	५१	गा.	३१	५		१६	२७	९	मि.			६	५९	६	१६	१०	१४	४७	५३
२८	२४	११	मं.	३२	१४	पुन.	५६	४	आ.	१२	१२	व.	१	४०		१७	२८	१०	क.	४०	३२	६	५८	६	१७	१०	१५	४८	१२
२८	२६	१२	बु.	३२	२	पु.	५६	५३	सौ.	९	३१	ब.	२	८		१८	१	११	क.			६	५५	६	१८	१०	१६	४८	२९
२८	३०	१३	गु.	३०	३६	श्ले.	५६	३०	शो.	५	५०	कौ.	१	१९		१९	२	१२	सिं.	५६	३०	६	५३	६	१९	१०	१७	४८	४४
२८	३५	१४	शु.	२८	१	म.	५५	०	अ.	१/५७	१२/४६	घ.	२८	१		२०	३	१३	सिं.			६	५२	६	२०	१०	१८	४८	५७
२८	४०	१५	श.	२४	२४	पू.फा	५२	४५	धृ.	४९	३३	व.	२४	२४		२१	४	१४	सिं.			६	५१	६	२१	१०	१९	४९	९

(फरवरी मार्च सन् १९५० ई०) उत्तरायणं दक्षिणगोलः
शिशिरर्तुः सा. मीनार्काद् वसन्तर्तुः

वक्री उ.षा.यां भृगुः ३६।५४ श्रवणे बुधः २१।५२
चन्द्रदर्शनम् शत. रविः ५५।४१ सा. मीने भानुः २८।१८
जमादि उलावल मु ५
भ. ३२।३२ उ० मार्गी भृगुः ४१।२५
भ. ४।५० या. पञ्चकसमाप्तिः २१।३७ गुरोरुदयः ९।३६ उ.गु.
[+ शनिः ३३।५ होलिकादहनम् (भद्रामुखं त्यक्त्वा)
श्रवणे भृगुः ४१।५८
भ. २०।३५ उ. ५२।५० या.
होलाष्टकारम्भः
धनिष्ठायां २ गुरुः २०।३१
धनिष्ठायां बुधः १०।३०
भ. १।४० उ. ३२।१४ या. आमला ११ व्र. सर्वेषाम्
मार्च ३ ता. ३१ बर्हस्पत्यमानेन शोभन संवत्सरारम्भः १९।४४
प्रदोष व्र.
भ. २८।१ उ. ५६।१२ या. कुम्भेबुधः ३५।४८ व. पू.फा.यां ३ +
पू. भायां रविः १०।४८ सत्यव्रतम्.

फाल्गुनशुक्ल ८ शनाविष्टम् ०।० दिनगणः ५४४०

[illegible]	सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
	१०	५	९	९	९	४	११	५
	१२	१५	२०	२६	१०	२३	१६	१६
	४७	४४	१२	२१	१२	५०	२	२
	११	१३	७	३२	२५	५६	१०	१०
	६०	९	८२	४५	१०	४	३	३
	२४	५४	१५	५१	१	५६	११	११
[illegible]		च.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]		ह.	श्र.	ध.	श्र.	[illegible]	[illegible]	ह.
	२	२	४	१	१	४	४	२

१२ रा | १० गु शु बु
१ | ११ सू. | ९
२ चं | ८
३ | ५ श | ७
४ | के ६ मं

इस पक्षमें घोड़ा आदि पशुओंका पीड़ा होय। गेहूँ चना जौ के भावमें विशेष घटा बढ़ी होकर मन्दा रहे, चावल-मूँगी सरसों-रूई चान्दी तेज़, मोती सोना चान्दी घी तेल केशर अफीम मन्दा होवे। ति. ४ से गुड़ अलसी नारियल तेज होकर फिर एक दम मन्दे गिरें पश्चिमी देशोंमें कोई भयानक विद्रोह होवे जहाजोंकी हानि। ति. १।२।४।५।६।७।१०।१२ को वर्षा होनेके योग हैं वायु भी प्रचण्ड बहेगी।

शकुन वि०—फाल्गुन सुदी जो सप्तमी वर्षा महाघन छाय। पांचम नव आसोज सुदी जल थल एक कराय॥ फाल्गुन सुदी जो पूर्णिमा गर्जें वर्षा होय। धान्य सातवें मासमें निश्चय मंहगा होय॥

फा० शु०१५ को शामके वक्त भद्रा रहित समय में होलीका पूजन और हवन करना चाहिये। होलीके दाहके समय यदि पूर्वकी हवा हो तो राजा प्रजामें सुख, नैऋत्य कोणकी हो तो दुर्भिक्ष, पश्चिम उत्तर और ईशानकी हो तो सुभिक्ष सुख, अग्निकोणकी हो तो अग्निभय, वायव्यकी हो तो वायु अधिक, ऊपरकी हो तो भय और यदि चारो तरफकी जोरदार हवा चले तो राजाओंमें युद्ध और प्रजा का नाश होता है।

फाल्गुनशुक्ल १५ शनाविष्टम् ०।० दिनगणः ५४४७

१२ रा | १० गु शु
१ | ११ बु सू | ९
२ | ८
३ | ५ चं श | ७
४ | मं ६ के

[illegible]	सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
	१०	५	१०	९	९	४	११	५
	१९	१४	०	२७	१२	२३	१५	१५
	४९	२४	३७	५८	१८	१७	३९	३९
	९	४०	३७	५२	११	४९	५६	५६
	६०	१३	९३	१३	२४	४	३	३
	१२	२०	१४	५२	४	५२	११	११
[illegible]		व.	मा.	मा.	मा.	व.	वं.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]		ह.	ध.	ध.	श्र.	[illegible]	[illegible]	ह.
	४	२	३	२	१	३	४	२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

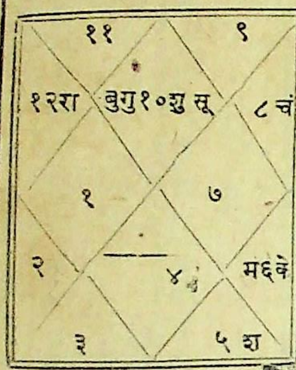
Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ शकः १८७१ फाल्गुनकृष्णपक्षः २२ — (फरवरी सन् १९५० ई०) उत्तरायणं दक्षिणगोलः शिशिरर्तुः

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि. माघ	अं. फरवरी	मु. [illegible]	चन्द्र सञ्चारः	घ.	प.	सू. उ. रेल्वे घ.	प.	सू. अ. रेल्वे घ.	प.	नित्य सूर्य स्पष्टः उदय-काले				
२६	३५	१	शु.	५०	१९	श्ले.	३७	१३	सौ.	४४	५०	बा.	२१	३३	२२	३	१४	सिं.	३७	१३	७	२०	५	५८	९	२०	३१	९	उ.षा.यां बुधः ४१।१३
२६	३९	२	श.	४६	५०	म.	३५	३२	शो.	३९	४	तै.	१८	३४	२३	४	१५	सिं.			७	१९	५	५९	९	२१	३२	८	
२६	४३	३	र.	४२	३०	पू.फा	३२	५८	अ.	३२	३७	व.	१४	४०	२४	५	१६	कं.	४७	१०	७	१९	५	५९	९	२२	३३	६	भ: १४।४० उ. ४२।३० या. धनि. रविः ४५।५८
२६	४६	४	चं.	३७	२८	उ.फा	२९	४५	सु.	२५	३४	ब.	९	५९	२५	६	१७	कं.			७	१९	६	०	९	२३	३४	१	श्रीगणेश ४ व्र.
२६	५०	५	मं.	३१	५७	ह.	२५	५९	धृ.	१८	६	कौ.	४	४३	२६	७	१८	तु.	५३	५६	७	१८	६	१	९	२४	३४	५५	
२६	५४	६	बु.	२६	७	चि.	२१	५२	शू.	१०	१९	व.	२६	७	२७	८	१९	तु.			७	१७	६	२	९	२५	३५	४८	भ. २६।७ उ. ५३।९ या. मकरे बुधः ७।३५
२६	५८	७	गु.	२०	१२	स्वा	१७	३९	गं.	५४	३४/३६	ब.	२०	१२	२८	९	२०	वृ.	५९	३३	७	१६	६	२	९	२६	३६	४२	श्रीसीता जन्माष्टमी (अर्द्धरात्र व्यापिनी ग्राह्य है)
२७	२	८	शु.	१४	२४	वि.	१३	३१	ध्रु.	४६	५७	कौ.	१४	२४	२९	१०	२१	वृ.			७	१५	६	३	९	२७	३७	३६	
२७	५	९	श.	८	५६	अनु	९	४२	व्या.	३९	३८	ग.	८	५६	३०	११	२२	वृ.			७	१५	६	४	९	२८	३८	२८	भ. ३६।२५ उ.
२७	९	१०	र.	३	५५	ज्ये.	६	२६	ह.	३२	४९	वि.	३	५५	१	१२	२३	ध.	६	२६	७	१४	६	५	९	२९	३९	१९	भ. ३।५५ या. सं.कुम्भेऽर्कः २०।१७ मु. ३० पुण्यं ४।७१ उप., ×
अवम्		११	र.	५५	४५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	× वक्री भौमः ४०।० धनि. १ गुरुः १०५०
२७	१३	१२	चं.	५६	१४	मू.	३	५०	व.	२६	४४	कौ.	२७	५७	२	१३	२४	ध.			७	१३	६	५	१०	०	४०	६	उ.भा.यां ४ राहुः हस्ते २ केतुश्च ५।३९
२७	१७	१३	मं.	५३	४९	पू.षा	२	५	सि.	२१	२२	ग.	२५	२	३	१४	२५	म.	१६	५४	७	१२	६	६	१०	१	४०	५१	भ. ५३।४९ उ. भौम प्रदोष व्र.
२७	२१	१४	बु.	५२	३५	उ.षा	१	२१	व्य.	१६	५०	वि.	२३	१२	४	१५	२६	म.			७	११	६	७	१०	२	४१	३४	भ. २३।१२ या. श्रीमहाशिवरात्रिव्रतम्
२७	२४	३०	गु.	५२	३६	श्र.	१	४५	व.	१३	१६	च.	२२	३५	५	१६	२७	कुं.	३२	३६	७	११	६	८	१०	३	४२	१६	पञ्चकारम्भः ३२।३६

फाल्गुनकृष्ण ८ शुक्रइष्टम् ०।० — दिनगग: ५४२५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	५	९	९	९	४	११	५
२७	१६	१	२२	१२	२४	१६	१६
३७	४४	४५	४८	८	५६	४९	४९
३६	२०	१४	५०	१०	१०	५०	५०
६०	०	५९	१४	२७	३	३	३
५४	३६	१२	४५	५८	५४	११	११
सौम्य	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ध.	ह.	उ.षा.	श्र.	श्र.	पू.फा.	रे.	ह.
२	३	२	४	१	४	१	३



इस पक्षमें सोना चान्दीमें तेजी। गेहूँ, ज्वार, मक्की जौ चनाके भावमें पहिले मन्दा ति० १० के बाद तेज रहे, गुड़ शक्करमें घटाबढ़ी रुख मन्दा, ऊनी, सूती, रेशमी वस्त्र कुछ सस्ते रहें। सरसों अलसी पहिले मन्दी, बादमें तेज, ति. ९ से रूईमें खासी तेजी हो। यहां फाल्गुण कृ. ६ को चित्रानक्षत्र का होना, अनाज की अच्छी उत्पत्ति का सूचक है। तिथि ५ से १२ तक ठंडी वायुका जोर और खंड वृष्टि होगी। श०वि०—फाल्गुण बदी तीज को जान। दीखे पवन मेघ प्रमान॥ आसोज शुदीमें वर्षाहोय। रात दिना वर्षे मन मोय। फाल्गुण कारीदूजदिन निर्मल रहे अकाश। श्रावणभादों जल बहु सुधर जाय चौमास॥

फाल्गुनकृष्ण ३० गुराविष्टम् ०।० — दिनगणः ५४३१

१२ रा — शु१० चंगु — बु — ११ सू — १ — ९ — २ — ८ — ३ — ५ श — ७ — ४ — ६ के मं

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	५	९	९	९	४	११	५
३	१६	८	२४	१०	२४	१६	१६
४२	३७	१९	१४	१५	२१	३०	३०
१६	३७	४४	२४	१८	५९	४५	४५
६०		७०	१४	१३	४	३	३
४२	१८	५१	१३	१६	१८	११	११
सौम्य	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ध.	ह.	उ.षा.	ध.	श्र.	पू.फा.	उ.भा.	ह.
४	२	४	१	१	४	४	२

फाल्गुन कृष्णमें शिवरात्रि व्रत अवश्य करना चाहिये इससे मनुष्यका कल्याण होता है। चाहे सौर हो अथवा वैष्णव या किसी और देवताके मानने वाला हो क्यों न हो वह शिवरात्रि व्रतके बिना किसी देवता की पूजाके फलको प्राप्त नहीं करपाता। शिवरात्रि की चतुर्दशी प्रदोषव्यापिनी ही ग्रहण करनी चाहिये। क्योंकि उस दिन रात्रिमें जागरण करना होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ शकः १८७१ फाल्गुनशुक्लपक्षः २३

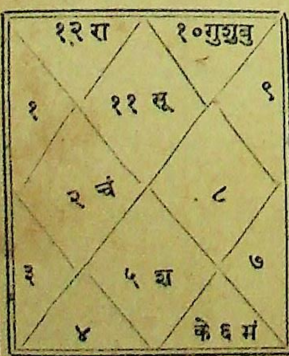
दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि. फाल्गु.	अं. फरवरी	मु. जमादि	चन्द्र सञ्चारः			सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्य सूर्य स्पष्टः उदय-काले			
२७	२८	१	शु.	५३	५७	ध.	३	२६	प.	१०	४४	कि	२३	१६	६	१७	२८	कुं.			७	१०	६	८	१०	४	४२	५६
२७	३२	२	श.	५६	३०	श.	६	२२	शि.	९	१२	बा.	२५	१४	७	१८	२९	मी.	५४	२५	७	९	६	९	१०	५	४३	३४
२७	३६	३	र.	६०	०	पू.भा	१०	२६	सि.	८	३३	तै.	२८	२२	८	१९	१	मी.			७	८	६	१०	१०	६	४४	११
२७	४१	३	चं.	०	१४	उ.भा	१५	३८	सा.	८	४७	ग.	०	१४	९	२०	२	मी.			७	७	६	११	१०	७	४४	४६
२७	४६	४	मं.	४	५०	रे.	२१	३७	शु.	९	४१	वि.	४	५०	१०	२१	३	मे.	२१	३७	७	६	६	१२	१०	८	४५	२०
२७	५१	५	बु.	१०	३	अ.	२८	२	शु.	१०	५८	बा.	१०	३	११	२२	४	मे.			७	५	६	१३	१०	९	४५	५२
२७	५६	६	गु.	१५	२७	भ.	३४	३६	ब्रं.	१२	२६	तै.	१५	२७	१२	२३	५	वृ.	५१	८	७	३	६	१४	१०	१०	४६	२१
२८	१	७	शु.	२०	३५	कृ.	४०	४४	ऐं.	१३	४२	व.	२०	३५	१३	२४	६	वृ.			७	२	६	१४	१०	११	४६	४७
२८	६	८	श.	२५	६	रो.	४६	१३	वै.	१४	३०	ब.	२५	६	१४	२५	७	वृ.			७	१	६	१४	१०	१२	४७	११
२८	११	९	र.	२८	४०	मृ.	५०	४१	वि.	१४	३८	कौ.	२८	४०	१५	२६	८	मि.	१८	२७	७	०	६	१५	१०	१३	४७	३३
२८	१६	१०	चं.	३१	५	आ.	५४	१	प्री.	१३	५१	ग.	३१	५	१६	२७	९	मि.			६	५९	६	१६	१०	१४	४७	५३
२८	२४	११	मं.	३२	१४	पुन.	५६	४	आ.	१२	१२	ब.	१	४०	१७	२८	१०	क.	४०	३२	६	५८	६	१७	१०	१५	४८	१२
२८	२६	१२	बु.	३२	२	पु.	५६	५३	सौ.	९	३१	ब.	२	८	१८	१	११	क.			६	५५	६	१८	१०	१६	४८	२९
२८	३०	१३	गु.	३०	३६	श्ले.	५६	३०	शो.	५	५०	कौ.	१	१९	१९	२	१२	सिं.	५६	३०	६	५३	६	१९	१०	१७	४८	४४
२८	३५	१४	शु.	२८	१	म.	५५	०	अ.	१ ५५	१२ ४४	व.	२८	१	२०	३	१३	सिं.			६	५२	६	२०	१०	१८	४८	५७
२८	४०	१५	श.	२४	२४	पू.फा	५२	४५	धृ.	४९	३३	ब.	२४	२४	२१	४	१४	सिं.			६	५१	६	२१	१०	१९	४९	९

(फरवरी मार्च सन् १९५० ई०) उत्तरायणं दक्षिणगोलः
शिशिरर्तुः सा. मीनार्काद् वसन्तर्तुः

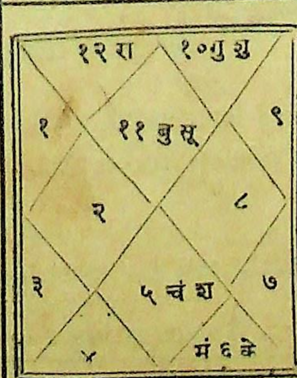
वक्री उ.षा.यां भृगुः ३६।५४ श्रवणे बुधः २१।५२
चन्द्रदर्शनम् शत. रविः ५५।४१ सा. मीने भानुः २८।१८
जमादि उलावल मु ५
भ. ३२।३२ उ० मार्गी भृगुः ४१।२५
भ. ४।५० या. पञ्चकसमाप्तिः २१।३७ गुरोरुदयः ९।३६ उ.गु.
[+ शनिः ३३।५ होलिकादहनम् (भद्रामुखं त्यक्त्वा)
श्रवणे भृगुः ४१।५८
भ. २०।३५ उ. ५२।५० या.
होलाष्टकारम्भः
धनिष्ठायां २ गुरुः २०।३१
धनिष्ठायां बुधः १०।३०
भ. १।४० उ. ३२।१४ या. आमला ११ व्र. सर्वेषाम्
मार्च ३ ता. ३१ बर्हस्पत्यमानेन शोभन संवत्सरारम्भः १९।४४
प्रदोष व्र.
भ. २८।१ उ. ५६।१२ या. कुम्भेबुधः ३५।४८ व. पू.फा.यां ३ +
पू. भायां रविः १०।४८ सत्यव्रतम्.

फाल्गुनशुक्ल ८ शनाविष्टम् ०।० दिनगणः ५४४०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	५	९	९	९	४	११	५
१२	१५	२०	२६	१०	२३	१६	१६
४७	४४	१२	२१	१२	५०	२	२
११	१३	७	३२	२५	५६	१०	१०
६०	९	८२	४५	१०	४	३	३
२४	५४	१५	५१	१	५६	११	११
[illegible]	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	ह.	अ.	ध.	अ.	[illegible]	[illegible]	ह.
२	२	४	१	१	४	४	२



फाल्गुनशुक्ल १५ शनाविष्टम् ०।० दिनगणः ५४४७



सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	५	१०	९	९	४	११	५
१९	१४	०	२७	१२	२३	१५	१५
४९	२४	३७	५८	१८	१७	३९	३९
९	४०	३७	५२	११	४९	५६	५६
६०	१३	९३	१३	२४	४	३	३
१२	२०	१४	५२	४	५२	११	११
[illegible]	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	ह.	ध.	ध.	अ.	[illegible]	[illegible]	ह.
४	२	३	२	१	३	४	२

इस पक्षमें घोड़ा आदि पशुओंको पीड़ा होय। गेहूँ चना जौ के भावमें विशेष घटा बढ़ी होकर मन्दा रहे, चावल-मूँगी सरसों-रूई चान्दी तेज़, मोती सोना चान्दी घी तेल केशर अफीम मन्दा होवे। ति. ४ से गुड़ अलसी नारियल तेज होकर फिर एक दम मन्दे गिरें पश्चिमी देशोंमें कोई भयानक विद्रोह होवे जहाजोंकी हानि। ति. १।२।४।५।६।७।१०।१२ को वर्षा होनेके योग हैं वायु भी प्रचण्ड बहेगी।

शकुन वि०—फाल्गुन सुदी जो सप्तमी वर्षा महाघन छाय। पांचम नव आसोज सुदी जल थल एक कराय॥ फाल्गुन सुदी जो पूर्णिमा गर्जे वर्षा होय। धान्य सातवें मासमें निश्चय मंहगा होय॥

फा० शु०१५ को शामके वक्त भद्रा रहित समय में होलीका पूजन और हवन करना चाहिये। होलीके दाहके समय यदि पूर्वकी हवा हो तो राजा प्रजामें सुख, नैऋत्य कोणकी हो तो दुर्भिक्ष, पश्चिम उत्तर और ईशानकी हो तो सुभिक्ष सुख, अग्निकोणकी हो तो अग्निभय, वायव्यकी हो तो वायु अधिक, ऊपरकी हो तो भय और यदि चारो तरफकी जोरदार हवा चले तो राजाओंमें युद्ध और प्रजा का नाश होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ शकः १८७१ चैत्रकृष्णपक्षः २४

(मार्च सन्१९५०ई०) उत्तरायणं दक्षिणगोलः वसन्तर्तुः

दि.मा		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि. फाल्गुन	अं. मार्च	मु.	चन्द्र सञ्चारः			सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्य सूर्य स्पष्टः उदय-काले				
२८	४५	१	र.	१९	५५	उ.फा	४९	३८	शू.	४२	४२	कौ.	१९	५५	२२	५	१५	कं.	६	५८	६	४९	६	२१	१०	२०	४९	१९	होला १ मेला श्री आनन्दपुर सा. आम्रपुष्पप्राशनम्
२८	५०	२	चं.	१४	४८	ह.	४५	५८	गं.	३५	२२	ग.	१४	४८	२३	६	१६	कं.			६	४८	६	२२	१०	२१	४९	२७	म. ४१।५९ उ.
२८	५५	३	मं.	९	११	चि.	४१	५७	वृ.	२७	४६	वि.	९	११	२४	७	१७	तु.	१३	५८	६	४७	६	२३	१०	२२	४९	३२	म. ९।११ या. शते. बुधः ४८।४६ श्रीगणेश ४ व्र.
२९	०	४	बु.	३	१८	स्वा.	३७	४३	ध्रु.	१९	५७	बा.	३	१८	२५	८	१८	तु.			६	४७	६	२४	१०	२३	४९	३५	
अवम्		५	बु.	५४	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
२९	५	६	गु.	५१	२८	वि.	३३	३६	व्या.	१२	७	ग.	२४	२४	२६	९	१९	वृ.	१९	३८	६	४४	६	२४	१०	२४	४९	३७	म. ५१।२८ उ. मेला श्रीशीतला कुराली
२९	१०	७	शु.	४५	५६	अ.	२९	४२	ह.	५७	२८	वि.	१८	४२	२७	१०	२०	वृ.			६	४३	६	२५	१०	२५	४९	३७	म. १८।४२ या. श्री शीतला पूजनम्
२९	१५	८	श.	४०	५५	ज्ये	२६	१६	सि.	५०	१६	बा.	१३	२६	२८	११	२१	ध.	२६	१६	६	४३	६	२५	१०	२६	४९	३४	
२९	२०	९	र.	३६	३९	मू.	२३	२८	व्य.	४४	२	तै.	८	४७	२९	१२	२२	ध.			६	४२	६	२६	१०	२७	४९	२९	धनिष्ठायां ३ कुम्भे गुरुः ५३।४२
२९	२५	१०	चं.	३३	१२	पू.षा	२१	३५	व.	३८	२८	व.	४	५६	३०	१३	२३	म.	३६	२०	६	४१	६	२७	१०	२८	४९	२१	म. ४।५६ उ. ३३।१२ या. पूर्वेस्तो बुधः ३३।१३
२९	३०	११	मं.	२३	४७	उ.षा	२०	३४	प.	३३	४५	ब.	२	०	१	१४	२४	म.			६	३९	६	२७	१०	२९	४९	१२	सं.मीनेऽर्कः १०।३५ मु.४५ पुण्यं १०।३५ उप. पापमोचनी ११ व्र. स.
२९	३५	१२	बु.	२९	३४	श्र.	२०	४३	शि.	२९	५७	कौ.	०	११	२	१५	२५	कुं.	५१	२४	६	३८	६	२८	११	०	४९	०	पू. भा. यां बुधः ३७।११ पञ्चकारम्भः ५१।२४
२९	४०	१३	गु.	२९	३७	ध.	२२	५	सि.	२७	१२	व.	२९	३७	३	१६	२६	कुं.			६	३८	६	२९	११	१	४८	४५	म २९।३७ उ. प्रदोष व्र. वारुणीपर्व २९।५ उप.
२९	४५	१४	शु.	३०	१९	श.	२४	४६	सा.	२५	२३	वि.	०	१८	४	१७	२७	कुं.			६	३७	६	३०	११	२	४८	२९	म, ०।१८ या. उ. भा. यां रविः ३१।४१ मेला पृथूदक (पिहोवा)
२९	५०	३०	श.	३३	१३	पू.भा	२८	३६	शु.	२४	३५	च.	२	६	५	१८	२८	मी.	१२	३९	६	३५	६	३०	११	३	४८	११	मन्वादिः चान्द्रसंवत्सरसमाप्तिः

चैत्रकृष्ण ८ शनाविष्टम् ०।० दिनगणः ५४५४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	५	१०	९	९	४	११	५
२६	१२	११	२९	१५	२२	१५	१५
४९	३९	५९	३४	४०	४४	१७	१७
३४	३२	३१	३७	४१	३५	४१	४१
५९	१६	१००	१३	३०	४	३	३
५७	३०	४१	३७	१६	५५	११	११
सौम्य	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा ३	ह. १	श. २	ध. २	श्र. २	पू.फा ३	उ.भा ४	ह. २

१२ रा — गु १० शु
१ — सू ११ बु — ९
२ — ८ चं
३ — ५ श — ७
४ — मं ६ के

इस पक्षमें वायुका जोर रहेगा रूई का भाव मन्दा, और चान्दीमें कुछ मन्दी होकर बादमें तेजी हो घी तेल रसकसमें तेजी अफीम मन्दी। गेहूँ जौ चना का भाव तेज गौ बैल सस्ते काले रगके पशुओं में तेजी। प्रजामें ग्राम ग्राममें क्लेश ति. १० से सरसों अलसी का भाव तेज रहकर मन्दा हो, लाल रंगके पदार्थ गुड़ तेल नरम होकर तेज रहे। कोयला लकड़ी तेज हो। ति. १० से १३ तक कहीं२ बादल चाल बून्दा बान्दीके योग हैं।

शकुन विचार—चैत्र बदी प्रतिपदा को गर्जे मेघ अपार, श्रावण भादवके विषे अनावृष्टि निरधार। चौथ पञ्चमी चैत्र वदि, वर्षे और चले वाय। पड़े काल उस देश में ऐसा योग बताय ॥ मङ्गला—

चैत्रकृष्ण ३० शनाविष्टम् ०।० दिनगणः ५४६१

१ — के ११ — बु
२ — शु १२ रा — १० गु
३ — ९
४ — के ६ मं — ८
५ श — ७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	१०	१०	९	४	११	५
३	१०	२४	१	२०	२२	१४	१४
४८	३५	१७	८	१८	११	५५	५५
११	२४	२०	२	१४	४२	२७	२७
५९	१८	१०१	१३	४३	४	३	३
४२	३६	१९	१२	५१	१९	११	११
सौम्य	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा १	ह. १	पू.भा २	ध. १	श्र. ४	पू.फा ३	उ.भा ४	ह. २

चन्द्रमौलि शंकर चरण वार २ शिर नाय। संवत् यह पूर्ण कियो गिरा गणेश मनाय ॥ चैत्र कृष्ण १ भृगुवार को "आम्रमग्र्यं वसन्तस्य माकन्दकुसुमन्तव। सचन्दनं पिबाम्यद्य सर्वकामार्थसिद्धये" इस मन्त्रसे आमकी मञ्जरी खाने और चाण्डाल स्पर्श करने का बड़ा माहात्म्य है।

पृष्ठ ३३ से ५६ तक तथा ६५ से ७२ तक—ज्योतिष प्रकाश प्रेस, काशी में छपा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सर्व शुभ कार्यों के लिये वर्जित काल---जन्ममास, जन्मतिथि, जन्मनक्षत्र, व्यतिपात, भद्रा, वैधृति, अमावस्या, माता पिता के श्राद्ध का दिन, तिथि-वृद्धि, तिथिक्षय, अधिक तथा क्षयमास, गुरु शुक्र का अस्त तथा इनका बाल-वृद्धत्व, १३ दिन का पक्ष, कुलिकयोग, अर्द्धयाम, महापात, विष्कुम्भ और वज्र योग के आदि की ३ घड़ियां, परिघयोग का आधा भाग, शूलयोगके आदि की ५ घड़ियां,गण्ड और अतिगण्ड के आदिकी ६ घड़ियां और व्याघातयोग के आदि की ९ घड़ियां ये सब शुभकार्यों में वर्जित हैं। मध्याह्न या मध्य रात्रि से पहले और पीछे के दस दस पल पापग्रह, का नवांशक ग्रहण के पहले के तीन दिन उत्पात और ग्रहण के पीछे के सात दिन (किसी के मत से ५ दिन, ३ दिन या ५ मूहूर्त) वर्जित हैं; स्वराशि से ४।८।१२ वां चन्द्रमा तथा पाप ग्रह से युक्त चन्द्र व लग्न और नवांश के भी वर्जित हैं। सब शुभ कार्यों के लिये साधारणतः शुभमुहूर्त---अपने जन्मलग्न या जन्मराशि से ३।६।१०।११ वीं राशि लग्न में हो, शुभग्रह से युक्त व दृष्ट हो, लग्न से ८।१२ स्थान में कोई ग्रह न हो तो सब शुभकार्यों का आरम्भ सिद्धिदायक है ॥

गुरु शुक्र के अस्त में वर्जित कर्म---बावली, बगीचा,तालाब, कूप मकान; इनका आरम्भ और इनकी प्रतिष्ठा, व्रतारम्भ और व्रतोद्यापन, महादान, गोदान, प्रथमश्रावणीकर्म, नीलवृषभत्याग, मुंडनसंस्कार, देवतास्थान, दीक्षा यज्ञोपवीत, विवाह अपूर्वदेवतीर्थदर्शन, सन्यास, अग्निहोत्र, अभिषेक, समावर्तन, चातुर्मास्ययाग, कर्णवेध, विद्यारम्भ; इन कर्मों को गुरु शुक्र के अस्त में तथा इनके बाल्य-वार्धक्य में नहीं करना चाहिये ॥ सीमन्तजातकादीनि प्राशनान्तानि यानि च ॥ न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरुशुक्रयोः ॥

गुरु शुक्र का बाल्य वृद्धत्व---शुक्र पश्चिमोदय के बाद १० दिन, पूर्वोदय के बाद ३ दिन बाल्य होता है। इसी प्रकार अस्त प्रथम पश्चिम में ५ दिन और पूर्व में १५ दिन वृद्धत्व होता है। गुरु का बाल्य तथा वृद्धत्व १५ दिन का ही होता है। एक आचार्य का मत है कि आवश्यक कर्म में गुरु शुक्र के बाल्य-वृद्धत्व का ३ दिन ही दोष मानना। इसी प्रकार चन्द्रमा का बाल्य आधे दिन, वृद्धत्व दोष ३ दिन मानना।

जन्मचन्द्र प्रशंसा---कृषिभवनविवाहेऽन्नाशने मौञ्जिबन्धे, प्रथमयुवतिसंगारामकूपादिकृत्ये। पटविधिमभिषेके जन्मचन्द्रः प्रशस्तः, इति वदति वराहः क्षौरयात्रां विहाय ॥ द्वादशचन्द्रप्रशंसा---गर्भाधाने जन्मकालेऽभिषेके मौञ्जिबन्धने। पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः ॥

किस कार्य में किस ग्रह का बल देखना

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	एषां बलम्
नृप दर्शने	सर्वसत्कार्ये	संग्रामे	विद्याभ्यासे	विवाहे चोत्सवे	यात्रायां	दीक्षायां	पापकर्मणि	क्रूरकृत्ये	एतत् कृत्येषु

भद्रायां मुखपुच्छघटीज्ञानम्

भद्रायां कार्याकार्य निर्णयः--वधबन्धविषाग्न्य स्त्रच्छेदनोच्चाटनादि यत् ॥ तुरंगमहिषोष्ट्रादि कर्म विष्टयां तु सिद्धयति ॥ न कुर्यान्मंगलं विष्टयां जीवितार्थी कदाचन। कुर्वन्नज्ञस्तदा क्षिप्रं तत् सर्वं नाशतां व्रजेत् ॥ आवश्यके परिहारः---दिवा परार्द्धजाविष्टिः पूर्वार्द्धोत्था यदा निशि। तदा विष्टिः शुभायेति कमलासनभाषितम् ॥

४	८	११	१५	३	७	१०	४	आसां तिथीनाम्
प.	आ.	उ.	नै.	ई.	द.	वा.	पू.	आसु दिग्विदिक्षु
५	२	७	४	८	३	६	१	एषु यामेष्वादौ
५	५	५	५	५	५	५	५	विष्टेर्मुखघटी ५ कृष्णे शुभम्
८	१	६	३	७	२	५	४	एषु यामेष्वन्त्यम्
३	३	३	३	३	३	३	३	घटीत्रयं पुच्छं शुक्ला शुभम्

गुर्वादित्यविचारः---एकर्क्षे गुर्वर्के व्रतबन्धोद्वाहकादयः सर्वे। न शुभफलदाश्च गदिता अस्तमितेज्येऽनर्थदः प्रोक्तः, (भृगुः) एकराशौ गुरुसूर्यौ न विवाहः कदाचन। ऋक्षान्तरे गुरुसूर्यौ तदा दोषो विनश्यति। सिंहे गुरौ गते कार्यो न विवाहे कदाचन। मेषस्थिते दिवानाथे सिंहेज्ये च शुभप्रदः ॥ आवश्यके परिहारः---मघादि पञ्चपादेषु गुरुः सर्वत्र निन्दितः। गंगागोदान्तरं हित्वा शेषांघ्रिषु न दोषकृत् ॥ नीचराशि (मकर) गतो जीवः प्रशस्तः सर्वकर्मसु। नीचांशकगतस्त्याज्यो यस्मादंशेषु नीचता ॥ यात्रोद्वाहो प्रतिष्ठाञ्च गृहचूड़ाव्रतादिकम्। वर्जयेद्यत्नतश्चैव जीवे वक्रातिचारगे। अपवादः---अतिचारे सप्तदिनं वक्रे द्वादशमेव च। नीचस्थितेऽपि वागीशे मासमेकं विवर्जयेत् ॥ अन्यच्च---वक्रे सुरेज्ये स्वगृहे दिनत्रयम्। वर्ज्यं मुनीन्द्रैरखिलेषु कर्मसु (मुहूर्तकल्पद्रुमे) ॥

ताराबलविचारः---कृष्णाष्टम्यूर्ध्वतो ग्राह्यं दशाहं तारकाबलम्। परतोऽब्जबलं ग्राह्यं सर्वमंगलकर्मसु ॥ ताराऽपवादः---पर्याये प्रथमे वर्ज्यः विपत्प्रत्यारिनैधनाः। द्वितीये त्वंशका वर्ज्याः तृतीये त्वखिलाः शुभाः। आद्यंशो विपदि त्याज्यः प्रत्यरे चरमोऽशुभः। वधस्त्याज्यस्तृतीयोंऽशः शेषा अंशास्तु शोभनाः।

अथ शुभाशुभ-ताराज्ञानाय चक्रम्

जन्म नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें। गणनानुसार जन्मादि तारा तथा शुभादि फल समझें।

१।१०।१९	२।११।२०	३।१२।२१	४।१३।२२	५।१४।२३	६।१५।२४	७।१६।२५	८।१७।२६	९।१८।२७
जन्म	संपत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	परममित्र
शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	शुभ

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आवश्यक मुहूर्त

गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त

शुभ तिथियां—१,२,३,५,७,१०,११,१२,१३ । शुभ नक्षत्र—तीनों उत्तरा. मृ. ह. अनु. रो स्वा. श्र. ध. श. । शुभ लग्न—जब लग्न और ४,५,७,९,१० स्थानों में शुभग्रह हों, ३,६,११ स्थानों में पापग्रह हों, सूर्य मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांशक में चन्द्रमा हो रजोदर्शनकाल समरात्रि हैं ॥

चित्रा पुन. पुष्य. अश्विनी नक्षत्र गर्भाधान के लिये मध्यम हैं ।

गर्भाधान के लिये अशुभ काल

भद्रा, ४, ६, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रांति का दिन, संध्याकाल, मंगल रवि शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहिली चार रात्रियां, ज्येष्ठा रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो घड़ी, मूल अश्विनी और मघा के आदि की २ घड़ी, ४, ८, १२, लग्नों के अन्त की आधी घड़ी, ५, ९, १ लग्नों के आदि की आधी घड़ी, ५, १०, १५ तिथियों के अन्त की एक घड़ी, ६, ११, १ तिथियों के आदि की एक घड़ी, निधनतारा, जन्म नक्षत्र मूल भरणी अश्विनी रेवती मघा नक्षत्र, ग्रहण के दिन, व्यतिपात वैधृतियोग, माता पिता के श्राद्ध का दिन, दिन का समय, परिघयोग का आधा भाग, उत्पात से हत नक्षत्र, जन्मराशि से अष्टमलग्न, पापग्रहयुक्त लग्न तथा नक्षत्र गर्भाधान के लिये वर्जित हैं ॥

गर्भ के मासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी		मंगल	गुरु	सूर्य	चंद्रमा	शनि	बुध	गर्भाधानसमयकाललग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

स्त्री पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

विवाह और गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चन्द्रबल देखना चाहिये और अन्य कर्मों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिये, यह सदा स्मरण रक्खें ।

पुंसवन का मुहूर्त—गर्भाधान से तीसरे मास में गुरु रवि मंगलवार को मृ. पुन. पु. ह. मूल और श्रवण नक्षत्र में १, २, ३, ५,७,१०,११,१३,१५ तिथियों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९ और १० स्थानों में शुभग्रह और ३, ६, ११ स्थान में पापग्रह हों तब शुभ होता है । तीनों उत्तरा रोहिणी और रेवती नक्षत्र तथा सोम बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं ॥

सीमन्त संस्कार का मुहूर्त—गर्भाधान से छठे या आठवें मास में जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त में कही गई तिथियों वारों नक्षत्रों और लग्नों में सीमन्त शुभ होता है ॥

गर्भरक्षा के लिये विष्णुपूजा—गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में, शुभ लग्न वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब विष्णु की पूजा करनी चाहिये ॥

मेधाजनन संस्कार—बालक उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहिले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगा के सुवर्ण सहित अंगुली से शहत और गौ के घी को मिला के "ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि" इन चारों मन्त्रों से बालक को थोड़ा २ चार बार मधु घृत चटावे, ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है ।

स्तनपान कराने व सूतिका पथ्य का मुहूर्त—रिक्तामा भद्रा व्यतिपात वैधृति को छोड़ कर शुभ तिथियां हों, वार चं. बु. गु. श. हों, नक्षत्र मृग. पुन. पु. ह. श्र. रे. मृ. हों तब स्तनपान कराना शुभ है । आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि नक्षत्रों में सूतिका पथ्य शुभ है ॥

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त —रेवती तीनों उत्तरा रो. मृ. ह. स्वा. अश्विनी और अनुराधा नक्षत्रों में, रवि गुरु और भौम वारों में, १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं । आर्द्रा पुन. पु. श्र. म. भ. कृ. वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य हैं । अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं ॥

प्रसूता स्त्री के जलपूजन का मुहूर्त—मास समाप्त होने पर बुध गुरु या चन्द्र वार की ४, ९, १४ तिथियों को छोड़ कर अन्य तिथियों में श्र. पुन. पु. मृ. ह.मू. अनु. नक्षत्रों में जल पूजन उत्तम है; परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में चैत्र पौष या अधिक मास पूरा होने पर भी जलपूजन न करना चाहिये ।

जातकर्म और नामकर्म का मुहूर्त—संक्रान्ति का दिन भद्रा और व्यतिपात को छोड़ कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ तिथियों में जन्म काल से ११वें या १२वें दिन सोम बुध गुरु और शुक्रवार को मृ. रे. चि. अनु.तीनों उत्तरा रो. ह. अश्विनी पुष्य अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. नक्षत्रों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तब शुभ होता है ॥

अथ दोला (झूला) रोहण मुहूर्त

सूर्यनक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५	५	५	५	७
नैरुज्य	मरण	कृशता	व्याा	ेस्य

जन्म दिन से १०।१२।१६।१८।३२ वें दिन, शुभवार में, मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. तीनों उत्तरा. रो. नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन से रहित तिथियों में १।४।७।१० इन लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर (१।४।५।६।७।९।१०।११ वें शुभग्रह हों ३।६।११ पापग्रह हों तो) उत्तम ेता है ॥

निष्क्रमण मुहूर्त—स्वा. अश्वि. पुष्य. ह. मृ. पुन. अनु. श्र. रो. ध. नक्षत्रों में, भौम शनि को छोड़ कर अन्य वारों में, रिक्ता अमा भद्रादि से रहित शुभदिन में, तीसरे चौथे मास में शुभ है । शीघ्रता होवे तो १२ वें दिन बालक का निष्क्रमण करे, इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजनपूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करावें ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भम्युपवेशनमुहूर्त---पांचवें महीने में पृथ्वी वराह का पूजन कर, भौम के पूर्णबल में तीनों उत्तरा. रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह. पुष्य. अभि. इन नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़ कर स्थिरलग्न में शुभ दिन में बालक के कर्धनी (कटिसूत्र) बांध कर पृथ्वी पर बिठलावें ।

तत्र मन्त्र:---रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे । आयु:प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये ! इति ।। इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रक्खें, जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी जीविका होती है ।।

अन्नप्राशन का मुहूर्त---जन्म मास से ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११ वें कन्या का भद्रादिदोषरहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में सोम बुध गुरु और शुक्रवार को मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्विनी पु. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा रोहिणीनक्षत्रों में, जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़ कर ऐसे लग्न में कि १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों या शुभग्रह की दृष्टि हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, दशम स्थान पापग्रह रहित हो, १, ६, ८ स्थानों में चन्द्रमा न हो तो शुभहोता है । किसी २ के मत से जन्मनक्षत्र अनु. शततारा और स्वाती अशुभ हैं ।।

कर्णवेध का मुहूर्त---चैत्र पौष देवशयन (आषाढ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक) जन्म-मास जन्म-नक्षत्र ४, ९, १४ तिथियां जन्मतारा क्षयतिथि और समवर्षों को छोड़ कर जन्म से १२ वें दिन या १६ वें दिन या ६वें, ७ वें ८ वें, मास या विषम वर्षों में सोम, बुध गुरु शुक्रवार को, श्र. ध. पुन. मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्विनी पुष्य अभिजित नक्षत्रों में, जब लग्न से अष्टमस्थान शुद्ध हो, १, ४, ५, ७, ९, १० स्थान में शुभग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पाप हों, तुला वृष धन या मीन लग्न में बृहस्पति हो तो कर्णछेदन श्रेष्ठ है ।।

कन्या का नासिकाछेदन मुहूर्त---कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत. स्वा. में शुभ तिथ्यादिक शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम पहर के समय नासिकावेध शुभ है ।

मुण्डन का मुहूर्त---गर्भाधानकाल से या जन्म काल से विषम अर्थात् ३रे, ५वें, ७वें वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोड़ कर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र बुध गुरु और शुक्रवार लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टमलग्न को छोड़, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, तिथियों में संक्रान्ति के दिन को छोड़, जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, ज्ये, मृ. रे. चि. स्वा. पुन. श्र. ध. शत. ह. अश्वि. पुष्य और अभिजित नक्षत्रों में शुभ है । लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु ५ वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिये निषेध नहीं है । जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए ।।

मुण्डकर्म में विशेष---स्वकुलशिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र तिथ्यादि शुद्ध समय में अपने २ इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, सो ---"यथाकुलधर्मंवः" इस स्मृति के स्मरण से ठीक ही है ।।

क्षौर बनवाने का मुहूर्त---मुण्डन के लिये जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाये गये हैं वेही हजामत बनवाने के लिये शुभ हैं । वर्जित काल---शनि रवि भौमवार हजामत से नोवें दिन, सन्ध्याकाल, ४, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रान्ति का दिन, रात्रि में, बिना आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवा कर या भोजन के पीछे हजामत बनवाना अशुभ ह ।।

विशेष फल---यज्ञ, विवाह, मृतक कर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय हजामत बनवाई जा सकती ह ।। किसी किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे और रूपजीवी जसे नट भांड इत्यादि वह किसी भी दिन हजामत बनवा सकते हैं ।। वर्णभेद से क्षौर का वार---ब्राह्मण रविवार को, क्षत्रिय भौमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं ।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त---जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायणसूर्य में गणेश, विष्णु सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम बुध गुरु और शुक्र वार को, ह० अश्विनी पुष्य अभि० श्र० स्वा० रे० पुन० आर्द्रा चित्रा अनुराधा नक्षत्रों में, बुरे योगों और भद्रा को छोड़ कर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है, लग्न में मेष कर्क तुला और मकर राशियां न होनी चाहियें ।।

विद्यारम्भ का मुहूर्त---उत्तरायण में (कुम्भ का सूर्य छोड़ कर) रवि बुध गुरु और शुक्रवार को, २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में, मृ० आर्द्रा पुन० हस्त चि० स्वा०श्र० ध० शत० अश्विनी मू० तीनों पूर्वा० तीनों उत्तरा, रो० पुष्य आश्ले० अनु० रेवती नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ ह ।।

फारसी अंग्रेजी विद्यारम्भ का मुहूर्त---सू० भौम शनिवार हों, ४।९।१४ तिथि हों, ज्ये० आश्ले० म०, तीनों पूर्वा० भ० कृ० वि० आर्द्रा उषा० शत० नक्षत्र शुभ हैं ।।

सीने परोने (सूचीकर्म) का मुहूर्त---अश्वि० पुन० चि० अनु० ध० ये नक्षत्र सूर्य बुध चन्द्र बृ० शु० ये वार १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ ये तिथियें शुभ हैं ।।

यज्ञोपवीत संस्कार का मुहुर्त---यज्ञ और उपवीत इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है, देवताओं की पूजा संगति (सम्मेलन का कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हो उसे यज्ञ कहते हैं । उपवीत के अर्थ हैं पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा सम्मेलन और दान केसाथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत तन्तु-(धागा)-विशेष यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ । बालक को गुरु चन्द्र शुद्धि देख कर जन्म से या गर्भ से (गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः) ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११ वें, वैश्य १२ वें इन वर्षों में यदि न किया जाय तो ब्राह्मण १६ तक क्षत्रिय २२ तक और वैश्य २४ वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं, उसके बाद सावित्रीपतितव्रात्य संज्ञा वाले होते हैं । माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह. अश्वि. पुष्य अभि. तीनों उत्तरा रो. आश्ले. स्वा. श्र. ध. मू. मृ. रे. चि. अनु. तीनों पूर्वा. आर्द्रा वेधरहित इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय वैश्यों के लिये पुनर्वसु भी ग्राह्य है) सू. चं. बु. (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य है) श. गुरुवार को, शुक्ल २।३।१०।११।१२ तथा कृष्ण २।३।५ तिथियों में शुभ है । किन्तु सोपपदा तिथि जैसे आषाढशुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघ शुक्ल १२ को और संक्रान्ति दिन को तथा रोगबाण को छोड़ कर मध्यान्ह के पहिले शुभ है । शु. गु. चं. और लग्नेश ६।८वें स्थान में चं. शु. १२ वें स्थान में और १।५।८.पापग्रह अशुभ हैं । शुभग्रह ६।८।१२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में पापग्रह ३।६।११ स्थानों में वृष या कर्क का पूर्णचन्द्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है । गुरु शुक्र के बाल वृद्ध अस्त के समय को छोड़ कर उपनयन शुभ है ।

(शेष पृष्ठ ६३ पर दूसरे कालम के नीचे देखें)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

योनिनाड्यादि ज्ञान चक्रम्

नक्षत्र	योनि	महावर योनि	नाड़ी	गणः	मुख	नेत्र	संज्ञा	स्वरूप	कितने तारा साथ में	पंच शला० सेविद्ध	सप्त शलाका में विद्ध	विष घटीके म. घ्रु.
अ.	अश्व	महिष	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्र लघु	अश्वमुख	३	पूफा	पूफा	५०
भ.	गज	सिंह	मध्य	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्र क्रूर	योनि	३	अनु.	म.	२४
कृ	मेष	वानर	अन्त्य	राक्षस	अधो.	सुलो.	मिश्रसाधा	क्षुर	६	वि.	श्र.	३०
रो	सर्प	नकुल	अन्त्य	मनुष्य	उर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शकट	५	अभि.	अभि.	४०
मृ.	सर्प	नकुल	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदुमंत्र	मगमुख	३	उषा	उषा.	१४
आ.	श्वान	मृग	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	मध्य	तीक्ष्णदारु	मणि	१	पूषा.	पूषा.	२१
पुन.	मार्जार	मूषक	आदि	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	गृह	४	मू.	मू.	३०
पु.	मेष	वानर	मध्य	देव	ऊर्ध्व	अंध	क्षिप्र लघु	बाण	३	ज्ये.	ज्ये.	२०
आश्ले.	मार्जार	मूषक	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मंद	तीक्ष्णदारु	चक्र	५	ध.	अनु.	३२
म.	मूषक	मार्जार	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मध्य	उग्र क्रूर	गृह	५	श्र.	भ.	३०
पूफा.	मूषक	मार्जार	मध्य	मनुष्य	अधो.	सुलो.	उग्र क्रूर	मंचक	२	अश्वि	अश्वि.	२०
उफा.	गौ	व्याघ्र	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शय्या	२	रे.	रे.	१८
ह.	महिष	अश्व	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्र लघु	कर	५	उभा	उभा.	२१
चि.	व्याघ्र	गौ	मध्य	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	मृदु मैत्र	मुक्ता	१	पूभा.	पूभा.	२०
स्वा.	महिष	अश्व	अन्त्य	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	मंगा	१	श.	श.	१४
वि.	व्याघ्र	गौ	अन्त्य	राक्षस	अधो.	अंध	मिश्रसाधा.	तोरण	४	कृ.	ध.	१४
अनु.	मृग	श्वान	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदुमैत्र	बलिनिभ	४	भ.	आश्ले	१०
ज्ये.	मृग	श्वान	आदि	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	तीक्ष्णदारु	कुंडल	३	पुष्य	पु.	१४
मू.	श्वान	मृग	आदि	राक्षस	अधो.	सुलो.	तीक्ष्णदारु	सिंहपुच्छ	११	पुन.	पुन.	५६
पू.षा.	वानर	मेष	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	उग्र क्रूर	गजदंत	२	आ.	आ.	२४
उ.षा.	नकुल	सर्प	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	मंद	ध्रुवस्थिर	मंचक	२	मृ.	मृ.	२०
अभि.	नकुल	सर्प	०	०	०	मध्य	क्षिप्रलघु	त्रिकोण	३	रो.	रो.	०
श्र.	वानर	मेष	अन्त्य	देव	ऊर्ध्व	सुलो.	चरचल	वामन	३	म.	कृ.	१०
ध.	सिंह	गज	मध्य	राक्षस	ऊर्ध्व	अंध	चरचल	मर्दुल	४	आश्ले	वि.	१०
श.	अश्व	महिष	आदि	राक्षस	ऊर्ध्व	मंद	चरचल	वर्तुल	१००	स्वा.	स्वा.	१८
पूभा.	सिंह	गज	आदि	मनुष्य	अधो	मध्य	उग्रक्रूर	मंचक	२	चि.	चि.	१६
उ.भा.	गौ	व्याघ्र	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	सुलो.	ध्रुवस्थिर	यमलाभ	२	ह.	ह.	२४
रे.	गज	सिंह	अन्त्य	देव	तिर्यक्	अंध	मृदुमैत्र	मृदंग	३२	उफा.	उफा.	३०

इस चक्र से नक्षत्र जानने पर ही योनि नाड़ीगण आदि मालूम हो सकते हैं, पञ्चशलाका व सप्तशलाका वेध भी ज्ञात हो सकता है, जिस नक्षत्र का तारा आकाश में देखना है तो उसके समीप कितने तारे हैं उसका रूप कैसा है यह भी इस चक्र से जान सकते हैं॥

मेलापक सारिणो देखने की रीति

मुहूर्तशास्त्रोक्त गुण दोषों के अनुसार आगे वर-कन्या मेलापक सारणी एकत्र की हुई दी जाती है। देखने वाले को वर-कन्या के नक्षत्र और चरणमात्र के जानने की आवश्यकता है। कन्या के नक्षत्र पड़े और वर के खड़े स्तम्भ में मिलेंगे। जब नक्षत्र और चरण दोनों के मिलें तो देखिये कि खड़े और पड़े स्तम्भ किस कोष्ठक पर जाकर मिलते हैं। जिस कोष्ठक में मिलें उसमें गुणों की संख्या दी हुई है। बस उतने ही गुण मिलते हैं। गुणों वाली संख्या के नीचे उसी खाने में प्रायः कोई संख्या वा चिन्ह भी है। उसका विवरण यह है कि---एक नाड़ीदोष की जगह (३), गण-महादोष की जगह (१), भकूट महादोष षडष्टक में (६), नव-पञ्च में (५), द्विर्द्वादश में (४), और योनिवैर में (२), जहां कन्या का नक्षत्र वर के नक्षत्र से पहिले है वहां शून्य (०) रक्खा है। जहां थोड़ा दोष समझा गया वहां ऋण का (−) और जहां अधिक समझा गया वहां धन का चिन्ह (+) दिया गया है। गुणों की संख्या के नीचे कोई अंक वा चिन्ह नहीं है वहां निर्दोष समझना चाहिये। जैसे वर का जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में और कन्या का जन्म आर्द्रा के दूसरे चरण में हुआ हो तो इन नक्षत्रों के पड़े और खड़े स्तम्भ जहां मिलते हैं वहां ऊपर १२ और नीचे १३५ लिखा है, जिससे यह समझना चाहिये कि ३६ गुणों में केवल १२ गुण मिलते हैं और गण महादोष, नाड़ीदोष और भकूट का नवम पञ्चम दोष है इस लिये सम्बन्ध अशुभ है। यदि भकूट दोष न हो तो २० गुण मिलने पर मध्य और इससे अधिक मिले तो श्रेष्ठ हैं। परन्तु दुष्ट भकूट में २५ गुण तक मध्यम और इसके ऊपर श्रेष्ठ समझना चाहिये। शुभ भकूट में १६ गुण से कम हो और दुष्ट भकूट में २० गुण से कम हो तो विवाह के लिये विचार न करना चाहिये। क्योंकि अशुभ है, एक नक्षत्र में पादभेद हो तो नाड़ीदोष नहीं माना जाता।

आवश्यके दोषदानम्---ट्कें ताम्रसुवर्णमष्टरिपुके गोयुग्मम-थीकके। रौप्यं कांस्यमथैकनाड़ियुजि गोस्वर्णादि दत्वोद्वहेत्॥

अपवाद---न वर्गवर्णो न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षडष्टके वा। तारा- विरुद्धे नव पञ्चमे वा राशीशमैत्री शुभदा विवाहे॥ कन्या के नक्षत्र से वर का नक्षत्र दूसरा हो तो वर का नाशक है, ग्रह मैत्री और योनि मिलती हों तो इसका भी दोष नहीं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

मेलापक सारणी

कन्यायाः	वरस्य	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
	भानि	अ. १	भ. १	कृ. ।	कृ. ।।।	रो. १	मृ. ।।	मृ. ।।	आ. १	पुन. ।।।	पुन. ।	पु. १	श्ले. १	म. १	पूफा १	उफा ।	उफा ।।।	ह १	चि. ।।	चि. ।।	स्वा १	वि. ।।।	वि. ।	अ. १	ज्ये. १	मू १	पूषा १	उषा ।	उषा ।।।	श्र. १	ध. ।।	ध. ।।	शत १	पूभा ।।।	पूभा ।	उभा १	रे. १
मेष	अ. १	२८ ३	३३ ०	२७॥	१७॥ ४	२३॥ -४	२२॥ -४	२५॥	२६॥ ३	१७। ३	२२॥ ३	३०॥	२७	२० +५	२४ ५+	१४॥ ३५	९॥ ३६	१०॥ २३६	१२॥ ६	२२	२८ -२	२२	१८॥ -६	२४॥ -६	१३ ३६	१२॥ ३५	२४॥ +५	२३ ५+	२५	२६	२०	१९॥	१४॥ ३	१५॥ ३	१४। ३४	२३॥ ४+	२६ ४+
	भ. १	३३	२८ ३	२८ ०१	१८ ०४१	२६॥ -४	२४॥ ३४	१७॥ ३	२५॥	२५॥	३०॥	२२॥ ३	२४॥ १	१९ -१५	१७ ३५	२४ ५+	१९ ६	१०॥ ६	३॥ १३६	१३ १३	२८	२१ -१	१८॥ -१६	१७॥ ३६	१९॥ -१६	१९॥ -१५	१७॥ ३५	२५॥ ५+	२७॥	२६	१० १२३	९॥ १३२	१९॥ -१	२३ -२	२२॥ २४+	१६॥ ३४	२५॥ ४+
	कृ. ।	२६॥	२८ १	२८ ३	१८ ३४	१० ०१३४	१६॥ ४	२०॥	१९॥ १	१९॥	२४॥	२६॥	२२॥ ३	१५॥ ३५	१९ १५	२० १५	१५ १६	१४ ६	१७॥ ६	२७	१४ ३	१९ ३	१६॥ ३६	१९॥ -६	२५॥ -६	२५ ५+	१९। १२५	११॥ ३१५	१३॥ १३	१३॥ २३	२५	२४॥	२५॥	१८॥ ९	१७। १४	१९॥ १४	१०॥ ३४
वृष	कृ. ।।।	१९ ४	१९ १४	१९ ३४	२८ ३	२८॥ १३	२६॥	१७ ४+	१७ १४	१७ ४+	२१	२३	१९ ३	१९ ३	२१ १	२२ १	२० १५	१८ ५+	२३ ५+	२२ -६	९ ३६	१४ ३६	२१॥ ३	२४॥	३०॥	२२ ६	१५ १२६	७ १३६	१२ १३५	१०॥ ३५२	२४॥ +५	२०	३०	२३ १	२० १	२२ १	१३ ३
	रो. १	२३॥ -४	२३॥ -४	११ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२६॥ ०४	२३ ४+	२२ ४+	२६	२७	१२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२५॥ ५+	२५॥ ५+	१८॥ -१५	१७॥ -१६	१५ ३६	८ ३१६	२४॥ ३१	२९॥	२३॥ १	१३॥ १६	१९॥ ६	११ ३६२	१६ ३५२	१८ ३५	१९ -१५	२४॥ -१	२४ -१	२९	२६	२७	१९ ३
	मृ. ।।	२३॥ -४	१४॥ ३४	१८॥ -४	२७॥	३५	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ०४	२२॥ ४+	२६	१९ ३	२१	१९॥	१५॥ ३	२४॥	२३ ५+	२५॥ ५+	११॥ ३५	१०॥ ३६	२४॥ -६	१७ -६	२३॥	२१॥ ३	२४॥	१४॥ ६	१०॥ ३६	१६॥ २६	२१॥ २५+	२६ ५+	१२ ३५	१७॥ ३	२६॥	२८	२५	१८ ३	२७
मिथुन	मृ. ।।	२६॥	१७॥ ३	२१॥	१९ +४	२६॥ ४+	१९॥ ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१८॥ -४	११॥ ३४	१३॥ ४	२२॥	१८॥ ३	२७॥	३१॥	३४	२० ३	१३ ३५	२७ +५	१९॥ ५+	१३ ६	१३ ३६	१४ ६	२३	१९ ३	२५ ५+	१९॥ -२६	२४ -६	१० ३६	१२ ३५	२१ ५+	२२॥ ५+	२४	१७ ३	२६
	आ. १	१८॥ ३	२६॥	२१॥ १	१९ +१४	२४ +४	२५॥ ४+	३४	२८ ३	२५ ३०	१२ ०३४	२०॥ -४	१२॥ १४	२१॥ १	२७॥	२०॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२७ १	२० -१५	२७ ५+	२० १५	१३॥ १६	१९ -६	५ १३६२	१५ १३	२८	२७	२१॥ -६	२२॥ -६	१७ -१६	१९ १५+	१२ १३५	१७ ३५	१८॥ ३	२६	२६
	पुन. ।।।	१८॥ ३	२५॥	२१॥	१९ ४+	२२ ४+	२३ ४+	३१॥	२४ ३	२८ ३	१४ -३४	२१ ४०	१५॥ -४	२१॥ +२	२५॥ +२	१९॥ ३	२३॥ ३	२४॥ ३	२६॥	१९॥ ५+	२७ ५+	२७ ५+	१४॥ ६	२०॥ २६	६ ३६	१४ ३	२७	२७	२१॥ -६	२२॥ -६	१६॥ -६	१८॥ +५	१३ ३५	१६ ३५	१७॥ ३	२६॥	२६
कर्क	पुन. ।	२१॥ ३	२८॥	२४॥	२१	२४	२५	१७॥ ३	१० ३४	१३ ३४	२८ ३	३४ ०	२८॥	१६॥ +२४	२०॥ २४	१४॥ ३४	१६॥ ३	१७॥ ३	१९॥	१९	२६॥	२०॥	१५ ५+	२५ ५+	२०॥ ३५	७॥ ३६	२०॥ -६	२०॥ -६	२६	२७	२१	१२ ६	५॥ ३६	९॥ ३६	१६ ३५	२५ ५+	२४॥ १+
	पु. १	२९॥	२०॥ ३	२६॥	२३	२५	१८ ३	२०॥ ३४	१८॥ ४	२४ ४	३४	२८ ३	२९ ०	१८॥ +४	१४॥ ३४	२३॥ ४+	२५॥	२५॥	११॥ ३	११ ३	२५	२०॥	१९ -५	१७ ३५	२० -५	१७॥ ६	१२॥ २३६	२०॥ ६	२६	२७ -२	१३ ३	४ ३६	१३ ६	१७॥ ६	२६ ५+	१८ ३५	२६ ५+
	श्ले. १	२५	२३ १	२१॥ ३	१८ ३	११ ३१	१९	११॥ ४	११॥ १४	१३ ४	२७॥	२८	२८ ३	१५ ०३४२	१५॥ १४२	१७॥ १४	१९॥ १	१९॥	२४॥	२४	११ ३	१६ ३	१४॥ ३५	१९ -५	२५ -५	२२॥ ६	१५॥ १६	७॥ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१७ ६	१८ ६	११ १६	१७॥ १५	२० १५	१२ ३५
सिंह	म. १	१९ +५	१९ १५	१५॥ ३५	१६॥ ३	९॥ ३१	१७॥	२०॥	२०॥ १	१९॥ -२	१६ +२४	१८॥ ४+	१६ ३४२	२८ ३	३० ०१	२६॥ १	१४॥ १४	१४॥ ४	१९॥ ४	२३॥	१०॥ ३	१५॥ ३	२४॥ ३	२४॥	३२	२४ -५	१९ १५	८॥ १२५	३॥ ३१६	४॥ ३६	१७॥ ६	२३॥	२४॥	१७॥ १	१७॥ १६	१८॥ १६	१२ ३६
	पूफा. १	२५ ५+	१७ ३५	१९ -१५	२० १	२३॥	१५॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२५॥ -२	२२॥ +२४	१६॥ ३४	१६॥ -१२४	३० -१	२८ ३	३४ ०	२४ ०४	२०॥ ४+	५॥ १३४	९॥ १३	२४॥	१७॥ १	२३॥ -१	२२॥ ३	२४॥ -१	२० १५+	१७ ३५	२४ ५+	१५ ६	१८॥ ६	५॥ १३६	९॥ १३	१०॥ १	२३॥	२३॥ -६	१६॥ ३६	२४॥ -६
	उफा. ।	१५॥ ३५	२५ ५+	२० -१५	२१ १	२६	२४॥	२७॥	१९॥ ३	१७॥ ३	१४॥ ३४	२५॥ ४+	१८॥ -१४	२६॥ -१	३४	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३४	१२॥ १४२	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ -१२	३०॥	१६॥ १३	९॥ १३५	२५ ५+	२५ ५+	२० ६	२० ६	११॥ १६	१७॥ १	१०॥ १३	१५॥ ३	१५॥ ३६	२६॥ -६	२४॥ -६
कन्या	उफा. ।।।	३१ ३१	२१ ६	१६ १६	२०॥ +१५	२५॥ ५+	२४ ५+	३१॥	२१॥ १	२३॥ ३	१७॥ ३	२७॥	२०॥ १	१५॥ १४	२३ ४+	१७ ३४	२८ ३	२७ ३०	२३॥ १२+	१६॥ १२४	२५॥ ४+	१६॥ १२४	१८ १२	२६	१२ १३	१४ १३	२९॥	२९॥	२४ +५	२४ ५+	१५॥ +१५	१६॥ -१६	९॥ ३१६	१४॥ ३६	१७ ३	२८	२६
	ह. १	११ २३६	१८॥ ६	२० ९	२०॥ +५	२३॥ ५+	२४॥ ५+	३२	२८॥ ३	२३॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२१॥	१६ +४	२०॥ ४+	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२८ ०	२० ०४	२६॥ ४+	१८॥ ४+	२०	२६	१३॥ ३	१५ ३	२७	२८॥	२३ ५+	२४ ५+	१८ ५+	१६ -६	१०॥ ३६२	१३॥ ३६	१६ ३	२६	२६
	चि. ।।	१२॥ ६	४॥ १३६	१८॥ ६	२३ ५+	१८॥ १५	१०॥ ३५	१८ ३	२२ १	२४॥	१९॥	११॥ ३	२५॥	२०॥ +४	६॥ १३४	१३॥ १२४	२४॥ १२	२७	२८ ३	१९ ३४	१२ ०४	२५॥ ४+	२७	३१	२५	२७	१३ १३	२३ १	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	३६ ३६	२४ -६	१६॥ १६	१० १	१० १३२	१६

किञ्चिद्विशेषः--रोहिण्यार्द्रामृगेन्द्राणां पुष्यश्रवणपौष्णभम् । अहिर्बुध्न्यक्षमेतेषां नाडीदोषो न विद्यते ॥ जीवे शुक्रे तथा सौम्ये एकराशीश्वरे यदि । नाडीदोषो न वक्तव्यः सर्वथा यत्नतो बुधैः ॥

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मेलापक सारिणी

कन्यायाः	वरस्य	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनुः			मकर			कुम्भ			मीन		
	भानि	अ. १	भ १	कृ. ।	कृ. ।॥	रो. १	मृ. ॥	मृ. ॥	आ. १	पुन. ।॥	पुन. ।	पु. १	श्ले. १	म १	पूफा १	उफा ।	उफा ।॥	ह. १	चि. १	चि. ॥	स्वा. १	वि ॥॥	वि. ।	अनु १	ज्ये. १	मू. १	पूषा १	उषा ।	उषा ।॥	श्र. १	ध. ॥	ध. ॥	शत. १	पूभा ।॥	पूभा ।	उभा. १	रे. १
तुला	चि ॥	२२	१४ १३	२८	२३ ६+	१८॥ १६	१०॥ ३६	१२ ३५	२० १५	१८॥ ५+	१९	११ ३	२५	२४॥	१०॥ १३	१७॥ १२	१७॥ १२४	२० ४+	२० ३४	२८ ३	२७ ०	३३॥	२२॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४	२७	१३ १३	२१ १	२३॥ १	२५	२३ ३	१८ ३५	२६ ५+	१८॥ १५	१२ १६	३ १३६२	१२ ६
	स्वा १	२९ २+	२८	१६ ३	११ ३६	१४ ३६	२४ -६	२६ ५+	२६ ५+	२७ ५+	२७॥	२६	२३ ३	१२॥ ३	२४	२५॥	२५॥ +४	२७॥ +४	२१ ४+	२८	२८ ३	२० ०३	९ ३४०	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	३२ ३	२१॥ ३	२२॥ ३	२६	२१ ५+	२२ ५२+	२५ ५+	१८ ६	१९ ६	११ ३६
	वि ।॥	२१	२२ १	२० ३	१५ ३६	९ १३६	१७ -६	१८॥ ५+	२० १५	२० ५+	२०॥	२०॥	१७ ३	१६॥ ३	१८॥ १	१७॥ १२	१७॥ १४२	१८॥ ४+	२६ ४+	३३॥	१९ ३	२८ ३	१६ ३४	१६ ०४	२१॥ ४	२७	२१ ०१	१३ १३	१५॥ १३	१५॥ ३	२९॥	२४ ५+	२६ ५+	२० १५	१३॥ १६	१३॥ १६२	४ ३६
वृश्चिक	वि ।	१६॥ ६+	१६॥ १६	१४॥ ३६	१९॥ ३	१३॥ १३	२१॥	११ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	१८ -५	१८ ५-	१४॥ -३५	२४॥ ३	२२॥ १	२१॥ १२	१७ १२	१८	२६	२१॥ ४	७ ३४	१५ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥	२१॥ ४+	१५॥ ४१	७॥ १३४	११ १३	११ ३	२५	२४	२५॥	१९॥ १	१९ १५	१८ १५२	९॥ ३५
	अनु १	२३॥ ६	१४॥ ३६	१८॥ -६	२३॥	२७॥	२०॥ ३	१० ३६	१५ २६	१९॥ ६	२५ -५	१७ ३५	२० -५	२४॥	२०॥ ३	२८॥	२४	२५	२१ ३	६॥ ३४	२०॥ ४	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१५॥ २४+	१३॥ ३४	२१॥ ४+	२५	२६	१२ ३	११ ३	२०	२४॥	३४ ५+	३७ ३५	२६ ५+
	ज्ये १	१० ३६	१७॥ १६	२३॥ -६	२८॥	२२॥ १	२९॥	१२ ६	२ ३१६२	४ ६३	१९॥ ५३	१९ ५+	२५ -५	३१	२३॥ १	१५॥ १३	११ १३	११ ३	२४	१९॥ ४	१४॥ ४	१९ ४	३१॥	३०	२८ ३	१४ ०२३४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१७ ३	१० १३	९॥ १३५	२० १५	२० +५
धनुः	मू १	११॥ ३५	१९ १५	२५ ५+	१९॥ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	२१	१४ १३	१२ ३	७॥ ३६	१७॥ ६	२३ ६	२४ ५+	१८ १५	१९। १५३	१३ ३१	१३ ३	२६	२६	२१	२६	२२॥ ४+	१६॥ +२४	१६ ३४२	२८ ३	२८ ०१	१५॥ १	१३॥ १४	१४॥ ४	१९॥ ४	२८	२१॥ ३	१४॥ १३	१६॥ १३	२४॥ १	२६
	पूषा १	२५ +१	१७॥ ३५	१९। -१२	१४ १६२	१८॥ ६	१०॥ ३६	१९ ३	२६	२७	२२॥ ६	१४॥ १३६	१६॥ १६	१९ -१५	१७ ३५	२५ ५+	२८॥	२७	१२ १३	१२ १३	२७	२० १	१६॥ -१४	१५॥ ३४	१७॥ -१४	२७ १+	२८ ३	३४ ०	२२ ०४	२२॥ ४	५ १३४	१४॥ १३	२३। १	२८॥	२९॥	२२॥ ३	३०॥
	उषा ।	२४ ५+	२५॥ ५+	११॥ १३५	६ १३६	१० २३६	१६॥ २६	२५ २+	२६	२७	२२॥ ६	२२॥ ६	८॥ १६३	८॥ १५३	२४ ५+	२ ५+	२८॥	२८॥	२० १	२० १	१९ ३	१२ १३	८॥ १३४	२३॥ ४+	१७॥ -१४	२५ -१	३५	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३४	१३। १४	२२॥ १	२३॥ १	२८॥	२९॥	३०॥	२२॥ ३
मकर	उषा ।॥	२७	२८॥	१९॥ १३	१२ १३५	१६ २३५	२२॥ २५+	१९॥ २६+	२४॥ -६	२१॥ -६	२८	२८	१४ १३	४॥ १३६	२० ६	२१ ६	२४ ५+	२४ ५	१५॥ १५	२२॥ -१	२१॥ ३	१४॥ १३	१२ ३१	२७	२१ १	१४॥ १४	२४ ४	१७ ३४	२८ ३	२७ ०३	२५॥ १+	१५॥ +१४	१६॥ १४+	२१॥ ४+	२९॥	३०॥	२२॥ ३
	श्र १	२८	२७	१४॥ ३२	१२ ३२२	१७ ३५	२६ ५+	२३ -६	१९॥ -६	२१॥ -६	२८	२८ २+	१४ ३	५॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३ ५+	२४ ५+	१७ ५	२४	२१॥ ३	१४॥ ३	१२ ३	२७	२१	१४ ४	२२॥ ४	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२७ -०	१७ ०४	१७॥ ४+	२०॥ ४+	२८॥	२९॥	३३॥ ३
	ध ॥	२०	११ १३२	२६	२३॥ +१	१५ १५	[illegible]	८ ३६	१६ १६	१४॥ -६	२३	१३ ३	२७	१८॥ ६	४॥ १३६	१०॥ १६	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	१९ ३	२४	२८॥	२६	१२ ३	२६	२०॥ ४	६॥ ३४१	१४॥ ४१	२५॥ १	२७	२८ ३	१७ ३४	२३ ०४	१७॥ १४	२४॥ १	१५ १३	२२॥ +२
कुम्भ	ध ॥	२९॥	१०॥ १३२	२५॥	३०	२५॥ १	१७॥	११ ३५	१८ १५	१७ +५	१२ ६	४ ३६	१८ ६	२४॥	१०॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१९ ६+	१७ ३६	१८ ३५	२० -५	२४॥ -५	२५	११ ३	२५	२९॥	१५॥ १३	२३॥ १	१६॥ १४	१८ +४	१८ ३४	२८ ३	३३ ०	२७॥ १	१६॥ १४	६॥ १३४	१३॥ ४२
	शत १	१४॥ ३	२०॥ १	२६॥	३१	२५ १	२६	२० ५+	१२ १३५	१२ ३५	६॥ ३६	१३ ६	१९ ६	२५॥	१९॥ १	११॥ १३	१०॥ १३६	१०॥ २३६	२५ ६	२६ +५	२१ २५+	२६ ५+	२६॥	२०	१८ ३	२२॥ ३	२४॥ १	२४॥ १	१७ १४	१७॥ ४+	२४ ४+	३३	२८ ३	२९ ०१३	८ १३४०	१४॥ १४	१५॥ ४
	पूभा ।॥	१७॥ ३	२४॥ २+	१९॥ -१	२४ -१	३०	३०	२३॥ ५+	१७ ३५	१७ ३५	११॥ ३६	१९॥ ६	१२ १६	१८॥ १	२४॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१५॥ ३६+	१७॥ १६	१८॥ १५-	२६ ५+	२० -२५	२०॥ १	२६॥	११ १३	१५ १३	२१॥	२९॥	२२॥ +४	२२॥ ४+	१८॥ -१४	२० -१	१९ १३	२८ ३	१६ ३४	२२ ०४	१९॥ ४२
मीन	पूभा ।	१४॥ ३४	२१॥ ४२+	१६॥ -१४	१९ १	२५	२५	२४	१७॥ ३	१७॥ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ १५	१६॥ -१६	२२॥ ६+	१४॥ ३६	१६ ३	१६ ३	१८ १+	११ १६	१८॥ ६	१२॥ १६	१९ -१५	२५ +५	३॥ १३५	१४ १२	२८॥	२८॥	२८॥	२८॥	१४॥ १	१५॥ १४	७ १३४	१५ ३४	२८ ३	३३ ०	३० +२
	उभा. १	२३॥ ४+	१५॥ ३४	१८॥ -१४	२१ १	२६	१८ ३	१७ ३	२५	२६॥	३६ ५	१९ ३५	२० १५	१७॥ -१६	१५ ३६	२५॥ ६+	२७	२६	९ १३२	२ १३६२	१९ ६	११॥ १६२	१८ १५२	१८ ३५	२० -१५	२३॥ -१	२१॥ ३	२९॥	२९॥	२९॥	१४॥ १३	५॥ १३४	२४॥ १४	२१ ४	३३	२८ ३	३३ ०
	रे १	२५ ४+	२३॥ ४+	१०॥ ३४	१३ ३	१७ ३	२६	२५	२४	२५	२४॥ ५	२६ ५	१३ ३५	१२ ३६	२२॥ ६+	२२॥ ६+	२४	२५	१९	१२ ६	१० ३६	४ ३६	१०॥ ३५	२६ ५+	२१ ५+	२६	२८॥	२०॥ ३	२३॥ १	२१॥ ३	२२॥ -२	१३॥ ४२	१५। ४	१७॥ ४२	२९॥ +२	३३	२८ ३

बिना मल के विवाहः--अयोजिता सन्धिलब्धा क्रीता स्नेहादिनार्पिता । स्वयमेवागता कन्या नवास्तां शुद्धिमेलकां । मनसश्चक्षयोः यस्मिन् वरे यस्यां च योषिति । सन्तोषो जायते यत्र नान्यत्किञ्चिद्विचिन्तयेत् ।।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहमेलापकविचारः---वर की कुण्डली में जन्मलग्न, चन्द्रमा तथा शुक्र से यदि १।४।७।८।१२ इन स्थानों में मंगल पड़ा हो तो कन्या का नाशक जानना, यदि कन्या के जन्म लग्न अथवा चन्द्रमा से १।४।७।८।१२ स्थानों में मंगल हो तो वर का नाशक होता है।

अपवाद---वर की कुण्डली में यदि पूर्वोक्त स्थानों में मंगल हो, और कन्या की जन्म-कुण्डली में उन्हीं स्थानों में मंगल पड़ा हो तो उसका दोष नहीं होता। एवं एक की कुण्डली में मंगल हो दूसरे की कुण्डली में उन स्थानों में से किसी स्थान में शनि पड़ जाय, तो भी मंगल का दोष दूर हो जाता है और जितने ग्रह कन्या की कुण्डली में अशुभ होकर पड़े हों उतने या उनसे ज्यादा वर की कुण्डली में अशुभ ग्रह पड़े हों तो शुभ जानें। इसी प्रकार कन्या के जन्म-लग्न से ७।८ स्थान तथा वर का २।७ स्थान अवश्य विचार लेना चाहिये और दोनों का पञ्चम भाव विशेषता से देखना चाहिये। और कन्या के सप्तमेश तथा शुक्र आदि शुभ ग्रहों के शुभ स्थान में होने तथा शुभ ग्रहों की उन पर दृष्टि होने से सौभाग्य योग का विचार अत्यावश्यक है। अथवा वैधव्यादिदोषजां कन्यामश्वत्थविवाहादिशान्ति विधाय दारहायोगजायायुष्मते वराय दद्यात्।

विवाहार्थ वर के गुण---कुल, शील स्वभाव, अवस्था, शरीर का रूप, विद्या, धन, सनाथता ये सात गुण जिस वर में उत्तम मिलें उसको कन्या देनी चाहियें।

वर के दोष---दूरदेश द्वीपान्तरवासी, अत्यन्त समीपस्थ, जाति से पतित, आचारहीन, नास्तिक, आजीविका से रहित, अत्यन्त गरीब, अत्यन्त धनाढ्य, मूर्ख, शूर, मोक्ष की चाह से विरक्त, वृद्ध, कन्या से छोटा, ऐसे २ दोषों से युक्त वर को कन्या नहीं देनी चाहिये।

विवाहार्थ कन्या के दोष---अत्यन्त चौड़े मस्तक वाली, कुबड़ी, लज्जाहीन, झूठ बोलने वाली, रोगग्रस्त, अंगहीन, अतिस्थूल (अथवा अतिदुर्बल लम्बी व पतली), झगड़ालू अन्धी तथा बहिरी (बोली) ऐसे दस दोषों में से किसी भी दोष वाली कन्या को सुखार्थी वर्जित करे।

वाग्दान---(कुड़माई---सगाई) से पहिले नीचे लिखी बातों का विचार कर लेना जरूरी है---सपिण्डता, ऋषिगोत्रशुद्धि, शील, सामुद्रिक तथा ज्योतिष-शास्त्र में कहे हुए षडष्टकादि मेलापक सारणी से विचार कर लेना और कुण्डली मिलान के समय निम्नलिखित पांच महादोष भी यत्न पूर्वक वर्जित करने चाहियें---(१) दारिद्र, (२) मृत्यु, (३) वैधव्य, (४) व्यभिचार, (५) संतान का अभाव।

वर वरण मुहूर्त---उ. ३ रो. कृ. पु. ३, रिक्तामावस्या को छोड़ कर शुभ तिथि तथा शुभवार में चन्द्रबल देख कर शुभ लग्न में पुरोहित अथवा कन्या का भ्राता वर के घर पर उत्तर वा पश्चिमाभिमुख बैठ कर पूर्वाभिमुख बैठे वर के मस्तक पर केशर चन्दनादि से तिलक लगावे, तदनन्तर वस्त्र यज्ञोपवीत तथा यथोचित द्रव्य से वर को सत्कृत कर और वर के मुख में एक छुहारा या मीठा (गुड़, बतासा) देकर यह मन्त्र पढ़े---"तस्मिन् कालेऽग्निसान्निध्ये स्नातः स्नाते हृचरोगिणे। अव्यंगेऽपतितेऽक्लीवे पिता तुभ्यं प्रदास्यति।।" यदि भ्राता से भिन्न पुरोहितादि वाग्दान करें तो "पिता तुभ्यं प्रदास्यति" के स्थान में "दाता तुभ्यं प्रदास्यति" कहे।

कन्यावरण मुहूर्त---उ. षा. स्वा. श्र. पूर्वा. ३. अनु. ध. कृ. विवाहोक्त नक्षत्रों में शुभ समय देखकर वस्त्रालंकार फल पुष्पों से कन्यावरण (सगाई) करना चाहिये।

विवाहकाल निर्णय---२० वर्ष से पहले पुरुष का और आठ वर्ष से पहिले तथा रजोदर्शन के पीछे कन्या का विवाह करने में दोष लगता है। कन्याओं के विवाह विषय में सबधर्मशास्त्र और ऋषियों की एकानुमति है। उक्तञ्च---यदि सा दातृवकल्याद्रजः पश्येत् कुमारिका।। भ्रूणहत्याश्च यावत्यः पतितः स्यात्तदप्रदः (व्यासः)।। तस्माद्विवाहयेत् कन्यां यावन्नर्तुमती भवेदिति सम्वर्तः।। अतः रजोदर्शन से पूर्व (कुचों के प्रादुर्भाव से रजोदर्शन का अनुमान करे) ८ वर्ष से लेकर १६ वर्ष तक सर्वसम्मत श्रीपतिनिबन्धोक्त वर्षों में गुरुचन्द्र शुद्धि देख कर विवाह कर देवे। तद्यथा---मासत्रयादूर्ध्वमयुग्मवर्षे युग्मे तु मासत्रयमेव यावत्। विवाहशुद्धि प्रवदन्ति सन्तो वात्स्यादयो गर्गवराहमुख्याः।। द्विरागमन रजोधर्म होने पर करना योग्य है। यदि किसी योग्य वर के अन्वेषण में पिता के लगे रहने से देर हो जाने पर कन्या रजस्वला होने लगे तो माता पितादि को न कोई दोष लगता है और न प्रायश्चित कर्तव्य है। वसिष्ठः---दशवर्षव्यतिक्रान्ता कन्या शुद्धिविवर्जिता। तस्यास्तारेन्दुलग्नानां शुद्धो पाणिग्रहो मतः।।

विवाह से पहले कन्या का नाम बदलना---यदि कन्या और वर के नाम परस्पर मिलान में शुभ न हों तो आवश्यकता में कन्या का नाम बदला जा सकता है वर का नहीं। कन्या का नाम रखने के लिये मेलापक सारणी में वर के नक्षत्र के नीचे जहां दोषांक का अभाव हो या दोष थोड़ा समझ कर ऋण (–) का चिन्ह लिखा हो उसी खाने में ऊपर गुण संख्या भी १८ से अत्यधिक मिले उसी के बाईं ओर जो नक्षत्र लिखा हो उसी अक्षर के अनुसार

(पृष्ठ ५९ का शेष)

यज्ञोपवीत धारण मन्त्र---ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यंप्रतिमुञ्चशुभ्रंयज्ञोपवीतंबलमस्तुतेजः।।

प्रयोग चक्रम्
सूर्य के नक्षत्र से प्रयोग प्रारम्भ नक्षत्र तक गणना करें।

स्थान	नक्षत्र	फलानि
शीर्षे	३	नार्थसिद्धिः
मुखे	३	सुमंत्रसिद्धिः
कंठे	३	मृत्युदायकः
हस्ते	४	शत्रुभीतिः
हृदि	४	इष्टाप्तिः
उदरे	३	धनहानिः
कट्यां	३	साधनार्थदः
चरणे	४	साधनाद्वित्तः

मन्त्रदीक्षामुहूर्त---अधिकमासरहित वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. मा. फा. इन मासों में, शुक्ल पक्ष की २।३।५।७।१०।११।१३ तिथियों में तथा कृष्णपक्ष की २।३।५ तिथियों में, शुभवार में, वृष. मि. सिं. कं. तु. ध. मी. लग्न हों, लग्न से १।५।७।१०वें शुभग्रह हों, ३।६।११वें पापग्रह हों, तब मन्त्र-दीक्षा लेना उत्तम है।

विशेष---सत्तीर्थ पर, सूर्य-चन्द्रग्रहण के समय तथा श्रावणीपर्व में मन्त्रदीक्षा लेते समय मास तथा तिथ्यादि पञ्चांगशुद्धि का विचार नहीं करना चाहिये।।

अनुष्ठानारम्भ मुहूर्तम्---श्रा. आश्वि. का. वै. माघ, मार्ग. फा. मासों में २।६।७।१०।१३।१५ तिथियों में अथवा--- या तिथिर्यस्य देवस्य तस्यां वा, सू. शु. बृ. चं. वारों में पुन. पु. स्वा. उ. ३, श्र. ध. श. रे. अ. ह. ऽनु. रो. मृ. ज्ये. नक्षत्रों में (स्वस्वामि-नक्षत्रे वा) लग्नात् ३।६।११ पापः; १।४।५।७।९।१० सौम्या, चन्द्रतारानुकूले; गुरुशुक्रयोरुदितयोः शुभे लग्ने १२ शुद्धे सति मृत्य्वादियोगरहिते। (विष्णु-मन्त्रे स्थिरे शिवस्य चरे दुर्गायाः द्विस्वभावे) प्रारम्भ करना शुभ है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

"राश्यभिधान कल्पलता" ग्रन्थ देखकर निर्दोष शुद्ध सुन्दर नाम रख लेना चाहिये। बहुत से विद्वान् कन्या-संकल्प के समय पर ही "वरस्य पञ्चमे कन्या कन्याया नवमे वरः" बोलते हुए शीघ्रता से नाम बदल देते हैं जिस में अनेक दोष रह जाते हैं। नाम बदलने का फल कुछ नहीं होता। एतदर्थ लग्न से पहले ही अच्छी तरह सारणी आदि देखकर बदलना चाहिए ॥

अथ विवाह मासः—विवाहशुद्धौ—मीनार्कञ्च विना प्रोक्तमुत्तरायणमुत्तमम् । वर्ज्योऽर्को धनुषश्चान्ये मध्यमाः स्युः करग्रहे ॥ वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद् वदन्ती-त्यपरो विशेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे तथा यत्र तथैव तत्र ॥१॥ केशवेन यदि गौर-रीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम् । तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया ॥२॥

अथ जन्ममासादिषु निषेधः—सब से जेठे लड़के अथवा सब से बड़ी लड़की (जेठी) के जन्म मास, जन्म नक्षत्र अथवा जन्म तिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं। अत्यावश्यके परिहारः—जातं दिनं दूषयते वसिष्ठः पञ्चैव गर्गस्त्रिदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च वृते विवाहे गमने क्षुरे च ॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो—एक घर में दो शुभ काम करना मना है, परन्तु अति आवश्यकता में ९ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग २ मण्डप गाड़ कर और जो पुरोहित पहिला कार्य करा चुका है, उसी से दूसरा कार्य न करावे, दूसरे आचार्य से करावे। इसी प्रकार जिस गृह में पहिला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मंडप गाड़ कर कार्य को करें।

अथ ज्येष्ठ विचारः—ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है, अत्यावश्यकता में कृत्तिका सूर्य को छोड़ कर दानादि पूर्वक करे।

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय—दो सगी बहनों का विवाह एक साथ या छै मास के अन्दर करे तो निस्सन्देह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट्मास तक कन्या का विवाह न करे और कन्या वा पुत्र के विवाह के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करे अर्थात् पहिले कर ले और मंगल कार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्ध तिलतर्पण भी न करे और मुंडन भी विवाह जनेऊ के पीछे न करे। वर्ष पल्टने पर फिर भले ही शुभ कार्य कर ले वहां छः मास का विचार नहीं है।

विवाहादि शुभ कार्यों में मरणाशौच—साहे चिट्ठी (कुकुंमपत्रिका) आने पर, विवाह दिन निश्चय हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण में १ साल, स्त्री के मरण में ३ मास, भाई व पुत्र के मरण में १॥ मास, कुल वालों के मरण में २२॥ दिन तक कोई शुभ कार्य न करे। अति संकट में ३० दिन के बाद शान्ति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करे ॥

विवाह केमुहूर्त प्रथम ही शुद्ध कर चुके हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त देख कर और उसी दिन वर की राशि से सूर्य चन्द्र शुद्ध देखिये और वधू की राशि से चन्द्र गुरु देखिये, बस इसी को त्रिबल शुद्धि कहते हैं। यह त्रिबल शुद्धि जिस उत्तम विवाह लग्न के दिन मिले वही विवाह दिन उत्तम हैं। यदि रवि गुरु पूज्य हों तो मध्यम हैं। यदि सूर्य गुरु नेष्ट हों तो विवाह नहीं बनेगा ऐसा कहना। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु० सू० चं०) शुद्धि प्रथम देखें ॥ "झषचापकुलीरस्थो जीवोऽप्यशुभगोचरः । अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु (बृह०) । तुलाराशौ अपूज्यरविः—धर्मधीधनगतो दिवाकरस्तौलिराशिजनितस्य शोभनः । आवश्यके पूज्यरविपरिहारः—गार्ग्यांगिरोसत्ववसिष्ठगौतमपराशराद्याः मुनयो वदन्ति । द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहः ॥ (मु० प्र० सा०) । ६४

विवाहादौ त्रिबल शोधनम्

पूज्य गुरुः—१०।६।३।१
श्रेष्ठ गुरुः—९।५।११।२।७
नेष्ट गुरुः—४।८।१२
श्रेष्ठ रविः—३।६।१०।११
पूज्य रविः—१।२।५।७।९
नेष्ट रविः—४।८।१२
नेष्ट चन्द्रः—४।८ पूज्य चन्द्रः—१२
श्रेष्ठ चन्द्रः—१।२।३।५।६।७।९।१०।११

ध. मी. कर्क राशि में हो तो नेष्ट गुरु भी श्रेष्ठ है।

कन्यावरयोः तैलादिलापने (बन्न) दिन संख्या

राशि	१।२।३।४।५।६।७।८।९।१०।११।१२
तैलादि ला.	।७।५।९।९।५।७।७।९।५।९।५।७

अथ विवाहे तिथि वार नक्षत्राणि—रो. मृ. उत्तरा ३. म. ह. स्वा. अनु मू. रे. एतद्भेषु हितेषु शुभेऽह्नि अमाक्षयरहिततिथिषु शुभम् ॥

अथ विवाहांगकृत्यारम्भ मुहूर्तः—वर कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाह दिन से पहले ३।६।९ इन दिनों को छोड़ कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्द हाथ दलना पीसना कूटना मंगल-कलशादि स्थापन करना घर लीपना आंगन सफाई भूषण घढाना वस्त्र सिलाना, वेदी रचना चन्दोया बांधना गणेशादि पूजन नान्दीश्राद्ध मंगलस्नानादि सर्वकार्य का आरम्भ करना शुभ होता है।

विवाहमुहूर्त में दश दोषों का विचार

विवाहके मुहूर्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चबाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धा तिथि इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सब का विचार करके इस वर्ष के विवाह मुहूर्त अलग दिये हुए हैं। इन दस दोषों में जो जिस मुहूर्त में हैं वे क्रमानुसार टेढ़ी रेखा से सूचित किये गये हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है—

१लत्तादोषज्ञानायचक्रम्

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	लग्न नक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दिशा
धननाश	भयम्	मृत्यु	भयम्	बंधुनाश	कार्यहानि	कुलक्षयं	मरणं	फलम्

यथा—सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ. फा. का हो, सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो. उ. फा. १२ वां हुआ यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ; इत्यादि सब जानें। (आगे पृष्ठ ७३ पर देखें)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

राशि के लग्न में ह. अश्वि, पु. अभिजित, तीनों उत्तरा. रो. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मृ. मृ. रे. चि. और अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है। शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है।

विशेषः—द्विरागमे षोडशवासरान्तरे एकादशाहे समवासरेषु। नवात्र ऋक्षं न तिथिर्न-योगो न वारशुद्ध्यादि विचारणीयम् ॥

शुक्रस्य सम्मुखे दक्षिणे निषेधः—सम्मुख वा दक्षिण शुक्र में यदि नूतन वधू जावे तो बन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे। यदि ऐसे समय राजविद्रोह राजपीड़न आदि उपद्रव तथा दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवं विवाह-सम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख तथा दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता।

विशेषः—सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे संमुखेऽस्तंगतेऽपि वा। शुभो दीपोत्सवे वध्वा प्रवेशः पतिमन्दिरे ॥ अन्यशुक्रज्ञानम्—रेवत्यादिमृगान्तं च यावत्तिष्ठति चन्द्रमाः। तावच्छुक्रो भवेदन्धः संमुखे दक्षिणे शुभः ॥ अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः—राजते वाथ सौवर्णे कांस्यपात्रेऽथवा पुनः। शुक्लपुष्पाम्बरयुते श्वेततण्डुलपूरिते ॥ निधाय राजतं शुक्रं शुचिमुक्ताफलान्वितम्। सहाश्वेतगवायुक्तं सामगाय निवेदयेत्। तत्रार्घ्य मन्त्रः—ॐ नमस्ते सर्वलोकेश नमस्ते भृगुनन्दनः! मम सर्वार्थसिद्ध्यर्थं गृहाणार्घ्यं नमोस्तु ते ॥

प्रथम स्त्री-संगम मुहूर्तः—स्त्रीणां रजोदर्शनोत्तरं वा पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि उत्तरा ३, रो. पुष्य. अनु.ह. मृ. चि. स्वा. ध. एषु. भेषु, रिक्तामाक्षयरहिततिथौ, शुभवासरे एकयाम-रात्रोत्तरं प्रथमः पुत्रार्थी: संगमः शुभः ॥

नववध्वा पाक कर्म मुहूर्तः—द्विरागमनोत्तरं मृ. उत्तरा. पुष्य. कृ. ज्ये. श्र. ध. श. रो. वि. रे. एषु नक्षत्रेषु शुभवासरे (रविभौमवर्जिते), रिक्तामाक्षयरहिततिथौ, २।५।८। ११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टमशुद्धे, सप्तमभावे च बलान्विते सति पाककर्म शुभम्।

सधवास्त्रीणां वस्त्र सुवर्णरत्नभूषणादि धारण मुहूर्तः—ह. चि. स्वा. अनु. ध. रे, अश्वि, एषुभेषु बु. गु. शु. वारेषु रिक्तामावास्यारहिततिथिषु, नूतनवस्त्रसौवर्णरत्नरजत-दन्तादि भूषणानां धारण प्रशस्तम् ॥

रेशम वस्त्र धारण मुहूर्तः—नीलवस्त्रोदिते धिष्ण्ये रेवतीपुष्ययोरपि। शुक्रे शनैश्चरेऽर्के च धारयेद्रोमजाम्बरम् ॥

वस्त्रधारणे विशेषः—विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्षमापालेन समर्पितम्। निन्द्येऽपि धिष्ण्ये वारादौ धार्यन्नु नवाम्बरम् ॥

भूषण घट्टन मुहूर्तः—ह. अ. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. उत्तरा ३. रो. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामाक्षयरहिततिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम्।

दुकान खोलने का मुहूर्तः—ह. चि. रो. रे. उत्तरा ३. पुष्य. अनु. अश्वि. अभि. इन नक्षत्रों में ३।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़ कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोड़ अन्य वारों में, कुम्भ लग्न को छोड़ कर अन्य लग्नों में, २।१०।११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३।६ में पाप ग्रह हों, ८।१२ वां स्थान पाप रहित हो, अपनी शुभ दशा भी चलती हो तो दुकान करना शुभ है, चन्द्र शुक्र लग्न में हों तो अत्यंत शुभ है ॥

भर्तृगृहात्पितृगृहागमन मुहूर्तः—पूर्वा. ३. भ. मू. म. ज्ये. आ. आश्ले. एतद्-भिन्नेषु भेषु. चं. बृ. शु. वारेषु सत्तिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्ये प्रशस्तः ॥

द्वयंग (दरोजा) मुहूर्तः—जाते द्विरागमे पत्न्या पुनः पतिगृहे गमः। पितृगेहे स्थिता या च स द्वयंग इति कीर्तितः ॥ ह. मृ. श्र. अश्वि. पुष्य. ध. पुन. अनु. रे. एषु, नक्षत्रेषु, सत्तिथौ सुलग्ने विवाहोक्तमासेषु राहोर्दक्षिणपृष्ठगे च सति स्त्रीणां द्वयंगः शुभः ॥

द्वयंगार्थ राहुदिक् ज्ञानम्

सूर्य राशि	राहु दिशा
१।५।९	पूर्व
२।६।१०	दक्षिण
३।७।११	पश्चिम
४।८।१२	उत्तर

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्त—भ. आद्रा. आश्ले. म. पू. ३, ज्ये. मू. इन नक्षत्रों को छोड़ कर शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है।

हट्ट चक्र—सूर्य नक्षत्र से दुकान खोलने के दिन नक्षत्र तक गिन कर चक्र से शुभाशुभ फल जाने ॥

नक्षत्र	२	२	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैऋत	सन्मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोरभय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवा कर्म (नौकरी) मुहूर्त—अ. मृ. चि. ह. पुष्य. अनु. रे. एषु भेषु, रिक्तारहिततिथौ, र. बु. बृ. शु. वारेषु शुभग्रहे लग्नस्थे, १०।११ सूर्ये भौमे वा स्वामिसेवकयोः राशीशयोनि मैत्र्यां सत्यां शुभः।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भ मुहूर्तः—अश्वि. रो. मृ. पुन. पु. उत्तरा. ३. ह. चि. अनु. श्र. रे. एषु. भेषु. रिक्तामारहिततिथौ, सू. चं. बु. बृ. शु. वारेषु, शुभे युते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्ययाष्टरहिते पापैः केन्द्रकोणगैः शुभैः सत् ॥

द्रव्य प्रयोग मुहूर्तः—पुन. स्वा. मृ. रे. चि. अनु. वि. पुष्य. श्र. ध. श. अश्वि. एषु नक्षत्रेषु, १।४।७।१० लग्नेषु, ९।५।८ शुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः। अत्रावसरे ९।५ शुभ-ग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः।

ऋण लेने के लिये वर्जित काल—मंगलवार, संक्रांति दिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्र-युक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुधवार को धन न देना चाहिये। कृ. रो. आर्द्रा. श्ले. उ. ३, वि. ज्ये. मू. नक्षत्रों में भद्रा, व्यतिपात, और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है।

श्री काशीनाथमते क्रय विक्रय मुहूर्तः—पुष्य. पूभा. अनु. श्र. ह. म. स्वा. उत्तरा. ३. आश्ले. रे. एतद्भेषु, सत्तिथौ शुभदिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रयविक्रयणं कार्यम् ॥

वस्तु खरीदने के नक्षत्र—रे. शत. अश्वि. स्वा. श्र. चि. वारों में बुध, रवि श्रेष्ठ माना गया है। वस्तु बेचने के नक्षत्र—पूफा. पूषा. पूभा. वि. कृ. श्ले. भ. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गये हैं।

नोट—बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचनेवालों को ९५ फी-सदी नुकसान रहेगा इसमें संशय नहीं। इसी कारण खरीदने बेचने के नक्षत्र दिखलाये गये हैं परन्तु संप्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवाय घबराहट के दिन भर में १० बार बेचना, २० बार खरीदना; ऐसे व्यापारी क्या करेंगे इन नक्षत्रों को। लेकिन हमारा कहना है कि विश्वास करके परीक्षा तो कीजिये बात कहाँ तक सच है। सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करनेवाले व्यापारी

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहाँ तक सत्य हैं।

नालिश (अर्जी) का मुहूर्तः—४।९।१४ तिथि हो, मं. श. वार हो, कृ. आर्द्रा. भ. अ. श्ले. म. ज्ये. मू. वि. पूर्वा. ३. नक्षत्र हो, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

हार्दि निर्माण में आय विचार—

ग्रामभात् वासकर्तुर्नक्षत्रं यावदद् गणना कार्या स्थान नक्षत्र फलम्		
मस्तके	७	धनलाभः
पुष्ठे	७	हानिः वैस्वम्
हृदये	७	सुख लाभः
पावे	७	पर्यटनम्

गृह स्वामी के हस्तादि लम्बाई चौड़ाई को परस्परगुणा कर आठ का भाग देवें, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वज, २ धूम्र, ३ सिंह, ४, श्वान, ५ वृषभ, ६ गर्दभ ७ हस्ति, ८ (०)। इसमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और दो चार आदि सम संख्या की अशुभ जानना। गृह की भूमि की अन्दर से मापना चाहिये और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ लम्बे चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है और न ही चार द्वार वाले घर में। ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को हिंसाय, वैश्य को गजाय और शूद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ है॥

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान—

घर के क्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुण कर २७ का भाग दे। जो अंक शेष रहे तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जाने इस नक्षत्र को आठ से भाग देवे शेषांक तुल्य व्यय जाने। आय से व्यय कम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ॥

वास्तुभूमि का शुभाशुभ विचार :—

नई बस्ती में गृहादि बनवाना हो तो भूमिपूजनपूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा एक हाथ लंबा एक हाथ गहरा गड्ढा बना कर उसको जल से भर देवें, प्रातःकाल उसको देखें यदि जल युक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है॥

मकान बनवाने के लिये पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा—

मकान की नींव को इतना गहरा खोदे कि जल दीखने लगे अथवा दूसरी मिट्टी जब तक न निकले अथवा ३॥ साढ़े तीन हाथ गहरी खोदे अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदे। खोदते समय जो जमीन में पत्थर निकले तो धन आयु की वृद्धि हो और जो गुठली निकले तो धन नाश हो और जो हाड़; राख बाल निकलें तो मकान बनाने वाले को व्याधि पीड़ा हो।

गृहारम्भ मुहूर्तः—वैशा. श्रा. मार्ग. माघ. फाल्गुन और सौर महीने गृहारंभ में श्रेष्ठ कहे हैं, भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम है २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ और कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा इन तिथियों में, चं. बु. बृ. शु. श. वारों में, रो. मृ. चि. ह. स्वा. अनु. उत्तरा ३. ध. श. रे. वेधरहित नक्षत्रों में, २।३।५।६।८।११।१२ लग्नों में पञ्चबाण और भूमिशयन से रहित दिनों में, लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभ ग्रह और ३।६।११ वें स्थान में पापग्रह, तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्स चक्र व मासादि का विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वासचक्रम् सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ-नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें		
स्थालानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाह
अ. पावे	४	शून्यमसत्
पृ. पावे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मी प्राप्तिः
द. कुक्षौ	४	लाभःशुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेषः—पुष्य. उ. ३. रो. मृ. श्र. आश्ले. पूषा. इनमें से जिस पर बृहस्पति हो उस नक्षत्र में और बृहस्पति को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्ति दायक होता है। रो. ह. अ. उफा. चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्रमें बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। वि. अ. चि. ध. श. आर्द्रा इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धन-धान्यदायक होता है।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्—"संक्राति मिति दिन पांचवें, सप्तम नवमे जोय। दश इक्कीस चौबीस में षट् दिन पृथ्वी सोय। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५।११।७।६।२।१० एता घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्ज्जनीयाः। अन्यच्च—सूर्य के नक्षत्र से ५।७।९।१२।१९।२६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता॥

गृहमध्ये कूप विचारः—

मध्य	ई.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	उ.	वा.
अर्थहानि	सुपुष्टि	सुप्राप्ति	पुत्रनाश	स्त्रीनाश	गृहेशनाश	संपत्	सुखम्	शत्रुभयं

अथ चुल्ली चक्रविचारः।

सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्र पीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर-सुख भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चूल्लीचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डितजन विचार करें॥

नूतन गृहप्रवेशे मुहूर्तः—

माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ मासेषु शोभनाः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (गार्ग) कार्तिक-मासयोः॥ (यहाँ चन्द्रमास लेना) उत्तरा. ३ अनु. रो. मृ. चि. रे. इन नक्षत्रों में रिक्तामारहित तिथियों में, चं. बृ. श. इन वारों में २।५।८।११ लग्नों में अत्यावश्यके ३।६।९।१२ लग्नों में भी, लग्न से १।२।३।५।७।९।१० इन स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३।६।११ में क्रूर हों, १।६।८।१२ वें चन्द्रमा न हो, ४ था ८ वां स्थान शुद्ध हो, जन्मलग्न या जन्मराशि से ८ वीं राशि लग्न में न हो, चन्द्र तारा शुभ हों और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो तो आगे गौ कन्या जलपूर्ण पुष्पमालायुक्त कलश शंखध्वनि मंगलगान के साथ दम्पति को गृहप्रवेश शुभ है

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त—पुराने अर्थात् जीर्ण वा तृण कुटीर अथवा अग्नि-वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वै. श्रा. का. और मार्गशीर्ष फा. मास में शत. पुष्य. स्वा. और ध. नक्षत्रों में तथा गुरु शुक्र के अस्त में भी गृहप्रवेश हो सकता है॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्

खाते राहोर्मुखात्पृष्ठदिग्भागः शुभदो भवेत्

राहुमुख	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्याम्	आग्नेयां
देवालयारम्भे सूर्य	मी. मेष. वृष	मि. क. सिं.	कर्क तुला। वृश्चिक	धन मकर कुम्भ
गृहारम्भे सूर्य	सिं. कं. तु.	वृश्चि. ध. मकर	कुम्भ मीन मेष	वृष मिथुन कन्या
जलाशयारम्भेसूर्य	म. कुं. मी.	मे. वृष मिथुन	कर्क सिंह कन्या	तुला वृश्चिक धन
खात दिशा ज्ञानं	आग्नेय ।	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्रम् सूर्यनक्षत्रात्

स्थान	न.	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोणे	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाश
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम् ॥

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम् सूर्यभात्

५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

रोहिणीभात् वापी चक्रम्

ईशाने अ. भ. कृ. मध्यजल	पूर्व. पुन. पु. श्ले. जलाभावः	आग्नेय म. पूफा. उफा. मध्य जलम्
उत्तर पूभा. उभा. रे. मिष्टजलम्	मध्य रो. मृ. आर्द्रा. शीघ्रजलम्	दक्षिण ह. चि. स्वा. जलाभावः
वायव्य श्र. ध. श. क्षारजलम्	पश्चिम मू. पूषा. उषा. अमृतजलम्	नैऋत्य. वि. अनु. ज्ये. बहुजलम्

जलाशयारामदेव प्रतिष्ठा मुहूर्तः—

देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायगे । माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने॥ मातृभैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमा महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने ॥

अश्वि. रो. मृ. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. उत्तरा ३. रे. एषु भेषु कुजशनिवर्जितवारेषु २।३।५।७।८।१०। ११।१२।१३ एतत्तिथौ शुक्ले १।२।३।५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्बलास्तादिरहितकाले, कर्तुः सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२।५।८।११) लग्नेषु लग्नात् १।४।७।१०।९।५। २।११। स्थानेषु शुभैः, ६।११। सेन्दुभिः पापैः पूर्वाह्णे देवप्रतिष्ठा कार्या ।

देवता विशेषण लग्नम—सिंहे सूर्यो शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः । कुम्भे वेधाश्चरे क्षुद्राद्यगदेव्यः स्थिरेऽखिलाः । यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिने यदि तस्य प्रतिष्ठामुहूर्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः ॥

वास्तुशान्तिमुहूर्तः—श्र. ध. मृ. मू. अनु. रे. ह. चि. स्वा. उत्तरा ३. पुन. पु. रो. अश्वि. एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम् ।

कूप ताला और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त—अनु. ह. तीनों उ. रो. ध. श. म. पूषा. रे. पुष्य. मृ. नक्षत्र हों, चन्द्रमा मकर के उत्तरार्ध वा मीन या कर्क में हो, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १६ वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २।१०।४।११।१२ लग्न हों तो अत्युत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूप चक्रम्

ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डित जल	आग्ने. ३ सुजल
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्र जल	दक्षि. ३ निर्जल
वायव्य ३ मिश्रित जल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्य ३ अमृत जल

गणना क्रमः—मध्य पूर्व आग्नेय दक्षिण आदि क्रमेण बोध्यम् ॥

सूर्यभात्तड़ाग चक्रम्

ई. २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आ. २ जलाधिक्य
उ. २ अमृत जल	मध्य ५ बहुजल	द. २ जलनाश
वा. २ जलनाश	प. २ बहुजल	नै. २ अमृतजल

शेष ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति तत्फलम् वारिवाहे वारिहानिम् । गणना-क्रमः—पूर्व आग्नेय द० नै० प० वा० उ० ई० मध्ये वारिवाहः ।

अग्नि का वास किस लोक में है ?—जिस दिन हवन करना हो उस दिन तिथि और वार की संख्या जोड़ कर एक और जोड़ना पुनः ४ का भाग देना, यदि पूरा भाग लग जाय (० शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानि कारक, शेष दो बचने पर पाताल में धन हानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से, वार गणना रविवार से करना। इसके बाद आहुति चक्र जरूर देखिये।

ग्रहमुखे होमाहुति ज्ञानाय चक्रम्

(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

सू.	बु.	शु.	श.	चं.	मं.	गु.	रा.	के.	ग्रहाः
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ट	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

विशेषः—यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्यखिलव्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम् ॥ महारुद्रव्रतेऽमायां ग्रस्तेन्दुकस्य राहुणा। नित्य नैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत् ॥ दिग्दाहेऽप्यथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतूनामुदये शांतौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत् ॥ लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणे महाविधौ। देवखातभवने सुरालये अग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः ॥ दुर्गभंगगृहे वाऽपि विवादे शत्रुविग्रहे। शान्तिकर्मनृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत् ॥

पापग्रहमुखे हवने कृते शान्तिः—क्रूरग्रहमुखे चैव सञाते हवने शुभे। शान्ति विधाय

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गां दद्यात् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने । आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेत्तामधोमुखीम् । गोमूत्रमधुगन्धाद्यैरर्चितां प्रतिमां ततः । कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते ॥

अथ ऋणी-धनी विचार—स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत् । अष्टभिश्च हरेद्भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत् ।

अर्थ—अपने वर्ग को दूना कर दूसरे का वर्ग जोड़ना फिर ८ का भाग देना । फिर दूसरे का वर्ग दुगना करके अपना वर्ग जोड़ना फिर ८ का भाग देना; जिसका भाग शेषांक अधिकबचे वह ही कम बचने वाले का ऋणी जानना ।

हल प्रवहण मुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. रो. उत्तरा. ३. ह. अश्वि. पुष्य अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मू. म. वि. एषु भेषु रिक्तामाषष्ठ्यष्टमी रहितसत्तिथौ शुभग्रहस्य वासरे, १।५।७।१०।११लग्नेषु भूमिशयनभद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम् ।

हलचक्रम सूर्यभुक्तनक्षत्र से दिननक्षत्र तक गिनें				
३	८	९	८	नक्षत्र
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्

बीज वपने राहु चक्रम् राहु नक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्तः—ह० अश्वि० पुष्य. उत्तरा ३. चि. अनु. मृ. रे. स्वा. ध. म. मू. एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः ॥

विशेषः—रवौ रौद्रा (आर्द्रा) द्यपादस्थे संजायते रजः ।

तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत् ॥

नवान्न भक्षणमुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है; नन्दा रिक्तातिथियों और पौष चैत्र को छोड़ कर सू. चं. बु. गु. शुक्रवार शुभ है ॥

गौ आदि पशु लेने का मुहूर्तः—गाय लेना हो तो उ. फा. से दिननक्षत्र तक गिने; उसमें से मस्तक पर ३ फल लाभदायक, मुख पर २फल हानि, पाद पर ६ फल अर्थलाभ, हृदय में ५फल सुख, स्तन में ६फल महालाभ, भग पर १ फल वृद्धि, गुह्य पर ४ फल भय होता है । महिषी लेनी हो तो भी इसी क्रम से शुभाशुभ फल जानो, परन्तु वहां सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने । वृषभ लेना हो तो भी, परन्तु ६ नक्षत्र पद पर धर शेष स्थान में दो-दो धरो और गाय के समान फल जानो । (चौदस चौथ चौपाया । मंगल हानि करे घर आया) ॥

सूर्य नक्षत्रात्काष्ठादि (गुहरा) आदि संस्थापन चक्रम्							
६	२	४	४	४	४	४	नक्षत्र संख्या
उत्तमपाक शुभ	शवदहन नेष्ट	सर्पभय नेष्ट	मित्रलाभ शुभ	रोगभय नेष्ट	काथकर्म नेष्ट	सुखं शुभ	फलम्

लतावृक्षाद्यारोपण मुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. उत्तरा ३, रो. ह. पुष्य अश्वि. श्र. मू. वि. नक्षत्रों में रिक्तामारहित शुभ तिथियों में और चं. बु. बृ. शु. वारहों, शुक्ल पक्ष में ४।१०।११।१२ लग्न में शुभ है ॥ तृण काष्ठादि संग्रहे निषेधः—तृण काष्ठ का संग्रह और पलंग बुनवाना आदि कर्म कुम्भ मीन के चन्द्रमा में नहीं करना चाहिए ।

औषध का मुहूर्तः—ह. अ. पुष्य. अभि. मृ. रे. चि. अनु. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मूल, जन्म नक्षत्र को छोड़ कर इन नक्षत्रों में, ४।९।१४ को छोड़ कर शुभतिथियों में, भौम शनि को छोड़ अन्य वारों में शुभ है ।

अथ यात्रा मुहूर्तः—

ह. म. श्र. अश्वि. पुष्य. पुन. ध. अनु. रे. एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा; रो. उत्तरा ३. पूर्वा ३. एषु भेषु मध्या; भ. कृ. आर्द्रा. आश्ले. म. चि. स्वा. वि. ज्ये. एतद्भेषु निन्द्या । तत्रात्यावश्यकेष्वपि यात्रायां भरण्यादिभानां क्रमात् ७।२१।१४।१४।११।४०।१४।१४।१४ एता घटिका गमनकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः, २।३।५।७।१०।११।१२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु दिग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा ।

दिग्द्वार लग्नानि

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
१।५।९	२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	शुभम्
२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	१।५।९	मध्यम्
४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	मरणम्
१	४।८।१२	३।५।९	२।६।१०	महाभयं

यात्रा में शुभाशुभ लग्न—जन्म लग्न और जन्म राशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांशक में यात्रा कदापि न करे । शुभ लग्न वह है जब १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभग्रह और ३।६।१०।११ वें पाप ग्रह हों । अशुभ लग्न वह है जब १।६।८।१२ वें चन्द्रमा, १० वें शनि, ७ वें शुक्र, १२।६।८ वें लग्नेश हो । अन्यच्च—यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा । दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने ॥

जन्म लग्नेश दशेश अस्त हों वा मारक दशा हो तो सुमुहूर्त में भी यात्रा न करे, प्रथम तीर्थ-यात्रा वा देवदर्शन गुरुशुक्रास्त में वर्जित हैं ॥

दिक् शूल ज्ञानाय चक्रम्									नक्षत्रशूल चक्रम्			
पूर्व	आ.	दक्षि.	नैऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.	दिशा	पू.	द.	प.	उ.
चं.श.	चं. बृ	गुरु	सू .शु.	सू .शु.	भौम	मं.	बु.श.	वाराः	ज्ये.	पूभा.	रोहि.	उफा.

दिक्शूल परिहारः—न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्य दैत्येज्य दिवाकराणाम् । दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः ॥ १ ॥ सूर्यवारे घृतं प्राश्यं चन्द्रवारे पयस्तथा । गुडमंगारके वारे बुधवारे तिलानपि । गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि माषान्भुक्त्वा शनिवारे शूले गच्छन्न दोषभाक् ॥ २ ॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

काल ज्ञानम्	
शनौ	पूर्वे
शुक्रे	आग्नेयां
गुरौ	दक्षिणे
बुधे	नैर्ऋत्ये
भौमे	पश्चिमे
चन्द्रे	वायव्ये
रवौ	उत्तरे
सम्मुखे नेष्ट	

योगिनीवासचक्रम्

पू.	अग्नि.	दक्षि.	नैऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तरे	ईशा.	दिशा
१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०	तिथि

योगिनी सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बायें की शुभ (मुहूर्तचिन्तामणि में बायें अशुभ, दाहिने शुभ)॥ समयशूल उषाकाल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्ध रात्रि में उत्तर को और मध्याह्न-काल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए॥ गर्गगुरु अंगिरा मुहूर्त—गर्गजी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे गमन करे। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करे, अंगिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाय। भगवान के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पञ्च पञ्च (५५) उषःकालः सप्तपञ्चा (५७) रणोदयः। अष्टपञ्च (५८) भवेत्प्रातः शेषं सूर्योदयो भवेत्॥

चन्द्रवास चक्रम्

पूर्वे	दक्षि.	पश्चि.	उत्तरे
मेष	वृष	मिथु.	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

एकस्मिन्राशौ आवश्यके घट्यात्मक चन्द्रवास चक्रम्

पू.	द.	प.	उ.	पू.	द.	प.	उ.	दिशा
१७	१५	२१	१६	१७	१५	२०	१४	घटी

घट्यात्मक चन्द्रवास जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिए।

कुम्भ और मीनके चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जावे।

चन्द्रफलम्—सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसंपदः। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः॥ १॥ सर्वे दोषा लयं यांति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे॥ इति॥ सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा—करण-भगणदोषं, वारसंक्रांति-दोषं, कुतिथिकुलिकदोषं यामयामार्द्धदोषम्। कुजशनिरवि-दोषं राहुकेत्वादिदोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमाः सम्मुखस्थः।

सर्वांकसिद्धियोगः—शुक्लादि तिथि तथा वार की संख्या के जोड़ की तीन जगह रख क्रमशः ७।८।३ का भाग दे। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त्य में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अंक आने से सौख्य जय लाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वांकादिमुहूर्तों के भी यात्रा सफल होती है। बायाँ स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को और दायाँ चलते समय दक्षिण व नैऋत्य मत जाओ, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो कदापि न जावे क्योंकि मुहूर्त शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

वर्णक्रमेण प्रस्थान विधानम्—यदि यात्रा मुहूर्त में किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाय तो उसी मुहूर्त में ब्राह्मण जनेऊ माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधुघृत, शूद्र फल को अपने वस्त्र में बांध किसी के घर में या नगर से बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान रक्खे। अथवा सब से मन की प्यारी वस्तु को रख देना चाहिए।

यात्रा के पहले त्याज्य वस्तु—यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दे, पांच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन, समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य करें।

दिने चतुर्घटिका मुहूर्त्तम्

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह.	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात्रौ चतुर्घटिका मुहूर्त्तम्

घटि	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
३॥।	शु.	चं.	का	उ.	अ.	रो.	ला.
७॥	अ.	रो.	ला	शु.	चं.	का	उ.
११।	चं.	का	उ.	अ.	रो.	ला	शु.
१५	रो.	ला	शु.	चं.	का	उ.	अ.
१८॥।	का	उ.	अ.	रो.	ला	शु.	चं.
२२॥	ला	शु.	चं.	का	उ.	अ.	रो.
२६।	उ.	अ.	रो.	ला	शु.	चं.	का.
३०	शु.	चं.	का	उ.	अ.	रो.	ला.

सूचना यदि ३० घटी से न्यूनाधिक्य दिन या रात्रि मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी पल ज्ञात होंगे।

यात्रायां शुभ शकुनानि—मृग बायें ते दाहिने जो आवे तत्काल। अन धन लक्ष्मी बहु-मिले चलते प्रातःकाल॥ विप्र २ अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गो, दधि, सर्षप, कमल, निर्मल वस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुवर्णा, गौरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धिवाक्य, सजल पूर्णघट यात्रा पश्चाद्रितक्तघट यात्रा समय देखना शुभ है। अशुभशकुनानि—वन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि इन्धन, संन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जारयुद्ध; कुटुम्बकलि, विधवा, जातिभ्रष्ट, अंगहीन, छिका, दुष्टवाणी यात्रा समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

रामदैवज्ञोक्तं आवश्यक यात्रा मुहूर्त चक्रम्

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्र	दारिद्र्य	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	लाभ	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

तृतीया-त्रयोदशी, चतुर्थी-चतुर्दशी, पञ्चमी-पूर्णमासी का फल समान जानना, अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पाँवों आगे उठा कर चले इसी तरह सवारी पर चढ़े कार्य सिद्ध, यात्रा सफल होगी।

नौका यात्रा मुहूर्त—चि. ह. पु. मृ. पूर्वा. ३. अनु. श्र. ध. एषु भेषु सत्तिथौ शुभेऽह्नि चन्द्र-तारानुकूले सति शुभः।

यात्रा निवृत्तौ प्रवेश मुहूर्तः—मृ. रे. अनु. रो. उ. ३. ह. अ. पुष्य, स्वा. श्र. ध. श. एषु भेषु चं. बु. बृ. शु. श. वारेषु, १।२।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु; ३।५।६।८।९।११।१२ एषु लग्नेषु; १।४।७।१०।५।९ स्थानेषु शुभैः ३।६।११ स्थानेषु पापैः ४।८। शुद्धौ शुभः। वि. कृ. पू. ३. भ. म. मू. ज्ये. आर्द्रा. आश्ले. नक्षत्राणि; ४।९।१४।६।१२।८।३० तिथयः; सू. मं वारौ; १।४।७।१० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि। मंगल को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है। विशेषः—प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनं। नवमे जातु नो कुर्याद्दिने वारे तिथावितिः।

अथ घात चन्द्र वारादीनां चक्रम्

मे.	वृ.		क	सिं.	कं	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशयः
मे.		कुं.	सिं.	म.	मि.	ध.	वृष	मि.	सिं.	ध.	कुं.	घातचन्द्र
र.		चं.	बु.	श.	श.	बृ.	शु.	शु.	मं.	बृ.	श.	घातवार
म.	ह.	स्वा.	ऽनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	श्ले.	घातनक्षत्र
मे.	ध.	ध.	मि.	वृश्चि.	वृश्चि.	मी.	ध.	कं.	वृश्चि.	मि.	मे.	स्त्रीचंद्रघा.
का.	मा.	पौ.	मा.	फा.	चै.	व.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	घातमास
वि.	शु.	प.	ध्रु.	प्री.	सु.	ऽगं	वृ.	वै.	गं.	व्या	वै.	घातयोग
१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५	घातलग्न
१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५	घाततिथि
६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०	,,
११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५	,,

युद्ध; विवाह; राजसेवा; वाहन; रोगादि कार्यों में घात चक्र देखना और तीर्थ यात्रा तथा विवाहादि शुभकार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं है। "घाततिथिर्घातवार घातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसु शोभनम्।"

वाम दक्षिण निर्देश—

अत्र चक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना; पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का कहा वही सरठ (गिरगट) के चढ़ने का जाने। सरठ के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है।

अथाङ्गविभागे पल्ली (छिपकली, कोढ़किरली) पतन फलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभ	भ्रूमध्ये	राज्यसंबंध	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधि	वामकर्णे	बहुलाभ	अधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभय	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानुद्वये	शुभागम्	हस्तयोः	वस्त्रलाभ	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभ	वा. मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्टान्नभोजनं
ललाटे	बन्धुदर्शन	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
दक्षिणकर्णे	आयुर्वृद्धि	नेत्रयोः	धनाप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशांते	मरणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
मणिबंध	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने प्रशस्त वारतिथ्यक्षाणि—यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है। तथा चं. बु. गु. शु. इन वारों में भी शुभ फल देती है। पु. अश्वि. रो. मृ. पुन. उफा. ह. चि. स्वा. ध. रे. अनु. श. ये नक्षत्र शुभ फलदायक हैं। इतोऽन्यद्भेषु निंद्याः॥

पल्लीपाते कर्तव्य कर्म—पल्ली (किरली) तथा सरठ (गिरगट) स्पर्श होने पर वस्त्र सहित स्नान करे। जन्म नक्षत्र, मृत्युयोग, दग्धदिन, भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्तलग्न में तथा अष्टमचन्द्रमा में पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शांति के लिये जप, होम, मृत्युञ्जय का जप या तिल-स्वर्ण दान पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छायापात्र दान भी करना उत्तम है।

छिका फलम्—छिका प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है, गौ की छिका मरण करती है। मदिरा के योग से अथवा—छींक सूँघनी छल कर लीन्हीं; पीनस सरदी धांस फल हीनी॥ छींक पीठि की कुशल उचारें; बाईं कारज सबै सवारें॥१॥ सन्मुख छींक लड़ाई भाषै; छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै॥२॥ ऊंची छींक कहे जयकारी; नीची छींक होय भयकारी॥ अपनी छींक महा दुखदाई; ऐसे छींक विचारो भाई॥३॥ कन्या विधवा मालन धोबिन रजस्वला वेश्या चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिका—आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिकाः शुभावहाः॥ एक नाक दो छींक; काम बने सब ठीक॥

हर प्रकार की पुस्तकें
मिलने का पता—मोतीलाल बनारसीदास, नायघाट, बनारस।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

❀ अंगस्फुरण फलम् ❀

पुरुषों का दायां अंग और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है ।

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षःस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तु
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग
स्कन्ध	भोगसमृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाधः	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभाप्ति	आंत्रिक	कोपवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनाप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्षि	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर	कोषलाभ	बस्तिदेश	अभ्युदय
नेत्रपक्ष्म	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	ऊरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोपरि	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्वबुद्धि		

इन्हीं अंगों में तिल लसन मस्सा हो वा खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानना । पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो । राजाओं के हाथ में तिल या खाज हो तो जय होती है । साधारण व्यक्ति को लाभ होता है ।

उत्पातफलचक्रम्

उत्पात	फल	उत्पात	फल	उत्पात	फल
दिग्दाह	वर्षा न हो	भूमिकम्प	प्रजा को भय	सर्वग्रह अतिचार	शुभ फल
धूल वर्षे	दुर्भिक्ष पड़े	पहाड़ टूटे	राजा की मृत्यु	मूसल निकले	युद्ध, महर्घता
पत्थर वर्षे	अकाल हो	वृक्ष टूटे	राजा को भय	धूम्रकेतु उदय	राजभंग करे
तारे टूटे	जनक्षय	उलटी ऋतु	रोग विशेष	२।३।४ शूलोदय	राजनाश
बिजली टूटे	जल सूखे	आदमी के पशु हों	राजविघ्न	सुवर्ण पंक्ति	राजनाश
दिन अन्धेरा	प्रजाक्षय	ग्रहयुद्ध	राजाओं में विग्रह	तिकोणतारा	प्रजानाश
ग्रहसंयुति	अकाल	सूर्य चंद्र मंद पड़े	देशक्षय	बनपशु गांव बसे	मनु.शून्य हो
श्वेतमंडल	भय हो	कृष्ण मंडल	राज्य नाश	उल्लू बोले	गृह शून्य हो
पीतमंडल	रोग हो	धूम्र मंडल	बर्फ पत्थर पड़े	बांधी कबूतर-	गृह स्वा.नाश
नीलमंडल	वर्षा हो	बिना ऋतु फल	अन्न नाश	घर में बसे	
रक्तमंडल	युद्ध हो	सूखी भूमि गीली	बहुत वर्षा	सू. चं. बिंब-	रोगभय
स्त्रीवध हो	दुर्भिक्ष पड़े	विप्र बालक वध	दुर्भिक्ष पड़े	अधिक देख पड़े	राजनाश
देवध्वंस	राजनाश	सर्वग्रास	सब वस्तु महंगी	भूमिकम्प	दुर्भिक्ष
ग्रहास्तोदय	भयंकरवर्षा	भौमादिकवक्र	दुर्भिक्ष पड़े	१३ दिनका पक्ष	प्रजानाश

अथ वारपरत्वेन तैलाभ्यंगे फलं विधिश्च

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	वाराः
तापम्	सुकांति	मृति	श्रीः	वित्त-हानि	विपत्ति	सुख सुभोग	फलम्
पुष्पं	०	मृति	०	दूर्वा	गोमय	०	पातन

तैलाभ्यङ्गे वर्ज्यानि

तदत्राह—
रवौ भौमे व्यतिपाते संक्रांति-
वैधृतावपि । षष्ठ्यष्टम्योश्च
विष्ट्यां च, तैलाभ्यंगो न पर्वसु ॥

विशेषः—यदि प्रति दिन तेल लगाने का स्वभाव हो, अथवा उत्सव के दिन वा वात-रोग में तेल लगाने में दोष नहीं । अभिमन्त्रित, औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल सुगन्धित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है ॥

काक स्पर्शादौ फलम्—मस्तक पर काक स्पर्श धननाश मरण तथा कलह करता है, कमर कन्धे पर भी अशुभ होता है । स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति पुत्र का नाश करता है । वृक्ष के नीचे दही आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है ॥ काकमैथुन का देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्यकष्ट वा इच्छित कार्य नाश करता है । इसके दोष दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काक प्रतिमा मृण्मयपात्र में स्थापन कर उड़द, चावल, घी, मीठा का नैवेद्य देवे, ग्राम से दक्षिण की ओर बाहर चौरास्ते पर गन्ध पुष्प धूप दीप दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय का यथाशक्ति जप करे (या करावे) घृत छाया-पात्र दान पञ्चगव्य से स्नान भी करे, इस विधाना के करने से सम्पूर्ण दोष नाश होते हैं ॥

अथ काक वचन फल विचारः—काकस्य वचनं श्रुत्वा पादच्छायां तु कारयेत् । त्रयोदशपदं दत्वा षड्भिर्भागं समाहरेत् ॥ लाभच्छेदस्तथा सौख्यं भोजनं च धनागमम् । निश्शेषमरणं व्याधिरेतत्काकस्य लक्षणम् ॥

कपोतः (कबूतर)—सिर पर गिरे वा स्व पालतू कबूतर के बिना अन्य कबूतर वा उल्लू गृह में चला जावे तो मृत्यु वा मान स्थान हानि होती है, तद्दोष—निवृत्त्यर्थ दुर्गापाठ, होम सप्तधान्य दानादि करने से शान्ति हो ॥

अथ स्वप्न-विचारः

स्वप्न ७ प्रकार का होता है, प्रथम दृष्ट (दिन में देखे हुए को देखना), द्वितीय श्रुत (सुने हुए का सुनना), तृतीय अनुभूत (जागृतावस्था में परीक्षा की हुई वार्ता की स्वप्न में देखना), चतुर्थ प्रार्थित (जागृतावस्था में इच्छा की हुई बात को देखना), पञ्चम कल्पित (दिन में कल्पना की हुई वस्तु को देखना), षष्ठ भाविक (न देखी न सुनी उससे विलक्षण), सप्तम दोषज (वात, पित्त, कफ के दोष से) ॥ पूर्वोक्त ७ प्रकारों में से "दृष्ट, श्रुत, अनुभूत, प्रार्थित, कल्पित" ये पांच प्रकार के स्वप्न प्रायः निष्फल होते हैं । छठे भाविक स्वप्न का फल उत्तम मिलता है । सप्तम दोषज का फल रोगी के उत्तम मध्यम देखने में आता है । इतना विशेष है कि बहुत बड़ा तथा बहुत छोटा स्वप्न निष्फल होता है । सुज्ञजन को देखकर पुनः स्नानादि से शुद्ध हो देव या गुरु आदि के शुभ स्थान में जाकर किसी पूर्ण दैवज्ञ के सामने फल पुष्प दक्षिणा रक्खे, फिर स्वस्थ चित्त से स्वप्न का वर्णन कर शुभाशुभ तथा सामान्य फल का विचार करावे ॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शुभ स्वप्नाः—राजा, विप्र, देवता, गुरु, श्वेत वस्त्र वाली स्त्री इनका दर्शन तथा आशीर्वाद मिलना। महल, पर्वत, सिंह, अश्व, इन पर चढ़ना वा दर्शन करना, रक्त से स्नान, रथ शय्यादि का ज्वलन, स्व शिर का छेदन, अपना मरण, वेदध्वनि श्रवण, रक्तपीत पुष्प-दर्शन, दर्पणप्राप्ति, दही चावल भोजन, जूआ रण विवाद में अपनी जय, इन्द्र धनुष का देखना, मठा कपास इन दो वस्तुओं को छोड़कर अन्य सर्व श्वेत वस्तु स्वप्न में देखना धनैश्वर्य की प्राप्ति तथा कष्ट की निवृत्ति करता है। यदि कोई क्लर्क या मुन्शी यह स्वप्न देखें कि उसने दफ्तर के रजिष्टरों वा बहियों में बहुत गलतियां की हैं तो उसे उसके मालिक से अच्छा काम करने की शाबाश वा तरक्की मिलेगी।

यदि स्वप्न में फल पुष्प सहित वृक्ष पर अथवा श्वेत वृषभ पर चढ़कर जाग जाय अथवा दक्षिण हाथ में श्वेत सर्प काट खाये तो निश्चय शीघ्र विशेष धन मिले। स्वप्न में बिच्छू या सर्प के जल में पैर पर काटने से रक्त निकल आवे तो विपत्ति दूर होकर सुख हो। श्वेत वस्त्र वाली स्त्री का स्नान करना हाथों में हथकड़ी पैरों में जञ्जीर का बन्ध पड़ना, नर या नारी के हाथ से जूती व खड़ाऊँ, छत्र, तीक्ष्ण तलवार का मिलना, टट्टी में सर्प का दीखना, अपने पर व भुजा के मांस को खाना, अगर कपूर पान का मिलना, ऐसे स्वप्न दीखे तो लक्ष्मी की प्राप्ति व सुख मिले। मणि आदि पात्रों में भोजन करना, अपने शिर के मांस को खाना, राज्य लाभ करता है, गौ का ताजा दूध उसी वक्त पीना, सूर्यमण्डल का दीखना, अपना मरना दीखे तो रोगी पुरुष का रोग-नाश और नीरोग पुरुष को लाभ होता है। बगुला, मुर्गी, कुञ्ज का दीखना चतुर स्त्रीप्राप्ति का सूचक है। स्वप्न में रक्त वा मद्य का पीना विप्र को उत्तम विद्यालाभ, क्षत्रियादि को धनप्राप्ति करता है। मांस चरबी का खाना, विष्टा अपने अंग में लगाना श्वेत चन्दन श्वेत वस्त्र श्वेत पुष्पों से सुसज्जित अपनी देह व अन्य पुरुष की देह देखना लाभ करता है। हरी सब्जी व सुन्दर अन्न कोई घर पर आकर देजाय तो भी लाभ हो, नदी समुद्र में तैरना, तालाब में तैर कर पार जाना सूर्योदय का देखना कष्टनिवृत्ति करता है। ऊँचे मन्दिर पर चढ़कर आग लगी देखना या तारों का देखना भाग्योदय करता है, राजा गौ ब्राह्मण को प्रसन्न देखना, पर्वत, वृक्ष, बागीचे हरे सुन्दर फल संयुक्त देखना बिगड़े काम सिद्ध होंगे ऐसा जानना। घर में किसी की मृत्यु पर सब रो रहे हों तो लक्ष्मी और सुख मिले। बेड़ी पर चढ़कर पार होने से परदेश गमन हो। अगर कोई दूकानदार स्वप्न देखे कि ग्राहक उसके बिल चुकाय बिना भाग गया हो तो उसको समझ लेना चाहिए कि हमको रुपया कहीं से शीघ्र मिलेगा और नये ग्राहक भी बनेंगे। यदि किसी की बहन यह स्वप्न देखे कि उसके भाई पर भारी विपत्ति पड़ी है और उसकी जान खतरे में है तो यदि वह कुमारी है तो उसका किसी बड़े आदमी के साथ विवाह हो जावेगा, और यदि वह विवाहिता है तो उसके घर में सर्व प्रकार से सुख शांति रहेगी। शुभ स्वप्न के बाद सोने से स्वप्न निष्फल हो जाता है अतः सोवे नहीं।

अशुभ स्वप्नाः—लाल वस्त्र पहिरना, सूर्य चन्द्र का निस्तेज दीखना, तारों का टूटना, अपने घर में हंस हंस के किसी स्त्री को मंगल गाते देखना, नीम पलास के वृक्ष पर चढ़ना, रुई, कपास, तेल, लोहा मिलना, इनसे संकट व मृत्यु हो। शरीर में तेल मलना या किसी द्वारा तेल से स्नान का होना मृत्यु वा भारी कष्ट को सूचित करता है। शिर के सारे बालों का या मुख के दांतों का गिरना, द्रव्य या पुत्र का नाश करता है। मरे मनुष्य का अपने स्थान में भोजन करना व किसी वस्तु को मांगकर ले जाना द्रव्य हानि वा कष्ट करता है। तैलपक गुलगुले तथा तांबे के पैसे मिलना रोग-कष्टसूचक है। अपनी स्त्री की कमीज को मरी स्त्री ले जावे तो पुत्र कष्ट या मृत्यु हो। हाथ नाक का कटना, कीच (पंक) में फंसना, ऊंट गधे भैंसे पर चढ़ कर तैल मलकर दक्षिण दिशा को जाना और विवाह गीत मंगल सुनना, अपने घर को किसी के द्वारा गिराते हुए देखना, काले तथा रक्तवस्त्र वाली स्त्री का आलिंगन करना, बन्दर सर्प पर चढ़ना, श्राद्ध आदि पितृकार्यों का करना, भूत प्रेत चाण्डालों के साथ मिलना अथवा भूतादि द्वारा पकड़ा जाकर दक्षिण दिशा में जाना इत्यादि स्वप्न मृत्युकारक होते हैं। नदी में डूबना अथवा नदी के प्रवाह में बह जाना, बिना ऋतु के वर्षा देखना, बाघ, रीछ, गीदड़, बिलाव, भैंस, सर्प, मक्खी का दर्शन, पर्वत शिखा का तथा बड़े महल ध्वजा का गिरते देखना अशुभ कष्ट वा चिन्ताकारक है। गौ, हस्ती, देव, विप्र इनके बिना सब काले रंगकी वस्तु देखना अशुभ वा चिन्ताकारक होती है। अगर "विधवा" स्त्री यह स्वप्न देखे कि उससे शादि करने का किसी ने सवाल किया है तो उस पर कोई सख्त बीमारी आवे, या मृत्यु होवे। कुत्ता शरीर पर कूद कर दांत से मांस काटे तो शत्रु गुप्तभाव से अनिष्ट करेगा॥

स्वप्न का फल कब मिलेगा?

रात्रि के प्रथम प्रहर का १ वर्ष में, द्वितीय का ८ मास में तृतीय का तीन मास में, तथा रात्रि के चतुर्थ प्रहर का एक मास में, अरुणोदय का १० दिन में तथा सूर्योदय से कुछ पहिले का स्वप्न तत्काल ही फल देता है॥

अशुभ स्वप्न के दोष की शान्ति

दुष्ट स्वप्न के दोष को दूर करने के निमित्त मृत्युञ्जय का जप होम, यथाशक्ति स्वर्ण तथा गोदान, अश्वत्थपूजन, विष्णुसहस्रनाम, गजेन्द्रमोक्ष व चण्डीपाठ, ब्राह्मण-भोजनादि करवाना चाहिए। अशुभ स्वप्नों को देख कर फिर तत्काल सो जाना भी दुस्वप्न के अनिष्ट फल को दूर करता है॥

आयुर्निर्णय—१—लग्नेश-अष्टमेश से तथा जन्मलग्न और चन्द्र पर से आयुष्य का निर्णय करें दोनों से एकवाक्यता न मिले तो जन्मलग्न होरा लग्न से आई आयु ठीक समझे-चरे चरे, स्थिरे-द्विस्स्वभावे-दीर्घायुः। द्विःस्वभाव-द्विस्वभावे, चरे-स्थिरे-मध्यायुः। स्थिरे-स्थरे। चरे-द्विःस्वभावे-अल्पायुः।

२—११, १, ४, ७, १०, ५, ९, इन स्थानों में लग्नेश, अष्टमेश और दशमेश के पड़ने से दीर्घायु होती है। ३।४ में पापग्रह हों; पणफर में भी यदि पापग्रह हों तो मध्यायु; इसके अतिरिक्त अल्पायुः।

३—लग्नेश सूर्य का मित्र हो तो दीर्घायु, सम हो तो मध्यायु, शत्रु हो तो अल्पायु।

अंक प्रश्न तथा फल वर्णन

प्रश्नकर्ता से एक सौ आठ अंक के भीतर कोई एक अंक मुख से कहलावें या लिखवावें उसमें बारह का भाग देकर पीछे यदि ३।९।७ बचे तो देर से कार्य सिद्ध होवे। यदि ८।४। १०।५ बचे तो कार्य नाश होवे। ११ बचे तो सिद्धि, २ बचने से वृद्धि, ३।६।१२ (०) बचने से शीघ्र सिद्धि होवे यह फल कहे॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(पृष्ठ ६४ का शेष मैटर)

२ पातदोषज्ञानाय चक्रम्

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	ऽनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे.	विवाहन.
श्ले	मृ	अ	कृ	भ	कृ	अ	रो	भ	भ	अ	पातदूषित नक्षत्र
पुन	आ	मृ	आ	मृ	श्र	आ	ज्ये	पुन	श	ज्ये	
श	ज्ये	ज्ये	वि	श	ध	उषा	ध	श	वि	ध	
पूफा	ध	पुष्य	पूफा	पूभा	पुष्य	पूभा	श्ले	वि	उफा	म	
चि	म	ह	श	स्वा	ह	पूषा	मू	ऽनु	चि	पूफा	
मू	ह	रे	पूभा	म	रे	पूफा	उभा	उषा	मू	स्वा	

हर्षण, वैधृति, साध्य व्यतिपात, गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इस नक्षत्र में विवाह करने से पात दोष होता।

३ युति—जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उ सग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता किन्तु श्रेष्ठ है। सू. मं. शु. श. रा. के. की युति दारिद्र्य मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है॥

४ वेधदोष चक्रम्

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	ऽनु.	मू.	उषा.	उभा.	
अभि.	उषा.	श्रवण	पू.	उभा.	रे.	भ.	पुन.	पु.	श.	उफा.

ऊपर के नक्षत्रका विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेध दोष होता है यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग करना चाहिये।

५ जामित्र दोष चक्रम्

रो	मृ.	म.	उ.	ह.	स्वा	ऽनु.	मू.	उ.	उ.	रे.	न.
ऽनु	ज्ये	ध	पूभा.	उभा.	अ	कृ	मृ.	पुन	उफा	ह	प्र.न.

विवाह लग्न से ७वें ग्रह होने पर जामित्र दोष होता है, ऊपर वैवाहिक नक्षत्र हैं, और नीचे ग्रह नक्षत्र हैं, याने १४वें नक्षत्र में पापी ग्रह का जामित्र दोष वर्जनीय है।

७ एकार्गल दोषः—

व्याघात, गण्ड व्यतिपात, विष्कुम्भ, शूल वैधृति वज्र, परिघ, अतिगण्ड ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है॥

८ उपग्रह—

सूर्य के नक्षत्र से ५ वें ७वें, ८वें १०वें १४वें १५वें १८वें १९वें २१वें २२वें २३वें २४वें और २५वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

९ क्रांतिसाम्य दोष चक्रम्

मे०	वृ०	मि०	क०	कं०	तु०
सिंह०	म०	ध०	वृश्चि	मी०	कुं०

नीचे या ऊपर की राशि पर सूर्य हो या चन्द्रमा हो तो स्थल क्रांतिसाम्य दोष होता है। यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे मेष के सूर्य सिंह के चन्द्रमा में वा सिंह के सूर्य मेष के चन्द्रमा में।

६ बाणज्ञानाय सुलभ चक्रम्

बाण नाम	गतांशाः प्रति राशौ अर्कस्य	५ कर्म वर्ज्याः	वार-वर्ज्याः	समयपरत्वेन वर्ज्याः
रोग	८।१७।२६	व्रतबन्धे	रवौ	रात्रौत्याज्यम्
वन्हि	२।११।२०।२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यम्
नृप	४।१३।२२	नृपसेवायां	मन्दे	दिवात्याज्यम्
चौर	६।१५।२४	यात्रायां	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्यु	१।१०।१९।२८	विवाहे	बुधे	संध्ययोः वर्ज्यम्

१० दग्धा तिथि दोषः

९	२	४	६	५	१०	सूर्ये
१२	११	१	३	८	७	राशयः
२	४	६	८	१०	१२	तिथयः

इन संक्रान्तियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं, सो विवाह में वर्जनीय हैं।

भुजंगं क्रांतिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीनविवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत्॥

लत्तादि दोषाणां परिहार वाक्यानि—लत्ता मालवके (उज्जैन प्रान्त) देशे पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्रे बांगर) जांगले (फिरोजपुर भटिण्डा प्रान्त) एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्॥ उपग्रहर्क्षे कुरुवाह्लिकेषु (आगरा प्रान्त अवस्थान) कलिंगवंगेषु (जगन्नाथपुरी बंगाल अयोध्या) च पातितं भम्॥ सौराष्ट्र (काठियावाड़) शाल्वेः (उज्जैन प्रान्त) च लत्ताभं त्यजेत् विद्धं किल सर्वदेशे॥ युतिदोषो भवेद् गौडे (बंगाल) जामित्रस्य च यामुने (मथुरादि प्रान्त)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः॥

विशेष परिहारः—चित्रांगते पात विचित्रदेशे, मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः। पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः, सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपातः॥

युतिपरिहारः—स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः। युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा॥ अत्यावश्यके वेधपरिहारः—पादमेव शुभैर्विद्धमशुभैर्नैव कृत्स्नतः (नारदः)॥ अतोन्त्यपादमादिगो द्वितीयकस्तृतीयकम्। तृतीयको द्वितीयकं चतुर्थगस्तु चादिमः॥ भिनत्ति वेधकृद्ग्रहो नचान्यपादमादरात् (वसिष्ठः)॥ अथ पापग्रहेण भुक्तभोग्याक्रान्तनक्षत्रस्य शुभेषु त्यागः—भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः॥ अस्यापवादः—ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरभुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण नुक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते॥ जामित्रपरिहारः— (व्यवहारसमुच्चये)—स्वोच्चे सौम्यालये चन्द्रे स्ववर्गे मित्र वर्गगे। हृत्वा जामित्रकृद्दोषं करोति विपुलं सुखम्। मुहूर्तचिंतामणावपि—एकार्गलोपग्रहपातलत्ता जामित्रकर्तर्युदयास्तदोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्कबलोपपन्ना लग्ने यथाऽर्कोभ्युदयेतु दोषाः॥

विवाहे लग्न शुद्धि चक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भावेषु
चं. पापः	०	शु.	रा.	०	चं. शु. लग्नेश	सर्वे	चं. शु. शुभाः लग्नेश	०	मं.	०	श. चं.	त्याज्याः
चं. क्रूरा	कुलिकं क्रान्तिसाम्यञ्च				चं.	मं.	चं. मं. शुभाः	विद्धभञ्च				गोधूली त्याज्याः

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सर्वथा लग्न भंग योगाः---व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रकला न शस्ताः। लग्नेट् कविग्लौ रिपौ मृतौग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे च सर्वे (अस्तेऽब्जगुरु समौ) ॥ वर्गोत्तमं विनात्यांशो विवाहे न शुभप्रदः । वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः ॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नं त्वष्टमो राशिरेव च । यदि लग्नगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः ॥ पंग्वन्धादि लग्नानां गौड़मालवयोरेव त्यागः, बादरायणः---मासशून्यायह्वास्तारा राशयो वधिरादयः । गौड़माल-वयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशेनगर्हिताः ॥

कर्तरी दोषः---लग्नस्य पृष्ठाग्रयोः साग्वोः सा कर्तरी स्यादृजुवक्रगत्योः । तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारौ न कर्त्तरी चेति पितामहोक्तिः । "इयं कर्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या" केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहारः---पापौ कर्तरीकारकौ रिपुगृहे नीचास्तगौ कर्तरी । दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्षष्ठदोषोऽपि न । भौमेस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद् भौमोऽष्टमो दोष-कृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारि दोषोऽपि न ॥

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे---दोषाश्च बहवः सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे । तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह ॥ अपवादांतरम्---उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्ता-न्निहन्ति बली गुरुः । केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान्गरुडा यथा ॥ मुहूर्तलग्नषड्वर्गकुनवां-शग्रहोद्भवाः । ये दोषान्निहन्त्येव यत्रैकादशगः शशी ॥ अब्दायनर्तु मासोत्थाः पक्षतिथ्यर्क्ष-सम्भवाः । ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे । लग्नाधिपौ यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये ॥ सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत् ॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोषशतत्रयम् । द्यूनं विहाय दैत्येज्य सहस्रं लक्षमंगिरा ॥ स्मरण रहे कि पूर्वोक्त अपवाद वाक्यों में सर्वत्र सप्तम-रहित केन्द्र (१।४।१०) ही ग्रहण करना ।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रदस्थानानि

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के. ग्रहाः		मुहूर्तगणपतौ
३	२	३	१	१	१	३	३	३	स्थानानि	लग्नं शुभं विवाहे
६	३	६	२	२	२	६	६	६		
८	११	११	३	३	४	८	८	८		
११			४	४	५	११	११	११		स्याद्दर्शविंशोपका-
			५	५	९					
			६	६	१०					धिकम्
			९	९	११					
			१०	१०						
			११	११						
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥		विंशोपका बलम्

अथ गोधूलि लग्नविचारः---लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी । तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम् ॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधुतदा वदन्ति । लग्ने विशुद्धे सति वीर्य्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते ॥ गोधूलिं त्रिविधां वदन्ति मुनयो नारीविवाहादिके, हेमन्ते शिशिरे प्रयाति मृदुतां पिण्डीकृते भास्करे । ग्रीष्मेऽर्द्धास्तमिते वसन्तसमये भानौ गते दृश्यतां, सूर्ये चास्तमुपागते भगवति प्रावृट्शरत्कालयोः ॥ ७४

गोधूलिके त्याज्यदोषः---कुलिकं क्रांतिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी । तदा गोधू-लिकस्त्याज्यः पञ्चदोषैस्तु दूषितः ॥ अष्टमे जीवभौमौ च बुधो वा भार्गवोऽष्टमे । लग्ने षष्ठेऽष्टमे चन्द्रस्तदा गोधूलिनाशकः ॥ "अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के" अर्थात् बृहस्पति-वार को सूर्य अस्त होने के पीछे (क्योंकि सूर्यास्त से पहले वारवेला होगी) और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने से कुलिक मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना

संकीर्ण चाण्डालादि जातीनां विवाह मुहूर्तः---कृष्णपक्षे भानु-भौमार्कजानां, वारे योगे चापि धिष्ण्ये निषिद्धे । संकीर्णानां दारकर्म प्रशस्तं, प्रीत्यर्थायुःप्राप्तये शौनकाद्याः ॥

पुर्नाविवाहे सूर्यभात् शुभाशुभ ज्ञानाय चक्रम् ।

३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	मृत्यु	दुर्भग	श्रीः	उन्नति	फलम्

अन्यच्च---सूर्यभात् ४।११।१८।२५ संख्यक साभिजित्भेषु पुर्नाविवाहे मृत्युः । अत्र तिथिमासवेधभृगुर्वस्तादिदोषोऽपि नावलोकनीयः ॥

वधूप्रवेश का मुहूर्त---जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहिले पहल आती है वह वधूप्रवेश कहा जाता है । विवाह से १६ दिन के भीतर समदिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन, इनके उपरांत एक मास तक विषम दिनों में, एक वर्ष के भीतर विषम मास में और एक वर्ष के उपरांत ३ रे, ५ वें वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधूप्रवेश शुभ है । ५ वर्ष के उपरांत जब चाहे तब शुभ मुहुर्त में हो सकता है । १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांगशुद्धि चन्द्रबल गुरुशुक्र के मूढत्व का भी विचार नहीं करना । व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा । अमासंक्रांतितिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत् । रे. अश्वि. रो. मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. म. म उत्तरा. ३ पुष्य अनु. इन नक्षत्रों में और चं. बु. बृ. शु. श. इन वारों में १।२।३।५।६।७।८।१०। ११।१२।१३।१५ तिथियों में ५।८।११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हो तो वधूप्रवेश शुभ है ।

प्रवेशस्य समयमाह---वधू प्रवेशो न दिवाप्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि प्रशस्तः ।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः, सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः ॥

विवाहतः प्रथमवर्षे वधूनिवास फलम्---विवाह के बाद आषाढ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षय मास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को, अधिक मास में पति को नाश करती है । विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं ।

द्विरागमन का मुहूर्त---घोके से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते है । विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या ५वें वर्ष वृश्चिक, कुम्भ, मेष के सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हों तब सोम, बुध. गुरु वा शुक्रवार को २, ३, ६, ७, या १२ वीं

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्षांशादि सारणी

नगर नामानि	अक्षांश अं. क.	पलभा अं.व्यं.	देशान्तर घ. प.	रेखान्तर पलानि
अयोध्या	२६।४८	५।४	+०।५८	६५ पू.
अमृतसर	३१।३७	७।२३	−०।१८	११ प.
अम्बाला	३०।२५	७।५	+०।१	८ पू.
अहमदनगर	१९।८	४।१०	−०।२०	१३ प.
अहमदाबाद	२३।२	५।६	−०।४२	३५ प.
अल्वर	२७।३४	६।१६	−०।३	४ पू.
अल्मोड़ा	२९।३७	६।४९	+०।३१	३८ प.
अजमेर	२६।२७	५।५८	−०।२१	१४ प.
अलीगढ़	२७।५४	६।२१	+०।१७	२० पू.
अकोला	२०।२६	४।२३	−०।८	१४ पू.
आगरा	२७।११	६।१०	+०।१४	२१ पू.
आसाम	२६।३०	५।५८	+२।४४	१७१ पू.
आबू	२४।३६	५।३०	−०।३९	३२ प.
आजमगढ़	२६।२	५।५२	+१।४	७१ पू.
इटावा	२६।५२	६।५	+०।२६	३३ पू.
इन्दौर	२२।४२	५।२	−०।१०	३ प.
उज्जैन	२३।१०	५।८	−०।७	०
उदयपुर	२४।३६	५।३०	−०।३१	२४ प.
उड़ीसा	२१।०	४।२२	+१।३६	१०३ पू.
एलिचपुर	२१।१६	४।४०	+०।१०	१७ पू.
औरंगाबाद	१९।५९	४।२०	−०।१४	७ प.
कलकत्ता	२२।३६	५।०	+१।५५	१२२ प.
कपूरथला	३१।२३	७।१९	−०।१४	७ प.
करनाल	२९।४१	६।५०	+०।४	११ पू.
कराची	२४।५०	५।३३	−१।३३	८६ प.
कठुआ	३२।२३	७।३८	−०।११	४ प.
काशी	२५।१९	५।४०	+१।५	७२ पू.
कानपुर	२६।२८	५।५८	+०।३५	४२ पू.
कांगड़ा	३२।९	७।३४	−०।३	४ पू.
काठमाण्डू	२७।४३	६।१८	+१।२८	९५ पू.
कांची	९।२९	२।०	+०।१०	१७ पू.
कांकरौली	२५।०	५।३६	−०।२८	२१ प.
कुरुक्षेत्र	२९।५८	६।५५	−०।७	०
कुल्लू	३१।४९	७।२७	−०।३	४ पू.
कुराली	३०।५२	७।१०	०।०	७ पू.
कोटा	२५।१८	५।४०	−०।८	१ प.
कोल्हापुर	१६।४३	३।३६	−०।२५	१८ प.
कोचीन	९।५८	२।७	−०।५	२ पू.
खान्देश	२०।२७	४।२४	−०।१४	७ प.
गया	२४।४५	५।३२	+१।२४	९१ प.

नगर नामानि	अक्षांश अं.क.	पलभा अं.व्यं.	देशान्तर घ.प.	रेखान्तर पलानि.
ग्वालियर	२६।१२	५।५४	+०।१४	२१ पू.
गाजीपुर	२५।३५	५।४५	+१।११	७८ पू.
गिलगित्त	३५।५४	८।२८	−०।२१	१४ पू.
गुरुदासपुर	३२।५१	७।२९	−०।१५	८ प.
गोरखपुर	२६।४५	६।३	+१।५	७२ पू.
चित्तौड़गढ़	२४।५०	५।३५	−०।१९	१२ प
चित्राल	३५ २९	८।३	−०।४९	४२ प.
चम्बा	३२।३४	७।४०	−०।२	५ पू.
छत्रपुर	२४।५२	५।३२	+०।३२	३९ पू.
छपरा	२५।४७	५।४८	+१।१९	८६ पू.
जगन्नाथ	१९।४६	४।१९	+१।३०	९७ पू.
जम्बू	३२ ४४	७।४३	−०।१९	१२ प.
जब्बलपुर	२३।९	५।८	+०।३३	४० पू.
जयपुर	२६।५६	६।६	−०।८	१ प.
जालन्धर	३१।१८	७।१८	−०।९	२ प.
जामनगर	२२ २७	४।५७	−१।७	६० प.
जीन्द	२९ १९	६।४४	−०।४	३ पू.
जूनागढ़	२१ २९	४।४३	−१।१	५४ प.
जोधपुर	२६।१९	५।५६	−०।३७	३० प.
झालरापाटन	२४ ३२	५।२९	−०।६	१ पू.
झांसी	२५।३०	५।४४	+०।१८	२५ पू.
ट्रावंकोर	९ ०	१।५४	+०। ६	१३ पू.
टोंक	२६।११	५।५४	−०।१०	३ प.
डलहौजी	३२ ३०	७।४०	−०।७	०
तलागंग	३२।५५	७।४६	−०।४२	३५ प.
त्रिचनापल्ली	१०।५४	२।१९	+०।२४	३१ पू.
दरभंगा	२६।६	५।५३	+१।३१	९८ पू.
द्वारका	२२।१५	४।५५	−१।१५	७१ प.
दिल्ली	२८।३६	६।३३	+०।६	१३ पू.
देहरादून	३०।२४	७।२	+०।१६	२१ पू.
धौलपुर	२६ ४०	६।२	+०।१०	१७ पू.
नदिया	२३।२४	५।११	+२।२	१३२ पू.
नाभा	३०।२३	७।२	−०।६	१ पू.
नागपुर(सी.पी)	२१।८	४।३९	+०।२६	३३ पू.
नाथद्वारा	२४।५२	५।३४	−०।२५	१८ पू.
नासिक.	२०।०	४।२२	−०।२९	२२ प.
नैनीताल	२९।२३	६।४५	+०।२८	३५ पू.
पटियाला	३०।२०	७।१	−०।२	५ पू.
पठानकोट	३२।१६	७ ३६	−०।१०	३ प.
पटना	२५।३३	५।४४	+१।२४	९१ पू.

नगर नामानि	अक्षांश अ क.	पलभा अ.व्य.	देशान्तर घ.प.	रेखान्तर पलानि
प्रयागराज	२५।२६	५।४२	+०।५१	५८ पू.
पाण्डीचरी	११।५६	२।३२	+०।३६	४३ पू.
पालमपुर	३२।१०	७।३४	−०।१	६ पू.
पुन्छ	३३।४५	७।५८	−०।२५	१८ पू.
पूना	१८।२१	४।०	−०।२८	२१ प.
पेशावर	३४।२	८।६	−०।५२	४५ प.
पोरबन्दर	२१।३८	४।४६	−१।१२	६५ प.
फर्रुखाबाद	२७।२३	६।१३	+०।२७	३४ पू.
फरीदकोट	३०।४०	७।७	+०।२०	१३ प.
फिरोजपुर	३०।५६	७।११	−०।१९	१२ प.
बम्बई	१८।५८	४।७	−०।३९	३२ प
बरेली	२८।२२	४।२९	+०।२७	३४ पू.
बड़ोदा	२२।१८	४।१५	−०।३५	२८ प.
बर्दवान	२३।१९	५।९	+१।५४	१२१ पू.
बठिण्डा	३०।१५	७।०	−०।१४	७ प.
बान्दा	२५।२८	५।४३	+०।३५	४२ पू.
बिलास.पंजाब	३१।१४	७।२२	+०। २	९ पू.
बीकानेर	२८।१	६।२३	−०।३३	२६ प.
बीजापुर	१६।४८	३।३७	−०। ८	१ प.
बून्दी	२५।२६	५।४२	−०।११	४ प.
बंगलौर	१२।५८	२।४६	+०।१२	१९ पू.
भरतपुर	२७।१७	६।११	+०। ७	१४ पू.
भड़ौंच	२१।४१	४।४६	−०।३४	२७ प.
भागलपुर	२५।१३	५।२९	+२।४३	११० पू.
भूपाल	२३।१४	५। ९	+०। ९	१६ पू.
भूटान	२७।३०	६।१५	+२।२५	१३८ पू.
मथुरा	२७।२८	६।१४	+०।११	१८ पू.
मद्रास	१३।४	२।४७	+०।३७	४४ पू.
मलेरकोटला	३०।३६	७। ६	−०। ५	२ पू.
मिर्जापुर	२५।६	५।३७	+०।५८	६५ पू.
मुजफ्फरपुर	२६।४२	६। २	+१।२९	९६ पू.
मनीपुर	२५।२	५।३६	+२।५६	१८३ पू.
मुरादाबाद	२८।५०	६।३३	+०।२३	३० पू.
मेरठ	२८।५९	६।३९	+०।१२	१९ पू.
मसूर	१२।१८	२।३७	+०। १	८ पू.
मण्डी स्टेट	३१।४०	७।२८	+० ५	१२ पू.
माण्डलेब्रमा	२२।२	४।५१	−३।१६	२०३ पू.
रतलाम	२३।२१	५।११	−०।१७	१० प.
रत्नगिरि	१७।८	३।४२	−०।३३	२६ प.
रामेश्वर	९।१५	१।५७	+०।२७	३४ पू.
रायपुरम.प्रा	२१।१५	४।४०	+०।४९	५६ पू.
राजमहेंद्री	१७।०	३।४०	+०।५४	६१ पू.

नगर नामानि	अक्षांश अ.क.	पलभा अंव्य.	देशान्तर घ. प.	रेखान्तर पलानि
रियासी	३३।७	७।४८	−०।१८	११ प.
रिवाड़ी	२८।१०	६।२५	−०।१	६ पू.
रीवां	२४।३१	५।२९	+०।४७	५४ पू.
रोहतक	२८।५०	६।३८	−०। २	४ पू.
रोपड़(शतद्रु)	३१।०	७।१२	+०। ३	७ पू.
लखनऊ	२६।५४	६।५	+०।४०	४७ पू.
लद्दाख	३४।०	८।६	+०।८	१५ पू.
लाहौर	३१।३३	७।२२	−०।२४	१७ प.
लुधियाना	३०।५५	७।११	−०।५	२ पू.
विजयनगर	१८।७	३।५६	+१।६	७३ पू.
शिमला	३१।६	७।१४	+०।४	११ पू.
श्रीनगर का.	३४।६	८।६	−०।२०	१३ प.
श्रीनगर ग.	३०।१५	७।१	+०।२२	२९ पू.
सहारनपुर	२९।४२	७।०	+०।१०	१७ पू.
सतारा	१७।५१	३।५२	−०।२८	२१ प.
सागर सी.	२३।५१	५।१८	+०।१९	२६ पू.
सिरमौर	३०।४६	७।९	+०।८	१५ पू.
सूरत	२१।१०	४।३९	−०।३९	३२ प.
सोलन ब.	३०।५७	७।११	+०।२	९ पू.
हरिद्वार	२९।५८	६।५५	+०।१४	११ पू.
हिसार	२९।५	६।४१	−०।७	०
हैदराबाद नि.	१७।२३	३।४५	+०।१९	२६ पू.
होश्यारपुर	३१।३१	७।२१	−०।६	१ पू.
होशंगाबादसी	२२।४०	५।०	+०।१२	१९ प.

(१), अक्षांश = विषुवद्वृत्त से उत्तर दक्षिण अन्तर ॥ (२) पलभा = सायनमेष- मेषसंक्रमणदिवस की मध्याह्न की अंगुलव्यंगुलात्मिकाद्वादशांगुलशंकु-छाया ॥ (३) देशान्तर- रोपड़ से पूर्व पश्चिम अन्तर। देशान्तर के खाने में यह (+) धन चिन्ह (रोपड़ से पूर्व) और यह (−) ऋण चिन्ह (पश्चिम) जानना। ढाई (२॥) पल का एक मिनट होता है, अतः पलों को दुगना कर ५ का भाग दे मिनट बना लें। (४) रेखान्तर-मध्यरेखा से पूर्व पश्चिम अन्तर ॥

विदेशों और द्वीपान्तरों के अक्षांशादि

नैरोबी (पू अफ्रिका)	१।१५द	०।१६	− ६।३५	३८८ प
काङ्गो (प अफ्रिका)	६।० द.	१।५	−१०।३४	६२७ प.
ट्रांसवाल(द अफ्रि)	२६।० द.	५।५१	− ७।५४	४६७ प.
ट्रिपोली (उ अफ्रि)	३३।० उ.	७।४७	−१०।३४	६२७ प
न्यासा (मध्य अ)	१३।० द.	२।४७	− ६।५४	४०७ प
हांगकांग (चीन)	२२।० उ.	४।५१	+ ६।१६	३८३ पू.
पेकिङ्ग(चीन)	४०।० उ.	१०।४	+ ६।३९	४०६ पू.
सिंगापुर(मलाया)	२।० उ	०।२५	+ ४।२६	२७३ पू.
मारीशस द्वीप	२०।० द.	४।२२	− ३।१४	१८७ प.
आस्ट्रेलिया	३२।० द.	७।३०	+११।३६	७०३ पू.
अदन (अरब)	१३।० उ.	२।४७	− ५।१४	३०७ प.
मास्को (रूस)	५५।२४उ.	१६।३५	− ६।३१	३८४ प
टोकियो(जापान)	३५।२६उ.	८।३३	+१०।३०	६३७ पू.
बगदाद (ईराक)	३३।१८उ	७।५१	− ५।२१	३१४ प
बर्लिन (जर्मनी)	५२ २७उ.	१५।३८	−१०।३२	६२५ प.
पेरिस (फ्रान्स)	४८।३०उ	१३।३४	−१२।२२	७३५ प.
ग्रीनिच(लंडन)	५१।१८उ	१४।५८	−१२।४४	७५७ प.
मालद्वीप	५।० उ	१।३	− ०।३४	२७ प.
सीनाम (श्याम)	१६।० उ.	३।२६	+ ३।५७	२४४ पू.
बल्गेरिया(यूरोप)	४३।१८उ	११।१८	− ८।२४	४९७ प.
बिलोचिस्तान	२७।१८उ.	६।१२	− २।१४	१२७ प.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ रूपगढ़ (शतद्रू) स्पष्टार्कोदय काले दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः

(दिनद्वयान्तरकरणात्सूक्ष्मगतिः) केतकी अहर्गणः ५१०८ मासारम्भे

मासः	ति. वा.	दृक्प. सूर्यः रा.अ.क.वि.	मंगलः रा.अ.क.वि.	बुधः रा.अ.क.वि.	गुरुः रा.अ.क.वि.	शुक्रः रा.अ.क.वि.	शनिः रा.अ.क.वि.	राहुः रा.अ.क.वि.	वरुणः रा.अ.क.वि.	इंद्रः रा.अ.क.वि.
चैत्रशुक्लपक्षः	१ बु०	११।१५।५२।२३	११।१३। ८।३८	११। २। ०।२९	९।५। ८।५६	११।११।१५।३६	४।७।१२।५४	०।३।३७।५३	२।३।३९।१८	५।२०।५३।१०
	२ गु०	११।१६।५१।३२	११।५५।५५। ५	११। ३।४८।१४	९।५।१७।३५	११।१२।२९।५३	४।७। ९।३६	०।३।३४।४२	२।३।४०।४४	५।२०।५१।२९
	३ शु०	११।१७।५०।४५	११।१४।४१।२८	११। ५।३७।३४	९।५।२६। ६	११।१३।४४।२०	४।७। ६।२२	०।३।३१।३१	२।३।४२। ७	५।२०।४९।५५
	४ श०	११।१८।४९।५३	११।१५।२७।४७	११। ७।२८।१६	९।५।३४।३७	११।१४।५८।३७	४।७। ३। ७	०।२।२८।२१	२।३।४३।४१	५।२०।४८। ७
	५ र०	११।१९।४८।५८	११।१६।१३।५९	११। ९।२०।१७	९।५।४२।४३	११।१६।२३। ८	४।७। ०।१४	०।३।२५।१०	२।३।४५।२२	५।२०।४६।३०
	६ चं०	११।२०।४८। ६	११।१७। ०।१४	११।११।१४। ६	९।५।५०।३८	११।१७।२७।२९	४।६।५७।२९	०।३।२१।५९	२।३।४६।५२	५।२०।४४।३१
	७ मं०	११।२१।४७। ७	११।१७।४६।१९	११।१३। ९। ०	९।५।५८।१९	११।१८।४१।४२	४।६।५४।५४	०।३।१८।४९	२।३।४८।४०	५।२०।४२।३२
	८ बु०	११।२२।४६। ७	११।१८।३२।३५	११।१५। ५।२८	९।६। ५।४९	११।१९।५५।५५	४।६।५२।१६	०।३।१५।३८	२।३।५०।३१	५।२०।४१। ६
	९ गु०	११।२३।४५। ५	११।१९।१८।५४	११।१७। २।३८	९।६।१३।१९	।२१।१०।२६	४।६।४९।४१	०।३।१२।२८	२।३।५१।५०	५।२०।३९। ७
	१० शु०	११।२४।४४। ०	११।२०। ५।१०	११।१९। १। ८	९।६।२०।४९	११।२२।२४।५०	४।६।४७। ६	०।३। ९।१७	२।३।५३।१७	५।२०।३७।४४
	११ श०	११।२५।४२।५४	११।२०।५०।५३	११।२१। १।२६	९।६।२८।१२	११।२३।३९। ०	४।६।४४।३८	०।३। ६। ६	२।३।५५।१६	५।२०।३५।४६
	१२ र०	११।२६।४१।४६	११।२१।३६।२९	११।२३। ३।३६	९।६।३५। ६	११।२४।५३।२०	४।६।४२।३२	०।३। २।५६	२।३।५७। ०	५।२०।३४।२३
	१३ चं०	११।२७।४०।३५	११।२२।२२।१२	११।२५। ६।२९	९।६।४२। ७	११।२६। ७।४१	४।६।४०।३०	०।२।५९।४५	२।३।५८।५२	५।२०।३२।४६
	१४ मं०	११।२८।३९।२२	११।२३। ८।१३	११।२७।१०।३४	९।६।४८।५४	११।२७।२१।५४	४।६।३८।२४	०।२।५६।३४	२।४। ०।४७	५।२०।३०।५०
	१५ बु०	११।२९।३८।१०	११।२३।५४।२२	११।२९।१५।५४	९।६।५५।५५	११।२८।३६। ७	४।६।३६।२५	०।२।५३।२४	२।४। २।३८	५।२०।२९।२८
वैशाखकृष्णपक्षः	१ गु०	०। ०।३६।५५	११।२४।४०। ५	०।१।२२।१२	९।७। २।२८	११।२९।५०।१७	४।६।३४।१९	०।२।५०।१३	२।४। ४।३०	५।२०।२८। ५
	३ शु०	०। १।३५।३६	११।२५।२५।२६	०।३।२९।३५	९।७। ८।५३	०। १। ४।३०	४।६।३२।१३	०।२।४७। ३	२।४। ६।५०	५।२०।२६।२४
	४ श०	०। २।३४।१७	११।२६।१०।४८	०।५।३७।१२	९।७।१५।१४	०। २।१८।४७	४।६।३०।५०	०।२।४३।५२	२।४। ९।१८	५।२०।२४।४७
	५ र०	०। ३।३२।५४	११।२६।५६।२०	०।७।४५।१४	९।७।२१।२२	०। ३।३२।५६	४।६।२९।१३	०।२।४०।४२	२।४।११।४६	५।२०।२३।२४
	६ चं०	०। ४।३१।३१	११।२७।४२।२९	०।९।५४।२२	९।७।२७।११	०। ४।४७।१३	४।६।२७।४७	०।२।३७।३१	२।४।१३।४४	५।२०।२१।३२
	७ मं०	०। ५।३०। ४	११।२८।२७।५६	०।१२। १।५५	९।७।३३। ०	०। ६। १।१२	४।६।२६।४२	०।२।३४।२०	२।४।१५।४०	५।२०।१९।५९
	८ बु०	०। ६।२८।३५	११।२९।१३।१९	०।१४। ८।५६	९।७।३८।१०	०। ७।१५।२५	४।६।२५।२६	०।२।३१। ९	२।४।१७।३५	५।२०।१८।३६
	९ गु०	०। ७।२७। ३	११।२९।५९। २	०।१६।१६।१६	९।७।४३।३०	०। ८।२९।३८	४।६।२४।१४	०।२।२७।५९	२।४।१९।४८	५।२०।१६।५२
	१० शु०	०। ८।२५।३०	०। ०।४४।३८	०।१८।२१।५८	९।७।४८।४७	०। ९।४३।४१	४।६।२३।२४	०।२।२४।४८	२।४।२२।१२	५।२०।१५।१४
	११ श०	०। ९।२३।५७	०। १।३०। ७	०।२०।२५। ५	९।७।५४। ७	०।१०।५७।५४	४।६।२२।२३	०।२।२१।३७	२।४।२४।४०	५।२०।१३।५२
	१२ र०	०।१०।२२।२१	०। २।१५।२२	०।२२।२६।४२	९।७।५९।१३	०।१२।११।५६	४।६।२१। ८	०।२।१८।२६	२।४।२७। ७	५।२०।१२।२९
	१२ चं०	०।११।२०।४३	०। ३। ०।३६	०।२४।२५।५२	९।८। ३।४७	०।१३।२५।५९	४।६।२०।५३	०।२।१५।१६	२।४।२९।३५	५।२०।११। ६
	१३ मं०	०।१२।१९।४०	०। ३।४६। १	०।२६।२२।४४	९।८। ८।१३	०।१४।४०।२३	४।६।२०।३८	०।२।१२। ५	२।४।३१।५८	५।२०। ९।३६
	१४ बु०	०।१३।१७।२४	०। ४।३१। १	०।२८।१६।३४	९।८।१२।२५	०।१५।५४।१०	४।६।२०।१०	०।२। ८।५५	२।४।३४।२६	५।२०। ७।५९
	३० गु०	०।१४।१५।४२	०। ५।१६।१९	१। ०। २।१७	९।८।१६।४४	०।१७। ८।२०	४।६।१९।३७	०।२। ५।४४	२।४।३७। ५	५।२०। ६।१४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत २००६ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयकाले दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः

केतकी अहर्गणः ५१३८ मासारम्भे

मासः	ति.	वा.	सूर्यः रा.अ.क.वि.	मंगलः रा.अ.क.वि.	बुधः रा.अ.क.वि.	गुरुः रा.अ.क.वि.	शुक्रः रा.अ.क.वि.	शनिः रा.अ.क.वि.	राहुः रा.अ.क.वि.	वरुणः रा.अ.क.वि.	इंद्रः रा.अ.क.वि.
वैशाख शुक्लपक्षः	१	शु०	०।१५।१३।५५	०। ६। १।३०	११।१५।३।१०	९।८।२०।४९	०।१८।२२।३४	४।६।१९। ८	०।२। २।३३	२।४।३९।५८	५। २०। ४।५२
	२	श०	०।१६।१२। ८	०। ६।४६।४८	११। ३।३६।५०	९।८।२४।२५	०।१९।३६।३२	४।६।१९। ४	०।१५।९।२२	२।४।४२।३५	५। २०। ३।३२
	३	र०	०।१७।१०।३१	०। ७।३१।४१	११। ५।१६।५९	९।८।२८। १	०।२०।५०।२८	४।६।१९। ०	०।१५।६।१२	२।४।४५।१६	५। २०। २। २
	४	चं०	०।१८। ८।३१	०। ८।१६।२३	११। ७। ०।३६	९।८।३१।४४	०।२२। ४।४१	४।६।१८।५५	०।१५।३। १	२।४।४७।५३	५। २०। ०।४३
	५	मं०	०।१९। ६।४१	०। ९। १।१२	११। ८।२५।४४	९।८।३४।५९	०।२३।१८।४३	४।६।१८।५८	०।१४।९।५१	२।४।५०।२४	५।१९।५९।१७
	६	बु०	०।२०। ४।५१	०। ९।४५।५४	११। ९।५५।१२	९।८।३८। ६	०।२४।३२।४९	४।६।१९। ५	०।१४।६।४०	२।४।५३।२४	५।१९।५७।५०
	७	गु०	०।२१। २।५९	०।१०।३०।३६	११।११।१९।२३	९।८।४१।१३	०।२५।४६।३५	४।६।१९।१२	०।१४।३।३०	२।४।५५।५५	५।१९।५६।२८
	८	शु०	०।२२। १। ३	०।११।१५।४३	११।१२।४०।३४	९।८।४४। ६	०।२७। ०। ०	४।६।१९।२३	०।१४।०।१९	२।४।५८।५९	५।१९।५५। ५
	९	श०	०।२२।५९। ३	०।११।५९।५७	११।१३।५४।२२	९।८।४६।४८	०।२८।१४।१७	४।६।२०। २	०।१३।७। ९	२।५। १।५९	५।१९।५३।४२
	११	र०	०।२३।५७। २	०।१२।४५।२५	११।१५।१०।३७	९।८।४९।१९	०।२९।२८। ५	४।६।२०।५६	०।१३।३।५८	२।५। ३।५४	५।१९।५२।१९
	१२	चं०	०।२४।५५। ४	०।१३।३०। ०	११।१६।१८।२९	९।८।५१।२५	१। ०।४२।११	४।६।२२।१६	०।१३।०।४७	२।५। ७। ८	५।१९।५१। ३
	१३	मं०	०।२५।५३। १	०।१४।१४।२४	११।१७।२२।४७	९।८।५३। ६	१। १५६। २	४।६।२३।१३	०।१२।७।३६	२।५।१०।१६	५।१९।५०। २
	१४	बु०	०।२६।५०।५६	०।१४।५८।४१	११।१८।२८।३७	९।८।५५।१२	१। ३। ९।५४	४।६।२४।११	०।१२।४।२५	२।५।१३।१६	५।१९।४८।४७
	१५	गु०	०।२७।४८।५१	०।१५।४३।१२	११।१९।१७।३८	९।८।५६।५६	१। ४।२३।४९	४।६।२५। ५	०।१२।१।१५	२।५।१६।१६	५।१९।४७।२७
ज्येष्ठ कृष्णपक्षः	१	शु०	०।२८।४६।४३	०।१६।२७।३२	०।२०। ७।५५	९।८।५८।३०	१। ५।३७।४८	४।६।२५।५९	०।११।८। ४	२।५।१९।१६	५।१९।४६।२३
	२	श०	०।२९।४४।३४	०।१७।१२। ०	११।२०।५३।३१	९।९। ०।११	१। ६।५१।४०	४।६।२७।३२	०।११।४।५४	२।५।२२।२३	५।१९।४५। ४
	३	र०	१। ०।४२।२६	०।१७।५६।३५	११।२१।३४।३७	९।९। १।३०	१। ८। ५।२०	४।६।२८।५९	०।११।१।४३	२।५।२५।२३	५।१९।४३।४१
	४	चं०	१। १।४०।१४	०।१८।४१। २	११।२२।१०।५५	९।९। २।२०	१। ९।१९। ८	४।६।३०।२९	०।११ ८।३२	२।५।२८।२६	५।१९।४२।४३
	५	मं०	१। २।३८। १	०।१९।२५। ८	११।२२।४१।१०	९।९। ३। ०	१।१०।३३।१०	४।६।३१।५५	०।११ ५।२२	२।५।३१।४४	५।१९।४१।३१
	६	बु०	१। ३।३५।४६	०।२०। ९।११	११।२३। ६। ४	९।९। ३।३६	१।११।४७। २	४।६।३३।२५	०।११ २।११	२।५।३५। ६	५।१९।४०।३०
	७	गु०	१। ४।३३।३१	०।२०।५३।१०	११।२३।२७।५०	९।९। ४।१२	१।१३। ०।३२	४।६।३४।५५	०।०।५९। ०	२।५।३८। ६	५।१९।३९।१८
	८	शु०	१। ५।३१।१३	०।२१।३७।१२	११।२३।४४।१७	९।९। ४।२३	१।१४।१४। ६	४।६।३६।४७	०।०।५५।४९	२।५।४१।१०	५।१९।३८।१७
	९	श०	१। ६।२८।५८	०।२२।२१।१८	११।२३।५१।२५	९।९। ४।२६	१।१५।२८।३७	४।६।३८।४९	०।०।५२।३८	२।५।४४।१३	५।१९।३७।२६
	१०	र०	१। ७।२६।४०	०।२३। ५।१०	११।२३।५८।१९	९।९। ४।१९	१।१६।४१।५६	४।६।४०।५९	०।०।४९।२८	२।५।४७।१३	५।१९।३६।२२
	११	चं०	१। ८।२४।२१	०।२३।४९।१६	११।२३।५९। ६	९।९। ४। ५	१।१७।५५।५९	४।६।४३।४१	०।०।४६।१७	२।५।५०।१७	५।१९।३५।१०
	१२	मं०	१। ९।२१।५९	०।२४।३३।२०	११।२३।५५। ८	९।९। ३।३६	१।१९। ९।२९	४।६।४६। ५	०।०।४३। ७	२।५०।५३।२	५।१९।३४।१९
	१३	बु०	१।१०।१९।३४	०।२५।१६।२६	११।२३।४६।५५	९।९। ३। ४	१।२०।२३।१०	४।६।४८।११	०।०।३९।५६	२।५।५६।२४	५।१९।३३।३२
	१४	गु०	१।११।१७। ९	०।२६। ०। ०	११।२३।३४।२६	९।९। १।४८	१।२१।३७। ५	४।६।५०।३०	०।०।३६।४५	२।६। ०। ०	५।१९।३२।४६
	३०	शु०	१।१२।१४।४३	०।२६।४३।४१	११।२३।१८।११	९।९। ०।३६	१।२२।५०।५६	४।६।५२।५५	०।०।३३।३५	२।६। ३।४०	५।१९।३१।५५

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयकाले दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः

केतकी अहर्गणः ५१६७ मासारम्भे

मासः	ति.	वा.	सूर्य रा.अ.क.वि.	मंगल रा.अ.क.वि.	बुध रा.अ.क.वि.	गुरु रा.अ.क.वि.	शुक्र रा.अ.क.वि.	शनि रा.अ.क.वि.	राहु रा.अ.क.वि.	वरुण रा.अ.क. वि.	इंद्र रा.अ.क.वि.
ज्ये. शुक्लपक्षः	१	श०	१।१३।१२।१४	०।२७।२७।४३	१।२२।५८।४१	९।८।५९।१७	१।२४। ४।३४	४।६।५५।३४	०। ०।३०।२४	२।६। ७।१६	५।१९।३०।५४
	२	र०	१।१४। ९।४८	०।२८।११।१३	१।२२।३५।४६	९।८।५७।५४	१।२५।१८।२४	४।६।५८।३४	०। ०।२७।१३	२।६।१०। ५	५।१९।३०।१८
	३	चं०	१।१५। ७।१९	०।२८।५४।४७	१।२२।१०।१६	९।८।५६। ६	१।२६।३२।१३	४।७। १।४४	०। ०।२४। २	२।६।१३।३४	५।१९।२९।३८
	४	मं०	१।१६। ४।५०	०।२९।३८।१३	१।२१।४३।२६	९।८।५४।२५	१।२७।४६। ५	४।७। ४।२३	०। ०।२०।५१	२।६।१६।४८	५।१९।२८।४४
	५	बु०	१।१७। २।१८	१। ०।२१।४०	१।२१।१४।२०	९।८।५२। ५	१।२८।५९।४६	४।७। ७।३७	०ऽ ०।१७।४०	२।६।२०।१३	५।१९।२७।५४
	६	गु०	१।१७।५९।४७	१। १। ४।५५	१।२०।४३।४१	९।८।४९।३७	२। ०।१३।२६	४।७।१०।४४	०। ०।१४।२९	२।६।२३।५३	५।१९।२७।११
	७	शु०	१।१८।५७।१४	१। १।४८। ४	१।२०।१०।२६	९।८।४७।२८	२। १।२६।५३	४।७।१३।५५	०। ०।११।१९	२।६।२७।२९	५।१९।२६।१७
	८	श०	१।१९।५४।३९	१। २।३१।३४	१।१९।३९।४०	९।८।४४।४६	२। २।४०।४४	४।७।१७।१७	०ऽ ०। ८। ८	२।६।३१। ८	५।१९।२५।४९
	९	र०	१।२०।५२।१२	१। ३।१४।४९	१।१९। ७।४८	९।८।४१।४९	२। ३।५४।२२	४।७।२०।३१	०। ०। ४।५७	२।६।३४।४१	५।१९।२५।१६
	१०	चं०	१।२१।४९।३३	१। ३।५८। १	१।१८।३६।५४	९।८।३९। ४	२। ५।७।५५	४।७।२३।५६	०। ०। १।४७	२।६।३८।१७	५।१९।२४।३५
	११	मं०	१।२२।४६।५७	१। ४।४०।५९	१।१८। ७। १	९।८।३६। ४	२। ६।२१।१८	४।७।२७।४०	११।२९।५८।३६	२।६।४२। ०	५।१९।२४। ०
	१२	बु०	१।२३।४४।१९	१। ५।२३।५६	१।१७।३८। ६	९।८।३२।३१	२। ७।३४।५२	४।७।३१।३०	११।२९।५५।२५	२।६।४५।२९	५।१९।२३।२४
	१३	गु०	१।२४।३५।४०	१। ६। ६।५४	१।१७।१०।५२	९।८।२९। ६	२। ८।४८।१४	४।७।३५।२०	११।२९।५२।१४	२।६।४८।४०	५।१९।२२।५०
	१५	शु०	१।२५।३९। २	१। ६।४९।५२	१।१६।४६।३०	९।८।२५। ८	२।१०।१।४८	४।७।४९।१४	११।२९।४९। ३	२।६।५२।१२	५।१९।२२।२६
आषाढकृष्णपक्षः	१	श०	१।२६।३६।२१	१। ७।३२।३८	१।१६।२५।१६	९।८।२१।१४	२।११।१५। ७	४।७।४२।४३	११।२९।४५।५३	२।६।५५।४४	५।१९।२१।५०
	२	र०	१।२७।३३।४२	१। ८।१५।१८	१।१६। ५।३८	९।८।१७।२४	२।१२।२८।४१	४।७।४६।३४	११।२९।४२।४२	२।६।५८।५५	५।१९।२१।४०
	३	चं०	१।२८।३०।५९	१। ८।५७।५८	१।१५।५०।२८	९।८।१३।१९	२।१३।४२।५८	४।७।५०।४६	११।२९।३९।३२	२।७। २।२८	५।१९।२०।२२
	४	मं०	१।२९।२८।१७	१। ९।४०।४४	१।१५।३८।२०	९।८। ९। ५	२।१४।५६। २	४।७।५४।३२	११।२९।३६।२१	२।७। ६। ५	५।१९।२१।११
	५	बु०	२। ०।२५।३६	१।१०।२३।४२	१।१५।३०।३६	९।८। ४।३७	२।१६। ९।२५	४।७।५८।५२	११।२९।३३।११	२।७। ९।४३	५।१९।२०।५६
	६	गु०	२। १।२२।५४	१।११। ६। ०	मा.१।१५।२७। ७	९।७।५९।५३	२।१७।२२।५५	४।८। ३। ७	११।२९।३०। ०	२।७।१३।१९	५।१९।२०।४६
	७	शु०	२। २।२०।१०	१।११।४८।२९	१।१५।२९। २	९।७।५४।५८	२। ८।३६।११	४।८। ७।३०	११।२९।२६।४९	२।७।१६।५९	५।१९।२०।२८
	८	श०	२। ३।१७।२९	१।१२।३०।५८	१।१५।३३। ०	९।७।४९।५९	२।१९।४९।३७	४।८।१२।२५	११।२९।२३।३८	२।७।२०।२०	५।१९।२०।१३
	८	र०	२। ४।१४।४४	१।१३।१०।१८	१।१५।४३।५५	९।७।४४।५३	२।२१। ३। ०	४।८।१७।३१	११।२९।२०।२७	२।७।२३।५६	५।१९।१९।५९
	९	चं०	२। ५।१२। ३	१।१३।५५।२६	१।१५।५८।१६	९।७।३९।४३	२।२२।१६।१२	४।८।२२।२३	११।२९।१७।१६	२।७।२७।३२	५।१९।१९।४८
	१०	मं०	२। ६। ९।१८	१।१४।३७।५५	१।१६।१७।५३	९।७।३४।२६	२।२३।२९।२०	४।८।२६।५४	११।२९।१४। ५	२।६।३१।१२	५।१९।१९।३७
	११	बु०	२। ७। ६।३२	१।१५।२०।२०	१।१६।४२।२५	९।७।२८।४४	२।२४।४२।२९	४।८।३१।४८	११।२९।१०।५४	२।७।३४।४८	५।१९।१९।३४
	१२	गु०	२। ८। ३।४८	१।१६। २।१७	१।१७।११। ६	९।७।२३।१०	२।२५।५५।४१	४।८।३६।५०	११।२९। ७।४३	२।७।३८।२०	५।१९।१९।३०
	१३	श०	२। ९। १। ५	१।१६।४४।४६	१।१७।४६। १	९।७।१७।२४	२।२७। ९।२९	४।८।४१।५३	११।२९। ४।३२	२।७।४१।५६	५।१९।१९।३०
	१४	श०	२। ९।५८।१७	१।१७।२६।४९	१।१८।२४।४३	९।७।११।१३	२।२८।२२।२६	४।८।४६।४१	११।२९। १।२१	२।७।४५।४०	५।१९।१९।३७
	३०	र०	२।१०।५५।२७	१।१८। ८।४६	१।१९। ८।२८	९।७। ५। २	२।२९।३५।४६	४।८।५१।४३	११।२८।५८।१२	२।७।४९।१६	५।१९।१९।४१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयकाले दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः

केतकी अहर्गणः ५१९७ मासारम्भे

मासः	ति.	वा.	सूर्य रा.अ.क.वि.	मंगल रा.अ.क.वि.	बुध रा.अ.क.वि.	गुरु रा.अ.क.वि.	शुक्र रा.अ.क.वि.	शनि रा.अ.क.वि.	राहु रा.अ.क.वि.	वरुण रा.अ.क.वि.	इंद्र रा.अ.क.वि
आषाढ़शुक्लपक्षः	१	चं०	२।११।५२।४३	१।१८।५०।४९	१।१९।५६।४९	९।६।५८।५५	३। ०।४९।१९	४। ८।५६।३५	११।२८।५५। १	२। ७।५२।५५	५।१९।१९।५२
	२	मं०	२।१२।४९।५६	१।१९।३२।४६	१।२०।४८।५८	९।६।५२।४८	३। २। २।४९	४। ९। १।५५	११।२८।५१।५०	२। ७।५६।३१	५।१९।२०। ६
	३	बु०	२।१३।४७। ८	१।२९।१४।४२	१।२१।४६।४४	९।६।४६।१९	३। ३।१५।५०	४। ९। ७।२३	११।२८।४८।३९	२। ८। ०। ७	५।१९।२०।१७
	४	गु०	२।१४।४४।२०	१।२०।५६।४६	१।२२।४८।१४	९।६।३९।४३	३। ४।२९। २	४। ९।१३।३२	११।२८।४५।२८	२। ८। ३।४३	५।१९।२०।२८
	५	शु०	२।१५।४१।३२	१।२१।३८।२०	१।२३।५४।१८	९।६।३२।५६	३। ५।४२।१८	४। ९।१७।४६	११।२८।४२।१७	२। ८। ७।२३	५।१९।२०।३८
	६	श०	२।१६।३८।४४	१।२२।१०।१७	१।२५। ३।२५	९।६।२६।१७	३। ६।५५।३०	४। ९।२३।२२	११।२८।३९। ६	२। ८।१०।५९	५।१९।२०।४६
	८	र०	२।१७।३५।५९	१।२३। १।५५	१।२६।१७।१७	९।६।१९।३४	३। ८। ८।३१	४। ९।२८।४८	११।२८।३५।५५	२। ८।१४।३१	५।१९।२०।५६
	९	चं०	२।१८।३३।१२	१।२३।४३।२६	१।२७।३६।११	९।६।१२।५०	३। ९।२१।४२	४। ९।३४।३४	११।२८।३२।४४	२। ८।१७।४६	५।१९।२१। ७
	१०	मं०	२।१९।३०।२४	१।२४।२५। १	१।२८।५६।२०	९।६। ५।४२	३।१०।३४।४४	४। ९।३९।४७	११।२८।२९।३४	२। ८।२१।१६	५।१९।२१।२९
	११	बु०	२।२०।२७।३९	१।२५। ७। १	२। ०।२१।११	९।५।५८।३०	३।११।४७।५६	४। ९।४५।५०	११।२८।२६।२३	२। ८।२४।५०	५।१९।२१।५०
	१२	गु०	२।२१।२४।५२	१।२५।४८। ४	२। १।४९।२६	९।५।५१। ४	३।१३। १। ५	४। ९।५१।३६	११।१८।२३।१२	२। ८।२८। ८	५।१९।२२।१२
	१३	शु०	२।२२।२२। ३	१।२६।२९।२०	२। ३।२१।११	९।५।४४। २	३।१४।१४। ६	४। ९।५७।५८	११।२८।२०। १	२। ८।३१।१६	५।१९।२२।३७
	१४	श०	२।२३।१९।१५	१।२७।१०।३०	२। ४।५६।३८	९।५।३६।४३	३।१५।२७।२५	४।१०। ३।११	११।२८।१६।५०	२। ८।३४।५२	५।१९।२३।३०
	१५	र०	२।२४।१६।२८	१।२७।५१।३६	२। ६।३५।३८	९।५।२९।२०	३।१६।४०।२६	४।१०। ९।३०	११।२८।१३।३९	२। ८।३८।२८	५।१९।२३।५८
श्रावणकृष्णपक्षः	१	चं०	२।२५।१३।४०	१।२८।३२।४६	२। ८।१७।४२	९।५।२१।३६	३।१७।५३।२८	४।१०।१५।४०	११।२८।१०।२८	२। ८।४२। ४	५।१९।२४।२४
	२	मं०	२।२६।१०।५४	१।२९।१३।५२	२।१०। ३।११	९।५।१४।१७	३।१९। ६।२५	४।१०।२१।४६	११।२८। ७।१७	२। ८।४५।४३	५।१९।२५। ५
	३	बु०	२।२७। ८। ८	१।२९।५४।५०	२।११।५१।३२	९।५। ६।२५	३।२०।१९।४१	४।१०।२७।५८	११।२८। ४। ६	२। ८।४९।२३	५।१९।२५।३०
	४	गु०	२।२८। ५।२२	२। ०।३५।४९	२।१३।४३। ५	९।४।५८।५२	३।२१।३२।२०	४।१०।३४। ८	११।२८। ०।५६	२। ८।५२।६१	५।१९।२६।१७
	५	शु०	२।२९। २।३७	२। १।१६।५२	२।१५।३७।३०	९।४।५१।२२	३।२२।४५।१४	४।१०।४०।१९	११।२७।५७।४५	२। ८।५६।३१	५।१९।२६।५३
	६	श०	२।२९।५९।५१	२। १।५७।४७	२।१७।३५।४९	९।४।४३।२३	३।२३।५८।२३	४।१०।४६।२६	११।२७।५४।३४	२। ८।५९।३५	५।१९।२७।३६
	७	र०	३। ०।५७। ६	२। २।३८।३१	२।१९।३५।३५	९।४।३५।३५	३।२५।११। २	४।१०।५२।४४	११।२७।५१।२३	२। ९। ३।११	५।१९।२८।३४
	८	चं०	३। १।५४।२२	२। ३।१९। ५	२।२१।३७। ५	९।४।२८।१२	३।२६।२३।४२	४।१०।५९।१३	११।२७।४८।१२	२। ९। ६।१८	५।१९।२९।१०
	९	मं०	३। २।५१।३९	२। ३।५९।४६	२।२३।४१।२०	९।४।२०।१७	३।२७।३६।३२	४।११। ५।५६	११।२७।४५। १	२। ९। ९।५४	५।१९।२९।४९
	१०	बु०	३। ३।४८।५८	२। ४।४०।३४	२।२५।४७।२८	९।४।१६।२८	३।२८।४९।३४	४।११।१२।११	११।२७।४१।५०	२। ९।१३।१४	५।१९।३०।४७
	११	गु०	३। ४।४६।१५	२। ५।२१। ०	२।२७।५४।३६	९।४। ४।३४	४। ०। २।३५	४।११।१८।३६	११।२७।३८।३९	२। ९।१७।१०	५।१९।३१।३०
	१२	शु०	३। ५।४३।३३	२। ६। २। २	३। ०। २।१३	९।३।५६।४५	४। १।१५।१४	४।११।२५।१९	११।२७।३५।२९	२। ९।२०।१६	५।१९।३२। २
	१३	श०	३। ६।४०।५०	२। ६।४२।३६	३। २।१०। ८	९।३।४९। १	४। २।२८। ८	४।११।३२। २	११।२७।३२।१८	२। ९।२३।२४	५।१९।३३। ०
	१४	र०	३। ७।३८।१०	२। ७।२२।५९	३। ४।१७। २	९।३।४१।३८	४। ३।४०।४०	४।११।३८।४६	११।२७।२९। ७	२। ९।२६।२८	५।१९।३३।५८
	३०	चं०	३। ८।३५।२९	२। ८। ३।३१	३। ६।२५।५२	९।३।३३।४७	४। ४।५३।२४	४।११।४५।३२	११।२७।२५।५६	२। ९।२९।२०	५।१९।३४।५५

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयकाले दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः

केतकी अहर्गणः ५२२६ मासारम्भे

मासः	ति.	वा.	सूर्य रा.अ.क.वि.	मंगल रा.अ.क.वि.	बुध रा.अ.क.वि.	गुरु रा.अ.क.वि.	शुक्र रा.अ.क.वि.	शनि रा.अ.क.वि.	राहु रा.अ.क.वि.	वरुण रा.अ.क.वि.	इंद्र रा.अ.क.वि.
श्रावणशुक्लपक्षः	१	मं०	३। ९।३२।४९	२। ८।४३।४१	३। ८।३२।४९	९। ३।२६।१०	४। ६। ५।४६	४।११।५२।४४	११।२७।२२।४६	२। ९।३२।२८	५।१९।३५।५३
	२	बु०	३।१०।३०। ९	२। ९।२४।१४	३।१०।४०।४४	९। ३।१८।३६	४। ७।१८।५८	४।११।५८।५५	११।२७।१९।३५	२। ९।३५।३५	५।१९।५६।५०
	३	गु०	३।११।२७।३१	२।१०। ४।४२	३।१२।४६।५९	९। ३।१०।५५	४। ८।३२। ६	४।१२। ५।५६	११।२७।१६।२४	२। ९।३८।२०	५।१९।३८।१७
	४	शु०	३।१२।२४।५३	२।१०।४५। ७	३।१४।५१।१४	९। ३। ३। ०	४। ९।४४।४२	४।१२।१३। ५	११।२७।१३।१३	२। ९।४१।३५	५।१९।३९।४४
	५	श०	३।१३।२२।१६	२।११।२५। ८	३।१६।५४।४३	९। २।५५।२६	४।१०।५६।५३	४।१२।१९।३०	११।२७।१०। २	२। ९।४५। ४	५।१९।४०।१२
	६	र०	३।१४।१९।३९	२।१२। ५। २	३।१८।५७। ३	९। २।४८। ७	४।१२। ९।२९	४।१२।२६।४२	११।२७। ६।५२	२। ९।४८। ७	५।१९।४१।४२
	७	चं०	३।१५।१७। ३	२।१२।४५। ०	३।२०।५७।५४	९। २।४०।५५	४।१३।२२। ८	४।१२।३४। १	११।२७। ३।४१	२। ९।५१। ७	५।१९।४२।४०
	८	मं०	३।१६।१४।३१	२।१३।२४।५७	३।२२।५७।१८	९। २।३३।२९	४।१४।३४।५१	४।१२।४०।५५	११।२७। ०।३१	२। ९।५४।११	५।१९।४३।४१
	१०	बु०	३।१७।१२। ०	२।१४। ४।४८	३।२४।५५।१९	९। २।२६।१७	४।१५।४७।२७	४।१२।४७।५३	११।२६।५७।२०	२। ९।५७।१४	५।१९।४५। १
	११	गु०	३।१८। ९।२८	२।१४।४४।२७	३।२६।५१।४३	९। २।१८।५७	४।१६।५९।३८	४।१२।५५। ८	११।२६।५४। ९	२।१०। ०।१४	५।१९।४६।१२
	१२	शु०	३।१९। ६।५७	२।१५।२३।३१	३।२८।४८।३९	९। २।११।४५	४।१८।१२।१४	४।१३। २। ६	११।२६।५०।५८	२।१०। ३।१८	५।१९।४७।३१
	१३	श०	३।२०। ४।२४	२।१६। ४। ८	४। ०।४०।३७	९। २। ४।४१	४।१९।२४।३६	४।१३। ९।११	११।२६।४७।४७	२।१०। ६।२२	५।१९।४८।४०
	१४	र०	३।२१। १।५४	२।१६।४३।५१	४। २।३३। ०	९। १।५७।२४	४।२०।३७।१२	४।१३।१६।३०	११।२६।४४।३६	२।१०। ९।१२	५।१९।४९।५९
	१५	चं०	३।२१।५९।२६	२।१७।२३।१६	४। ४।२३।२८	९। १।५४। ४	४।२१।४९।५१	४।१३।२३।३७	११।२६।४१।२५	२।१०।११।५६	५।१९।५१।२५
भाद्रपदकृष्णपक्षः	१	मं०	३।२२।५६।५९	२।१८। २।४३	४। ६।१२।३१	९। १।४४।२०	४।२३। १।५१	४।१३।३१। ५	११।२६।३८।१४	२।१०।१४।५६	५।१६।५२।५५
	२	बु०	३।२३।५४।३३	२।१८।४२।२५	४। ८। ०। ४	९। १।३७।३७	४।२४।१४। २	४।१३।३८।२८	११।२६।३५। ३	२।१०।१८। ०	५।१९।५४।२१
	३	गु०	३।२४।५२। ७	२।१९।२६।५८	४। ९।४६।४	९। १।३०।४७	४।२५।२६।१३	४।१३।४५।४३	११।२६।३१।५२	२।१०।२०।३५	५।१९।५५।५९
	४	शु०	३।२५।४९।४१	२।२०। १।३०	४।११।३१।२६	९। १।२४।३२	४।२६।३८।१७	४।१३।५२।५९	११।२६।२८।४१	२।१०।२३।२४	५।१९।५७।२९
	५	श०	३।२६।४७।१८	२।२०।४८।४५	४।१३।१५।२१	९। १।१८।२२	४।२७।५०।३५	४।१४। ०। ४	११।२६।२५।३१	२।१०।२६।४६	५।१९।५९। ४
	५	र०	३।२७।४५।४३	२।२१।२०।१०	४।१४।५६।२७	९। १।१२। ७	४।२९। २।४५	४।१४। ७।२६	११।२६।२२।२०	२।१०।२८।५५	५।२०। ०।३७
	६	चं०	३।२८।४२।३३	२।२१।५८।५२	४।१६।३६।५७	९। १। ५।२४	५। ०।१५।१४	४।१४।१४।४२	११।२६।१९। ९	२।१०।३१।४१	५।२०। २। ६
	७	मं०	३।२९।४०।१४	२।२२।३८।२४	४।१८।१६।२३	९। ०।५९।५३	५। १।२७।११	४।१४।२२। २	११।२६।१५।५८	२।१०।३४। ८	५।२०। ३।४०
	८	बु०	४। ०।३८। ०	२।२३।१७।२७	४।१९।५४। ०	९। ०।५४।१८	५। २।३९।२५	४।१४।३०।१८	११।२६।१२।४७	२।१०।३६।३६	५।२०। ५।१०
	९	गु०	४। १।३५।४५	२।२३।५६।२७	४।२१।३०। ०	९। ०।४८।३२	५। ३।५१।४३	४।१४।३७।४१	११।२६। ९।३५	२।१०।३९। ३	५।२०। ६।४३
	१०	शु०	४। २।३३।३३	२।२४।३५।२०	४।२३। ४।३७	९। ०।४२।३२	५। ५। ३।३२	४।१४।४४।४९	११।२६। ६।२४	२।१०।४१।५६	५।२०। ८। ९
	११	श०	४। ३।३१।१७	२।२५।१४।१७	४।२४।३८। ९	९। ०।३७।४१	५। ६।१५।३२	४।१४।५२।१९	११।२६। ३।१३	२।१०।४४।२०	५।२०। ९।४३
	१२	र०	४। ४।२९। ५	२।२५।५३। २	४।२६। ९।२०	९। ०।३२।२४	५। ७।२७।२५	४।१५। ०। ४	११।२६। ०। २	२।१०।४६।४८	५।२०।११।१३
	१३	चं०	४। ५।२६।५४	२।२६।३१।५५	४।२७।४०। १	९। ०।२७।२९	५। ८।३९।३६	४।१५। ७।१९	११।२५।५६।५१	२।१०।४९।१६	५।२०।१३।१६
	१४	मं०	४। ६।२४।४४	२।२७।१०।४४	४।२९। ९।२२	९। ०।२२।३०	५। ९।५१।३२	४।१५।१४।४६	११।२५।५३।४१	२।१०।५१।४३	५।२०।१४।५६
	३०	बु०	४। ७।२२।३६	२।२७।४९।२६	५। ०।३६।४३	९। ०।१७।२०	५।११। ३।३२	४।१५।२२।३०	११।२५।५०।३०	२।१०।५४। ७	५।२०।१६।२६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ रूपगढ़ (शनद्रु) स्पष्टार्कोदयकाले दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः

केतकी अहर्गणः ५२५६ मासारम्भे

मासः	ति. वा.	सूर्य रा.अ.क.वि.	मंगल रा.अ.क.वि.	बुध रा.अ.क.वि.	गुरु रा.अ.क.वि.	शुक्र रा.अ.क.वि.	शनि रा.अ.क.वि.	राहु रा.अ.क.वि.	वरुण रा.अ.क.वि.	इंद्र रा.अ.क.वि.
भाद्रपदशुक्लपक्ष	१ गु०	४। ८।२०।३१	२।२८।२७।५७	५। २। २।३८	९। ०।१२।५०	५।१२।१५।३२	४।१५।२९।४९	११।२५।४७।१९	२।१०।५६।३५	५।२०।१८।२२
	३ शु०	४। ९।१८।२६	२।२९। ६।२६	५। ३।२७।३६	९। ०। ८।१३	५।१३।२७।२१	४।१५।३७।१६	११।२५।४४। ८	२।१०।५८।३०	५।२०।२०। ६
	४ श०	४।१०।१७।३४	२।२९।४५। ०	५। ४।५०।४६	९। ०। ४।१६	५।१४।३९।१८	४।१५।४५। ७	११।२५।४०।५८	२।११। ०।३२	५।२०।२२। १
	५ र०	४।११।१४।२०	३। ०।२३।३५	५। ६।११।२०	९। ०। ०।११	५।१५।५०।५६	४।१५।५२।२६	११।२५।३७।४७	२।११। २।२०	५।२०।२३।४६
	६ चं०	४।१२।१२।१९	३। १। १।५९	५। ७।३२।३४	८।२९।५६।१०	५।१७। २।३५	४।१५।५९।३८	११।२५।३४।३६	२।११। ४।३७	५।२०।२५।४१
	७ मं०	४।१३।१०।२१	३। १।३०।४८	५। ८।४८।४७	८।२९।५२। ५	५।१८।१४।१७	४।१६। ७।१९	११।२५।३१।२६	२।११। ७। ८	५।२०।२७।३७
	८ बु०	४।१४। ८।२३	३। २।१८।४३	५।१०। ४। ५	८।२९।४८।२५	५।१९।२५।५५	४।१६।१४।४९	११।२५।२८।१५	२।११। ९।३६	५।२०।२९।३५
	९ गु०	४।१५। ६।२५	३। २।५६।२४	५।११।१९।१२	८।२९।४५। ०	५।२०।३७।२६	४।१६।२२।३४	११।२५।२५। ४	२।११।११।३५	५।२०।३१।२३
	१० शु०	४।१६।१०।३०	३। ३।३४।३७	५।१२।२९।४२	८।२९।३९।३८	५।२१।४९। १	४।१६।३०।१८	११।२५।२१।५४	२।११।१३।२६	५।२०।३३।३२
	११ श०	४।१७। २।३८	३। ४।१२।४०	५।१३।४०।२३	८।२९।३८।४६	५।२३। ०।३२	४।१६।३८।१३	११।२५।१८।४३	२।११।१५।२२	५।२०।३५।२०
	१२ र०	४।१८। ०।४९	३। ४।५०।३८	५।१४।४८। ०	८।२९।३५।५३	५।२४।१२।१८	४।१६।४६। ५	११।२५।१५।३२	२।११।१७।१३	५।२०।३७। ५
	१३ चं०	४।१८।५९। २	३। ५।२८।४४	५।१५।५४। ०	८।२९।३३। ४	५।२५।२३।१७	४।१६।५३।४६	११।२५।१२।२१	२।११।१९। ५	५।२०।३९।१४
	१४ मं०	४।१९।५७।१७	३। ६। ६।५४	५।१६।५७।३२	८।२९।३०।३२	५।२६।३४।५९	४।१७। १।३०	११।२९। ९।१०	२।११।२०।४२	५।२०।४१।२०
	१५ बु०	४।२०।५५।३३	३। ६।४४।३८	५।१७।५८।१९	८।२९।२८। ५	५।२७।४६।२३	४।१७। ९।११	११।२५। ४।५९	२।११।२२।३४	५।२०।४२।५०
आश्विनकृष्णपक्ष	१ गु०	४।२१।५३।४९	३। ७।२२।२३	५।१८।५६।४६	८।२९।२५।४८	५।२८।५७।२५	४।१७।१६।२३	११।२५। २।४८	२।११।२४।१४	५।२०।४४।४६
	२ शु०	४।२२।५२। ६	३। ८। ०।३२	५।१९।५२। ५	८।२९।२३।४६	६। ०। ८।३५	४।१७।२३।४२	११।२४।५९।३७	२।११।२५।४१	५।२०।४७। ६
	३ श०	४।२३।५०।२४	३। ८।३७।५५	५।२०।४७।३१	८।२९।२२।५४	६। १।१९।४४	४।१७।३१।३७	११।२४।५६।२७	२।११।२७।३२	५।२०।४९।१२
	४ र०	४।२४।४८।४७	३। ९।१५।१४	५।२१।३५।३१	८।२९।२०। २	६। २।३०।५८	४।१७।३८।५३	११।२४।५३।१६	२।११।२९।१३	५।२०।५१।११
	५ चं०	४।२५।४७।१०	३। ९।५३। २	५।२२।२१।४३	८।२९।१८।४७	६। ३।४२। ४	४।१७।४६।१२	११।२४।५०। ५	२।११।३०।४०	५।२०।५३।२४
	६ मं०	४।२६।४५।३६	३।१०।३०। ४	५।२३। ४।४८	८।२९।१७।२८	६। ४।५२।४८	४।१७।५४। ७	११।२४।४६।५५	२।११।३२।२८	५।२०।५५।३४
	७ बु०	४।२७।४३।२८	३।११। ७।१९	५।२३।४४। ६	८।२९।१६।१९	६। ६। ३।५४	४।१८। १।३०	११।२४।४३।४४	२।११।३३।४३	५।२०।५७।४०
	८ गु०	४।२८।४२।३२	३।११।४४।५६	५।२४।१९।४४	८।२९।१५।३२	६। ७।१५।१४	४।१८। ८।५६	११।२४।४०।३३	२।११।३५।३५	५।२०।५९।४२
	९ शु०	४।२९।४१। २	३।१२।२२।५०	५।२४।५०।४६	८।२९।१५। ४	६। ८।२५।५९	४।१८।१६।३४	११।२४।३७।२२	२।११।३७।२०	५।२०। १।४८
	१० श०	५। ०।३९।३३	३।१२।५९।१७	५।२५।१७।१७	८।२९।१४।३८	६। ९।३७। १	४।१८।२४। ७	११।२४।३४।११	२।११।३८।१०	५।२१। ३।५४
	११ र०	५। १।३८। ६	३।१३।३६।२९	५।२५।३८।३८	८।२९।१४।२०	६।१०।४८।१४	४।१८।३१।१९	११।२४।३१। ०	२।११।३८।४९	५।२१। ६। ०
	१२ चं०	५। २।३६।४१	३।१४।१३।३४	५।२५।५४। ०	८।२९।१४।२४	६।११।५८।३७	४।१८।३८।५६	११।२४।२७।४९	२।११।४०। १	५।२१। ८।१०
	१३ मं०	५। ३।३५।२१	३।१४।५०।३१	५।२६। ४।४४	८।२९।१४।४९	६।१३। ९।२९	४।१८।४६।२३	११।२४।२४।३८	२।११।४०।५२	५।२१।१०।१६
	१४ बु०	५। ४।३४। २	३।१५।२७।२९	५।२६। ९।५०	८।२९।१५।१४	६।१४।२०।१७	४।१८।५३।५३	११।२४।२१।२७	२।११।४२। ३	५।२१।१२।१८
	३० गु०	५। ५।३२।४५	३।१६। ४।२६	५।२६। ८।२४	८।२९।१५।५०	६।१५।३०।५४	४।१९। १।१२	११।२४।१८।१७	२।११।४२।४७	५।२१।१४।२८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयकाले दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः

चैतकी अहर्गणः ५२८५ मासारम्भे

मासः	ति.	वा.	सूर्य रा.अं.क.वि.	मंगल रा.अं.क.वि.	बुध रा.अं.क.वि.	गुरु रा.अं.क.वि.	शुक्र रा.अं.क.वि.	शनि रा.अं.क.वि.	राहु रा.अ.क.वि.	वरुण रा.अं.क.वि.	इंद्र रा.अं.क.वि.
आश्विनशुक्लपक्षः	१	शु०	५। ६।३१।३०	३।१६।४०।५२	५।२५।५८।५२	८।२९।१६।४६	६।१६।४१।२८	४।१९। ८।३१	११।२४।१५। ६	२।११।४३।५९	५।२१।१६।३४
	२	श०	५। ७।३०।१७	३।१७।१७।३१	५।२५।४२।३४	८।२९।१७।१०	६।१७।५१।५४	४।१९।१५।४३	११।२४।११।५५	२।११।४४।४९	५।२१।१८।४०
	३	र०	५। ८।३५। ६	३।१७।५५। १	५।२५।१९।३४	८।२९।१८।३२	६।१९। २।२८	४।१९।२२।५९	११।२४। ८।४४	२।११।४५।५८	५।२१।२०।४६
	४	चं०	५। ९।२७।५८	३।१८।३०।५०	५।२४।४७। ६	८।२९।२०।३४	६।२०।१२।३६	४।१९।२९।५६	११।२४। ५।३३	२।११।४६।४१	५।२१।२२।५९
	५	मं०	५।१०।२६।५०	३।१९। ७।१६	५।२४। ८। २	८।२९।२२।२३	६।२१।२२।४८	४।१९।३७।२४	११।२४। २।२२	२।११।४७।२०	५।२१।२५।५
	७	बु०	५।११।२५।४३	३।१९।४३।५५	५।२३।२१। ७	८।२९।२३।४२	६।२२।३२।५६	४।१९।४४।३८	११।२३।५९।११	२।११।४८। ०	५।२१।२७।२९
	८	गु०	५।१२।२४।२८	३।२०।२०।१३	५।२२।२७।५०	८।२९।२५।२३	६।२३।४३।१३	४।१९।५२।१६	११।२३।५६। ०	२।११।४८।४३	५।२१।२९।५६
	९	शु०	५।१३।२३।३९	३।२०।५६।३५	५।२१।२९।१७	८।२९।२७।२९	६।२४।५३।१७	४।१९।५९।१३	११।२३।५२।४९	२।११।४९।२६	५।२१।३१।५९
	१०	श०	५।१४।२२।३९	३।२१।३१।१६	५।२०।२४।४७	८।२९।२९।४२	६।२६। ३।२२	४।२०। ६। ७	११।२३।४९।३८	२।११।५०। ६	५।२१।३४।२६
	११	र०	५।१५।२१।४२	३।२२। ८।३५	५।१७।१७।२०	८।२९।३२। ६	६।२७।१२।५४	४।२०।१३।१२	११।२३।४६।२८	२।११।५०।४२	५।२१।३६।४२
	१२	चं०	५.१६।२०।४५	३।२२।४४।५६	५।१८। ८।१०	८।२९।३४।५५	६।२८।२२।२६	४।२०।२०।३१	११।२३।४३।१७	२।११।५१।१४	५।२१।३९। ०
	१३	मं०	५।१७।१९।५४	३।२३।२१।२५	५।१७। ०। ४	८।२९।३७।४८	६।२९।३१।५९	४।२०।२७।२५	११।२३।४०। ६	२।११।५१।४२	५।२१।४१।२०
	१४	बु०	५।१८।१९। ६	३।२३।५७।३२	५।१ ।५४।११	८।२९।४१। ६	७। ०।४१।५३	४।२०।३४।२६	११।२३।३६।५५	२।११।५२।१२	५।२१।४३।३८
	१५	गु०	५।१९।१८।१६	३।२४।३३ २५	५।१४।५१।१४	८।२९।४४।१७	७। १।५१।३२	४।२०।४१।४६	११।२३।३३।४४	२।११।५२।३७	५।२१।४५।५४
	१५	शु०	५।२०।१७।३०	३।२५। ८।५३	५।१३।५५।२६	८।२९।४७।३५	७। ३। १। ८	४।२०।४८।५०	११।२३।३०।३३	२।११।५२।५९	५।२१।४८। ०
कार्तिककृष्णपक्षः	१	श०	५।२१।१६।४७	३।२५।४४।२४	५।१३। ४।५२	८।२९।५१।२२	७। ४।१०।२३	४।२०।५५।३०	११।२३।२७।२२	२।११।५३।१८	५।२१।५०। ६
	२	र०	५।२२।१६। ०	३।२६।१९। ८	५।१२।१५।४७	८।२९।५५। ५	७। ५।१९।२२	४।२१। २।१३	११।२३।२४।११	२।११।५३। ३	५।२१।५२।१२
	३	चं०	५।२३।१५।१९	३।२६।५५।२३	५।११।४७।१३	८।२९।५८।५४	७। ६।२८।५९	४।२१। ९। ०	११।२३।२१। ०	२।११।५३।३८	५।२१।५४।२२
	४	मं०	५।२४।१४।४४	३।२७।३०।५४	५।११।२१।४७	९। ०। ३।११	७। ७।३८।२८	४।२१।१५।३२	११।२३।१७।५०	व:२।११।५३।४६	५।२१।५६।२८
	५	बु०	५।२५।१४। ७	३।२८। ६।१४	५।११। ५।५३	९। ०। ७।३०	७। ८।४७।३८	४।२१।२२।१९	११।२३।१४।३९	२।११।५३।३८	५।२१।५८।३४
	६	गु०	५।२६।१३।३२	३।२८।४१। २	५।११। १।५९	९। ०।११।४६	७। ९।५६।२४	४।२१।२९। २	११।२३।११।२८	२।११।५३।२०	५।२२। ०।५७
	७	शु०	५।२७।१३। ०	३।२९।१६।१२मा	५।११। ३।३२	९। ०।१६।२६	७।११। ५।४२	४।२१।३५।४९	११।२३। ८।१६	२।११।५३। ७	५।२२। ३।१२
	८	श०	५।२८।१२।२७	३।२९।५१।२२	५।११।१८।५४	९। ०।२१।१८	७।१२।१४।५६	४।२१।४२।३२	११।२३। ५। ७	२।११।५२।४९	५।२२। ५।२९
	९	र०	५।२९।११।५४	४। ०।२६।२४	५।११।४५।३६	९। ०।२६।१०	७।१३।२३।१३	४।२१।४९।१९	११।२३। १।५६	२।११।५२।३७	५।२२। ७।४४
	१०	चं०	६। ०।११।३०	४। १। १।२३	५।१२।१७।३८	९। ०।३१।३७	७।१४।३२।१०	४।२१।५५।३४	११।२२।५८।४५	२।११।५२। ५	५।२२।१०।१९
	११	मं०	६। १।११। ५	४। १।३५।३१	५।१३। ३। ०	९। ०।३७। १	७।१५।४०।४८	४।२२। २।१७	११।२२।५५।३४	२।११।५१।४०	५।२२।१२।२२
	१२	बु०	६। २।१०।४०	४। २।१०।२३	५।१३।५४।२९	९। ०।४२।२५	७।१६।४८।५८	४।२२। ८।५३	११।२२।५२।२३	२।११।५१।२९	५।२२।१४।३८
	१३	गु०	६। ३।१०।१९	४। २।४५। ७	५।१४।५४।१४	९। ०।४७।४६	७।१७।५७। ३	४।२२।१५। ४	११।२२।४९।१२	२।११।५१।१४	५।२२।१७।१३
	३०	शु०	६। ४।१०। ०	४। ३।१९।४१	५।१६। २।२०	९। ०।५३।४२	७।१९। ५।१०	४।२२।२१।१४	११।२२।४६। २	२।११।५०।४६	५।२२।१९।१९

CC-0-In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयकाले दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः

केतकी अहर्गणः ५३१४ मासारम्भे

मासः	ति.	वा.	सूर्य रा.अं.क.वि.	मंगल रा.अं.क.वि.	बुध रा.अं.क.वि.	गुरु रा.अं.क.वि.	शुक्र रा.अं.क.वि.	शनि रा.अं.क.वि.	राहु रा.अं.क.वि.	वरुण रा.अं.क.वि.	इंद्र रा.अं.क.वि.
कार्तिककृष्णपक्षः	१	श०	६। ५। ९।४६	४। ३।५४।११	५।१७।१४।१०	९। ०।५९।३१	७।२०।१२।२५	४।२२।२७।५०	११।२२।४२।५१	२।११।५०।१३	५।२२।२१।२९
	२	र०	६। ६। ९।३५	४। ४।२८।४४	५।१८।३२।१७	९। १। ६। ०	७।२१।२०। २	४।२२।३३।३६	११।२२।३९।४०	२।११।४९।४१	५।२२।२३।३८
	३	चं०	६। ७। ९।२४	४। ५। २।३८	५।१९।५४।२९	९। १।१२।३६	७।२२।२६।५३	४।२२।३९।२६	११।२२।३६।२९	२।११।४९।१२	५।२२।२५।४१
	४	मं०	६। ८। ९।१३	४। ५।३६।३६	५।२१।२०।१७	९। १।१८।५८	७।२३।३४। १	४।२२।४५।५०	११।२२।३३।१८	२।११।४८। ७	५।२२।२७।५०
	५	बु०	६। ९। ९। ६	४। ६।१०।३७	५।२२।४८।३२	९। १।२५।५५	७।२४।४१।२०	४।२२।५१।५४	११।२२।३०। ७	२।११।४७।३५	५।२२।२९।५६
	६	गु०	६।१०। ८।५९	४। ६।४४।२०	५।२४।१९।५२	९। १।३३। ०	७।२५।४८।४३	४।२२।५८।१६	११।२२।२६।५६	२।११।४६।२६	५।२२।३२। ६
	७	शु०	६।११। ८।५५	४। ७।१८।२०	५।२५।५३।३८	९। १।३९।५४	७।२६।५४।२५	४।२३। ४।१२	११।२२।२३।४६	२।११।४५।२५	५।२२।३४। ८
	८	श०	६।१२। ८।५५	४। ७।५२।२३	५।२७।२७।४७	९। १।४६।४४	७।२०। ०।२५	४।२३। ९।५८	११।२२।२०।३५	२।११।४४।१७	५।२२।३६।१८
	९	र०	६।१३। ८।५५	४। ८।२६।१७	५।२९। ३।३६	९। १।५४।११	७।२९। ६।२९	४।२३।१५।५४	११।२२।१७।२४	२।११।४३।१६	५।२२।३८।२०
	१०	चं०	६।१४। ८।५५	४। ९। ०। ०	६। ०।४०।१९	९। २। १।४१	८। ०।१२।५८	४।२३।२१।४३	११।२२।१४।१३	२।११।४२।४३	५।२२।४०।३०
	११	मं०	६।१५। ८।५७	४। ९।३३।२५	६। २।१७।२८	९। २। ९।१४	८। १।१९।४१	४।२३।२७। ७	११।२२।११। २	२।११।४१।३८	५।२२।४२।३६
	१२	बु०	६।१६। ९। १	४।१०। ६।३२	६। ३।५५।३७	९। २।१६।५९	८। २।२५। ८	४।२३।३२।४९	१७।२२। ७।५१	२।११।४०।२७	५।२२।४४।४२
	१३	गु०	६।१७। ९। ८	४।१०।३९।४३	६। ५।३४। ८	९। २।२४।२२	८। ३।३१।२६	४।२३।३८।२४	११।२२। ४।४०	२।११।३८।५६	५।२२।४६।४८
	१४	शु०	६।१८। ९।१७	४।११।१२।३२	६। ७।१२।५०	९। २।३२।२४	८। ४।३६।४३	४।२३।४३।३७	११।२२। १।३०	२।११।३७।४४	५।२२।४८।५४
	१५	श०	६।१९। ९।२८	४।११।४५।२२	६। ८।५१।२९	९। २।४०।११	८। ५।४१।५६	४।२३।४९। १	११।२१।५८।१९	२।११।३६।२२	५।२२।५१। ३
मार्गशीर्षकृष्णपक्षः	१	र०	६।२०। ९।४२	४।१२।१८।२५	६।१०।३०।३२	९। २।४८।४३	८। ६।४७।३५	४।२३।५४।२९	११।२१।५५। ८	२।११।३५।२०	५।२२।५३।१०
	२	चं०	६।२१। ९।५९	४।१२।५१।४०	६।१२। ९। ७	९। २।५७।३२	८। ७।५२। ५	४।२३।५९।५३	११।२१।५१।५७	२।११।३४।१२	५।२२।५५।१६
	३	मं०	६।२२।१०।१७	४।१३।२४। ४	६।१३।४७।१३	९। ३। ६। ७	८। ८।५६।२४	४।२४। ४।४४	११।२१।४८।४६	२।११।३२।३६	५।२२।५७।२५
	४	बु०	६।२३।१०।३४	४।१३।५६।२०	६।१५।२६। २	९। ३।१४।४९	८।१०। ०।२२	४।२४। ९।४७	११।२१।४५।३५	२।११।३१।२३	५।२२।५९।२८
	५	गु०	६।२४।१०।५५	४।१४।२८।४१	६।१७। ४।५९	९। ३।२३।४५	८।११। ४।४४	४।२४।१४।४२	११।२१।४२।२४	२।११।२९।५३	५।२३। १। १
	६	शु०	६।२५।११।१७	४।१५। ०।५८	६।१८।४१।५७	९। ३।३२।३८	८।१२। ९।१४	४।२४।१९।४१	११।२१।३९।१३	२।११।२८। ८	५।२३। ३।११
	७	श०	६।२६।११।३८	४।१५।३३।२५	६।२०।१९।१६	९। ३।४१।३५	८।१३।१२।२९	४।२४।२४।४०	११।२१।३६। २	२।११।२६।५६	५।२३। ५।१३
	८	र०	६।२७।१२।२८	४।१६। ५।२४	६।२१।५७। ४	९। ३।५०।४६	८।१४।१५।५८	४।२४।२९।३१	११।२१।३२।५१	२।११।२५।१२	५।२३। ६।५०
	९	चं०	६।२८।१२।२९	४।१६।३८। २	६।२३।३४।१२	९। ४। ०।३६	८।१५।१९। ८	४।२४।३३।५८	११।२१।२९।४०	२।११।२३।४२	५।२३। ८।५६
	१०	मं०	६।२९।१२।५८	४।१७। ९।२५	६।२५।११।५३	९। ४। ९।४३	८।१६।२२।४०	४।२४।३८।५३	११।२१।२६।३०	२।११।२२।५४	५।२३।१०।४४
	११	बु०	७। ०।१३।२८	४।१७।४१।२०	६।२६।४८।४३	९। ४।१९।३०	८।१७।२३।४६	४।२४।४३।१२	११।२१।२३।१९	२।११।१९।३७	५।२३।१२।२५
	१२	गु०	७। १।१४। ३	४।१८।१२।५८	६।२८।२४।५०	९। ४।२९।२३	८।१८।२५।५३	४।२४।४७।४२	११।२१।२०। ८	२।११।१८।३२	५।२३।१४।३५
	१३	शु०	७। २।१४।३६	४।१८।४३।४८	७। ०। १।१२	९। ४।३९। ०	८।१९।२७।४२	४।२४।५२। १	११।२१।१६।५७	२।११।१६।२६	५।२३।१६।३७
	१४	श०	७। ३।१५। ८	४।१९।१५।११	७। १।३०।१६	९। ४।४८।४७	८।२०।२७।५०	४।२४।५६।२८	११।२१।१३।४६	२।११।१४।२८	५।२३।१८।१४
	३०	र०	७। ४।१५।३९	४।१९।४६।५५	७। ३।१३। १	९। ४।५९। ०	८।२१।२८।४४	४।२५। ०।११	११।२१।१०।३५	२।११।१२।२५	५।२३।२०।१३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयकाले दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः

केतकी अहर्गणः ५३४४ मासारम्भे

मासः	ति.	वा.	सूर्य रा.अ.क.वि.	मंगल रा.अ.क.वि.	बुध रा.अ.क.वि.	गुरु रा.अ.क.वि.	शुक्र रा.अ.क.वि.	शनि रा.अ.क.वि.	राहु रा.अ.क.वि.	वरुण रा.अ.क.वि.	इन्द्र रा.अ.क.वि.
मार्गशीर्षशुक्लपक्षः	१	चं०	७। ५।१६।१४	४।२०।१७।२४	७। ४।४८।४३	९। ५। ९।११	८।२२।२९।५३	४।२५। ४।३०	११।२१। ७।२४	२।११।१०।३७	५।२३।५१।५४
	२	मं०	७। ६।१६।५२	४।२०।४७।४९	७। ६।२४। ४	९। ५।१९।२६	८।२३।३०। ०	४।२५। ८।२४	११।२१। ४।१३	२।११। ८।२८	५।२३।२३।५३
	३	बु०	७। ७।१७।३३	४।२१।१८।४०	७। ७।५९।२०	९। ५।२९।४६	८।२४।२९।२४	४।२५।१२।११	११।१।२१।१। २	२।११। ६।४७	५।२३।२५।३०
	५	गु०	७। ८।१८।१५	४।२१।४९।२३	७। ९।३४।१६	९। ५।४०।२३	८।२५।२८।५५	४।२५।१५।५४	११।२०।५७।५१	२।११। ४।३४	५।२३।२७। ७
	६	शु०	७। ९।१९। ४	४।२२।१९।४१	७।११। ९।१४	९। ५।५०।५६	८।२६।२७।५८	४।२५।१९।४८	११।२०।५४।४०	२।११। २।२४	५।२३।२९। ६
	७	श०	७।१०।१९।५१	४।२२।४९।४१	७।१२।४४।२४	९। ६। १।४८	८।२७।२६।५३	४।२५।२३।३५	११।२०।५१।२९	२।११। ०।१४	५।२३।३०।४०
	८	र०	७।११।२०।३७	४।२३।१९।४४	७।१४।१८।१४	९। ६।१२।४३	८।२८।२५।१६	४।२५।४७।२२	११।२०।४८।१८	२।१०।५८।३०	५।२३।३२।१०
	८	चं०	७।१२।२१।२५	४।२३।४९।३०	७।१५।५२।५२	९। ६।२३।३१	८।२९।२२। ४	४।२५।३०।३६	११।२०।४५। ७	२।१०।५६।१७	५।२३।३३।४०
	९	मं०	७।१३।२२।१५	४।२४।१८।५०	७।१७।२७।२५	९। ६।३४।३०	९। ०।१९।३४	४।२५।३३।५४	११।२०।४१।५६	२।१०।५४।१३	५।२३।३५।१३
	१०	बु०	७।१४।२३। ४	४।२४।४८।१८	७।१९। १।४८	९। ६।४५।२५	९। १।१६।२६	४।२५।३७। १	११।२०।३८।४५	२।१०।५२।१२	५।२३।३६।४०
	११	गु०	७।१५।२३।५३	४।२५।१७।४६	७।२०।३६। ०	९। ६।५६।४२	९। २।१२।३२	४।३५।४३।३०	११।२०।३५।३४	२।१०।५०। ६	५।२३।३८।१७
	१२	शु०	७।१६।२४।४५	४।२५।४६।३७	७।२२।११।१०	९। ७। ८।१७	९। ३। ८। ६	४।२५।४३।३०	११।२०।३२।२३	२।१०।४७।४९	५।२३।३९।५०
	१३	श०	७।१७।२५।३८	४।२६।१५।२९	७।२३।४४।१३	९। ७।१९।३७	९। ४। १।५२	४।२४।४६।१२	११।२०।२९।१२	२।१०।४५। ०	५।२३।४१।१७
	१४	र०	७।१८।२६।३३	४।२६।४३।५९	७।२५।१८।१८	९। ७।३१।३४	९। ४।५३।४४	४।२५।४९।३०	११।२०।२६। १	२।१०।४२।४३	५।२३।४२।४३
	१५	चं०	७।१९।२६।३०	४।२७।१२।२५	७।२६।५१।२२	९। ७।४३।१५	९। ५।४९।३०	४।२५।५२।१६	११।२०।२२।५१	२।१०।४०।२३	५।२३।४४।२८
पौषकृष्णपक्षः	१	मं०	७।२०।२८।२६	४।२७।४०।४४	७।२८।२४।५४	९। ७५४।५०	९। ६।४२।४०	४।२५।५४।४७	११।२०।१९।४०	२।१०।३८। ६	५।२३।४५।५४
	२	बु०	७।२१।२९।२१	४।२८। ९। ०	७।२९।५९।२०	९। ८। ६।५८	९। ७।३४।५१	४।२५।५७।३२	११।२०।१६।२९	२।१०।३५।५०	५।२३।४७।२८
	३	गु०	७।२२।३०।१६	४।२८।३६।५८	८। १।३३।१४	९। ८।१८।५८	९। ८।२५।३०	४।२५।५९।४९	११।२०।१३।१८	२।१०।३३।३२	५।२३।४९। १
	४	शु०	७।२३।३१।१३	४।२९। ४।३०	८। ३। ६।४७	९। ८।३०।५४	९। ९।१५।५०	४।२६। १।४८	११।२०।१०। ७	२।१०।३१।१२	५।२३।५०।२०
	५	श०	७।२४।३२।१२	४।२९।३१।४१	८। ४।४०। ८	९। ८।४२।५८	९।१०। ६।५०	४।२६। ४। ८	११।२०। ६।५६	२।१०।२८।५९	५।२३।५१।२९
	६	र०	७।२५।३३।१६	४।२९।५९।२०	८। ६।१३।१६	९। ८।५५। २	९।१०।५६।२४	४।२६। ६।३२	११।२०। ३।४६	२।१०।२६।४२	५।२३।५२।४८
	७	चं०	७।२६।३४।२०	५। ०।२५।३७	८। ७।४६।५८	९। ९। ७। १	९।११।४६।३३	४।२६। ८।३५	११।२०। ०।३५	२।१०।२३।५३	५।२३।५४। ०
	८	मं०	७।२७।३५।२३	५। ०।५२। ४	८। ९।२०।१६	९। ९।१९।२६	९।१२।३२।५६	४।२६।१०।३७	११।१९।५७।२४	२।१०।२१।३२	५।२३।५५।१६
	९	बु०	७।२८।३६।२५	५। १।१८।४७	८।१०।५२।५५	९। ९।३१।२६	९।१३।१७।४२	४।२६।१२।१८	११।१९।५४।१३	२।१०।१९।१६	५।२३।५६।१३
	१०	गु०	७।२९।३७।३६	५। १।४५।११	८।१२।२५।४८	९। ९।४४।२८	९।१४। ३।२९	४।२६।१३।४८	११।१९।५१। ३	२।१०।१६। ८	५।२३।५७।१८
	११	शु०	८। ०।३८।४१	५। २।११।१३	८।१३।५८।३०	९। ९।५७। ४	९।१४।४७।५३	४।२६।१५। ३	११।१९।४७।५२	२।१०।१३।४८	५।२३।५८।३१
	१३	श०	८। १।३९।४६	५। २।३७। ४	८।१५।३१। ४	९।१०। ९।३६	९।१५।३२।५६	४।२६।१६।३७	११।१९।४४।४१	२।१०।१०।५९	५।२३।५९।३८
	१४	र०	८। २।४०।५७	५। ३। ३। ४	८।१७। २।५६	९।१०।२२।१६	९।१६।१३।४४	४।२६।१८। ०	११।१९।४१।३०	२।१०। ८।३५	५।२४। ०।५०
	३०	चं०	८। ३।४२। ०	५। ३।२८।५९	८।१८।३५। ६	९।१०।३४।४४	९।१६।५३।४९	४।२६।१९।२४	११।१९।३८।१९	२।१०। ५।५२	५।२४। २। ६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयकाले दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः

केतकी अहर्गणः ५३७३ मासारम्भे

मासः	ति.	वा.	सूर्य रा.अ.क.वि.	मंगल रा.अ.क.वि.	बुध रा.अ.क.वि.	गुरु रा.अ.क.वि.	शुक्र रा.अ.क.वि.	शनि रा.अ.क.वि.	राहु रा.अ.क.वि.	वरुण रा.अ.क.वि.	इन्द्र रा.अ.क.वि.
पौषशुक्लपक्षः	१	मं०	८। ४।४३। ६	५। ३।५४।१०	८।२०। ६। ४	९।१०।४७।५६	९।१७।३४। १	४।२६।२०।४५	११।१९।३५। ८	२।१०। ३।३२	५।२४। ३। ०
	२	बु०	८। ५।४४।१४	५। ४।१८।५७	८।२१।३६। ४	९।११। ०।२९	९।१८।१३।३३	४।२६।२१।३६	११।१९।३१।५७	२।१०। ०।४०	५।२४। ३।५८
	३	गु०	८। ६।४५।२४	५। ४।४३।४१	८।२३। ६।११	९।११।१३।१२	९।१८।५३।२४	४।२६।२२।३४	११।१९।२८।४७	२। ९।५८।५०	५।२४। ४।५९
	४	शु०	८। ७।४६।३१	५। ५। ८।२८	८।२४।३४।५१	९।११।२६।२०	९।१९।२८। १	४।२६।२३।२४	११।१९।२५।३६	२। ९।५५।३३	५।२४। ५।५३
	५	श०	८। ८।४७।४५	५। ५।३३।११	८।२६। ३। ७	९।११।३९।२५	९।२०। १।१२	४।२६।२४।१४	११।१९।२२।२५	२। ९।५३।१७	५।२४। ६।३२
	६	र०	८। ९।४८।५२	५। ५।५६।१७	८।२७।२९।३८	९।११।५२।३०	९।२०।३४। १	४।२६।२५। ८	११।१९।१८।१५	२। ९।५०।२०	५।२४। ७।१८
	७	चं०	८।१०।५०। १	५। ६।१९।१६	८।२८।५४।१४	९।१२। ५।४२	९।२१। ६।११	४।२६।२५।३७	११।१९।१६। ४	२। ९।४७।२७	५।२४। ८। २
	८	मं०	८।११।५१।११	५। ६।४२।४६	९। ०।१७। ९	९।१२।१८।५०	९।२१।३९।४०	४।२६। ५।५९	११।१९।१२।५३	२। ९।४५।१४	५।२४। ८।३८
	९	बु०	८।१२।५२।२१	५। ७। ५।३१	९। १।३८।२४	९।१२।३१।५५	९।२२। ६।५४	४।२६।२६।२०	११।१९। ९।४२	२। ९।४२।२२	५।२४। ९।१८
	१०	गु०	८।१३।५३।३१	५। ७।२७।२८	९। २।५६।२८	९।१२।४५।३२	९।२२।३३। ०	४।२६।२६।२४	११।१९। ६।३१	२। ९।४०। ५	५।२४।१०।१९
	११	शु०	८।१४।५४।४१	५। ७।४९।४४	९। ४।११। २	९।१२।५९। ६	९।२२।५७।५४	व.४।२६।२६।२५	११।१९। ३।२०	२। ९।३७। ८	५।२४।१०।५५
	११	श०	८।१५।५५।५१	५। ८।११।२७	९। ५।२२।१२	९।१३।१२।२५	९।२३।२२।४४	४।२६।२६।२४	११।१९। ०।१०	२। ९।३४।५९	५।२४।११।३४
	१२	र०	८।१६।५७। ०	५। ८।३३।१४	९। ६।२८।४४	९।१३।५५।५२	९।२३।४७।१७	४।२६।१६।१३	११।१८।५६।५९	२। ९।३२। ६	५।२४।१२।१८
	१३	चं०	८।१७।५८।१३	५। ८।५४।४०	९। ७।३०। ४	९।१३।३९। ७	९।२४। ५।१७	४।२६।२५।५५	११।१८।५३।४८	२। ९।२९।३४	५।२४।१३। १
	१४	मं०	८।१८।५९।२२	५। ९।१५।१३	९। ८।२४।३६	९।१३।५३।२०	९।२४।२०।३५	४।२६।२५।३०	११।१८।५०।३८	२। ९।२६।५३	५।२४।१३।२६
	१५	बु०	८।२०। ०।३१	५। ९।३५।३१	९। ९।१२।३६	९।१४। ७। १	९।२४।३५।४६	४।२६।२५।१२	११।१८।४७।२७	२। ९।२४।२२	५।२४।१३।५२
माघकृष्णपक्षः	१	गु०	८।२१। १।४४	५। ९।५५।३०	९। ९।५२।१२	९।१४।२०।३१	९।२४।५१।४०	४।२६।२४।५०	११।१८।४४।१६	२। ९।२१।२५	५।२४।१४।३५
	२	शु०	८।२२। २।५४	५।१०।१५।३६	९।१०।२२।४८	९।१४।३४। ८	९।२५। ७।४४	४।२६।२४। ४	११।१८।४१। ५	२। ९।१९।१२	५।२४।१५।११
	३	श०	८।२३। ४। २	५।१०।३५।२०	९।१०।४२।५४	९।१४।४७।४९	९।२५।१६।३४	४।२६।२३।१३	११।१८।३७।५४	२। ९।१६।४८	५।२४।१५।३२
	४	र०	८।२४। ५।११	५।१०।५४।४७	व.९।१०।५५।४८	९।१५। १।२६	९।२५।२३।३८	४।२६।२२।१६	११।१८।३४।४३	२। ९।१३।५९	५।२४।१५।५०
	५	चं०	८।२५। ६।२०	५।११।१३। १	९।१०।५०।२०	९।१५।१५।१४	९।२५।२७।२२	४।२६।२१।२२	११।१८।३१।३३	२। ९।११।५३	५।२४।१६।२३
	७	मं०	८।२६। ७।२९	५।११।३०।४३	९।१०।३६।२९	९।१५।३९।२८	९।२५।२९।५३	४।२६।२०।२४	११।१८।२८।२२	२। ९। ९।२९	५।२४।१६।३४
	८	बु०	८।२७। ८।३७	५।११।४८।२५	९।१०।१०।५२	९।१५।४३। १	९।२५।३०। ०	४।२६।१८।५८	११।१८।२५।११	२। ९। ७।१२	५।२४।१६।४१
	९	गु०	८।२८। ९।४६	५।१२। ६। ७	९। ९।३५।३१	९।१५।५७। ४	९।२५।२७।११	४।२६।१७।२७	११।१८।२२। १	२। ९। ४।५२	५।२४।१६।५२
	१०	शु०	८।२९।१०।५५	५।१२।२३। २	९। ८।४९।४४	९।१६।११। २	९।२५।२२।१९	४।२६।१५।५८	११।१८।१८।५०	२। ९। २।३८	५।२४।१६।५९
	११	श०	९। ०।१२। ३	५।१२।३९।४०	९। ७।५४।१४	९।१६।२४।२९	९।२५।१३।१६	४।२६।१४।२४	११।१८।१५।३९	२। ९। ०।२२	५।२४।१७। ६
	१२	र०	९। १।१३। ८	५।१२।५५।१२	९। ६।५४। ७	९।१६।३८।४२	९।२५। १।२६	४।२६।१२।५८	११।१८।१२।२८	२। ८।५८। ८	५।२४।१७।२०
	१३	चं०	९। २।१४।१७	५।१३।१०।५५	९। ५।४७। २	९।१६।५२।५९	९।२४।४९। ७	४।२६।१०।३०	११।१८। ९।१७	२। ८।५५।४४	५।२४।१७।३१
	१४	मं०	९। ३।१५।२२	५।१३।२६।४६	९। ४।३५।२८	९।१७। ७। ५	९।२४।३२।१३	४।२६। ८।४६	११।१८। ६। ६	२। ८।५२।५९	५।२४।१७।४२
	३०	बु०	९। ४।१६।२७	५।१३।४२। ७	९। ३।२०।२४	९।१७।२१।१८	९।२४।१२। ४	४।२६। ६।४७	११।१८। २।५५	२। ८।५०।४२	५।२४।१७।४६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयकाले दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः

केतकी अहर्गणः ५४०३ मासारम्भे

मासः	ति.वा.	सूर्य रा.अ.क.वि.	मंगल रा.अ.क.वि.	बुध रा.अ.क.वि.	गुरु रा.अ.क.वि.	शुक्र रा.अ.क.वि.	शनि रा.अ.क.वि.	राहु रा.अ.क.वि.	वरुण रा.अ.क.वि.	इन्द्र रा.अ.क.वि.
माघ शुक्ल पक्षः	१ गु०	९। ५।१७।३१	५।१३।५६।५३	९। २। ३।५४	९।१७।३५।२०	९।२३।५१।४०	४।२६। ४।३७	११।१७।५९।४५	२। ८।४०।२९	व.५।२४।१७।४९
	२ शु०	९। ६।१८।३६	५।१४। ९।५८	९। ०।४८।२२	९।१७।४९। ८	९।२३।३०।५८	४।२६। २।३१	११।१७।५६।३४	२। ८।४६।४१	५।२४।१७।४८
	३ श०	९। ७।१९।३८	५।१४।२२।३७	८।२९।३९।४७	९।१८। ३।२२	९।२३।१०।१९	४।२६। ०।३२	११।१७।५३।२३	२। ८।४३।५९	५।२४।१७।४६
	४ र०	९। ८।२०।४२	५।१४।३४।४४	८।२८।३४।४४	९।१८।१७।३५	९।२२।४२।२५	४।२५।५७।५४	११।१७।५०।१३	२। ८।४२।१४	५।२४।१७।३५
	५ चं०	९। ९।२१।४६	५।१४।४७।३८	८।२७।३३।१८	९।१८।३२।२४	९।२२।११।५३	४।२५।५५।१६	११।१७।४७। २	२। ८।४०।२६	५।२४।१७।१७
	६ मं०	९।१०।२२।४८	५।१४।५९।२०	८।२६।४२।२९	९।१८।४६।४८	९।२१।४०।१२	४।२५।५३।१३	११।१७।४३।५१	२। ८।३७।५९	५।२४।१६।५९
	७ बु०	९।११।२३।५०	५।१५। ८।४६	८।२६। १।१६	९।१९। ०।२९	९।२१। ९।४०	४।२५।५०।२८	११।१७।४०।४०	२। ८।३६।१४	५।२४।१६।४४
	८ गु०	९।१२।२४।५१	५।१५।१८।५०	८।२५।३०।२९	९।१९।१४।४२	९।२०।३९। ०	४।२५।४७।३५	११।१७।३७।२९	२। ८।३४। ८	५।५४।१६।३०
	९ शु०	९।१३।२५।५१	५।१५।२९।२०	८।२५। ७।५५	९।१९।२८।५५	९।२०। ४।१२	४।२५।४४।४२	११।१७।३४।१९	२। ८।३२।१३	५।२४।१६।१६
	१० श०	९।१४।२६।४६	५।१५।३९।२२	८।२४।५५।३७	९।१९।४३। ५	९।१९।२७।५८	४।२५।४२।४	११।१७।३१। ८	२। ८।३०। ४	५।२४।१६। ५
	११ र०	९।१५।२७।४०	५।१५।४८।४३	८।२४।५०। २	९।१९।५७।४०	९।१८।५१।२५	४।२५।३९। ०	११।१७।२७।५७	२। ८।२८।१६	५।२४।१५।५०
	१२ चं०	९।१६।२८।३०	५।१५।५५।२६	मा८।२४।५४।२२	९।२०।१२। ४	९।१८।१४।५६	४।२५।३५।३८	११।१७।२४।४७	२। ८।२६। २	५।२४।१५।३६
	१३ मं०	९।१७।२९।२२	५।१६। २।२०	८।२५। ३।४७	९।२०।२६।१७	९।१७।३८।३५	४।२५।३२।१३	११।१७।२१।३६	२। ८।२४।१४	५।२४।१५।१२
	१४ बु०	९।१८।३०।१५	५।१६। ८।५६	८।२५।२२। १	९।२०।४०।३०	९।१७। २।१७	४।२५।२९। २	११।१७।१८।२५	२। ८।२२। ८	५।२४।१४।४८
	१५ गु०	९।१९।३१। ८	५।१६।१५।५४	८।२५।४५।५४	९।२०।५४।४७	९।१५।२६।१०	४।२५।२५।५२	११।१७।१५।१५	२। ८।२०।२४	५।२४।१४।२४
फाल्गुन कृष्ण पक्षः	१ शु०	९।२०।३१।५८	५।१६।२१। ६	८।२६।१६।२३	९।२१। ८।५३	९।१५।४९।५५	४।२५।२२।३७	११।१७।१२। ४	२। ८।१८।४७	५।२४।१३।५०
	२ श०	९।२१।३२।४९	५।१६।२६।५६	८।२६।५०।४६	९।२१।२३। २	९।१५।१४।१३	४।२५।१९। १	११।१७। ८।५३	२। ८।१७। २	५।२४।१३।१९
	३ र०	९।२२।३३।३६	५।१६।३०।४३	८।२७।३१। १	९।२१।३७।१२	९।१४।३८।१७	४।२५।१५।१४	११।१७। ५।४३	२। ८।१५।२२	५।२४।१२।३२
	४ चं०	९।२३।३४।२१	५।१६।३४।१६	८।२८।१८। ४	९।२१।५१।२५	९।१४। ७।५५	४।२५।११।२८	११।१७। २।३२	२। ८।१३।४८	५।२४।११।४६
	५ मं०	९।२४।३५। ७	५।१६।३८।२४	८।२९। २। २	९।२२। ५।३८	९।१३।३७।४१	४।२५। ७।४१	११।१६।५९।२१	२। ८।१२।२९	५।२४।११।११
	६ बु०	९।२५।३५।५२	५।१६।४२। ४	८।२९।५३।२०	९।२२।१९।५५	९।१३। ७।१६	४।२५। ३।५०	११।१६।५६।११	२। ८।१०।५२	५।२४।१०।४४
	७ गु०	९।२६।३६।३६	५।१६।४३।४४	९। ०।४६। २	९।२२।३४। ५	९।१२।३६। ८	४।२५। ०। ४	११।१६।५३। ०	२। ८। ९।२२	५।२४। ९।५८
	८ शु०	९।२७।३७।१७	५।१६।४४।२०	९। १।४५।१४	९।२२।४८।५०	९।१२। ८।१०	४।२४।५६।१०	११।१६।४९।५०	२। ८। ८। ६	५।२४। ९। ४
	९ श०	९।२८।३७।५९	५।१६।४०।३१	९। २।४४।५३	९।२३। ३। ७	९।११।४७।४२	४।२४।५२।१६	११।१६।४६।३९	२। ८। ६।३६	५।२४। ८।१७
	१० र०	९।२९।३८।४०	५।१६।४५। ७	९। ३।४८। ०	९।२३।१७।२४	९।११।२७। ०	४।२४।४८।२५	११।१६।४३।२९	२। ८। ५।३१	५।२४। ७।२६
	१२ चं०	१०। ०।३९।१८	५।१६।४५।३६	९। ४।५३। २	९।२३।३१।४८	९।११। ६।४३	४।२४।४४।५३	११।१६।४०।१८	२। ८। ४।१९	५।२४। ६।४०
	१३ मं०	१०। १।३९।५४	५।१६।४४।३८	९। ६। ०। ०	९।२३।४५।५८	९।१०।४६।५२	४।२४।४०।४१	११।१६।३७। ७	२। ८। ३। ०	५।२४। ५।५३
	१४ बु०	१०। २।४०।२७	५।१६।४०।५५	९। ७। ८।५३	९।२४। ०।११	९।१०।२८।३४	४।२४।३६।१८	११।१६।३३।५६	२। ८। १।४४	५।२४। ४।५९
	३० गु०	१०। ३।४०।५८	५।१६।३७।३७	९। ८।१९।४४	९।२४।१४।२४	९।१०।१५।१८	४।२४।३३।५९	११।१६।३०।४५	२। ८। ०।१४	५।२४। ४।१२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयकाले दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः

केतकी अहर्गणः ५४३२ मासारम्भे

मासः	ति. वा.	सूर्य रा.अ.क.वि.	मंगल रा.अ.क.वि.	बुध रा.अ.क.वि.	गुरु रा.अ.क.वि.	शुक्र रा.अ.क.वि.	शनि रा.अ.क.वि.	राहु रा.अ.क.वि.	वरुण रा.अ.क.वि.	इंद्र रा.अ.क.वि.
फाल्गुन शुक्लपक्षः	१ शु०	१०। ४।४१।२८	५।१६।३४।३४	९। ९।३२।५६	९।२४।२८।३४	९।१०। ४।५२	४।२४।२७।३२	११।१६।२७।३५	२। ७।५९।१९	५।२४। ३।२५
	२ श०	१०। ५।४१।५५	५।१६।३३।४१	९।१०।४७।१०	९।२४।४२।४३	९। ९।५६।२८	४।२४।२३। ६	११।१६।२४।२४	२। ७।५८। ८	५।२४। २।३१
	३ र०	१०। ६।४२।२३	५।१६।२८।४८	९।१२। ३।४३	९।२४।५६।५३	९। ९।५१।३६	४।२४।१८।३६	११।१६।२१।१३	२। ७।५७।२५	५।२४। १। ८
	३ चं०	१०। ७।४२।५३	५।१६।२३।१०	९।१३।२१।५४	९।२५।१०।३७	९। ९।४८।१८	४।२४।१४।१०	११।१७।१८। ३	२। ७।५६।२८	५।२४। ०।२५
	४ मं०	१०। ८।४३।२०	५।१६।१७।२०	९।१४।४१।१३	९।२५।२४।४७	९। ९।४८।४३	४।२४। ९।४०	११।१६।१४।५२	२। ७।५५।१९	५।२३।५९।३१
	५ बु०	१०। ९।४३।४३	५।१६।१०।२६	९।१६। २।१७	९।२५।३९। ७	९। ९।५१। ०	४।२४। ४।४१	११।१६।११।४२	२। ७।५४।११	५।२३।५८।४४
	६ गु०	१०।१०।४४। ४	५।१६। २।३८	९।१७।२४।१८	९।२५।५३।२०	९। ९।५४।२५	४।२४। ०।१८	११।१६। ८।३१	२। ७।५३।१३	५।२३।५७।१८
	७ शु०	१०।११।४४।२४	५।१५।५४। ७	९।१८।४९।५२	९।२७। ७।२३	९।१०। २।२४	४।२३।५५।५२	११।१६। ५।२०	२। ७।५२।३७	५।२३।५५।५९
	८ श०	१०।१२।४४।४०	५।१५।४४।१३	९।२०।१२। ७	९।२६।२१।३२	९।१०।१२।२५	४।२३।५०।५६	११।१६। २।१०	२। ७।५१।४०	५।२३।५५। ५
	९ र०	१०।१३।४४।५६	५।१५।३३।४४	९।२१।३७। १	९।२६।३५।१३	९।१०।२७। ४	४।२३।४६।३०	११।१५।५८।५९	२। ७।५१। ७	५।२३।५३।४६
	१० चं०	१०।१४।४५।१२	५।१५।२३।३१	९।२३। ४।३४	९।२६।४९।१२	९।१०।४१।१०	४।२३।४१।२८	११।१५।५५।४९	२। ७।५०।३८	५।२३।५२।२३
	११ मं०	१०।१५।४५।२४	५।१५।१३।३०	९।२४।३२।३८	९।२७। ३।१४	९।१०।५५।५९	४।२३।३७। ५	११।१५।५२।३८	२। ७।५०।१०	५।२३।५१।३२
	१२ बु०	१०।१६।४५।३८	५।१५। ३।२९	९।२६। २।१०	९।२७।१७।१०	९।११।१०।५२	४।२३।३२।१०	११।१५।४९।२८	२। ७।४९।३७	५।२३।५०। ६
	१३ गु०	१०।१७।४५।५०	५।१४।५२।२२	९।२७।३२।३५	९।२७।३१।१९	९।११।३०।११	४।२३।२७। ७	११।१५।४६।१७	२। ७।४९।१२	५।२३।४८।४७
	१४ शु०	१०।१८।४५।५८	५।१४।३८। ०	९।२९। ४।२३	९।२७।४५। ०	९।११।५४। ७	४।२३।२२।४१	११।१५।४३। ६	२। ७।४९। ०	५।२३।४७।५३
	१५ श०	१०।१९।४६। ३	५।१४।२४।४०	१०। ०।३७।३७	९।२७।५८।५२	९।१२।१८।११	४।२३।१७।४९	११।१५।३९।५६	२। ७।४८।४०	५।२३।४६।३४
चैत्रकृष्णपक्षः	१ र०	१०।२०।४६। ९	५।१४।१०।५९	१०। २।११।१०	९।२८।१२।३२	९।१२।४१।२८	४।२३।१३।१९	११।१५।३६।४५	२। ७।४८।१८	५।२३।४५।११
	२ चं०	१०।२१।४६।१०	५।१३।५७।४०	१०। ३।४६।४१	९।२८।५६।१७	९।१३। ५।२४	४।२३। ८।४२	११।१५।३३।३४	२। ७।४७।५६	५।२३।४३।४१
	३ मं०	१०।२२।४६। ८	५।१३।४४।३५	१०। ५।२३। ६	९।२८।४०। १	९।१३।३४।१६	४।२३। ४। १	११।१५।३०।२४	२। ७।४७।३१	५।२३।४२।२२
	४ बु०	१०।२३।४६। ७	५।१३।२८।४९	१०। ७। ०। ०	९।२८।५३।४६	९।१४। ६। ०	४।२२।५८।५९	११।१५।२७।१३	२। ७।४७।२५	५।२३।४०।५९
	६ गु०	१०।२४।४६। २	५।१३।१२।२२	१०। ८।३८।४३	९।२९। ७।२३	९।१४।३७।३४	४।२२।५४।२५	११।१५।२४। २	२। ७।४७।२३	५।२३।३९।३२
	७ शु०	१०।२५।४५।५७	५।१२।५६। २	१०।१०।१८।५०	९।२९।२१। ०	९।१५। ९।२५	४।२२।४९।३०	११।१५।२०।५२	२। ७।४७।२३	५।२३।३८।१३
	८ श०	१०।२६।४५।५१	५।१२।३९।३२	१०।११।५९।३१	९।२९।३४।३७	९।१५।४०।४१	४।२२।४४।३५	११।१५।१७।४१	२। ७।४७।२४	५।२३।३६।५०
	९ र०	१०।२७।४५।४२	५।१२।२२।४१	१०।१३।४१।३१	९।२९।४७।४६	९।१६।१७।२४	४।२२।३९।५८	११।१५।१४।३१	२। ७।४७।२७	५।२३।३५।२४
	१० चं०	१०।२८।४५।३०	५।१२। ५।५९	१०।१५।२४।३२	१०। ०। १।२६	९।१६।५५।५९	४।२२।३५।१३	११।१५।११।२०	२। ७।४७।३१	५।२३।३३।५८
	११ मं०	१०।२९।४५।१८	५।११।४८।१४	१०।१७। ८।४६	१०। ०।१४।३५	९।१७।३४।३७	४।२२।३०।१४	११।१५। ८।१०	२। ७।४७।५६	५।२३।३२।२८
	१२ बु०	११। ०।४५। २	५।११।३०।३२	१०।१८।५४।११	१०। ०।२८।२६	९।१८।१२।३६	४।२२।२५।३४	११।१५। ४।५९	२। ७।४८।२२	५।२३।३०।४०
	१३ गु०	११। १।४४।४६	५।११।१२।१८	१०।२०।४०।२६	१०। ०।४१।४९	९।१८।५१।२२	४।२२।२०।४९	११।१५। १।४८	२। ७।४८।५८	५।२३।२९।१३
	१४ शु०	११। २।४४।३०	५।१०।५४। ०	१०।२२।२८। १	१०। ०।५४।५०	९।१९।३४। २	४।२२।१६। १	११।१४।५८।३८	२। ७।४९।२३	५।२३।२७।५०
	३० श०	११। ३।४४।११	५।१०।३५।२४	१०।२४।१७।२०	१०। ०। ८। २	९।२०।१८।१४	४।२२।११।४२	११।१४।५५।२७	२। ७।४९।४८	५।२३।२६।२०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मासः	ति. वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
चैत्रशुक्लपक्षः	१ तु	११।२०।४१। ८	११।२२।४१।४७	११।२४।४२।२६	११।२६।४३। ५	११।२८।४४।१९	०। ०।४५।३३
	२ गु	०। २।४६।४७	०। ४।४८।३६	०। ६।५०।२५	०। ८।५२।१५	०।१०।५४।३९	०।१२।५७। ३
	३ शु	०।१४।५९।२७	०।१७। २।३५	०।१९। ५।४४	०।२१। ८।५२	०।२३।१३। ९	०।२५।१७।२६
	४ श	०।२७।२१।४२	०।२९।२७। ७	१। १।३२।३३	१। ३।३७।५८	१। ५।४४।३१	१। ७।५१। ५
	५ र	१। ९।५७।३८	१।१२। ५।१५	१।१४।१२।५२	१।१६।२०।३०	१।१८।२९।२४	१।२०।३८।१८
	६ चं	१।२२।४७।११	१।२४।५७।२१	१।२७। ७।३०	१।२९।१७।४०	२। १।२९। ६	२। ३।४०।३२
	७ मं	२। ५।५१।५८	२। ८। ४।४३	२।१०।१७।२८	२।१२।३०।१४	२।१४।४४।१५	२।१६।५८।१६
	८ बु	२।१९।१२।१७	२।२१।२७।३३	२।२३।४२।४९	२।२५।५८। ६	२।२८।१४।३८	३। ०।३१।११
	९ गु	३। २।४७।४३	३। ५। ५।२३	३। ७।२३। ३	३। ९।४०।४४	३।११।५९।२५	३।१४।१८। ६
	१० शु	३।१६।३६।४७	३।१८।५६।२९	३।२१।१६।१२	३।२३।३५।५४	३।२५।५६।३७	३।२८।१७।२०
	११ श	४। ०।३८। ४	४। २।५९।३३	४। ५।२१। २	४। ७।४२।३१	४।१०। ४।३२	४।१२।२६।३३
	१२ र	४।१४।४८।३४	४।१७।११। ७	४।१९।३३।४०	४।२१।५६।१३	४।२४।१९।१८	४।२६।४२।२३
	१३ चं	४।२९। ५।२८	५। १।२८।४९	५। ३।५२।११	५। ६।१५।३२	५। ८।३८।४८	५।११। २। ४
	१४ मं	५।१३।२५।२१	५।१५।४८।३२	५।१८।११।४३	५।२०।३४।५४	५।२२।५८। ०	५।२५।२१। ५
	१५ बु	५।२७।४४।११	६। ०। ६।३८	६। २।२९। ४	६। ४।५१।३१	६। ७।१३।२९	६। ९।३५।२७
वैशाखकृष्णपक्षः	१ गु	६।११।५७।२५	६।१४।१८।५४	६।१६।४०।२४	६।१९। १।५३	६।२१।२२।५३	६।२३।४३।५४
	३ शु	६।२६। ४।५४	६।२८।२४।४१	७। ०।४४।२८	७। ३। ४।१४	७। ५।२२।२८	७। ७।४१।४२
	४ श	७।१०। ०।२५	७।१२।१८। ६	७।१४।३५।४७	७।१६।५३।२८	७।१९।१०। ६	७।२१।२६।४५
	५ र	७।२३।४३।२३	७।२५।५८।४५	७।२८।१४। ७	८। ०।२९।२८	८। २।४३।३२	८। ४।५७।३७
	६ चं	८। ७।११।४१	८। ९।२४।२९	८।११।३७।१६	८।१३।५०। ४	८।१६। १।३५	८।१८।१३। ५
	७ मं	८।२०।२४।२६	८।२२।३४।४७	८।२४।४४।५९	८।२६।५५।१०	८।२९। ४। ७	९। १।१३। ३
	८ बु	९। ३।२२। ०	९। ५।२९।४२	९। ७।३७।२४	९। ९।४५। ६	९।११।५१।३४	९।१३।५८। २
	९ गु	९।१६। ४।३०	९।१८। ९।४५	९।२०।१५। ०	९।२२।२०।१४	९।२४।२४।३५	९।२६।२८।५६
	१० शु	९।२८।३३।१७	१०। ०।३६।४४	१०। २।४०।११	१०। ४।४३।३८	१०। ६।४६।११	१०। ८।४८।४४
	११ श	१०।१०।५१।१७	१०।१२।५३। २	१०।१४।५४।४६	१०।१६।५६।३१	१०।१८।५७।४७	१०।२०।५९। ३
	१२ र	१०।२३। ०।२०	१०।२५। १। ८	१०।२७। १।५५	१०।२९। २।४३	११। १। ३। २	११। ३। ३।२१
	१२ चं	११। ५। ३।४०	११। ७। ३।४६	११। ९। ३।५३	११।११। ३।५९	११।१३। ४।१५	११।१५। ४।३१
	१३ मं	११।१७। ४।४७	११।१९। ५।१२	११।२१। ५।३८	११।२३। ६। ३	११।२५। ६।३८	११।२७। ७।१३
	१४ बु	११।२९। ७।४८	०। १। ८।५२	०। ३। ९।५६	०। ५।११। ०	०। ७।१२।४५	०। ९।१४।३०
	३० गु	०।११।१६।१५	०।१३।१८।४१	०।१५।२१। ६	०।१७।२३।३२	०।१९।२६।३९	०।२१।२९।४७
वैशाखशुक्लपक्षः	१ शु	०।२३।३२।५४	०।२५।३७। ६	०।२७।४१।१९	०।२९।४५।३१	१। १।५०।४८	१। ३।५६। ४
	२ श	१। ६। १।२१	१। ८। ७।४२	१।१०।१४। ४	१।१२।२०।२५	१।१४।२७।५१	१।१६।३५।१८
	३ र	१।१८।४२।४४	१।२०।५१।२७	१।२३। ०।१०	१।२५। ८।५४	१।२७।१८।५५	१।२९।२८।५६
	४ चं	२। १।३८।५६	२। ३।५०।१४	२। ६। १।३२	२। ८।१२।५०	२।१०।२५।२७	२।१२।३८। ३
	५ मं	२।१४।५०।४०	२।१७। ४।३४	२।१९।१८।२८	२।२१।३२।२३	२।२३।४७।३१	२।२६। २।३९
	६ बु	२।२८।१७।४८	३। ०।३४।१०	३। २।५०।३१	३। ५। ६।५३	३। ७।२४।२८	३। ९।४२। ४
	७ गु	३।११।५९।३९	३।१४।१८।१७	३।१६।३६।५५	३।१८।५५।३४	३।२१।१५। ८	३।२३।३४।४३
	८ शु	३।२५।५४।१७	३।२८।१४।४७	४। ०।३५।१६	४। २।५५।४६	४। ५।१७।११	४। ७।३८।३६
	९ श	४।१०। ०। २	४।१२।२२। ७	४।१४।४४।१२	४।१७। ६।१७	४।१९।२८।४७	४।२१।५१।१६
	११ र	४।२४।१३।४६	४।२६।३६।४०	४।२८।५९।३४	५। १।२२।२९	५। ३।४५।४८	५। ६। ९। ७
	१२ चं	५। ८।३३।२५	५।१०।५५।५०	५।१३।१९।१५	५।१५।४२।४०	५।१८। ५।५४	५।२०।२९। ८
	१३ मं	५।२२।५२।२२	५।२५।१५।२२	५।२७।३८।२२	६। ०। १।१२	६। २।२४। ७	६। ४।४६।५२
	१४ बु	६। ७। ९।३८	६। ९।३१।५०	६।११।५४। १	६।१४।१६।१३	६।१६।३७।४१	६।१८।५९। ९
	१५ गु	६।२१।२०।३६	६।२३।४१।२०	६।२६। २। ४	६।२८।२२।४७	७। ०।४२।४७	७। ३। २।४८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ रूपगढ (शतद्रू) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०–१० घटीषु दैनिकश्चंद्रः स्पष्टः

मासः	ति. वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
ज्येष्ठकृष्णपक्षः	१ शु	७। ५।२२।४८	७। ७।४१।४३	७।१०। ०।३८	७।१२।१९।३३	७।१४।३७।२०	७।१६।५५। ७
	२ श	७।१९।१२।५३	७।२१।२९।३२	७।२३।४६।११	७।२६। २।४९	७।२८।१८।२०	८। ०।३३।५१
	३ र	८। २।४९।२२	८। ५। ३।३६	८। ७।१७।५०	८। ९।३२। ४	८।११।४५। १	८।१३।५७।५७
	४ चं	८।१६।१०।५४	८।१८।२२।३३	८।२०।३४।११	८।२२।४५।५०	८।२४।५६।११	८।२७। ६।३२
	५ मं	८।२९।१६।५३	९। १।२५।५६	९। ३।३४।५९	९। ५।४४। २	९। ७।५१।५३	९। ९।५९।४४
	६ बु	९।१२। ७।३४	९।१४।१४।१२	९।१६।२०।५०	९।१८।२७।३८	९।२०।३३।५३	९।२२।३८।१८
	७ गु	९।२४।४३।४४	९।२६।४८।१०	९।२८।५२।३७	१०। ०।५७। ३	[illegible]। ०।३६	१०। ५। ४। ९
	८ शु	१०। ७। ७।४२	१०। ९।१०।४२	१०।११।१३।४३	१०।१३।१६।[illegible]	[illegible]।१८।१०	१०।१७।१९।३७
	९ श	१०।१९।२१। ४	१०।२१।२२।१५	१०।२३।२३।२६	१०।२५।२[illegible]	[illegible]।२७।२५।२७	१०।२९।२६।१७
	१० र	११। १।२७। ७	११। ३।२७।३६	११। ५।२८। ६	११। ७।२८।३५	११। ९।२८।४४	११।११।२८।५२
	११ चं	११।१३।२९। १	११।१५।२९। ७	११।१७।२९।१४	११।१९।२९।२०	११।२१।२९।४४	११।२३।३०। ८
	१२ मं	११।२५।३०।३२	११।२७।३१।१३	११।२९।३२।५५	०। १।३२।३६	०। ३।३३।३६	०। ५।३४।३५
	१३ बु	०। ७।३५।३५	०। ९।३७ ७।	०।११।३८।३९	०।१३।४०।११	०।१५।४२।३३	०।१७।४४।५५
	१४ गु	०।१९।४७।१७	०।२१।५०।२८	०।२३।५३।४०	०।२५।५६।५१	०।२८। ०।५२	१। ०। ४।५४
	३० शु	१। २। ८।५५	१। ४।१४। ०	१। ६।१९। ५	१। ८।२४।१०	१।१०।३०।२४	१।१२।३६।३८
ज्येष्ठशुक्लपक्षः	१ श	१।१४।४२।५२	१।१६।५०।१५	१।१८।५७।३९	१।२१। ५। २	१।२३।१३।३५	१।२५।२२। ८
	२ र	१।२७।३०।४०	१।२९।४०।३३	२। १।५०।२५	२। ४। ०।१८	२। ६।११।२८	२। ८।२२।३८
	३ चं	२।१०।३३।४८	२।१२।४६।१५	२।१४।५८।४२	२।१७।११।१०	२।१९।२४।५४	२।२१।३८।३८
	४ मं	२।२३।५२।२३	२।२६। ७।२८	२।२८।२२।३३	३। ०।३७।३८	३। २।५३।५१	३। ५।१०। ४
	५ बु	३। ७।२६।१७	३। ९।४३।३९	३।१२। १। ०	३।१४।१८।२२	३।१६।३६।५२	३।१८।५५।२३
	६ गु	३।२१।१३।५३	३।२३।३३।२९	३।२५।५३। ५	३।२८।१२।४१	४। ०।३३। ६	४। २।५३।३०
	७ शु	४। ५।१३।५५	४। ७।३५। ८	४। ९।५६।२२	४।१२।१७।३५	४।१४।३९।३७	४।१७। १।३८
	८ श	४।१९।२३।४०	४।२१।४६।१५	४।२४। ८।५०	४।२६।३१।२५	४।२८।५४।१६	५। १।१७। ८
	९ र	५। ३।३९।५९	५। ६। ३। ८	५। ८।२६।१६	५।१०।४९।२५	५।१३।१२।५१	५।१५।३६।१७
	१० चं	५।१७।५९।४२	५।२०।२३। ५	५।२२।४६।२७	५।२५। ९।५०	५।२७।३२।५१	५।२९।५५।५२
	११ मं	६। २।१८।५३	६। ४।४१।३३	६। ७। ४।१२	६। ९।२६।५२	६।११।४९।१०	६।१४।११।२८
	१२ बु	६।१६।३३।४६	६।१८।५५।२८	६।२१।१७।१०	६।२३।३८।५१	६।२५।५९।३९	६।२८।२०।२७
	१३ गु	७। ०।४१।१५	७। ३। १। ९	७। ५।२१। ३	७। ७।४०।५७	७। ९।५९।५७	७।१२।१८।५८
	१५ शु	७।१४।३७।५८	७।१६।५६। ०	७।१९।१४। १	७।२१।३२। ३	७।२३।४८।५२	७।२६। ५।४०
आषाढकृष्णपक्षः	१ श	७।२८।२२।२९	८। ०।३८।२५	८। २।५४।२१	८। ५।१०।१७	८। ७।२४।२०	८। ९।३८।२३
	२ र	८।११।५२।२६	८।१४। ५।३१	८।१६।१८।३७	८।१८।३१।४२	८।२०।४३।२९	८।२२।५५।१६
	३ चं	८।२५। ७। ३	८।२७।१७।३३	८।२९।२८। २	९। १।३८।३२	९। ३।४७।४४	९। ५।५६।५६
	४ मं	९। ८। ६। ८	९।१०।१४। ३	९।१२।२१।५८	९।१४।२९।५३	९।१६।३६।४०	९।१८।४३।२७
	५ बु	९।२०।५०।१५	९।२२।५५।५४	९।२५। १।३३	९।२७। ७।१३	९।२९।११।४५	१०। १।१६।१७
	६ गु	१०। ३।२०।४८	१०। ५।२४।१७	१०। ७।२७।४६	१०। ९।३१।१४	१०।११।४३।५९	१०।१३।३६।४३
	७ शु	१०।१५।३९।२८	१०।१७।४१।२९	१०।१९।४३।३०	१०।२१।४५।३०	१०।२३।४६।४७	१०।२५।४८। ४
	८ श	१०।२७।४९।२०	१०।२९।५०। ५	११। १।५०।५०	११। ३।५१।३५	११। ५।५२। ६	११। ७।५२।३८
	८ र	११। ९।५३। ९	११ [illegible]।५३।२८	११।११।५३।४६	११।१५।५४। ५	११।१७।५४। ९	११।१९।५४।१३
	९ चं	११।२१।५४।१८	११।२३।५४।३२	११।२५।५४।४५	११।२७।५४।५९	११।२९।५५।३८	०। १।५६।१७
	१० मं	०। ३।५६।५५	०। ५।५७।५९	०। ७।५९। ३	०।१०। ०। ७	०।१२। १।३७	०।१४। ३। ६
	११ बु	०।१६। ४।३६	०।१८। ६।४६	०।२०। ८।५६	०।२२।११। ६	०।२४।१४।१२	०।२६।१७।१८
	१२ गु	०।२८।२०।२४	१। ०।२४।२५	१। २।२८।२७	१। ४।३२।२८	१। ६।३७।२५	१। ८।४२।२२
	१३ शु	१।१०।४७।१९	१।१२।५३।२१	१।१४।५९।२३	१।१७। ५।२५	१।१९।१२।४०	१।२१।१९।५६
	१४ श	१।२३।२७।११	१।२५।३५।४०	१।२७।४४। ८	१।२९।५२।३७	२। २। २।१९	२। ४।१२। १
	३० र	२। ६।२२।४३	२। ८।३३।४४	२।१०।४३।४५	२।१२।५४।४६	२।१५। ७। ५	२।१७।१९।२४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टाऽर्कोदयादारभ्य १०-१० घटीषुदैनिकश्चंद्रः स्पष्टः ।

मासः	ति. वा.	इष्टघटी ०।०	ष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
आषाढ़शुक्लपक्षः	१ चं	२।१९।३१।४३	२।२१।४५।१९	२।२३।५८।५६	२।२६।१२।३२	२।२८।२७।२६	३। ०।४२।२०
	२ मं	३। २।५७।१५	३। ५।१३।२६	३। ७।२९।३७	३। ९।४५।४८	३।१२। ३। ३	३।१४।२०।१८
	३ बु	३।१६।३७।३३	३।१८।५५।५२	३।२१।१४।११	३।२३।३२।३०	३।२५।५१।५३	३।२८।११।१६
	४ गु	४। ०।३०।३८	४। २।५१। ७	४। ५।११।३६	४। ७।३२। ६	४। ९।५३।१५	४।१२।१४।२४
	५ शु	४।१४।३५।३४	४।१६।५७।२३	४।१९।१९।१२	४।२१।४१। २	४।२४। ३।३२	४।२६।२६। २
	६ श	४।२८।४८।३१	५। १।११।३०	५। ३।३४।२९	५। ५।५७।२७	५। ८।२०।३४	५।१०।४३।४१
	८ र	५।१३। ६।४९	५।१५।३०। ५	५।१७।५३।२१	५।२०।१६।३७	५।२२।४०। २	५।२५। ३।२७
	९ चं	५।२७।२६।५२	५।२९।५०। ३	६। २।१३।१४	६। ४।३६।२६	६। ६।५९। ८	६। ९।२२।५०
	१० मं	६।११।४४।३१	६।१४। ६।४४	६।१६।२८।५७	६।१८।५१।१०	६।२१।१२।५४	६।२३।३४।३८
	११ बु	६।२५।५६।२२	६।२८।१७।२२	७। ०।३८।२२	७। २।५९।२२	७। ५।१९।२४	७। ७।३९।२६
	१२ गु	७। ९।५९।२९	७।१२।१८।३४	७।१४ ३७।३९	७।१६।५६।४४	७।१९।१५।१२	७।२१।३३।४०
	१३ शु	७।२३।५१। ८	७।२६। ८। ८	७।२८।२५। ८	८। ०।४२। ७	८। २।५७।४९	८। ५।१३।३१
	१४ श	८। ७।२९।१४	८। ९।४३।४४	८।११।५८।१४	८।१४।१२।४५	८।१६।२५।५८	८।१८।३९।११
	१५ र	८।२०।५२।२४	८।२३। ४।१४	८।२५।१६। ४	८।२७।२७।५३	८।२९।३८।३६	९। १।४९।१९
श्रावण कृष्णपक्षः	१ चं	९। ४। ०। ३	९। ६। ९।३०	९। ८।१८।५७	९।१०।२८।२३	९।१२।३६।२३	९।१४।४४।२३
	२ मं	९।१६।५२।२४	९।१८।५९।१२	९।२१। ६। ०	९।२३।१२।४९	९।२५।१८।३५	९।२७।२४।२१
	३ बु	९।२९।३०। ६	१०। १।३४।५०	१०। ३।३९।३४	१०। ५।४४।१७	१०। ७।४७।५८	१०। ९।५१।३९
	४ गु	१०।११।५५।२१	१०।१३।५८। ३	[illegible]। ०।४५	१०।१८। ३।२८	१०।२०। ५।३२	१०।२२। ७।३६
	५ शु	१०।२४। ९।४१	१०।२६।११। ७	१०।२८।१२।३३	११। ०।१४। ०	११। २।१४।४८	११। ४।१५।३६
	६ श	११। ६।१६।२५	११। ८।१६।५१	११।१०।१७।१७	११।१२।१७।४४	११।१४।१८। १	११।१६।१८।१८
	७ र	११।१८।१८।३५	११।२०।१८।३९	११।२२।१८।४३	११।२४।१८।४८	११।२६।१८।५०	११।२८।१८।५२
	८ चं	०। ०।१८।५५	०। २।१९।३६	०। ४।२०।१७	०। ६।२०।५८	०। ८।२२। ६	०।१०।२३।१४
	९ मं	०।१२।२४।२२	०।१४।२५।५७	०।१६।२७।३२	०।१८।२९। ८	०।२०।३१।११	०।२२।३३।१४
	१० बु	०।२४।३५।१७	०।२६।३८।१०	०।२८।४१। ३	१। ०।४३।५५	१। २।४७।४९	१। ४।५१।४३
	११ गु	१। ६।५५।३६	१। ९। ०।३१	१।११। ५।२६	१।१३।१०।२१	१।१५।१६।१८	१।१७।२२।१५
	१२ शु	१।१९।२८।११	१।२१।३५।१६	१।२३।४२।२१	१।२५।४९।२६	१।२७।५७।४४	२। ०। ६। २
	१३ श	२। २।१४।२१	२। ४।२३।५६	२। ६।३३।३१	२। ८।४३। ६	२।१०।५४। १	२।१३। ४।५६
	१४ र	२।१५।१५।५१	२।१७।२८। २	२।१९।४०।१३	२।२१।५२।२३	२।२४। ५।५०	२।२६।१९।१७
	३० चं	२।२८।३२।४४	३। ०।४७ २८	३। ३। २।१२	३। ५।१६।५५	३। ७।३२।५६	३। ९।४८।५७
श्रावणशुक्लपक्षः	१ मं	३।१२। ४।५७	३।१४।२२।१०	३।१६।३९।२३	३।१८।५६।३६	३।२१।१४।५०	३।२३।३३। ४
	२	३।२५।५१।१९	३।२८।१०।३५	४। ०।२९।५१	४। २।४९। ६	४। ५। ९।२३	४। ७।२९।४०
	३ गु	४। ९।४९।५८	४।१२।११। ९	४।१४।३२।२०	४।१६।५३।३१	४। ९।१५।१६	४ २०।३७। १
	४ शु	४।२३।५८।४७	४।२६।२१। ४	४।२८।४३।२१	५। १। ५।३७	५। ३।२८।३५	५। ५।५१।३३
	५ श	५। ८।१४।३०	५।१०।३७।४६	५।१३। १। २	५।१५।२४।१७	५।१७।४७।३२	५।२०।१०।४५
	६ र	५।२२।३४। २	५।२४।५७।१७	५।२७।२०।३२	५।२९।४३।४७	६। २। ७। १	६। ४।३०।१५
	७ चं	६। ६।५३।३०	६। ९।१६।२२	६।११।३९।१४	६।१४। २। ७	६।१६।२४।२४	६।१८।४६।४१
	८ मं	६।२१। ८।५९	६।२३।३०।४१	६।२५।५२।२३	६।२८।१४। ५	७। ०।३५।१२	७। २।५६।१९
	१० बु	७। ५।१७।२६	७। ७।३७।३६	७। ९।५७।४६	७।१२।१७।५६	७।१४।३७। ८	७।१६।५६।२०
	११ गु	७।१९।१५।३२	७।२१।३३।४५	७।२३।५१।५८	७।२६।१०।१२	७।२८।२७।२७	८। ०।४४।४२
	१२ शु	८। ३। १।५७	८। ५।१७।४४	८। ७।३३।३१	८। ९।४९।१८	८।१२। ३।५३	८।१४।१८।२८
	१३ श	८।१६।३३। २	८।१८।४६।२३	८।२०।५९।४४	८।२३।१३। ४	८।२५।२५।१०	८।२७।३७।१६
	१४ र	८।२९।४९।२१	९। २। ०। ६	९।४। १०।५१	९। ६।२१।३७	९। ८।३१। ७	९।१०।४०।३७
	१५ चं	९।१२।५०। ६	९।१४।५८।२०	९।१७। ६।३४	९।१९।१४।४९	९।२१।२१।४८	९।२३।२८।४७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मासः	ति. वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
भाद्रपदकृष्णपक्षः	१ मं	९।२५।३५।४६	९।२७।४१।३७	९।२९।४७।२८	१०। १।५३।२०	१०। ३।५८।१०	१०। ६। ३। ०
	२ बु	१०। ८। ७।५०	१०।१०।११।३९	१०।१२।१५।२८	१०।१४।१९।१६	१०।१६।२२। ४	१०।१८।२४।५२
	३ गु	१०।२०।२७।३९	१०।२२।२९।३१	१०।२४।३१।२३	१०।२६।३३।१६	१०।२८।३४।५६	११। ०।३६।३६
	४ शु	११। २।३८।१७	११। ४।३९।१५	११। ६।४०।१३	११। ८।४१।१२	११।१०।४१।३९	११।१२।४२। ६
	५ श	११।१४।४२।३२	११।१६।४२।४२	११।१८।४२।५२	११।२०।४३। ३	११।२२।४३।१८	११।२४।४३।३३
	५ र	११।२६।४३।४९	११।२८।४४।१०	०। ०।४४।३१	०। २।४४।५१	०। ४।४५।१६	०। ६।४५।४१
	६ चं	०। ८।४६। ७	०।१०।४६।५७	०।१२।४७।४७	०।१४।४८।३७	०।१६।५०। ६	०।१८।५१।३५
	७ मं	०।२०।५३। ५	०।२२।५५।१३	०।२४।५७।१८	०।२६।५९।२९	०।२९। ११६	१। १। ५। ३
	८ बु	१। ३। ७।५०	१। ५।११।३५	१। ७।१५।२०	१। ९।१९। ६	१।११।२३।५४	१।१३।२८।४२
	९ गु	१।१५।३३।३१	१।१७।३९।२२	१।१९।४५।१३	१।२१।५१। ४	१।२३।५७।५८	१।२६। ४।५२
	१० शु	१।२८।११।४७	२। ०।१९।५८	२। २।२८। ९	२। ४।३६।२०	२। ६।४५।४८	२। ८।५५।१६
	११ श	२।११। ४।४३	२।१३।१५।२७	२।१५।२६।११	२।१७।३६।५६	२।१९।४८।५८	२।२२। १। ०
	१२ र	२।२४।१३। १	२।२६।२६।२२	२।२८।३९।४३	३। ०।५३। ५	३। ३। ७।४१	३। ५।२२।१७
	१३ चं	३। ७।३६।५२	३। ९।५२।४२	३।१२। ८।३२	३।१४।२४।२१	३।१६।४१।२६	३।१८।५८।३१
	१४ मं	३।२१।१५।३५	३।२३।३३।४७	३।२५।५१।५९	३।२८।१०।१२	४। ०।२९।२२	४। २।४८।३२
	३० बु	४। ५। ७।४२	४। ७।२७।४९	४। ९।४७।५६	४।१२। ८। २	४।१४।२९। ६	४।१६।५०।१०
भाद्रपदशुक्लपक्षः	१ गु	४।१९।११।१३	४।२१।३३। ०	४।२३।५४।४७	४।२६।१६।३४	४।२८।३८।५०	५। १। १। ६
	३ शु	५। ३।२३।२१	५। ५।४६। ५	५। ८। ८।४९	५।१०।३१।३४	५।१२।५४।४७	५।१५।१८। ०
	४ श	५।१७।४१।१२	५।२०। ४।३७	५।२२।२८। २	५।२४।५१।२६	५।२७।१४।४२	५।२९।३७।५८
	५ र	६। २। १।१३	६। ४।२४।१९	६। ६।४७।२५	६। ९।१०।३२	६।११।३३।२९	६।१३।५६।२६
	६ चं	६।१६।१९।२३	६।१८।४१।५१	६।२१। ४।१९	६।२३।२६।४६	६।२५।४८।३१	६।२८।१०।१६
	७ मं	७। ०।३२। २	७। २।५३। ५	७। ५।१४। ८	७। ७।३५।१२	७। ९.५५।३४	७।१२।१५।५६
	८ बु	७।१४।३६।१७	७।१६।५५.३९	७।१९।१५। १	७।२१।३४।२२	७।२३।५२।३८	७।२६।१०।५४
	९ गु	७।२८।२९।१०	८।० १४६।२०	८। ३। ३।३०	८। ५।२०।४०	८। ७।३६।४४	८। ९।५२।४८
	१० शु	८।१२। ८।५२	८।१४।२३।४०	८।१६।३८।२८	८।१८।५३।१७	८।२१। ६।४७	८।२३।२०।१७
	११ श	८।२५।३३।४८	८।२७।४६। ०	८।२९।५८।१२	९। २।१०।२५	९। ४।२१।२०	९।६। ३२।१५
	१२ र	९। ८।४३। ९	९।१०।५२।४५	९।१३। २।२१	९।१५।११।५८	९।१७।२०।२१	९।१९।२८।४४
	१३ चं	९।२१।३७। ७	९।२३।४४।१६	९।२५।५१.२५	९।२७।५८।३४	१०। ०। ४।३०	१०। २।१०।२६
	१४ मं	१०। ४।१६।२१	१०। ६।२१।१४	१०। ८।२६। ७	१०।१०।३०।५९	१०।१२।३४।५६	१०।१४।३८।५३
	१५ बु	१०।१६।४२।५०	१०।१८।४५।५२	१०।२०।४८।५४	१०।२२।५१।५५	१०।२४।५४। १	१०।२६।५६। ७
आश्विनकृष्णपक्षः	१ गु	१०।२८।५८।१२	११। ०।५९।३८	११। ३। १। ४	११। ५। २।३०	११। ७। ३।३२	११। ९। ४।३४
	२ शु	११।११। ५।३७	११।१३। ६।१४	११।१५। ६।५१	११।१७। ७।२८	११।१९। ७।४१	११।२१। ७।५४
	३ श	११।२३। ८। ७	११।२५। ८।१२	११।२७। ८।१७	११।२९। ८।२२	०। १। ८।४१	०। ३। ९। ०
	४ र	०। ५। ९।११	०। ७। ९।५२	०। ९।१०।२५	०।११।१०।५८	०।१३।११।४५	०।१५।१२।३२
	५ चं	०।१७।१३।१८	०।१९।१४।३७	०।२१।१५।५६	०।२३।१७।१६	०।२५।१९।२०	०।२७।२१।२४
	६ मं	०।२९।२३।२७	१। १।२६।१५	१। ३।२९। ३	१। ५।३१।५०	१। ७।३५।१३	१। ९।३८।५६
	७ बु	१।११।४२।२८	१।१३।४७। ६	१।१५।५१।४४	१।१७।५६।२१	१।२०। २। ६	१।२२। ७।५१
	८ गु	१।२४।१३।३७	१।२६।२०।३०	१।२८।२७।२३	२। ०।३४।१७	२। २।४२।१८	२। ४।५०।१९
	९ शु	२। ६।५८।२०	२। ९। ७।३८	२।११.१६।५६	२।१३।२६।१५	२।१५।३६।५१	२।१७।४७।२७
	१० श	२।१९।५८। ३	२।२२। ९।५६	२।२४।२१।४८	२।२६।३३।४३	२।२८।४६।५५	३। १। ०। ७
	११ र	३। ३।१३।१८	३। ५।२७।४७	३। ७।४२।१६	३। ९।५६।४५	३।१२।१२।२७	३।१४।२८। ९
	१२ चं	३।१६।४३।५०	३।१९। ०।४४	३।२१।१७।३८	३।२३।३४।३३	३।२५।५२।४१	३।२८।१०।४९
	१३ मं	४। ०।२८।५६	४। २।४८। २	४। ५। ७। ८	४। ७। २६।१४	४। ९।४६।१३	४।१२। ६।१२
	१४ बु	४।१४।२६।१०	४।१६।४७। १	४।१९। ७।५२	४।२१।२८।४४	४।२३।५०।२९	४।२६।१२।१४
	३० गु	४।२८।३३.५८	५। ०।५६।१८	५। ३।१८।३८	५। ५।४०।५७	५। ८। ३।३८	५।१०।२६।१९

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ रूपगढ (शतद्र) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०-१० घटीषु दैनिकश्चंद्रः स्पष्टः।

मासः	ति. वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
आश्विनशुक्लपक्ष	१ शु	५।१२।४९। १	५।१५।१२। ४	५।१७।३५। ७	५।१९।५८। ९	५।२२।२१।३४	५।२४।४४।५९
	२ श	५।२७। ८।२३	५।२९।३१।४९	६। १।५५।१५	६। ४।१८।४०	६। ६।४१।४७	६। ९। ४।५४
	३ र	६।११।२८। २	६।१३।५०।५२	६।१६।१३।४२	६।१८।३६।३२	६।२०।५९। ४	६।२३।२१।३६
	४ चं	६।२५।४४। ७	६।२८। ६। ६	७। ०।२८। ५	७। २।५०। ४	७। ५।११।१३	७। ७।३३।२२
	५ मं	७। ९।५३।३२	७।१२।१३।५१	७।१४।३४।१०	७।१६।५४।३०	७।१९।१४। ०	७।२१।३३।३०
	७ बु	७।२३।५३। ०	७।२६।११।२६	७।२८।२९।५२	८। ०।४८।१९	८। ३। ५।३६	८। ५।२२।५३
	८ गु	८। ७।४०।१०	८। ९।५६।१८	८।१२।१२।२६	८।१४।२८।३३	८।१६।४३।३१	८।१८।५८।३१
	९ शु	८।२१।१३।२७	८।२३।२७। ६	८।२५।४०।४५	८।२७।५४।२३	९। ०। ६।४४	९। २।१९। ५
	१० श	९। ४।३१।२६	९। ६।४२।३०	९। ८।५३।३४	९।११। ४।३७	९।१३।१४।२४	९।१५।२४।११
	११ र	९।१७।३३।५७	९।१९।४२।२३	९।२१।५०।४९	९।२३।५९।१६	९।२६। ६।३३	९।२८।१३।५०
	१२ चं	१०। ०।२१। ८	१०। २।२७।१७	१०। ४।३३।२६	१०। ६।३९।३४	१०। ८।४४।३४	१०।१०।४९।३४
	१३ मं	१०।१२।५४।३४	१०।१४।५८।३०	१०।१७। २।२६	१०।१९। ६।२३	१०।२१। ९।३०	१०।२३।१२।३७
	१४ बु	१०।२५।१५।४५	१०।२७।१८। ३	१।२९।२०।२१	११। १।२२।३९	११। ३।२४। ८	११। ५।२५।३७
	१५ गु	११। ७।२७। ७	११। ९।२८। ४	११।११।२९। १	११।१३।२९।५७	११।१५।३०।३७	११।१७।३१।१७
	१५ शु	११।१९।३१।५६	११।२१।३२।१९	११।२३।३२।४२	११।२५।३३। ५	११।२७।३३।११	११।२९।३३।१७
कार्त्तिककृष्णपक्ष	१ श	०। १।३३।२२	०। ३।३३।३१	०। ५।३३।४०	०। ७।३३।४८	०। ९।३४।१९	०।११।३४।५०
	२ र	०।१३।३५।२१	०।१५।३६।१३	०।१७।३७। ५	०।१९।३७।५८	०।२१।३९।१२	०।२३।४०।२६
	३ चं	०।२५।४१।४०	०।२७।४३।३०	०।२९।४५।२०	१। १।४७।१०	१। ३।५०।५४	१। ५।५२।३८
	४ मं	१। ७।५५।२३	१। ९।५९। १	१।१२। २।३७	१।१४। ६।१७	१।१६।१०।४९	१।१८।१५।२१
	५ बु	१।२०।१९।५२	१।२२।२५।२२	१।२४।३०।५२	१।२६।३६।२३	१।२८।४३। ७	२। ०।४९।५१
	६ गु	२। २।५६।३४	२। ५। ४।३०	२। ७।१२।२६	२। ९।२०।२३	२।११।२९।३२	२।१३।३८।४१
	७ शु	२।१५।४७।५१	२।१७।५८।१९	२।२०। ८।४७	२।२२।१९।१४	२।२४।३१।५९	२।२६।४१।४०
	८ श	२।२८।५४।३०	३। १। ७।३३	३। ३।२०।३६	३। ५।३३।३८	३। ७।४७।५८	३।१०। २।१८
	९ र	३।१२।१६।३८	३।१४।३२।१६	३।१ ।४७।५४	३।१९। ३।३२	३।२१।२०।१६	३।२३।३७। ०
	१० चं	३।२५।५३।४४	३।२८।११।३७	४। ०।२९।३०	४। २।४७।२२	४। ५। ६।२३	४। ७।२५।२४
	११ मं	४। ९।४४।२४	४।१२। ४।२८	४।१४।२४।३२	४।१६।४४।३५	४।१९। ५।२२	४।२१।२६। ९
	१२ बु	४।२३।४६।५७	४।२६। ८।२८	४।२८।२९।५९	५। ०।५१।३१	५। ३।१३।४६	५। ५।३६। १
	१३ गु	५। ७।५८।१५	५।१०।२१। २	५।१२।४३।४९	५।१५। ६।३६	५।१७।२९।३६	२।१९।५२।३६
	३० शु	५।२२।१५।३७	५।२४।३८।५१	५।२७। २। ५	५।२९।२५।१८	६। १।४८।४५	६। ४।१२।१२
कार्त्तिकशुक्लपक्ष	१ श	६। ६।३५।३९	६। ८।५८।५७	६।११।२२।१५	६।१३।४५।३३	६।१६। ८।२५	६।१८।३१।१७
	२ र	६।२०।५४।१०	६।२३।१६।३७	६।२५।३९। ४	६।२८। १।३१	७। ०।२३।३३	७। २।४५।३५
	३ चं	७। ५। ७।३६	७। ७।२८।५७	७। ९।५०।१८	७।१२।११।४०	७।१४।३२। ६	७।१६।५२।३२
	४ मं	७।१९।१२।५७	७।२१।३२।२७	७।२३।५१।५७	७।२६।११।२६	७।२८।३०।२०	८। ०।४९।१४
	५ बु	८। ३। ७। ७	८। ५।२४।३६	८। ७।४२। ५	८। ९।५९।३३	८।१२।१५।५०	८।१४।३२। ७
	६ गु	८।१६।४८।२३	८।१९। ३।२५	८।२१।१८।२७	८।२३।३३।३०	८।२५।४७।१८	८।२८। १। ६
	७ शु	९। ०।१४।५५	९। २।२७।२५	९। ४।३९।५५	९। ६।५२।२५	९। ९। ३।३७	९।११।१४।४९
	८ श	९।१३।२६। १	९।१५।३५।५६	९।१७।४५।५१	९।१९।५५।४५	९।२२। ४।२२	९।२४।१२।५९
	९ र	९।२६।२१।३६	९।२८।२८।५७	१०। ०।३६।१८	१०। २।४३।३८	१०। ४।४९।५३	१०। ६।५६। ८
	१० चं	१०। ९। २।२४	१०।११। ७।३४	१०।१३।१२।४४	१०।१५।१७।५४	१०।१७।२१।५९	१०।१९।२६। ४
	११ मं	१०।२१।३०।१०	१०।२३।३३।१५	१०।२५।३६।२०	१०।२७।३९।२५	१०।२९।४१।४९	११। १।४४।१३
	१२ बु	११। ३।४६।३६	११। ५।४८।१८	११। ७।५०। ०	११। ९।५१।४३	११।११।५२।४५	११।१३।५३।४७
	१३ गु	११।१५।५४।४८	११।१७।५५।२१	११।१९।५५।५४	११।२१।५६।२७	११।२३।५६।५१	११।२५।५७।१५
	१४ शु	११।२७।५७।३९	११।२९।५७।५४	०। १।५८। ९	०। ३।५८।२५	०। ५।५८।३२	०। ७।५८।३९
	१५ श	०। ९।५८।४५	०।११।५९। ५	०।१३।५९।२५	०।१५।५९।४६	०।१८। ०।३६	०।२०। १।२६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ रूपगढ (शतद्रू) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०-१० घटीषु दैनिकश्चन्द्रः स्पष्टः ।

मासः	ति. वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
मार्गशीर्षकृष्णपक्षः	१ र	०।२२। २।१५	०।२४। ३।३४	०।२६। ४।५३	०।२८। ६।१२	१। ०। ८। ०	१। २। ९।४९
	२ च	१। ४।११।३७	१। ६।१४।१०	१। ८।१६।४३	१।१०।१९।१५	१।१२।२२।४५	१।१४।२६।१४
	३ मं	१।१६।२९।४४	१।१८।३४।११	१।२०।३८।३८	१।२२।४३। ५	१।२४।४८।२९	१।२६।५३।५३
	४ बु	१।२८।५९।१७	२। १। ५।५१	२। ३।१२।२५	२। ५।१९। ०	२। ७।२६।४९	२। ९।३४।३७
	५ गु	२।११।४२।२५	२।१३।५१।२८	२।१६। ०।३१	२।१८। ९।३४	२।२०।१९।५१	२।२२।३०। ९
	६ शु	२।२४।४०।२६	२।२६।५२। ३	२।२९। ३।४०	३। १।१५।१७	३। ३।२८।१०	३। ५।४१। ४
	७ श	३। ७।५३।५८	३।१०। ८। ९	३।१२।२२।२०	३।१४।३६।३१	३।१६।५१।५९	३।१९। ७।२७
	८ र	३।२१।२२।५५	३।२३।३९।३८	३।२५।५६।२२	३।२८।१३। ६	४। ०।३०।५२	४। २।४८।३८
	९ चं	४। ५। ६।२५	४। ७।२५।१४	४। ९।४४। ३	४।१२। २।५२	४।१४।२२।४३	४।१६।४२।३४
	१० मं	४।१९। २।२६	४।२१।२३।१५	४।२३।४४। ४	४।२६। ४।५४	४।२८।२६।४२	५। ०।४७।५०
	११ बु	५। ३। ९।१७	५। ५।३१।२३	५। ७।५३।२८	५।१०।१५।३४	५।१२।३८।१८	५।१५। १। २
	१२ गु	५।१७।२३।४५	५।१९।४६।५३	५।२२।१०। १	५।२४।३३। ९	५।२६।५६।२१	५।२९।१९।३३
	१३ शु	६। १।४२।४५	६। ४। ६। १	६। ६।२९।१७	६। ८।५२।३३	६।११।१५।५३	६।१३।३९।१४
	१४ श	६।१६। २।३५	६।१८।२५।३७	६।२०।४८।४०	६।२३।११।४२	६।२५।३४।१२	६।२७।५६।४३
	३० र	७। ०।१९।१३	७। २।४१।१२	७। ५। ३।१०	७। ७।२५। ८	७। ९।४६।३५	७।१२। ८। १
मार्गशीर्षशुक्लपक्षः	१ चं	७।१४।२९।२८	७।१६।४९।४६	७।१९।१०। ४	७।२१।३०।२३	७।२३।५०।२१	७।२६।१०।१८
	२ मं	७।२८।३०।१५	८। ०।४८।५१	८। ३। ७।२७	८। ५।२६। ३	८। ७।४३।३८	८।१०। १।१३
	३ बु	८।१२।१८।४७	८।१४।३५।१५	८।१६।५१।४३	८।१९। ८।११	८।२१।२३।२२	८।२३।३८।३३
	५ गु	८।२५।५३।४४	८।२८। ७।३९	९। ०।२१।३३	९। २।३५।२७	९। ४।४८। ५	९। ७। ०।४२
	६ शु	९। ९।१३।२०	९।११।२४।४०	९।१३।३६। ०	९।१५।४७।११	९।१७।५७।२३	९।२०। ७।२७
	७ श	९।२२।१७।३०	९।२४।२६।१७	९।२६।३५। ४	९।२८।४३।५१	१०। ०।५१।२२	१०। २।५८।५३
	८ र	१०। ५। ६।२३	१०। ७।१२।४२	१०। ९।१९। ०	१०।११।२५।१९	१०।१३।३०।३६	१०।१५।३५।५३
	८ चं	१०।१७।४१।१०	१०।१९।४५।२५	१०।२१।४९।४०	१०।२३।५३।५५	१०।२५।५७। ९	१०।२८। ०।२३
	९ मं	११। ०। ३।३७	११। २। ५।५७	११। ४। ८।१६	११। ६।१०।३६	११। ८।१२।२२	११।१०।१४। ८
	१० बु	११।१२।१५।५३	११।१४।१७। ४	११।१६।१८।१५	११।१८।१९।२८	११।२०।२०। ६	११।२२।२०।४४
	११ गु	११।२४।२१।२१	११।२६।२१।३९	११।२८।२१।५७	०। ०।२२।१५	०। २।२२।३०	०। ४।२२।४४
	१२ शु	०। ६।२२।५८	०। ८।२३।१७	०।१०।२३।३६	०।१२।२३।५५	०।१४।२४।११	०।१६।२४।२७
	१३ श	०।१८।२४।४२	०।२०।२५।२१	०।२२।२६। १	०।२४।२६।४०	०।२६।२७।५४	०।२८।२९। ९
	१४ र	१। ०।३०।२३	१। २।३३।१२	१। ४।३४। २	१। ६।३५।५२	१। ८।३८।१७	१।१०।४०।४२
	१५ चं	१।१२।४३। ६	१।१४।४६।२७	१।१६।४९।४८	१।१८।५३। ८	१।२०।५७।२९	१।२३। १।५१
पौषकृष्णपक्षः	१ मं	१।२५। ६।१३	१।२७।११।३५	१।२९।१६।५७	२। १।२२।२०	२। ३।२८।४३	२। ५।३५। ६
	२ बु	२। ७।४१।२९	२। ९।४९। ८	२।११।५६।४७	२।१४। ४।२५	२।१६।१३।२०	२।१८।२२।१५
	३ गु	२।२०।३१।१०	२।२२।४१।२१	२।२४।५१।३२	२।२७। १।४३	२।२९।१३।१०	३। १।२४।३७
	४ शु	३। ३।३६। ५	३। ५।४८।५२	३। ८। १।३९	३।१०।१४।२६	३।१२।२८।२८	३।१४।४२।३०
	५ श	३।१६।५६।३३	३।१९।११।५०	३।२१।२७। ८	३।२३।४२।२६	३।२५।५८।५९	३।२८।१५।३२
	६ र	४। ०।३२। ५	४। २।४९।४६	४। ५। ७।२८	४। ७।२५।१०	४। ९।४३।५२	४।१२। २।३४
	७ चं	४।१४।२१।१६	४।१६।४०।५९	४।१९। ०।४२	४।२१।२०।२६	४।२३।४१।१०	४।२६। १।५४
	८ मं	४।२८।२२।३९	५। ०।४४। ९	५। ३। ५।३९	५। ५।२७। ९	५। ७।४९।१०	५।१०।११।११
	९ बु	५।१२।३३।१३	५।१४।५५।४६	५।१७।१८।१९	५।१९।४०।५३	५।२२। ३।५८	५।२४।२७। ३
	१० गु	५।२६।५०। ९	५।२९।१३।३०	६। १।३६।५२	६। ४। ०।१४	६। ६।२३।३०	६। ८।४६।४६
	११ शु	६।११।१०। ३	६।१३।३३।१४	६।१५।५६।२५	६।१८।१९।३६	६।२०।४२।४३	६।२३। ५।४९
	१३ श	६।२५।२८।५५	६।२७।५१।४४	७। ०।१४।३३	७। २।३७।२१	७। ४।५९।१५	७। ७।२१।१०
	१४ र	७। ९।४३। ४	७।१२। ४।२५	७।१४।२५।४५	७।१६।४७। ५	७।१९। ७।५२	७।२१।२८।३९
	३० चं	७।२३।४९।२५	७।२६। ९।११	७।२८।२८।५७	८। ०।४८।४३	८। ३। ७।२६	८। ५।२६। ९

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २००६ रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०-१० घटीपु दैनिकश्चंद्रः स्पष्टः

मासः	ति. वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
पौषशुक्लपक्षः	१ मं	८। ७।४४।५२	८।१०। २।३२	८।१२।२०।१२	८।१४।३७।५१	८।१६।५४।२८	८।१९।११। ५
	२ बु	८।२१।२७।४१	८।२३।४३। १	८।२५।५८।२१	८।२८।१३।४१	९। ०।२७।४५	९। २।४१।४८
	३ गु	९। ४।५५।५१	९। ७। ८।३७	९। ९।२१।२४	९।११।३४।११	९।१३।४५।४१	९।१५।५७।११
	४ शु	९।१८। ८।४०	९।२०।१८।५०	९।२२।२९। ०	९।२४।३९।१०	९।२६।४८। ६	९ ।२८।५७।११
	५ श	१०। १। ५।५६	१०। ३।१३।३७	१०। ५।२१।१८	१०। ७।२८।५८	१०। ९।३५।२५	१०।११।४१।५२
	६ र	१०।१३।४८।१८	१०।१५।५३।३६	१०।१७।५८।५४	१०।२०। ४।११	१०।२२। ८।३३	१०।२४।१२।५४
	७ चं	१०।२६।१७।१५	१०।२८।२०।४०	११। ०।२४। ५	११। २।२७।२९	१०। ४।२९।५७	१०। ६।३२।२५
	८ मं	११। ८।३४।५३	११।१०।३६।३८	११।१२।३८।२२	११।१४।४०। ६	११।१६।४१।२२	११।१८।४२।३८
	९ बु	११।२०।४३।५३	११।२२।४४।४०	११।२४।४५।२७	११।२६।४६।१४	११।२८।४६।३३	०। ०।४६।५२
	१० गु	०। २।४७।१०	०। ४।४७।१७	०। ६।४७।२४	०। ८।४७।३०	०।१०।४७।४६	०।१२।४८। २
	११ शु	०।१४।४८।१८	०।१६।४८।४३	०।१८।४९। ८	०।२०।४९।३४	०।२२।५०। ९	०।२४।५०।४४
	११ श	०।२६।५१।२०	०।२८।५२।२४	१। ०।५३।२९	१। २।५४।३४	१। ४।५६।२०	१। ६।५८। ७
	१२ र	१। ८।५९।५४	१।११। २।२२	१।१३। ४।५०	१।१५। ७।१८	१।१७।१०।२७	१।१९।१३।३७
	१३ चं	१।२१।१६।४७	१।२३।२०।५८	१।२५।२५। ९	१।२७।२९।२१	१।२९।३४।३८	२। १।३९।५५
	१४ मं	२। ३।४५।११	२। ५।५१।३३	२। ७।५७।५५	२।१०। ४।१७	२।१२।११।४५	२।१४।१९।१२
	१५ बु	२।१६।२६।४०	२।१८।३५।२४	२।२०।४४। ८	२।२२।५२।५३	२।२५। २।५५	२।२७।१२।५७
माघकृष्णपक्षः	१ गु	२।२९।२३। ०	३। १।३४।१९	३। ३।४५।३९	३। ५।५६।५९	३। ८। ९।३६	३।१०।२२।१४
	२ शु	३।१२।३४।५२	३।१४।४८।४८	३।१७। २।४४	३।१९।१६।३९	३।२१।३१।४८	३।२३।४६।५७
	३ श	३।२६। २। ७	३।२८।१८।३०	४। ०।३४।५३	४। २।५१।१७	४। ५। ८।५३	४। ७।२६।३०
	४ र	४। ९।४४। ७	४।१२। २।४६	४।१४।२१।२५	४।१६।४०। ५	४।१८।५९।४०	४।२१।१९।१५
	५ चं	४।२३।३८।५०	४।२५।५९।२०	४।२८।१९।५०	५। ०।४०।२१	५। ३। १।४७	५। ५।२३।१३
	७ मं	५। ७।४४।४०	५।१०। ६।४५	५।१२।२८।५१	५।१४।५०।५७	५।१७।१३।२७	५।१९।३५।५७
	८ बु	५।२१।५८।२७	५।२४।२१।२१	५।२६।४४।१६	५।२९। ७।११	६। १।३०।२९	६। ३।५३।४८
	९ गु	६। ६।१७। ७	६। ८।४०।३३	६।११। ४। ०	६।१३।२७।२७	६।१५।५०।४०	६।१८।१३।५३
	१० शु	६।२०।३७। ६	६।२३। ०। ५	६।२५।२३। ४	६।२७।४६। ३	७। ०। ८।४८	७। २।३१।३३
	११ श	७। ४।५४।१८	७। ७।१६।३०	७। ९।३८।४२	७।१२। ०।५३	७।१४।२२।२०	७।१६।४३।४७
	१२ र	७।१९। ५।१४	७।२१।२५।५७	७।२३।४६।४०	७।२६। ७।२३	७।२८।२७।२२	८। ०।४७।२१
	१३ चं	८। ३। ७।२०	८। ५।२६।१४	८। ७।४५। ८	८।१०। ४। २	८।१२।२१।४८	८।१४।३९।३४
	१४ मं	८।१६।५७।१९	८।१९।१३।५७	८।२१।३०।३५	८।२३।४७।१२	८।२६।१२।४१	८।२८।१८।१०
	३० बु	९। ०।३३।३९	९। २।४७।५२	९। ५। २। ५	९। ७।१६।१७	९। ९।२९।१२	९।११।४२। ७
माघशुक्लपक्षः	१ गु	९।१३।५५। २	९।१६। ६।४०	९।१८।१८।१८	९।२०।२९।५५	९।२२।४०।१५	९।२४।५०।३५
	२ शु	९।२७। ०।५४	९।२९। ९।५६	१०। १।१८।५९	१०। ३।२८। १	१०। ५।३५।५०	१०। ७।४३।४०
	३ श	१०। ९।५१।२९	१०।११।५८। ६	१०।१४। ४।४२	१०।१६।११।१९	१०।१८।१६।४३	१०।२०।२२। ६
	४ र	१०।२२।२७।२९	१०।२४।३१।५५	१०।२६।३६।२०	१०।२८।४०।४५	११। ०।४४।१८	११। २।४७।५०
	५ चं	११। ४।५१।२२	११। ६।५४। १	११। ८।५६।४०	११।१०।५९।१९	११।१३। १। ६	११।१५। २।५३
	६ मं	११।१७। ४।३९	११।१९। ५।५०	११।२१। ७। १	११।२३। ८।१२	११।२५। ९। २	११।२७। ९।५१
	७ बु	११।२९।१०।४१	०। १।११।१०	०। ३।११।३९	०। ५।१२। ८	०। ७।१२।१६	०। ९।१२।२४
	८ गु	०।११।१२।३२	०।१३।१२।३८	०।१५।१२।४४	०।१७।१२।५१	०।१९।१३।१५	०।२१।१३।३९
	९ शु	०।२३।१४। ३	०।२५।१४।४५	०।२७।१५।२७	०।२९।१६। ९	१। १।१७। ९	१। ३।१८।१०
	१० श	१। ५।१९।१०	१। ७।२०।४३	१। ९।२२।१६	१।११।२३।४९	१।१३।२६।११	१।१५।२८।३४
	११ र	१।१७।३०।५७	१।१९।३४। ९	१।२१।३७।२२	१।२३।४०।३५	१।२५।४४।३७	१।२७।४८।३९
	१२ चं	१।२९।५२।४२	२। १।५७।४७	२। ४। २।५३	२। ६। ७।५९	२। ८।१४।१४	२।१०।२०।२९
	१३ मं	२।१२।२६।४५	२।१४।३४। ९	२।१६।४१।३४	२।१८।४८।५९	२।२०।५७।३३	२।२३। ६। ७
	१४ बु	२।२५।१४।४१	२।२७।२४।३५	२।२९।३४।२८	३। १।४४।२२	३। ३।५५।३३	३। ६। ६।४४
	१५ गु	३। ८।१७।५५	३।१०।३०।२३	३।१२।४२।५१	३।१४।५५।२०	३।१७। ९। ५	३।१९।२२।५१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मासः	ति.	वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
फाल्गुन कृष्ण पक्षः	१	शु	३।२१।३६।३७	३।२३।५१।४४	३।२६। ६।५१	३।२८।२१।५७	४। ०।३८।१२	४। २।५४।२९
	२	श	४। ५।१०।४१	४। ७।२८। ४	४। ९।४५।२८	४।१२। २।५१	४।१४।२१।२३	४।१६।३९।५५
	३	र	४।१८।५८।२७	४।२१।१८। ३	४।२३।३७।४०	४।२५।५७।१६	४।२८।१७।४१	५। ०।३८। ६
	४	चं	५। २।५८।३१	५। ५।१९।४५	५। ७।४०।५८	५।१०। २।१२	५।१२।२४।१४	५।१४।४६।१७
	५	मं	५।१७। ८।१९	५।१९।३०।५४	५।२१।५३।२९	५।२४।१६। ५	५।२६।३८।५७	५।२९। १।४९
	६	बु	६। १।२४।४१	६। ३।४७।५०	६। ६।१०।५८	६। ८।३४। ७	६।१०।५७।३३	६।१३।२०।५९
	७	गु	६।१५।४४।२५	६।१८। ७।४५	६।२०।३१। ५	६।२२।५४।२५	६।२५।१७।२८	६।२७।४०।३२
	८	शु	७। ०। ३।३५	७। २।२६।१२	७। ४।४८।४९	७। ७।११।२५	७। ९।३३।४५	७।११।५६। ५
	९	श	७।१४।१८।२५	७।१६।४०। ६	७।१९। १।४८	७।२१।२३।२९	७।२३।४४।१६	७।२६। ५। ३
	१०	र	७।२८।२५।५०	८। ०।४५।४३	८। ३। ५।३६	८। ५।२५।२९	८। ७।४४।२८	८।१०। ३।२८
	१२	चं	८।१२।२२।२७	८।१४।४०।२८	८।१६।५८।२९	८।१९।१६।२९	८।२१।३३।१७	८।२३।५०। ५
	१३	मं	८।२६। ६।५२	८।२८।२२।२६	९। ०।३८। ०	९। २।५३।३५	९। ५। ७।५८	९। ७।२२।१९
	१४	बु	९। ९।३६।४१	९।११।४९।३९	९।१४। २।३७	९।१६।१५।३५	९।१८।२७।२६	९।२०।३९।१७
	३०	गु	९।२२।५१। ७	९।२५। २।४०	९।२७।१२।१४	९।२९।२२।४७	१०। १।३३।५३	१०। ३।४०।५८
फाल्गुन शुक्ल पक्षः	१	शु	१०। ५।५०। ४	१०। ७।५७।५८	१०।१०। ५।५३	१०।१२।१३।४७	१०।१४।२०।३३	१०।१६।२७।१९
	२	श	१०।१८।३४। ५	१०।२०।३९।४३	१०।२२।४५।२१	१०।२४।५०।५९	१०।२६।५५।२९	१०।२८।५९।५९
	३	र	११। १। ४।२९	११। ३। ७।५७	११। ५।११।२५	११। ७।१४।५३	११। ९।१७।३७	११।११।२०।२१
	३	चं	११।१३।२३। ५	११।१५।२५। ५	११।१७।२७। ५	११।१९।२९। ५	११।२१।३०।२२	११।२३।३१।३८
	४	मं	११।२५।३२।५५	११।२७।३३।३९	११।२९।३४।२३	०। १।३५। ७	०। ३।३५।३८	०। ५।३६। ९
	५	बु	०। ७।३६।४०	०। ९।३६।५८	०।११।३७।१५	०।१३।३७।३३	०।१५।३७।३८	०।१६।३७।२४
	६	गु	०।१९।३७।४९	०।२१।३८। २	०।२३।३८।१६	०।२५।३८।३०	०।२७।३९। ९	०।२९।३९।४८
	७	शु	१। १।४०।२८	१। ३।४१।३३	१। ५।४२।३७	१। ७।४३।४२	१। ९।४५।१२	१।११।४६।४३
	८	श	१।१३।४८।१३	१।१५।५०।२२	१।१७।५२।३०	१।१९।५४।३९	१।२१।५७।४८	१।२४। ०।५७
	९	र	१।२६। ४। ५	१।२८। ८। ८	२। ०।१२।१२	२। २।१६।१५	२। ४।२१।१३	२। ६।२६।१०
	१०	चं	२। ८।३१। ८	२।१०।३७।११	२।१२।४३।१४	२।१४।४९।१६	२।१६।५६।३३	२।१९। ३।५०
	११	मं	२।२१।११। ६	२।२३।१९।३६	२।२५।२८। ६	२।२७।३६।३६	२।२९।४६।२०	३। १।५६। ४
	१२	बु	३। ४। ५।४८	३। ६।१६।५१	३। ८।२७।५४	३।१०।३८।५६	३।१२।५१।१६	३।१५। ३।३६
	१३	गु	३।१७।१५।५७	३।१९।२९।३५	३।२१।४३।१२	३।२३।५६।५०	३।२६।११।४५	३।२८।२६।४०
	१४	शु	४। ०।४१।३५	४। २।५७।४६	४। ५।१३।५७	४। ७।३०। ९	४। ९।४७।२६	४।१२। ४।४२
	१५	श	४।१४।२२।५९	४।१६।४०।२१	४।१८।५८।४३	४।२१।१७। ५	४।२३।३६।३२	४।२५।५५।५९
चैत्र कृष्ण पक्षः	१	र	४।२८।१५।२६	५। ०।३५।५३	५। २।५६।२१	५। ५।१६।४८	५। ७।३७।५६	५। ९।५९। ४
	२	चं	५।१२।२०।१३	५।१४।४२। ३	५।१७। ३।५२	५।१९।२५।४२	५।२१।४८।१२	५।२४।१०।४२
	३	मं	५।२६।३३।१२	५।२८।५६।१२	६। १।१९।११	६। ३।४२।१०	६। ६। ५।१७	६। ८।२८।२४
	४	बु	६।१०।५१।३२	६।१३।१४।४८	६।१५।३८। ४	६।१८। १।२०	६।२०।२४।४५	६।२२।४८।१०
	६	गु	६।२५।११।३४	६।२७।३४।४५	६।२९।५७।५७	७। २।२१। ८	७। ४।४३।५०	७। ७। ६।३२
	७	शु	७। ९।२९।१३	७।११।५१।२५	७।१४।१३।३८	७।१६।३५।५०	७।१८।५७।३३	७।२१।१९।१६
	८	श	७।२३।४०।५८	७।२६। १।५७	७।२८।२२।५६	८। ०।४३।५५	८। ३। ३।५७	८। ५।२३।५८
	९	र	८। ७।४४। ०	८।१०। ३। ४	८।१२।२२। ८	८।१४।४१।१३	८।१६।५९।२०	८।१९।१७।२७
	१०	चं	८।२१।३५।३३	८।२३।५२।३०	८।२६। ९।२७	८।२८।२६।२४	९। ०।४२। ७	९। २।५७।५०
	११	मं	९। ५।१३।३२	९। ७।२८। ०	९। ९।४२।२८	९।११।५६।५६	९।१४।१०। ९	९।१६।२३।२२
	१२	बु	९।१८।३६।३६	९।२०।४८।३०	९।२३। ०।२५	९।२५।१२।१९	९।२७।२२।५६	९।२९।३३।३३
	१३	गु	१०। १।४४।१०	१०। ३।५३।३०	१०। ६। २।५०	१०। ८।१२।११	१०।१०।२०।१४	१०।१२।२८।१७
	१४	शु	१०।१४।३६।२०	१०।१६।४३। ७	१०।१८।४९।५३	१०।२०।५६।४०	१०।२३। २।२४	१०।२५। ८। ८
	३०	श	१०।२७।१३।५३	१०।२९।१८।३६	११। १।२३।१८	११। ३।२८। ०	११। ५।३३।४०	११। ७।३५।२१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्रीगणेशाम्बागुरुभ्यो नमः ।

प्रणम्य भारतीं देवीं पादाब्जं श्रीगुरोरपि ।
वक्ष्येऽह सुमुहूर्तादीन् लोकानां हितवाञ्छया ॥

सं० २००६ मध्ये विवाहादि-मुहूर्त्ताः ।

अथ समयशुद्धिः ।

शुक्रास्तः—वर्षा आरम्भ से वैशाख शुक्ल १४ बुध वार तक (सौरमानानुसार वैशाख प्रविष्टे २९ तक) भृगु अस्त रहेगा ।

गुर्वस्तः— माघ शुक्ल ४ से फाल्गुन शुक्ल ४ तक (सौर मान से माघ प्र०१०से फा०प्रविष्टे१०तक)गुरु अस्त रहेगा ।

सूचना—अस्त से पहिले तीन दिन वृद्धत्व दोष और उदय से पीछे तीन दिन बाल्यत्व दोष विशेष होता है जो अस्त की भाँति सर्व शुभ कार्यों में वर्जित है ।

शुद्धानिसपरिहाराणि च विवाह मुहूर्तानि

मास० प्र० ति० वा०

ज्ये. ३ ज्ये. कृ. ४च.धनु उ.षा. ॥ऽ गु.॥ऽ अ ऽऽ ॥ ल.१२
" ९ " १० र. मीन उ. भा. ऽ बु. गु. ॥॥ऽ रो ३६ उ. ऽऽ॥ल. धुलि मु. आवश्यके ।
ज्ये. १० ,, ११ चं. मीन उ. भा. ऽ बु. शु. ॥॥ऽ रो. ऽऽ॥ दि. ३ अनिष्टग्रहदानात् ।
,, १० कृ ११ चं. मीन रेव. ऽ शु. ॥॥ऽ रो. ३८ या. ।ऽ॥ ल. धूलिमुख अत्यावश्यके ।
" ११ " १२ मं. मीन रेव. ऽ शु. ॥॥॥ऽ॥ दि. ल. ३ अनिष्टग्रहदानात् ।
,, २२ ज्ये. शु. ८ श. कन्या उ. फा. ॥॥ऽ ग्निऽ॥। ल. १२ चन्द्रदानात् ।
,, २३ ,, ९ र. कन्या उ. फा. ॥॥ऽऽ॥। दि. ल. ३४ आवश्यके ।
,, २५ ,, ११ मं. तुला स्वा. ऽ सू. ४० या. ॥॥ ऽ या. ४० उ. ॥। ल. १ चन्द्र दा. आवश्यके ।
,, २६ ,, १२ बु. तुला स्वा. ॥॥॥ऽ॥। दि. ल. ३ गु. दा ।
,, २९ आ. कृ. १ श. धनु मू. ॥॥॥ऽऽ॥ गोधू. अत्यावश्यके ।
मार्ग. ७ मा. श. २ मं. धनु. म. ॥॥ऽ चौ ऽ ॥। ल. चि. ।
मार्ग ९ मा. शु. ५ गु, मकर उ. षा. ।ऽऽ बृ. ॥ऽ रो. ऽऽ॥ ल. धू. मु. ।
मार्ग २६ पौ कृ. ६ र. सिंह म. ऽ चं ऽ।ऽ शु. ॥ऽ॥। ल. गोधू भृगुवेध. पादतो वेधाभावः ।
माघ २ माघ कृ. ११ श. वृश्चिक अनु. ।ऽ॥॥ऽऽ॥ ल. २ चं. दा. ।
फा. २६ चै. कृ. ६ गु. वृश्चिक अनु. ऽ चं. ॥॥॥॥ ल. ७ ।
फा. २८ चै. ,, ८ श. धनु. मू. ॥॥॥ऽ॥ ल. ७ ।

"देशाचार से केवल पञ्जाब के लिये"

आषा. २३ आ. शु. ११ बु. वृश्चिक अनु. ऽ श ॥॥ऽ अग्नि घ. ४९ या. ऽ॥। धू. मु. व. १ चन्द्रदा. आवश्यके ।
,, २४ ,, १२ गु. वृश्चिक अनु. ऽ श ॥॥ऽ॥। दि. ल. ४ ।
श्रा. ६ श्रा.कृ.११गु.वृष. रो. ॥॥ऽ नृप३५ या. ऽऽ॥ दि. ल. ७ चन्द्र दा. अत्यावश्यके ।
श्रा. १५ श्रा. शु. ५ श. कन्या ह. ॥॥ऽ नृप. ॥ऽ दि. ल. ७ अन्यधूलिमुख ।
श्रा १७ श्रा. शु. ७ चं. तुला स्वा. ।ऽ॥ऽ चौ. ।ऽ॥ ल. १ चन्द्र दा. ।
श्रा. २२ श्रा. शु. १३ श. धनुः उ. षा. ॥ऽ बृ. ॥ऽ अग्नि ऽ॥। ल. २ चन्द्र दा. अत्या. ।
श्रा. २३ श्रा. शु. १४ र. मकः उ. षा. ॥ऽ बृ. ॥ऽ॥। दि. ल. ७
श्रा.२८ भा. कृ. ४ शु. मीन उ भा. ऽ बृ. ॥ऽ शु. ऽ रो. ३७ उ. ऽऽ॥ ल. गोधू. वा. रात्रौ १।२ अनिष्टग्रहदानात् ।
भा. ४ भा. कृ. १० शु. मिथुन मृग. ।ऽ।ऽ बृ. ।ऽ अग्नि. ।ऽ॥ धूलि मु. पादतो वेधाद्वेधाभावः ।
भा. १३ भा. शु. ५ र. तुला. स्वा. ॥॥ऽ अग्नि. ॥॥ ल. धू. मु. रात्रौ ल. १ चन्द्र दा. ।
भा. १९ भा. शु. ११ श. मकर उ. ा. ॥ऽ बृ. ।ऽ मं. ऽ रो. ऽ॥। दि. ल.९भौम दा. रात्रौ ल.१भृगु दानात ।
आश्वि. ११ आ.शु. ४ चं. वृश्चिक अनु. ॥॥॥॥ ल. ३ अत्यावश्यके. चन्द्रदा. परदिने दि. ल ७ ।
आश्वि. १३ आ. शु. ७ बु. धनु.मू. ॥॥ऽ अग्नि ऽऽ॥ ल. ३ चं. गु. दा. ।
आश्वि. १५ आ. शु. ९श. मकर उ. षा. ॥ऽ बृ.॥ऽ नृप. ऽ॥। ल. ३ चं. दा. अत्यावश्यके ।
आश्वि. २७ का. कृ. ५ बु. वृष मृग. ॥ऽ बृ ॥ऽ॥ ल. गोधू. गुरो. पादतो वेधाभावः ।

"पर्वत प्रान्त त्रिगर्त देश के लिए"

का. ८ का. शु. ३ चं.वृश्चिक अनु.॥॥ऽ॥। ल. ४ गु. दा. ।
का. १० का.शु.५ बु.धनुः मू. ॥॥ऽऽ॥ दि.ल.८ अन्य.धूलिमुख.
का. २३ मार्ग कृ. ३ मं. वृष रो. ॥॥ऽ नृ. ऽ॥। दि. ल १० अनिष्टग्रहदानात् अन्य गोधू. २६।४९ या. ।
,, २८ मा कृ.८ र.सिंह मघा—ऽ बु.॥॥ऽऽ॥ ल. चिन्त्यम्

अशुद्ध विवाह मुहूर्तानि

ज्ये. १ ज्ये. कृ. २ श.—म. ॥॥ऽ॥। भद्रा ५०।५७ उप. पूर्वलग्नाभावः ।
" २ " ३ र. —मू. ॥॥ऽ॥।१८ उ मृत्युपञ्चकम् ।
" ४ " ५ मं.—उ.षा. ॥ऽ गु.॥ऽऽऽ क्रांतिसाम्यदोष ।
" १६ ज्ये. शु. २ र.—मृगे. ऽ मं.।ऽ शु.ऽ गु. ॥॥। गुरुवेधः शुक्रयुतिः ।
ज्ये. २० ज्ये. शु. ६ गु.—मघा—॥ऽ श.पापयुतिः ।
" २१ " ७ शु.—मघा. मृत्युपञ्चकम् ।
" २३ " ९ र.—हस्ते ३६।१३उ. व्यातिपातदोषः ॥॥॥ऽ॥
ज्ये. २७ " १३ गु.—अनु.ऽ श. ॥। ऽ मं.।ऽ॥। क्षयतिथिदोषः ।
ज्ये. ३१आ. कृ.३ चं.—उ. षा. मृत्युपञ्चक ३७ या.भद्रा ४७।४६ या. मासान्तःक्रान्तिसाम्यञ्च ।
आषा ५ आ. कृ. ८ श.—उ.भा. ऽ।बृ. ॥॥ऽऽ।ऽ दग्धा ।
" ६ " ८ र. —रेव. ॥ऽ राहुयुतिः ।
" ७, ९ चं.—रे. ॥ऽ राहुयुतिः ।
" १० १२ गु.—रो. लग्नाभावः कृष्णानंग चतुर्दिनञ्च ।
" ११ १३ शु.—रो. कृष्णानंग चतुर्दिनञ्च ।
" १७ आ. शु. ४ गु.—मघा. ॥ऽ शनियुतिदोषः ।
" १८ " ५ शु.— उ. फा. व्यतिपातदोषः ।
" १९ ६ श.—उ. फा. क्षयतिथिदोषः ।ऽ।ऽ राहुवेधः ।
" २० ८ र.—हस्त. ॥॥ऽ रो. घ. ३९।या।ऽ।ऽ दग्धातिथिः ।
" २१ ९ चं.—स्वा. ॥॥॥॥ मृत्यु पञ्चकम. ४३ उपरान्त पूर्वलग्नाभावः ।
" २५ १३ शु.—मूले. कान्तिसाम्यदोषः ।
" २७ १५ र.— उ. षा. वैधृति दोषः ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आ० ३२ श्रा. कृ. ५ शु.––उ. भा. ऽ चं. बृ. ।।।ऽ अग्नि ऽ।।। मासान्तदोषः ।
श्रा. १ " ६ श.–– उ. भा भद्रा ३१।२४ उप. पूर्व संक्रान्ति पर्वघटीच ।
" २ "७ र.––रेव. घ. २३ उ. मृत्यु पञ्चकं राहुयतिश्च ।
१२ शु. "––मृग ।।ऽ भौमयुतिः ५६ या पश्चाल्लाभाव।
" १२ श्रा. शु. २ बु. मघा. व्यतिपात ४४।३२ या. मृत्युपं. ५४ या. पश्चाल्लग्नाभावः ।
" १४ श्रा ४ शु.––उ. फा. राहुवेधः ।
" १९ " १० बु. अनु. क्रान्तिसाम्यदोषः ।
" २१ " १२ शु. मूले वैधृतिः ३५।३३ या. मृत्युपञ्चकम् ।
" २९ भा. कृ ५ श. रेव. राहुयुतिः ।
भाद्र. २ ८ बुरो .घ.४९उ.मृत्युं पञ्चकंपूर्वलग्नाभावः।
" ३ ९ गु. रो. मृत्युपञ्चकम् ।
" १० भा. शु १ गु. उ. फा. ।।।ऽ राहु वेध : ।
" ११ " ३ शु. हस्ते. ।ऽऽ शु. ।।।।।। शुक्रयुतिः ।
" १५ " ७ मं अनु. वैधेति दोषः ।
" १७ ९ गु. मले. ।।।ऽ भौमः वेधः ।
आश्विन ९ आश्वि शु. र श. स्वा. घ. ४९ उप. वधृति शुक्रः ।
" १० आश्वि ३ र. स्वा. वैधृती शुक्रयुतिश्च ।
" २० १४ बु. उ. भा. क्रान्तिसाम्यः ।
आश्वि २१ १५ गु. उ. भा. मृत्युपञ्चकं भद्रा २९।। या. साम्यम् ।
" २१ १५ गु. रेव. मृत्युपं. राहुयुतिः ।
" २२ १५ शु. रेव. राहुयुति ।
" २६ का. कृ. ४ मं. रो. व्यतिपातदोषः ।
का १ "" १० चं. मघा. ।।ऽ भौमयुति ।
" ३ " १२ बु. उ. फा. राहुवेधःकृष्णा नंगचतुर्दिनम् ।
" ७ का. शु. २ र. ,अनु. लग्नाभावः ।
" ९ ४ मं. मूले लग्नाभावः ।
" ११ ६ गु.उ. षा. मृत्युपञ्चकं ।
" १७ १२ बु. उ. भा. केतुवेधः ।
" ८ १३ गु. रे. राहुयुतिः ।

" २२ मार्ग कृ. २ चं. रो. परिघार्द्धदोष घ. ५२ या. पश्चाल्लाभावः ।
कार्ति. २३ मार्ग कृ. ३ मं. मृग. भद्रादोषः ।
" २९ ९ चं. मघा. मृत्युपञ्चकम् ।
मार्ग १ ११ बु. उ. फा. ।ऽ।ऽ राहुवेधः ।
" १ " ११ बु. हस्त. ऽ मं. ।ऽ केतुयुतिः ।
" १४ मा. शु. ९ मं. उ. भा. ऽ वृ. ।।ऽ केतुवेधः ।
" १५ मार्ग शु. १० बु. रे. व्यतिपातः ३०।१६ उ. राहुपतिः ।
" १६ " ११ गुरु रे. व्यतिपातः राहुयुतिः ।
" १९ " १४ र. रो. भद्रादोषः ।
" २० " १५ चं. रो. मृत्यु पञ्चकं ४७ या. पश्चल्लग्नाभावः ।
" २१ पौ. कृ. १ मं. मृग. गुरुशुक्रवेधः ।
" २७ पौ. कृ. ७ चं. उ. फा. राहुवेधः ।
" २८ पौ. कृ. ९ मं. हस्ते. मृत्युपञ्चकं केतोर्युतिश्च ।
" २९ पौ. कृ. ९ बु. हस्ते. मृत्युपञ्चक घ. ३६ या. केतुयुतिश्च ।
माघ ३ माघ. कृ. १२ र. मूले. कृष्णानंगचतुर्दिनं ।
फा० २२ चैत्र. कृ. १ र. उ.. फा. ।ऽ भुजंगपातः ।
" २२ चै. क. १ र. हस्ते. राहुवेधः केतुयुतिश्च ।
" २३ चै. कृ. २ चं. हस्ते, राहुवेधः, केतुयुतिश्च ।
" चै. कृ. ३ मं. स्वा. ऽ मं ।।ऽऽ बु. घ. ४८ उ. ।।।ऽऽ कान्तिसाम्यम् ।
फा० २५ चै. कृ. ४ बु. स्वा. ऽ मं. ।ऽऽ बु. ।ऽ चो ।ऽऽ क्रान्तिसाम्यं ।
" २७ चै. कृ. ७ शु. अनु. ऽ चं. ।।।ऽ रो. ।।।। भ. १८ ।४२ या. पश्चाल्लग्नाभावः ।

अत्र कचित्स्मृतिदृष्टिदोषश्चेत्क्षन्तव्यं सुधीभिः ।
भुजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च ।
लग्नहीनं विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत् ।।

नोट–१ यदि साहों में विवाह का लग्न दिन में प्रातः ९७ का शुद्ध हो तो बरात एक दिन पहले पहुँच जाना योग्य है । क्योंकि उस दिन पहले सायंकाल तक शान्तिकृत्य और जूठा टिक्का आदि रस्में भली प्रकार सम्पन्न हो सकेंगी ।।

नोट––२ विवाहादि मुहूर्त्तों में बाण-विचार तात्कालिक स्पष्टसूर्य के भुक्तांशों पर ही किया जाना शास्त्रसम्मत है, प्रविष्टों पर विचार करना ठीक नहीं, ऐसा काशी काश्मीर तक के सम्पूर्ण विद्वान् मानते हैं और वही जम्बू पटियाला आदि के प्राचीन पञ्चांगों से सुस्पष्ट है । किसी भी प्रामाणिक (मुहूर्त्तचिन्तामणि, मुहूर्तमार्तण्ड) मूल अन्धकार ने पश्चिम वा उत्तर भारतीयों के लिये प्रविष्टों पर से 'बाणा-'बाणानयन करना चाहिये' ऐसा नहीं लिखा ।। नोट––३ यदि गुरुशुक्र के उदयानन्तर ५–७ दिन के भीतर विवाह-मुहूर्त बनता हो तो साहे चिट्ठी माईयों पेड़े माष हस्तादि विवाहांगकृत्य का आरम्भ अस्त होने से पहिले ही से प्रारम्भ कर लेना चाहिये ।।

उपनयन मुहूर्त––ज्ये. शु. ३ चन्द्र. आर्द्रा आषा. शु. ३ बुध. आश्ले.
नोट––अत्यावश्यकतामें चन्द्र बल देखकर सत्तीर्थं पर अन्य समय भी यज्ञोपवीत लिया जा सकता है इसी तरह ऋषितर्पण के समय भी मंत्र दीक्षा जनेऊ लिया जा सकता है ।

इस पञ्चांग में लिखा हुआ शुक्रोदयास्त एवं स्पष्ट ग्रह आदि जयपुर के महाराजा की ग्रहवेधशाला द्वारा शुद्ध माने गए हैं । आकाशीय वातावरण ठीक होने पर प्रत्यक्ष दर्शन से निश्चय भी कराया जा सकता है ।

द्विरागमन मुहूर्त––मार्ग. कृ. १२ गुरु वसा मार्ग. शु. ६ भृगु श्रवण मार्ग. शु. १० बुध उ. भा.मार्ग. शु. १५ 'चन्द्र. रोहिणी पौ. कृ. ३ गुरु. पुन. भद्रोत्तर च. कृ. २ चन्द्र. हस्त
सूचना––यदि दीपावली को दीपों के प्रकाशमें स्त्री पति के घर आवे तो उसमें कोई मास नक्षत्रादिकी शुद्धि न देखे ऐसे समय पतिगृह प्रवेश हो तो लक्ष्मी वृद्धि व सर्वसुख प्राप्त होता है ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मूलम् (राक्षसः)	०	९	१५	६	मन्दार- मूलम्	उदरतयामुख रोगसन्नि.मय	कृष्णअगरगंधनीलोत्पलपुष्पघृतदी कृष्णागुग्धूप माषमिश्रान्न नैवेद्य	सहवि माषान्न	घृत कन्दमूल	स्वर्णव.कु.गौछा पात्र.दा.कु.पू.वि	ॐमातेवपुत्रं पृथिवीपुरीष्यमग्निं स्वेयोनाव भारुखा।तांविश्वेदेव ऋतुभिः संवदानःप्रजापति विश्वकर्मा विमुञ्चतु। ॐ निऋ तयेनमः १९	हजार५
पू. षा. (जलम्)	०	१५	२४	१०	कर्पास- मूलम्	शिरपीडाकम्प. महाकष्ट	श्वेतचंदनगंधकमलपुष्प घृतगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	घृतपायस मिष्टान्न.	तिलतण्डुल घृत	स्वर्णव. ति.त.ज. कु. गो. दा. ब्रा.भो	ॐ अपाधमप किल्विषमपकृ त्यामपोरपः।अ- पामार्गत्वमस्मदपदुःष्वप्यं सुव ॥ ॐअद्भ्यो-	५ हजार
उ. षा. (विश्वेदेवा)	३०	२४	२६	१६	कर्पास- मूलम्	उरुशूल कटि. पीडा प्रलाप	श्वेतचंदनगंध कमलपुष्प घृतगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायसान्न नैवेद्य	सहविपा. तिलाज्य	तिलाज्य यव	आमान्नस्वर्णदान ब्राह्मण भोजन	ॐविश्वेदेवाः शृणुतेमं हवंमेये अन्तरिक्षे य उप- द्यविष्टाये अग्निजिह् वा उतवाय जत्राआसद्या- स्मिन्वर्हि विषमादयध्वम्ॐविश्वेभ्योदेवेभ्योनमः	१० हजार
श्रवण (विष्णुः)	६०	२४	६	९	अपामार्ग मूलम्	अतिसार सर्वा. पीडा त्रि. भय	श्वेतचंदनगंध मालतीपुष्प कर्पूरगु. धूप घृतदीपषडरस शाल्यान्न नैवे.	सहवि पायस	तिलाज्य यव	स्वर्णगोछायापा. ब्राह्मण भोजन	ॐविष्णो रराटमसि विष्णो श्नप्त्रेस्थोविष्णोः स्यूरसि विष्णो ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॐ विष्णवे नमः ॥ २२ ॥	१० हजार
धनिष्ठा (वसवः)	१५	२	२०	२१	भृंगराज- मूलम्	मूत्रकृच्छ् ज्वर रक्तातिसार	श्वेतचंदनगंध कमलपुष्प गुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	पायसमो. पूपतिपि.	तिलाज्य पायस	छत्रोपानत्अश्वस्व गोदा. ब्रा. भोजन	ॐ वसो :पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सवितापुनातु वसो- पवित्रेण शतधारेणसुप्त्वाकामधुक्षःवसुभ्योनमः	१० हजार
शतभिषा (वरुणः)	०	४५	३	२२	कमल- मूलम्	सन्निपातमय वातज्वरकष्ट	केसरअगरगंध कमलपुष्प कर्पूरचं. धूप घृतदीप घृतपोलिका नैवेद्य	घृत चित्रान्न	आज्य दध्योदन	स्वर्णतिलान्नघट छायापात्रगोदा. कु. पू. ब्रा. भोजन	ॐवरुणस्योत्तम्भनमसिवरुणस्यस्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्यऋतऽ सदन्यसी वरुणस्यऽऋत सदनमसि वरुणस्यऋतसदनमासीद ॐवरुणाय नमः ॥ २४ ॥	१० हजार
पू. भा. (अंजैकपा.	०	१२	२१	१९	भृंगराज- मूलम्	शरीरपीडात्रि व्याकुलता वम	केसरचंदनगंध श्वेतार्कपुष्प शतौष. मिश्रितधूप घृतदीप दधिपायस नै.	दध्योदन	क्षीराज्य शर्करा	स्वर्णरजत अन्न श्वे छा. पा. दा. ब्राभो	ॐउतनोऽहिर्बुध्न्यः श्रृणोत्वज एकपात्पृथिवी समुद्रः। विश्वेदेवाः ऋतावृधोहुवानाः स्तुता मंत्राः कविशस्ताअवन्तु। ॐअजैकपदे नमः ॥	१० हजार
उ. भा. (अहिर्बु. ध्न्य)	१०	२०	९	१५	अश्वत्थ- मूलम्	शूल ज्वर वात व्याधि अतिस. र कामला रोग	चन्दन कर्पूरगंध कमलपुष्प बिल्व गुग्गुलधूप घतदीप घृतपायस नैवेद्य	तिलाज्य मुद्गमाष	तिलाज्य यव	स्वर्णरजत तिल कृष्णवस्त्र दान ब्राह्मण भोजन	ॐ शिवोनामासि स्वधितिस्ते पितानमस्ते अ- स्तु मामा हिं सीः। निवर्त याम्यायुषे ऽन्नाद्या प्रजननायराजस्पोषायसुप्रजास्त्वायसुवीर्याय। ॐअहिर्बुध्न्याय नमः ॥ २६ ॥	१० हजार
रेवती (पूषा)	१८	१०	९	२०	अश्वत्थ- मूलम्	चित्तभ्रम उरु शू. ज्वर बा.पि	रक्तचंदनगंध मंदारपुष्प घृतगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	सहवि दध्यन्न	तिलाज्य तण्डुल	रजतवस्त्र पैत्तल. पा.वृ. छा.दा.भो.	ॐ पूषन् तवव्रते वयं नरिष्येम कदाचन स्तोता रस्त इहस्मसि ॥ ॐ पूष्णे नमः ॥ २७ ॥	५ हजार

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मोतीलाल बनारसीदास, गायघाट, बनारस।

हम अपने कृपालु ग्राहकों को सूचना देना अपना कर्त्तव्य समझते हैं कि पिछले ५० वर्षों से हमने जो संस्कृत तथा हिन्दी साहित्य की अथक सेवा की है और जिसके कारण संसार में चहुँ ओर यह कार्यालय प्रसिद्ध था। खेद है कि हमारी ५० वर्षों की मेहनत, कमाई, कुल पुस्तकों का संग्रह, अनेकों हस्तलिखित ग्रन्थ, विशाल प्रिंटिंग प्रेस आदि सब कुछ लाहौर में पाकिस्तानियों ने भस्मीभूत कर दिया था। अब येन केन प्रकारेण फिर से हम लोगों ने यहां बनारस में अपना कार्यालय स्थापित किया है सो आशा है हमारे कृपालु ग्राहक पूर्ववत् हम पर कृपा बनाये रखेंगे और अपनी आवश्यकताओं के लिये हमें याद रखेंगे।

नियम

(१) आर्डर देते समय अपना पता साफ और सुथरे अक्षरों में लिखें।
(२) मूल्य प्रायः बढ़ते रहते हैं सो जो मूल्य लगाकर भेजा जावेगा वह ठीक होगा।
(३) पांच रु० के आर्डर के साथ १) मनीआर्डर से भेजना आवश्यक है। बिना पहले मनीआर्डर आये हम माल भेजने में असमर्थ हैं।
(४) उत्तर के लिये जवाबी कार्ड साथ भेजें।

आयुर्वेद चिकित्सा ग्रंथ

अंजीर ॥) अनुपान कल्पतरु ।॥) अनुपान विधि ॥) अनुभूत योग दो भाग २) अभिनव बूटी दर्पण १०) अपूर्व विज्ञान १) अश्ववैद्यक ४॥) अष्टांगहृदय मूल ४) दो सं० टीका २५) आंख का अचूक इलाज २), आँख की प्राकृतिक चिकित्सा १) आकृतिनिदान २), आदर्श भोजन १), आम और उसके १०० उपयोग ।-), आसव विज्ञान १॥), आयुर्वेद परिभाषा १।), आयुर्वेद पाकिट प्रैक्टिशनर २), आयुर्वेद मीमांसा १) आयुर्वेदीय विश्वकोश ३ भाग २१), आयुर्वेद विचार २), आयुर्वेद विज्ञान १॥), आयुर्वेद सूत्र २), आरोग्य प्रकाश १।॥), आरोग्य लेखांजलि १), आरोग्य विधान ५), आरोग्य साधन ।॥), आहार सूत्रावली ॥), इंजकशन प्रकाश ।।=), उपचारपद्धति और पथ्य ।), औपसर्गिक रोग १म भाग ८), कर्णरोग विज्ञान २), काकचण्डीश्वर ।॥=), किशोर रक्षा और ब्रह्मचर्य ॥), कूपी पक्व रस निर्माण विज्ञान ५), कौमार भृत्य ८), गंगयति निदानसरल हिन्दी। हरएक रोग का निदान इसमें बड़े सरल तथा विस्तृत तरीके से दिया है कि अनजान से अनजान भी बड़ी आसानी से हरएक प्रकार के रोग को पहचान सकता है। सर्वसाधारण के लिये बड़ी उपयोगी पुस्तक है। हिन्दी में प्रथम बार ही छपी है ६), गुणों का खजाना—स्वा० परमानंद कृत सरल हिन्दी अनेकों अचूक इलाज तथा अर्क, शर्बत आदि बनाने के सरल तरीके। नवीन संस्करण छपता है। गूलर गुण विकास १।), गृहवास्तु चिकित्सा ॥=), ग्राम्य चिकित्सा ॥=), घरेलू औषधियां १=), घरेलू चिकित्सा १), घरेलू सस्ती दवायें ३), घृत चिकित्सा ॥-=), चक्रदत्त सटीक ६।), चरकमूल ७), चरक संहिता चक्रपाणिदत्त कृत आयुर्वेद दीपिका तथा जज्जट कृत निरंतर पद दो प्राचीन संस्कृत व्याख्या सहित। बहुत बढ़िया छपाई, कागज, दो सुन्दर कपड़े की जिल्दों में १८), चरक संहिता—जय देव जी कृत सरल विवेचनात्मक हिन्दी अनुवाद सहित। चरक जैसे कठिन ग्रन्थ पर इससे अच्छा अर्थ के मर्म को खोलने वाला कोई दूसरा हिन्दी अनुवाद आजतक नहीं छपा। इसी लिये इस संस्करण के लिये लोग लालायित रहते हैं। तीसरा संस्करण बड़े सुन्दर मोनो के नए टाईप तथा बढ़िया कागज पर छपा है। दो पक्की कपड़े की जिल्दों में संपूर्ण मूल्य केवल ३२), चिकित्सा तत्व प्रदीप—प्रथम भाग) चिकित्सा सार संग्रह (बंगसेन मूल) ७॥), चूर्ण चिकित्सा ॥=), जल चिकित्सा ४॥), जीवन तत्व १॥) जीवन रसायण ४), जीवाणु विज्ञान ६।), जुकाम १॥), टोटका विज्ञान ।=), तपेदिक ४), त्रिदोष मीमांसा २॥), तैल चिकित्सा ।।=), दूध चिकित्सा ४), देहातियों की तन्दरुस्ती ।॥), द्रव्यगुण विज्ञान दो भाग १०॥), द्रव्य गुण संग्रह १॥=), नलपाक १॥), नाड़ी परीक्षा ।), नाड़ी विज्ञान सटीक १।), नाड़ी विज्ञान भा० टी ।-), नासारोग विज्ञान २), निघंटुसार संग्रह १॥) निदान परिशिष्ट ॥=) नीमके उपयोग १), नैसर्गिक रोग १॥), पथ्यापथ्य निरूपण ॥), पाकचंद्रिका ६), प्राणिज औषध ।), प्रत्यक्ष शरीर संस्कृत १७), प्राथमिक चिकित्सा ॥), प्रमेह विवेचन २), प्रयोगमंजूषा ।॥≡), प्रयोग शतक ।-), प्रयोग साहस्री १॥=) प्रारंभिक रसायन ४॥) प्रारंभिक स्वास्थ्य ।=), फल उनके गुण तथा उपयोग १।॥) फलाहार चिकित्सा २॥) बच्चों की रक्षा ।=), बूटी प्रचार २॥), बृहद् इंजेकशन चिकित्सा ६), बृहदासवारिष्ट संग्रह १।॥), भारतीय भौतिक विज्ञान ॥), भारतीय रसशास्त्र ॥=),भावप्रकाश निघंटु मूल १॥), भावप्रकाश निघंटु—पं० विश्वनाथ जी द्विवेदी कृत सरल हिन्दी तथा विस्तृत अनुवाद सहित (यन्त्रस्थ) भाव प्रकाश मूल पूर्वार्द्ध ३), ज्वराधिकार २॥), भैषज रत्नावली मूल ३), तथा संस्कृत टीका ७॥), भैषज्य रत्नावली पं० जयदेव जी कृत सरल हिन्दी अनुवाद सहित। पुस्तक की उपादेयता इसीसे समझ लें कि इसका यह पंचम संस्करण छप रहा है। पुस्तक शीघ्र तैयार होगी। भोजन २), भोजन ही अमृत है १॥), मकरध्वज ।=), मठा—उसके गुण तथा उपयोग ।॥=), १,) मदनपाल निघंटु मूल १॥=), मधु के उपयोग १), मधुमेह चिकित्सा ।=), मन्थर ज्वर की अनुभूत चिकित्सा १), माधव निदान मूल १॥), सुधा-लहरी १॥), भा० टी० २॥), ५), मानसिक चिकित्सा ४), मानव शरीर रचना विज्ञान १४), मुख रोग विज्ञान २), मूत्र परीक्षा १) मेघ विनोद——इसमें हरएक बिमारी का इलाज इतने सरल उपाय से दिया है कि साधारण से साधारण मनुष्य भी थोड़े पैसों में स्वयं इलाज कर सकता है। नुस्खे प्रायः अनुभूत हैं। दूसरा संस्करण छप रहा है। मैं निरोगी हूं या रोगी ।=), यूनानी द्रव्यगुण——यन्त्रस्थ। यूनानी सिद्ध योगसंग्रह २॥), योगरत्नाकर मूल ७), भाषाटीका वैद्य विद्याधर जी कृत का नय संस्करण छप रहा है। रक्त के रोग १०) रसतरंगिणी——लाहौर के सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त कविराज श्री नरेन्द्र नाथ जी मिश्र रचित तथा उनके शिष्य प्राणाचार्य श्री सदानंद जी कृत श्लोकबद्ध तथा आयुर्वेदाचार्य श्री पं० हरिदत्त कृत संस्कृत टीका तथा सिद्धहस्त रसायनज्ञ श्री धर्मानंद जी कृत रसविज्ञान नामक सरल हिन्दी टीका सहित। हिन्दी अनुवाद इतना सरल तथा विस्तृत हुआ है कि साधारण से साधारण मनुष्य भी इस गूढ़ग्रन्थ को समझ सकता है और हर धातु का मारण, शोधन, भस्म आदि सब कुछ बड़ी आसानी से स्वयं तैयार कर सकते हैं। मारण, शोधन, आदि के प्रयोग इतने अनुभूत हैं कि आपको हजारों रु० खर्च करने पर भी उपलब्ध नहीं हो सकते। हमारा तो दावा है कि रस विषय पर इससे सरल तथा उपयोगी ग्रन्थ आजतक बना ही नहीं। यही कारण है कि प्रायः सभी आयुर्वेद विद्यालयों में यह पाठ्य ग्रन्थ है। १०) रसरत्न समुच्चयमूल ३॥), तथा संस्कृत टीका १०), तथा सुप्रसिद्ध कविराज धर्मानंद जी कृत सरल हिन्दी अनुवाद

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

है। दो अध्याय पर्यन्त २॥), १।), ज्योतिषवेदांग १॥), ज्योतिषसिद्धान्त संग्रह ३) ताजिक नील कंठी २॥।) तिथी चिन्तामणि ॥), दीर्घवृत्त १॥) दैवज्ञ कामधेनु ४॥) धराचक्र ≡), धराभ्रम ।=), नन्दिदत्त पंचविशतिक ।), नरपतिजयचर्या १), नारदीय संहिता ।॥) पंच-स्वरा२);पंचांग विज्ञाग ।=),प्रतिभा बोधक ॥-) पद्मकोश ।=) परवलय क्षेत्र ॥),पल्लीपतन =),प्रश्न भूषण ॥=), प्रश्न वैष्णव ॥), प्रश्नांकचूड़ामणि =), प्रस्तारचक्र =) फलित प्रकाश २), बीजगणित ५),बीजवासना ॥=) बृहज्जातक ३) बृहज्ज्योतिष सार ३॥), बृहत्सं-हिता मूल २॥) बृहदवकहोडाचक्र १॥), बृहदहडाचक्र ≡) भाग्यरहस्य १।) भाभ्रमबोध ॥),भावकुतूहल मूल ॥=) भा० टी०२)भाव प्रकाश ॥=) भावफलाध्याय ।), महासिद्धान्त ४॥) महावीर प्रश्नावली =), मानसागरी ८), मुहूर्त चिन्तामणि पीयूषधारा ५), भा० टी० ४), मूहूर्तमार्त्तण्ड ३), याजुष ज्योतिष १॥), योगनीजातक ।-),रत्नगर्भाचक्र ≡) रत्नद्योत ।॥≡) राशीमाला ।≡), रेखागणित (११-१२) १॥), ६ अध्याय ।=), लग्न चंद्रिका २), लग्नजातक ।-), लग्नरत्नाकर ।=) लग्नवाराही ।), लघुजातक १।) लघुपाराशरी ।॥=), १।), लीलावती मूल १), सटीक २॥) वास्तवचन्द्र श्रृंगोन्नति १॥), वास्तुमाणिक्यरत्नाकर २॥) वास्तुमाला २), वास्तुरत्नावली २॥) वास्तुराजवल्लभ २॥) विद्यामाध्वीय ५॥), विवाहवृन्दावन १॥।), विश्वकर्म प्रकाश २॥।) विश्वहित १॥), शकुन विचार ≡), शिशुबोध ॥),शीघ्रबोध १।) षट्पंचाशिका ।≡) ।॥) स्वप्नविचार =), सामुद्रिक ॥) सरल रेखागणित ॥=), सरल त्रिकोणमिति ३) सामुद्रिक रहस्य २॥) सारावली २॥), सिद्धान्त तत्वविवेक ७॥) सिद्धान्तशिरोमणि ६), सुगमज्योतिष १०) सूर्य सिद्धान्त ३॥) हनुमान ज्योतिष ॥) हीरकलश सं० गु० २०) हाडोचक्र =)॥।

कर्मकाण्ड, धर्मशास्त्र

अग्निष्टोम पद्धति ३), अर्की विवाह =), आपस्तम्ब गृहयसूत्र ६), आपस्तम्बधर्मसूत्र ६), आश्वलायन श्रौतसूत्र १म भाग। उपनयन पद्धति १।) कर्मठगुरु-राजज्योतिषी पं० मुकुन्दवल्लभ जीकृत अत्युपयोगी तृतीय संस्करण यन्त्रस्थ। कातीयेष्टिदीपक १॥) कात्यायणी तर्पण =),कात्यायन श्रौतसूत्र १३),७),कात्यायन मतसंग्रह २।),कालतत्वविवेचन३॥।) काल विवेक ५।) कुम्भ विवाह =), कृत्यकल्पतरु-दान, तीर्थ विवेचन, राजधर्म, गृहस्थ ३९), कृत्यरत्नाकर ६), कृत्यसार समुच्चय ३॥), खादिर गृहयसूत्र १) गणपति पूजा ≡), गदाधरी आचारसार ४॥) गयाश्राद्ध ।), ग्रह प्रयोग २॥) गृहस्थरत्नाकर ५।) गायत्री पूजा =), गोदान =), गोभिलगृहयसूत्र ३॥) चतुर्विंशति मत संग्रह ३), चूडाकरण पद्धति ≡), जन्मदिन पूजा =), जयाख्य संहिता १२) तिथिनिर्णय १॥) तीर्थ चिन्तामणि ३॥।) तुलसी पूजा =), तुलसी विवाह १), तुलादानादि पद्धति-विष्णुयाग सहित ५), त्रिकांडमंडन २।),त्रिस्थलीसेतु ।॥)दण्ड विवेक ८॥)दक्षिणामूर्त्ति संहिता ।॥-),द्वैत निर्णय सिद्धान्त ॥) दान क्रिया कौमुदी २।) दानदीपिका ॥), दाय भाग जीमूत २॥) दीक्षा प्रकाश २) मंध शास्त्र संग्रह २६ स्मृति १५), धर्मसिन्धु ४), धर्मानुबन्धीश्लोक ॥), नवरात्र प्रदीप १), नारायणबलि, ।)निर्णय सिंधु मूल ६), सटीक १२) नित्याचार पद्धति ५।),नित्याचार प्रदीप १२॥।) नित्योत्सव ५), नृसिंह प्रसाद-तीर्थसार ।॥), नृ० प्र० प्रायश्चित सार १॥=), नृ० प्र० व्यवहार सार २), नृ० प्र० श्राद्ध सार १),पंचपटल पद्धति २), पंचमंगल ।=), पंचांग पद्धति≡),पद्यपंचाशिका ॥),परम संहिता८),पारस्करगृहयसूत्र ॥=),पुत्तल विधान ।) पूजा समुच्चय २), पूतनाशांति =), प्रतिष्ठा महोदधि ५), प्रदोष व्रत निर्णय ॥=), पौरोहित्य कर्मसार १॥)बृहत्प्रेत मंजरी २॥) बृहस्पतिस्मृति १५) बौधायन धर्मसूत्र ६), मनुस्मृति मेधातिथि १७) तथा कूल्लूक ४), भाषाटीका ३) केवल दूसरा अध्याय ।॥), मानव गृहय-सूत्र ५) मांसतत्व विवेक ।=) महालक्ष्मी पूजा ॥) मूलाशांती =), ।॥-) याज्ञवल्क्य स्मृति वीरमित्रोदय-मिताक्षरा ७), बालंभट्टी १६॥) राजधर्म कौस्तुभ १०), रुद्र पद्धति शिवपूजन १।), लाटयायन श्रौतसूत्र २॥), वसन्तपूजन =) वर्षक्रिया कौमुदी ५।), वर्ष-कृत्यदीपक ६), वाराहगृहयसूत्र ॥=) वास्तुपूजा =), वास्तु शांति ॥-), वासिष्टीहवन पद्धति ।॥), १=), विधान पारिजात १५), विवाद रत्नाकर ६), विवाह पद्धति ।॥), १।), वीरमित्रोदय-परिभाषा १६॥), वी० मि० आन्हिक प्रकाश ९), वी० मि० पूजा प्रकाश ६), ६), वी० मि० लक्षण प्रकाश १०॥)वीरमित्रोदय राजनीति प्रकाश ७॥) वी० मि० तीर्थ प्रकाश ९), वी० मि० व्यवहार प्रकाश ९), वी० मि० श्राद्ध प्रकाश ६), वी० मि० समय प्रकाश ४॥) वी० मि० भक्ति प्रकाश ३) वी० मि० व्यवहाराध्याय ७॥), वैखानस श्रौत-सूत्र ७॥), वैखानस स्मार्त्तसूत्र १॥), व्रतकोश २), व्रात्यप्रायश्चित निर्णय १॥) शांडिल्य संहिता २=), शान्तिमयूख २॥) शिलान्यास ।), शिवार्चन पद्धति ।॥), शुद्धि कौमुदी ३॥।), शूद्राचार १॥) श्राद्धकल्पलता ४॥), श्राद्धक्रिया कौमुदी ५।) श्राद्ध चंद्रिका ३), श्राद्धसंग्रह ६), श्रावणी १।), श्रौतसूत्र-कात्यायंन १२) षड़शीति २) सापिण्डयदीपक ।=), सापिण्डय-कल्पलतिका ॥=), सर्वदेव ≡), संस्कारगणपति १५), संस्कारभास्कर ६), स्मृति चंद्रिका १३॥।), स्मृतितत्व १४) स्मृति सारोद्धार ६), स्वस्तीवाचन ≡), संक्षिप्त दीक्षातुलादान =)॥ हारलता २।) हेमाद्रिदानखंड १०)।

पुराण इतिहास व्रत कथादि १००

अग्निपुराण ६॥) अध्यातम रामायण३ व्याख्या १२) आनंदरामायण भा० टी० ४०), अनन्त कथा ॥-), एकादशी महात्म्य ४), ऋषीपंचमी ॥-) कल्कि पुराण २) काशी केदार माहात्म्य २॥) गरूड़ पुराण २) २॥), गरुड़ पुराण संपूर्ण ५), चंदन षष्ठी ।) चान्द्रायण ≡), चित्रगुप्त ।=),देवी भागवत मूल १०) प्रयाग माहात्म्य ।) बृहधर्म पुराण ४॥), बृहत् स्वयंभुपुराण ४॥), ब्रह्मवैवर्त १०), भागवत मूल ८) भाषाटीका ३२) भागवत दशमस्कन्ध ८), भागवत एकादशस्कन्ध १ भाग १॥), मत्स्य पुराण ६), महाभारत सटीक संपूर्ण ६५), महाभारत तात्पर्य महालक्ष्मी कथा ॥-), मार्कण्डेय ४), माघ गणेश चतुर्थी =), माघ माहात्म्य भा० टी० ४), मुक्ताभरण ≡), लिंग पुराण ८), वाल्मीकि रामायण तिलक व्याख्या ३०), वाल्मीकि भा० टी० २५) विष्णु पुराण ६), सत्यनारायण भा० टी० ॥) इतिहास समुच्चय ।॥) हरितालिका ।) हरिवंश पुराण सटीक १४), होलिका ≡), ज्ञानदीपिका महाभारत तात्पर्य ४)।

गीता, वेदान्त, सांख्य, मीमांसा, योग, वैशेषिक, न्याय आदि दर्शन

अच्युत लेखमाला १॥) अणुभाष्य २२॥) अर्थसंग्रह १।), अद्वैत चिन्ता कौस्तुभ ३॥।), अद्वैतचिन्तामणि ।॥=), अद्वैत दीपिका ८॥) अद्वैत ब्रह्मसिद्धि ३॥।) अद्वैत विद्यातिलक ॥=) अद्वैतसिद्धान्त विद्योतन ।॥=), अद्वैत सिद्धि ९।), अनुमान चिन्तामणि ६) अनुमान दीधिति प्रसारणी २।) अपरोक्षानुभूति ॥) अवच्छेदकत्वनिरुक्ति २॥) अष्टावक्र संहिता

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सहित । यह अनुवाद अत्यन्त सरल तथा छात्रोपयोगी है कि हर एक गढ़ रहस्य अत्यन्त सरलता से खोल दिया है । पुस्तक का नया संस्करण छप रहा है । रससार सिद्ध प्रयोग संग्रह प्रथम भाग छपता है । दूसरा भाग ५), रसार्णव मूल २), रसाध्याय ।।=) रसायनखंड ।।), रसायन सार ८), रसेंद्रसार संग्रह मूल १।।), तथा संस्कृत टीका, ३=), ४।।), तथा भाषाटीका ३), रसेंद्रसार संग्रह—वैद्य विद्याधर जी विरचितसरल हिन्दी अनुवाद तथा सुप्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य श्री जयदेव जी विद्यालंकार द्वारा परिवर्द्धित अत्यन्त उपयोगी पांचवां संस्करण छप रहा हैं – तथा सुप्रसिद्ध वैद्य घनानंद जी पन्त कृत अत्यन्त उपयोगी संस्कृत टीका हि० टी० प्रथम भाग ३), राज निघंटु ३।), रुग्ण–परिचर्या३।।), रूप निघंटु २ भाग ३), रोग परीक्षा पद्धति ८), वटिका चिकित्सा ।।=), व्यवहारायुर्वेद ५); वैधक परिभाषा संस्कृत १), भाषाटीका १।।), वैद्यकौस्तुभ सटीक १।।), वैद्य जीवन भा० टी० १।)वैज्ञानिक विचारणा १।।।), शंकरनिघंटु ७), शरीर क्रिया विज्ञान ६), शरीरविनिश्चय—कविराज श्री ज्योतिष चन्द्र जी सरस्वती विचरित । अखिल भारतीय आयुर्वेद विद्यापीठ की परीक्षा में नियत सटीक छपता है शीघ्र प्रकाशित होगा । शहद के गुण और उपयोग ।।।), शार्ङ्गधर मूल २), सं० टीका ३।।।), दो सं० टीका ८) तथासरल हिन्दी टीका सहित ८), शिरोरोग विज्ञान ४), शिशुपालन १।।) संक्षिप्त शल्य विज्ञान ८), सरल चिकित्सा २ भाग २), सरल व्यवहारायुर्वेद और विषविज्ञान ४), सर्प विष विज्ञान १), स्टेथस्कोप विज्ञान १), स्वस्थवृत्त समुच्चय ३।।) स्वास्थ के लिय शौक तरकारियां १।।), स्वास्थ्य और रोग १०), स्वास्थ्य रक्षा प्रथम ।।।), स्वास्थ्य विज्ञान—डा० मुकुन्द स्वरूप ११), स्वास्थ्य विज्ञान डा०घाणेकर ६), स्वास्थ्य साधन ३।।), सिद्धयोग संग्रह २।।) सिधान्त निदान दो भाग ८), सुश्रुत मूल ८), सटिप्पण १०) तथा भाषाटीका छपता है । सुश्रुत केवल शरीर स्थान भा० टी० ३),सुश्रुत की केवल उल्हण टीका संस्कृत १४),सूचीवेध विज्ञान १।।) सोंठ।।।)हमारा भोजन ४), हमारे बच्चे २) हमारे शरीर की रचना प्रथम भाग १०=), होमियोपैथिक चिकित्सा ८), हारीत संहिता मूल ४।),

व्याकरण ग्रन्थ

अनुवाद चंद्रिका—पं० चक्रधर हंस एम० ए० एल० टी० कृत अनुवाद सीखने के लिये इससे अन्यतम पुस्तक आज तक नहीं छपी । यही कारण है कि थोड़े ही समय में इसके ६ संस्करण छप चुके हैं । मूल्य २) । अष्टाध्याई सूत्रपाठ ।।।) भाषाभाष्य ८) उणादि सूत्र २।।) कारकचक्र ।।।). दशपादउणादिवृत्ति ३।), धातुपाठ ।), धातू रूपावली ।।) न्यासकल्पलता १), परमलघुकला १), परम लघु मंजूषा १।) पंक्तिचंद्रिका २, ३ भाग २), परिभाषेन्दु शेखर ३) पाणिनीय प्रदीप १।) पाणिनीयशिक्षा ३), प्रथमा सोत्तरा प्रश्नावली १।।) प्रबंध पारिजात १।) प्राकृत प्रकाश सटीक १।।–), तथा संजीवनी, सुबोधनी २।।), प्रारंभिक पाणिनीय–खन्ना–सरस्वती कालेज के प्राधानाध्यापक पं० विश्वनाथ शास्त्री ने बालकों के हितार्थ संस्कृत प्रारंभ करने के लिये लघुकौमुदी के जो सूत्र आवश्यक हैं उनको क्रमबद्ध कर तथा उनके हिन्दी अनुवादसहित । पुस्तक इतनी उपादेय है कि अनेकों विद्यालयों ने प्रारंभिक छात्रों के लिये इसे ही पढाना शुरू कर दिया है । दूसरी बार छपा है १), प्रौढमनोरमा सभापति १०), प्रौढ मनोरमा खंडन १।।), बटुतोषिणी ।।।=), मध्य सिद्धान्त कौमुदी–छात्रों के उपकारार्थ–सरस्वती कालिज के प्रिंसिपल पं० विश्वनाथ जी शास्त्री कृत अत्यन्त सरल तथा उपयोगी प्रभाकरी संस्कृत टीका सहित । नया संस्करण शीघ्र प्रकाशित हो रहा है । महाभाष्य प्रदीपोद्योत ३६ भाग कलकत्ता ३१।।), माध्वीय धातुवृत्ति ८), मुग्धबोध व्याकरण ५।), रूप कौमुदी ३), रूप प्रभा ३।।), लघुकौमुदी—पं० विश्वनाथ जी शास्त्री कृत सुप्रसिद्ध उपेन्द्र विवृत्ति तथा सूत्रों का हिन्दी अनुवाद, प्रश्नपत्र, अनेकों उपयोगी परिशिष्ट जैसे लेखोपयोगि चिन्ह, उपसर्ग योग से धातुओं के अर्थों में जो अन्तर आ जाता है उन सब धातुओं के हिन्दी अर्थ, प्रयोग संग्रह के हिन्दी अर्थ आदि अनेक विषय छात्रों के उपयोगी इसमें दिये गये हैं जो आज तक किसी भी संस्करण में नहीं है । यही कारण है कि इसके सब संस्करण हाथों हाथ बिक जाते हैं । अब यह चतुर्थ संस्करण छपा है । आजकल के कागज की अत्यन्त महंगाई के समय भी हमनें ३६८ पृष्ठ के लगभग की पुस्तक का मूल्य छात्रों के उपकारार्थ केवल १।।) रखा है जो कमीशन काट कर छात्रों को केवल १।) में दिया जाता है । लघुकौमुदी—व्याकरणाचार्य पं० श्रीधरानंद जी शास्त्री कृत विस्तृत हिन्दी अनुवाद सहित । इसमें हरएक रूप की सिद्धि कर दी गई है । यह अनुवाद इतना सरल तथा विस्तृत है कि बिना अध्यापक के इसे आप बड़ी सरलता से समझ सकते हैं । प्रथम भाग दुबारा छप रहा है शीघ्र प्रकाशित होगा। दूसरा भाग जुहोत्यादिगण से लेकर अन्त तक मिलेगा। मूल्य दूसरे भाग का केवल ४) । लघुकौमुदी जीवाराम कृत संस्कृत टीका सहित । ३=), लघुकौमुदी प्रश्नप्रदीप १), लघुशब्देन्दु शेखर (अव्ययीभावान्त) ६ टीका १६), वैयाकरण भूषण सार सभापति ७), गुरुप्रसाद १२), वैया० सि० लघु मंजुषा २२।।), व्याकरणदीपिका ७), शब्दकौस्तुभ १८), शब्दरूपादर्श ।।।=), शब्दरूपावली ।।=), ।), शाकटायन ७।।), समासचक्र =), सारस्वत ३ वृत्ति १।।) सटीक संपूर्ण ६), सारस्वत चंद्रिका पूर्वार्द्ध ४), सिद्धान्त कौमुदी मूल ३), तथा पूर्वार्द्ध बाल मनोरमा टीका १०) तथा तत्वबोधनी तथा बाल मनोरमा दोनों टीकाओं सहित म० म० पं० गिरधर शर्मा तथा म० म० पं० परमेश्वरानंदजी द्वारा संपादित नया संस्करण यन्त्रस्थ । सि० कौमुदीस्थ सोत्तरा प्रयोग सूची ४ खण्ड ३।), सिधान्त चंद्रिका सटीक १२), संस्कृत व्याकरण सार–संस्कृत सीखने के लिये इससे सरल व्याकरण आप को मिलना कठिन है । डी० ए० वी० कालेज जालंधर के अनुभवी संस्कृत प्रो० पं० रामचंद्र जी एम० ए० कृत । अत्यन्त उपयोगी ६) संस्कृत शिक्षा–जीवाराम ६ भाग ३।।=) ।

ज्योतिष ग्रंथ

अद्भुतसागर १०), अर्घ्यकांड गु० २०), अर्घ्यमार्त्तण्ड—कुराली के सुप्रसिद्ध राजज्योतिषी पं० मुकुन्द वल्लभ जी कृत तेजीमन्दीका अपूर्व ग्रन्थ छप रहा है । अवकहडाचक्र ।≡), अहिबलचक्र ≡), करणप्रकाश १।।), करलक्खण १), कुण्डलीदर्पण १।।)केरल प्रश्नरत्न ।।)केशवीय जातक यन्त्रस्थ। खण्डखाद्यक मूल २), टीका २।।), खेट कौतुक ।=), गणकतरंगणी १।।।) गणित का इतिहास २), गणित कौमुदी २ भाग १।।=), गणित तिलक ४), गणित मुक्तावली २ भाग १।।) गर्गमनोरमा ≡), गोल परिभाषा ।=), गोलीय गणित । ग्रहगोचर =), ग्रहलाघव ३।।) चमत्कार चिन्तामणि ।।) चलनकलन १।), चलराशी करण ।≡) चापीयत्रिकोण १।।),जन्मपत्रीदीपक १।) जन्म पत्र फारम ६), सैंकडाजन्म पत्रिकाविधान १।।), जातकालंकार ।।।),जैन सामुद्रिक–सं० गु० १६) जैमिनीपद्यामृत १।।) जैमिनीसूत्र—पं० गंगाराम जी कृत चारों अध्यायों की हिन्दी टीका सहित । पहली बार छप रहा

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१।), आत्मतत्वविवेक २१), ७।।), ८।), आत्मानात्मविवेक ।।) इष्टसिद्धि १४) उपदेश साहस्त्रि २),कोड पत्र संग्रह १२) किरणावली २।) किरणावली प्रकाश २ भाग १।।) किरणावली प्रकाश दीधिति ।।।=) करिणावलीभास्कर ।।।=) कुसुमांजलिबोधनी १), केवलान्वयी १।) ख्यातिवाद ।।=) खण्डनखण्डखाद्य सटीक १०), १२), खण्डनोद्धार २।।), गदाधरी सामान्य निरुक्ति ५), गोरक्षसिद्धान्त संग्रह ।≡) जीवन्मुक्त विवेक ३), जैमिनीन्यायमाला (१–३) ४) संपूर्ण ९), टुपटीका ४), तत्वचिन्तामणि ।।=) त० च० दीधिति बिकृति ९।।।) त० च० प्रकाश ४।।) तत्वदीपन ८), तत्वसंग्रह २४), तत्वसार ।।) तत्वत्रय ३) तत्वोप्लव ४), तर्कतांडव ९।) तर्कभाषा २।) तर्क संग्रह १) तर्कामृत ।=), तौतातिमततिलक ३=), न्यायकलिका ।≡), न्यायकौस्तुभ १।।=) न्याय दर्शन वात्स्यायन, विश्वनाथ, ३।) उद्योत १०) भाष्य, वार्त्तिक, तात्पर्य टीका तथा वृत्ति १६) न्याय परिशिष्ट ५), न्याय परिशुद्धि ७।।) न्याय बिन्दु २), २।।) न्यायबिन्दु टीका २), न्यायमंजरी ९) न्यायरत्न माला ३), न्यायलीलावती १३।।) न्यायवार्त्तिक तात्पर्य टीका ६), न० वा० तात्पर्य परिशुद्धि ६), न्यायसिधांजन २।।) न्यायसिधान्तदीप ५।।) न्यायसिधान्तमंजरी २।।), न्याय सिद्धान्तमाला १।।) पदार्थ मंडन ।≡), न्यायामृत द्वैत सिद्धि १२), परमार्थ सार ।=), परानंद सूत्र ३।।), पक्षता२।।), १।।।=) प्रकरणपञ्चक ।।) प्रकरणपंचिका ५) प्रत्यक् तत्वचिन्तामणि २ भाग ४।) प्रस्थानरत्नाकर ३) प्रेमपतन १) पूर्णप्रज्ञदर्शनमध्व १।।।) पंचदशीसटीक ४) बृहती ४।।) बृहदारण्यकवार्त्तिकसार १५) भा० टी० ९), ब्रह्मसूत्रनिम्बार्क ६) ब्र० सू० भास्कराचार्य ४।।), ब्र० सू० शंकरभाष्य तथा भा० टी० १४) बोधसार १५), भक्त्यधिकरणमाला ।।=), भक्तिचंद्रिका २ भाग १≡)।। भक्ति निर्णय ।–), भक्तिसागर २।।) भक्तिरसामृत सिंधु ३), भगवन्नाम माहात्म्य संग्रह १।=), भगवद्गीता ८ व्याख्या १८), शंकर भाष्य ३), शंकरानदी भा० टी० ४।।) भारतीय दर्शनानि ४), भेडज्यश्री।।=), भेदसिद्धि ।।।=) भेदरत्न ।।।), भेदधिक्कार ३) भास्करी ३), भास्करोदय २), माध्वमुखालंकार ।।।) मीमांसा कौस्तुभ १८), मीमांसा न्याय प्रकाश ४) ।।।) मीमांसानुक्रमणिका ७।।) मीमांसा परिभाषा ।।) मीमांसाबालप्रकाश ३), मीमांसा दर्शन शबरभाष्य १४) योगदर्शन किरणावली २।।), यो० भोजवृत्ति १।) यो० मणिप्रभा १।) यो० व्यास, वाचस्पति ४), विज्ञानभिक्षु ४) योगवासिष्ठ सटीक २५), योग वा, भा० टी० ३ भाग २२), योगसारसंग्रह ।।) योगिनी हृदय १।=), व्याप्तिपंचक १।) व्युत्पत्तिवाद २), वाद वारिधि ४।।) वासिष्ट दर्शन २।।), विद्यारत्नसूत्र ।)।। विधि विवेक ५), विवेक चूडामणि ।।), विवरण प्रमेय संग्रह ४।।) वेदान्त कल्पलतिका ।।।=), वेदान्त तत्व विवेक २) वेदान्त दर्शन ब्रह्मामृतवर्षिणी ६), वेदान्तदीप ४।।), वेदान्त परिभाषा १।।।), २), ६), वेदान्तसार १।।।) वेदान्त सिद्धान्त कल्पवल्ली ।।), वेदान्तसिद्धान्त मुक्तावली ३।।) वेदान्तसिद्धान्त मुक्तावली १) वेदान्तसिद्धान्तसंग्रह ३), वेदान्तसिद्धान्त सूक्तिमंजरी ४) वेदार्थ संग्रह ५), वैशेषिक उपस्कार ४) तथा सूक्ति सेतु १०।।) शक्तिवाद ३), शब्दशक्तिप्रकाश १।=), ६), १।।।) श्रुत्यन्तसुरद्रुम ४।।) षट्सन्दर्भ १), सप्तपदार्थी४), सर्वदर्शनसंग्रह १।।=) संक्षेपशारीरिक ३।), ८), सामान्यनिरुक्ति २।।) सांख्यकारिका किरणावली ३।) तथा बालरामोदासीन ३।।), तथा १), ।।) सांख्यतत्वकौमुदी ५), २।।), १।।), सांख्यतत्वालोक ।।≡), सांख्यप्रवचनभाष्य २।।) सांख्यसार ।=) सांख्यसूत्र अनिरुद्ध १।।।) सांख्यसंग्रह ३), सांगयोगदर्शन ५), सिधान्तबिन्दु १।=), ११।) (सिद्धान्तमुक्तावली किरणावली ३।।) सिद्धान्तरत्न २ भाग १।।।≡) सिद्धान्तलक्षण १।), २।।) सिद्धान्तलेश संग्रह ७) भा० टी० ३), सिद्धान्तसार्वभौम २।।) सिधसिद्धान्तसंग्रह ।≡), हेतुतत्वोपदेश १।।) ।

काव्य, अलंकार, छन्द, नाटक, प्रबन्ध, अन्योक्ति, आख्यायिका, नीति,

अन्योक्तषट्क संग्रह २) अपभ्रंशकाव्यत्रयी ४) अभिलषितार्थचिन्तामणि २), अलंकारप्रदीप ।।) अलंकारमहोदधि ७।।) अलंकारमुक्तावली ।।।) अलंकार सर्वस्व २) अलंकारसारमंजरि ।≡) अलंकारसूत्र २।।) अलंकारशेखर ।।।) आनंदकन्द चम्पू १।।।) आर्यासिप्तशति ४।।) उज्ज्वलनीलमणि ४), उत्कीर्णलेखांजलि ।।।) उत्तररामचरित १।।) काव्यडाकिनी ।।) जीवानंद ४।=), कथासरितसागर पद्य १०) गद्य ९) कर्पूरमंजरी ।।।=), कादम्बरी मूल ४) काव्यदीपिका १।।), काव्य प्रकाश ५), ८), का० प्र० दीपिका ।।।=), काव्यमंजुषा १।।) काव्यमीमांसा मूल २)सटीक २।।), काव्य विलास ।।–) काव्यादर्श जीवानंद ३।) भा० टी० १।।) काव्यालंकारभामह २।।)काव्यालंकारसार संग्रह २), काव्यालंकारसूत्रवृत्ति २।।),१।।), किरात २।।) कुमारसंभव १।।),४), कुवलयानंद ३) कौटिल्यार्थ शास्त्र मूल ३) पदसूची ७।।) चतुरंगदीपिका ३) चम्पू भारत ५) चम्पू रामायण ४), चंद्रलेखासट्टक ८), चंद्रालोक ३), भा० टी० १), गीतगोविन्द भा० टी० १) गुप्ताशुद्धि ।) चाणक्य नीति १) चाणक्यसूत्र ।≡) चौरपंचाशिका । छंदोमंजरी १) छंदशास्त्र ३) दशकुमार पूर्वपीठिका १) संपूर्ण २।) जीवानंद ३।) भा० टी० ५।।) दशरुपक १।) द्वात्रिंशपुत्तलिका २) ध्वन्यालोक २।।), ७) धर्म विजय नाटक । नञ्जराजयशोभूषण ५)नलचम्पु ३) नलविलास २।) नागानंद १।), ३।।) नाट्यदर्पण ४।।) नाट्यशास्त्रमूल ८), सटीक दूसरा भाग ५), नारायण शतक २) नीतिशतक ।।), १), नैषध संपूर्ण नारायण १२) जीवानंद १३) १–९ मल्लिनाथ ४) (१–५) जगद्राम ३।–) पद्मानंद महाकाव्य १४), पंचतंत्र २।), ४) मूल १।।) अपरीक्षित कारक ।।।) पिंगलछन्द सटीक ३।।।) पृथ्वीराजविजय २।) ५) प्रसन्नराघव ३) बुधचरित्र भा० टी० ४), बृहत्कथा मंजरी ८) भट्टिकाव्य ५)७)३)भाव प्रकाशन ७) भास नाटक चक्र १५) भोजप्रबंध मूल ।।।) सटीक २) मनोरंजन नाटक ।।) मयूर संदेश । महानाटक ३।।) महावीरचरित २।।) माधवानल कामकन्दला १०) मानसोल्लास ७।।।) मालतीमाधव ३।।) मालविकाग्नि १।) मूलरामायण ।।।) मृगांकलेखा ।।) मृच्छकटिक १।।) मेघदूत, १), १।), रघुवंशसंपूर्ण ५), २–४ सर्ग २।।) रत्नावली २) रसगंगाधर १०) रसप्रदीप ।।–) रसमंजरी ३) रसरत्नप्रदीपिका ३) रामचरित ७।।) राम वन गमन १।।।) रामविजय १) लटक मेलक ।।) लेख पद्धति २) व्यक्ति विवेक ८), वञ्जालग्गम् १।।) वाग्वल्लभ २।।) वासवदत्तासुबंधु १।) विक्रमांकदेवचरितम् २।।।) विक्रमोर्वशी ३) विदुर नीति २) विदुलोपाख्यान ।।=)।।।) वृत्तरत्नाकर छंदो मंजरी १।) वृत्तरत्नाकर, ।।) ३) वेणीसंहार १।।), ३) वेतालपंचविंशति २।।) वैराग्य शतक ।।) शतकत्रय भर्तृहरि प्राचीन टीका ६) भा० टी० १।) शाकुन्तला ३) भा० टी० ६) शिव परिणय ५।)शिवराजविजय संपूर्ण ५) शिशुपाल वध ५) ६।), श्रुतबोध ।।) शृङ्गार शतक ।।) सरस्वती कण्ठाभरण ७) सरस्वती विलास २।।) सं० कविचर्या भारवि ।।=) सं० कविचर्चा ३) साहित्य दर्पण ६।) सुभद्रा परिणय ।=) सूक्तिमुक्तावली ११), सेकोद्देशटीका २।।) सौंदरानंद ३) स्वप्न वासवदत्ता १।।) भा० टी० २।।) हनुमान्नाटक

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

३) हर्ष चरित ३), ६।) (५–८) २॥) हंस विलास ५॥) हास्यार्णव ।॥=) हितोपदेश
३।) भा० टी० १॥।) मित्रलाभ १।), १॥) ।

मंत्रशास्त्र

उद्धारकोष—दक्षिणामूर्त्ति १०), कर्पूरस्तव ।=) काथबोध ॥) क्रमदीपिका ४॥)
कुलार्णव २॥) कौलज्ञान ६), गायत्रीयंत्र ।॥) गुह्य समाज ४।), तत्वचिन्तामणि १६),
तंत्र रत्न २=) तारारहस्य १।) त्रिपुरारहस्य ७) त्रिपुरासार समुच्चय १।) दुर्गामूल ।॥),
१), ।॥=), ३) भा० टी० १॥।), ४) दुर्गापंचांग ॥=) पुरश्चर्यार्णव प्रथम ६), तीसरा
१८) बगला मुखीपंचांग ।); महानिर्वाण ५।) महामृत्युंजय पंचांग ॥=), मंत्रमहोदधि ४।),
मातृकाचक्र विवेक १), मातृकाभेदतंत्र ३) माहेश्वर ४॥) योगिनी ४) रुद्रयामल उत्तरार्द्ध
४) वर्ण बीज ॥) श्यामा रहस्य २॥) शक्ति संगम ५॥।) शारदा तिलक ४, ७) सात्वत
१॥) ।

कोशग्रन्थ

रामाश्रमी १०),
अनेकार्थ संग्रह ३) अमरकोश १म कांड ।=) मूल संपूर्ण १), १॥), नामलिंगानुशासन क्षीरस्वामी
आख्यात चंद्रिका १॥) कल्पद्रुकोश १४) देशीनाम माला ६) शाश्वत कोश । श्रीकोश १।) ।
७॥) मेदनी १॥।), विश्वप्रकाश ३) शब्दरत्न समन्वय ११)

कामशास्त्र

पंचसायक १) रतिरत्न १॥)
कामसूत्र सटीक ६) कोकशास्त्रनर्मदाचार्य गुजराती ११)

वेदग्रन्थ

अष्टाविंशति उपनिषद २) अष्टोतरशतोपनिषद ४)
अथर्ववेद पैप्पलाद ३ भाग ८०) आश्वलायन गृह्य सूत्र २॥) आश्वलायन
आपस्तम्ब शुल्वसूत्र २॥।) आरण्यसंहिता ।॥=) ईश, केन, कठ, प्रपूण, मुण्डको शंकर आनं-
श्रौत १म ॥)॥ आश्वलायन सूत्र प्रयोगदीपिका ३) उपनिदान सूत्र ॥) एकादशोपनिषद
दगिरि ५), ईशादिदशोपनिषद शंकरभाष्य १४) ऐतरेय ब्राह्मण मूल २) सभाष्य १७।)
स्वा० अमरदास कृत मणिप्रभा टीका सहित १०) ऋग्वेद वेंकट माधव कृत सायण से भी प्राचीन भाष्य
ऐतरेयालोचन २।) ऋग्वेदमूल ६) सब भाष्य दिये हैं तीन भाग छपे हैं बाकी छप रहे
सहित तथा टिप्पणियों में सायन आदि ऋग्वेद प्रतिशाख्य ६॥) ऋग्वेदभाष्य भूमिका ॥=) गोपथ
हैं। प्रतिभाग का दाम ५०) चतुर्वेद भाष्य भूमिका २॥) चरणव्यूह ।॥=)
ब्राह्मण १।) गोभिलगृह्यसूत्र सभाष्य १२) जैमिनीय ब्राह्मण १म भाग १४) ताण्डयमहाब्राह्मण
छान्दोग्य शंकर–आनंदगिरि ६) निरुक्त देवराज यज्व, दुर्ग १८) निरुक्तसटीक १०)
२०) दैवत ब्राह्मण षड्विंश २॥) पुष्पसूत्र ४॥) बृहदारण्यक शंकर आनन्द-
पुरुष सूक्त ६ सूत्र ।), पारस्करगृह्य सूत्र ३॥), यजुर्वेदप्रातिशाख्य २॥)
गिरि १०) मंत्र संहिता ३) मांडूक्य शंकर आनंद गिरि २॥) वेदवाद द्वात्रिंशिका १) शतपथ
रुद्राष्टाध्यायी ।॥=) वेद भाष्यानुसार सायण संक्षिप्त १) शिक्षा संग्रह ५) शुक्लयजु-
ब्राह्मण संपूर्ण ७॥) सांख्यायन गृह्य १॥) शिक्षादि वेद षडंगानि ३) शुल्वसूत्र ।=) श्रौतपाठ
र्वेद उवटमहीधर १०) काण्वसंहिता ६) शुक्ल यजु सर्वानुक्रम ४॥)
२ भाग ९) सामवेदजैमिनीय १०) सामवेदी रुद्रजप १) ।

स्तोत्रग्रन्थ

अपराजिता =), आदित्य हृदय =), ऋणमोचन –) कमलनेत्र –), कालीकवच =),
गणेशचालीसा =), गणेश सहस्रानाम ≡) गोपालसहस्रानाम ।=) चर्पटपंजरिका =)
बगुलामुखी =) बटुकभैरव =) बृहत्स्तोत्र रत्नाकर ३) दुर्गाकवच =) देव्यापराध =) प्रत्यं-
गिरा =) महालक्ष्मी =) महाविद्या =) मृत्युंजयस्तोत्र =) विष्णु सहस्र नाम ।=) रामरक्षा
=) रामस्तव राज ≡) शनिस्तोत्र =), शिव चालीसा =) शिव तांडव =) शिवमहि-
स्तोत्र =), ≡), ।≡) शिवस्तोत्र =) शीतलाष्टक =) ।

जैनग्रन्थ

अकलंकग्रन्थत्रयी ७) अनेकान्तजयपताका १०) आधुनिक जैन कवि ३॥।) चित्र कल्प-
सूत्र प्राकृत २०) जैनचित्र कल्पद्रुम गुजराती ५०) जैनचित्र कल्पलता गुजराती १०) जैन-
तर्क भाषा ३) जैन भौगोलिक सामग्री ।), जैन शासन ४।–) जैनस्तोत्र संदोह५) कन्नड प्रां-
तीय ग्रन्थ सूची १०) कुन्दकुन्दाचार्य ३ ग्रन्थ २) घण्टाकर्णकल्प ७) दिग्विजय महाकाव्य
८), देवानंद महाकाव्य ४) दो हजार वर्ष प्राचीन कहानियां ३) धूर्ताख्यान ८) परीक्षा मुख
२) पुरातन प्रबंध संग्रह ७) प्रबंध कोश ६) प्रबंध चिन्तामणि ६) हिन्दी ६) प्रभाविक चरित्र,
७) प्रमाण मीमांसा ७) बृहत्कथा कोश १६) भरतेश्वर बाहु बलि गुजराती १) भानुचंद्र-
गणि चरित्र ८) भारतीय जैन श्रमण संस्कृति अनेलेखन कलां गुजराती ८), भैरवपद्मा वती
कल्प २५), मंत्राधिराज चिन्तामणि ७॥) मदनपराजय ८) महाचमत्कारिक बीसायंत्र
५) महाप्रभाविक नवस्मरण ३०) महाबंध (महाधवल) १म भाग १२) मुक्तिदूत ४॥।)
रिष्टसमुच्चय १०) लीलावैकहा (कौतुहल) १०) विविध तीर्थ कल्प ६), संदेशरसिक्क
१०) स्थविरावली चरित्र ५) हिं० जैन साहित्य का संक्षिप्त इतिहास २॥।=) ज्ञान बिन्दु-
प्रकरण ५) ।

बौद्धग्रन्थ

खुद्दक (११ ग्रन्थ) ७॥) जातक माला २।) प्रज्ञापारमिता १२) प्राचीन बौद्ध तर्क
ग्रन्थ ९), पालीजातकावली २) पालीमहाव्याकरण ५) पालिद्वीपग्रन्थ ३॥) भोट प्रकाश
५) वज्रयानग्रन्थ ३) विशुद्धिमग्ग १६) साधनमाला १४) बौधदर्शन ८) ।

प्रकीर्णग्रन्थ

आर्य विद्यासुधाकर—यज्ञेश्वर चिमन भट्ट कृत । अत्युपयोगीग्रन्थ । डा० मंगल
देव द्वारा सम्पादित १०) डाकार्णव ५) देवतामूर्ति प्रकरण ५) बुध प्रतिमा लक्षण ॥=)
भारतीय दर्शन ८) संस्कृत साहित्य का इतिहास ४), आर्य संस्कृति ६), भारतीय
संस्कृति ८) ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हिन्दी पुस्तकें

अंकुर २) अंग्रेज जाति का इतिहास २॥) अंग्रेजी हिन्दी शिक्षक ।=) अंग्रेजी हिन्दी प्राइमर ≡) अंगूठी के नगीने १।) अकबरी दरबार ६।) अकबर बीरबल ॥-), ४) अच्छी हिन्दी २॥) अजात शत्रु समीक्षा ॥) अजीब दुनियाँ ।=) अन्तहीन अन्त नाटक-पं० उदय शंकर भट्टकृत १≡)। अन्धकार युगीन भारत ३॥) अन्योक्ति कल्पद्रुम ॥) अनन्त का अतिथि १) अनमोल रत्न १।) अनुभव प्रकाश ३) अनुभवी सौदागर ॥।=) अनुराधा १) अनुसूया ॥।) अनोखी दुनियां १) अनोंखीदैवीविनोद १) अफलातून की सामाजिक व्यवस्था १।=) अबला की आत्मकथा २) अब्राहमलिंकन ॥) अभागिनी १॥) अभागे दम्पति २) अभिनेत्री की आत्मकथा २) अभिनेत्री जीवन के अनुभव २) अमरकीर्ति १) अमर जीवन १॥) अमर जीवन की ओर १।) अमर प्रेम ३) अमरसिंह राठौर ।≡) अमेरिका कैसे स्वाधीन हुआ ॥=) अभिमन्यु ॥।) अरक्षणीया १) अरुन्धती ॥=) अर्जुन गीता ।-) अलग्योझा १) अलंकार प्रवेशिका-प्रो० रघुनन्दन शास्त्री एम. ए. कृत अलंकार विषयक अत्युत्तम ग्रन्थ २) अवारा १।) अशोक के धर्म लेख ३॥) अशोक की धर्म लिपियां २) अष्टदल १) अस्फुट कलियां १।) अहङ्कार २) आंख की किरकरी ३॥) आंख मिचौनी १॥।) आंसुओं का देश ३) आकर्षण शक्ति ३) आजकल ॥।) आजाद ।≡) आजाद कथा ८) आजाद हिन्द फौज २) आखरी दुश्मन १॥।=) आठ कहानियां १।) आत्म शिक्षण १॥) आत्मोद्धार १॥) आदर्श कहानियां १॥) आदर्श जीवन १॥) आदमी ३॥) आदर्श निबंध १।) आदर्श रमणी ॥=) आदर्श हिन्द ४।) आधुनिक चक्र ॥) आनंदभवन ३) आनंदमठ १॥), २।) आनरेरी मैजिस्ट्रेट ॥।) आप की पत्नी ३) आरती संग्रह ।) आल्हाखण्ड बड़ा ११) आहुतियां १) इत्यलम ४) इङ्गलैंड का इतिहास २ भाग ८) इन्द्रजाल ॥।≡), २) इंदिरा १) इब्न बतूता की भारत यात्रा २) ईश्वरीय बोध १।) उर्दू साहित्य का इतिहास २॥) उद्यान १) उरबाती १) उलटफेर १॥), उलटीगंगा २॥) उलूकतंत्र १॥=) उषा ॥=) उषाकाल ७) एक महान चुनौती ७॥) ऐतिहासिक कहानियां १॥) ऐशमहल २) कंटीलेतार १) कर्त्तव्य १॥) कनकलता १॥) कफन २) कबीरग्रन्थावली ४) कबीरबीजक मूल ॥।≡) कबीरभजनरत्नावली १)कबीरबचनावली १॥) कबीरका शब्द।=) कमला ३)कमलाके पत्र ३) कमलानेहरू ।≡) कर्मयोग १॥) कर्मभूमि ५) कर्मवाद और युगांतर ३) करुणा ३॥) कलंककालिमा १॥) कल की दुनियां १॥) कलमतलवार और त्याग २) कल्लोल (आधुनिक चुनी हुई कविताओं का संकलन) सम्पादक श्रीमाधव वप्रो० दुर्गादत्तजी ३) कवितावली १॥) कवियों की ठिठोली २॥) कसौटी २॥) कस्तूरबा ।≡) कहां २॥) कहानी ४) कामदेव और रति १) कायाकल्प ५) कारनेगी १॥) कार्लमार्क्स ।≡) कारवा १) कालपी ॥=) काव्यांजलि ॥।) काव्यांगकौमुदी ३।) काशीनाथ १) किरणबेला १॥) किसी से मत कहना किसान की बेटी २) किस्मत कीलकीरें १॥) कीर्तिलता १॥) कुछविचार २) कुण्डलिया गिरधर ।) कुत्ते की कहानियां ॥।) कुरान में हिन्दी ॥=) कुरुक्षेत्र ३॥) कुंकुम १) कुसुमकुमारी १॥) कृष्णकमल १॥।) कृष्णकान्त का वसीयत नामा १।),२) कृष्णसुदामा ॥।) केतकी की कहानी १) कोकिला ४) कोठरी की बात ३) कोहार का रांजा २॥) खण्डित-भारत ८) खरासोना १) खाद १।) खाद का उपयोग १।) खारवेल की प्रशस्ती १) गणेश २॥) गणेशपुराण ≡) गदर का इतिहास ६) गदर इतिहास की झलक १॥) गबन ४) गल्पमंजरी-सर्वश्रेष्ठ कहानी लेखकों की चुनी हुई कहानियों का संग्रह-संपादक श्रीसुदर्शन जी ३) गल्परत्न १) गल्पसंसार माला १,२ = ३) गल्पसमुच्चय २॥) गांधी और स्टालिन ३।) गहरी गहरीनदियां १) गांधीगौरव ३) गांधीटोपी २) गांधीवाद की विवेचना १) गाडी वाले का कटडा ५) गीतगोविंद ॥) गीतावली १) गुदगुदी १) गुरुगोविंद सिंह ।≡), १॥) गंगाजमुनी ५॥) गुरुघंटाल ३) गुलेरी. जीकी अमर-कहानियां ३) गोदान ६) गोदान संक्षिप्त ४) ग्राम्यजीवन की कहानियां २) गोपालन शास्त्र २) गोपीचंद भरथरी ।-) गोलमाल १।) ग्रीस और रोम के महापुरुष ३॥) गौरव मुकुट २) गृहशिल्प ॥।) ग्रामीनआदर्श १॥) गृहस्थी की तस्वीरें ३) घंटा १।) घनानंद और आनंदघन ५) घनानंद कवित्त २) घरौंदे ५) चंद हसीनों के खतूत १।) चन्द्रकान्ता ४ भाग ३) सन्तती १५) चन्द्रगुप्त समीक्षा ॥।=) चन्द्रसारणी २) चटनी १।) चरित्रहीन ५॥) चालीस मार खां ।) चांदनी खिली थी १॥) चालाक चोर १॥) चिकोटि १॥≡) चिट्ठी दोहा प्रकाश ।-) चितरंजनदास ।≡) चित्रावली १॥) चिद्विलास ३॥) चिन्ता ४) चिलमन १॥।) चीन और भारत १।) चोर २।-) चौराहा १॥) रु. एकांकी नाटक १॥) छूत अछूत १॥) जंगनामा हजरत अली ॥।) जंगल की कहानिया ।=) जंगी गस्टापो ।≡) जमनालाल बजाज ।≡) जय हिंद २) जर्मन युद्ध में युवती २॥) जर्मन षड्यंत्र १॥) जरासन्धवध १॥) जवानी की भूल १॥) जवाहर लाल ।≡) जाई जुई १) जातक ३ भाग २७) जादुका महल २) जागृति १।) जापान की राजनैतिक प्रगति ४) जापान रहस्य १॥) जायसी ग्रन्थावली ५) जिज्ञासा १) जीवन-कहानी संग्रह २॥)।

सब प्रकार की पुस्तकें मिलने का एक मात्र पता—

मोतीलाल बनारसीदास-गायघाट-बनारस

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection